Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

खण्डहर बोल रहे हैं

1

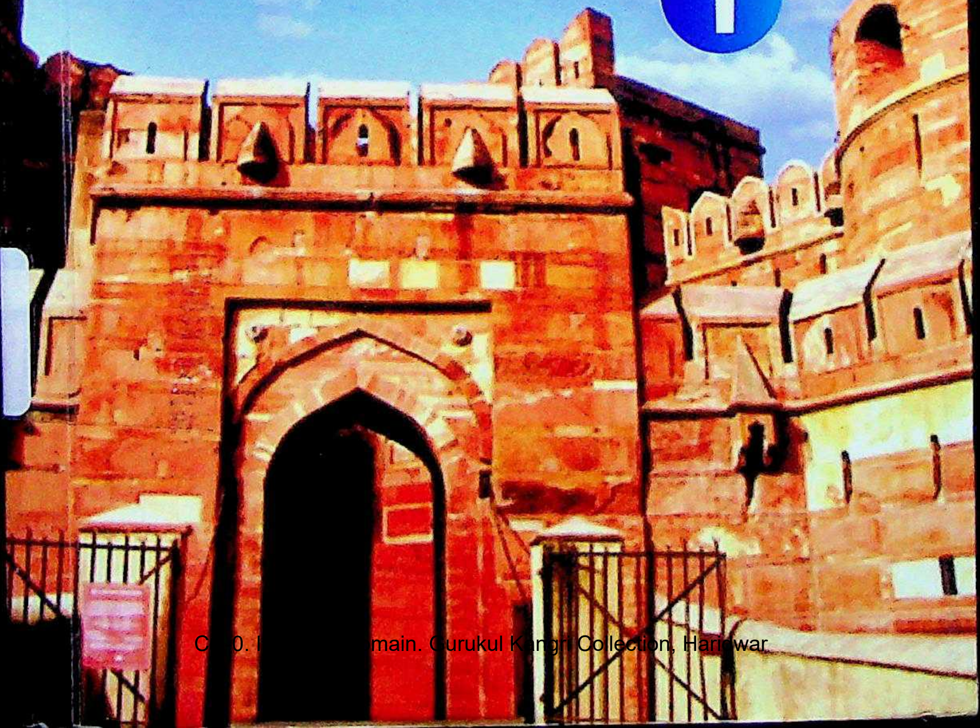

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167895
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डहर बोल रहे हैं

भाग—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डहर बोल रहे हैं

भाग-1

गुरुदत्त

Central Library
167895
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167895

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डहर बोल रहे हैं

भाग–1

R
089.9143
GUR-K

मूल्य : रु. 180/–
संस्करण : 2021
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन,
2 बी.डी. चैम्बर्स,
10/54 देशबंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप)
नई दिल्ली–110005
ई–मेल : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट : www.hindisahityasadan.com
दूरभाष : 9213527666, 7065618655
मुद्रक : गोयल एन्टरप्राइजिज, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

Khandhar Bol Rahe hain Part-1

by Gurudutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसकी पृष्ठभूमि में हिन्दुस्तान के उस काल का इतिहास है जिसे मुगलों के ह्रास का काल कहा जाता है। इस कथा का आरम्भ हमने विक्रमी संवत् १७०५ तदनुसार ईसवी सन् १६४८ से किया है।

कुछ इतिहास-लेखक मुगल सम्राट् शाहजहाँ की न्यायप्रियता के लम्बे-चौड़े गीत गाते हैं, परन्तु जो कुछ उसके काल में शाही महलों में निर्माण हुआ और जो कुछ देश में घटा, वह न्याय और शान्ति का परिणाम नहीं कहा जा सकता। यह शहंशाह शाहजहाँ ही था, जिसकी अपनी प्रिय बेगम के पेट से उत्पन्न हुआ औरंगज़ेब गाज़ी। शाहजहाँ के काल में ही आगरा के किले में बन्दी शहंशाह की सैकड़ों अविवाहित बेगमें थीं। इस सबकी प्रतिक्रिया में देश में पैदा हुए शिवाजी, चम्पत बुन्देला, गुरु गोविन्दसिंह तथा मथुरा के जाट इत्यादि।

ये सब उत्पन्न हुए सम्राट शाहजहाँ के काल में और लड़े-मरे औरंगज़ेब के काल में। हमारा ऐतिहासिक निष्कर्ष यह है कि ह्रास का बीजारोपण होता है राज्य के विलास काल में और उसका परिणाम निकलता है विलास उपरान्त विश्रान्ति काल में।

मुगलों के ह्रास के लिए भूमि तैयार हुई थी जहाँगीर के काल में, बीजारोपण हुआ शाहजहाँ के काल में और ह्रास पनपा औरंगज़ेब के काल में तथा मुगल वृक्ष मुरझा गया औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद।

हमारी इस कथा का मुख्य पात्र कल्पित किया गया है वीनिस के एक पर्यटक निकोला मनूशी (Niccolao Manucci) के निम्न वृत्तान्त से। मनूशी ने अपनी पुस्तक Storia-Do-Mogor (मुगलों की कहानी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के प्रथम भाग के पृष्ठ ३४२-३४३ में इस प्रकार लिखा है—

'औरंगज़ेब ने दारा की दो छोटी बेगमों को बुला भेजा। एक थी बेगम उदयपुरी जो जिओर्जिया की रहने वाली थी और दूसरी थी रा-ना-दिल। यह जन्म से हिन्दू थी।

'उदयपुरी आई तो औरंगज़ेब ने उसे अपनी पत्नी बना लिया। उससे शहज़ादा कामबख्श का जन्म हुआ।

'रा ना-दिल नहीं आयी। उसने पूछ भेजा कि उसे किसलिए बुलाया जा रहा है। नौकरानियों ने बताया कि वह उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। यह 'शरअ' में दर्ज है कि बड़े भाई के मरने पर उसकी पत्नियाँ छोटे भाई की पत्नियाँ बनें। इस पर रा-ना-दिल ने फिर पुछवाया कि उसके किस गुण के कारण वह उसे पत्नी बनाना चाहता है। औरंगज़ेब ने बताया कि वह उसके सुन्दर बालों पर मुग्ध है। रा-ना-दिल ने अपने बाल काटकर उसको भेज दिये और साथ ही कहला भेजा कि यह है वह सौन्दर्य, जिस पर वह लट्टू है।

'औरंगज़ेब ने पुन: कहला भेजा कि वह उसके सुन्दर मुख पर मुग्ध है। वह उसको उतनी ही मान-प्रतिष्ठा देगा, जितनी दारा से उसे प्राप्त थी। इस पर रा-ना-दिल ने अपने मुख को काट कर कुरूप बना लिया और काटने से निकले हुए रक्त में कपड़ा भिगोकर औरंगज़ेब के पास भेज दिया। साथ ही उसने कहला भेजा, यह है मेरे मुख के सौन्दर्य का सार।

'इसके उपरान्त औरंगज़ेब ने इस औरत को तंग नहीं किया और उसको शाही महल में मान-प्रतिष्ठा से रखा।'

परन्तु कथा का भाव लिया है डा० आशीर्वादीलाल एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्० की पुस्तक The Moghul Empire (मुगल साम्राज्य) से। डा० आशीर्वादीलाल आगरा विश्वविद्यालय में इतिहास के प्राध्यापक हैं। आप अपनी पुस्तक के द्वितीय संस्करण के पृ० ३३९-३४१ पर लिखते हैं—

'Aurangzeb believed in the Islamaic theory of kingship and sovereignty which enjoins the ruler to enforce the Quranic law in the administration of his state and to covert his country from a heathen-land into the land

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
of Islam (दारा-उल-हरब से दारा-उल-इसलाम).... He restored Islam to its former position as the state religion and placed the entire resources of the empire at the disposal of missionary propaganda of his faith...

...He forbade the old temples to be repaired and a little later issued an order the governors of the provinces 'to demolish the schools and temples of the infidels (काफिरों के) and to put down their teaching and religious practices strongly.' The *Muhtasibs* had to go round and destroyHindu temples and shrines within their jurisdictions. 'So large was the number of official temple-breakers that a daroga (superintendent) had to be placed over them to guide and unite their activities. Even the universally respected old temples of Vishwanath at Banaras, Keshav Dev at Mathura and Somanth at Patan, were razed to the ground. Even those in the states of friendly Hindu Rajas, such as Jaipur, were not spared, and the destruction of temples and images were 'of hen accompanied by wanton desecration, such as slaughtering of the cows in the sanctuary and causing the idols to be trodden down in public quarters'.

On April 12, 1679 the emperor promulgated an order reimposing *Jizya* on Hindus 'with the object of spreading Islam and overthrowing infidel practices'...He ignored Hindu protests. He also re-imosed thc pilgrim's tax on the Hindus, each of whom had to pay rupees six and annas four for bathing in the Ganga at Prayag, and a similar sum at other holy places. The emperor abolished the customs duties in the case of Muslim merchants, but continued it at the old rate of 5% in case of Hindus.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह वक्तव्य है जिसने हमारी इस कहानी में भाव भरे हैं।

उक्त उदाहरणों के बाद उपन्यास की पृष्ठभूमि के पक्ष में सफाई देने के लिये अन्य कुछ भी आवश्यक नहीं रह जाता।

यह इतिहास और कहानी वर्तमान और आगे के आने वाले शासकों के लिए एक उदाहरण बननी चाहिए। इस नीति और इसके परिणामों का अध्ययन प्रत्येक शासक को बार-बार पढ़कर मनन करना चाहिए।

विलास तथा भोग विकृत मस्तिष्क निर्माण करते हैं। विकृत मस्तिष्क मानसिक सन्तुलन खोकर विनाश की सृष्टि करते हैं।

प्रजातन्त्रात्मक राज्यों में उत्तरदायित्व केवल शासकों का ही नहीं रहता वरन् यह जनता के भाग में भी चला जाता है। शासक उपज हैं जनता की मनोवृत्ति के और जनता बनती है शासकों का अनुकरण करती हुई। इस प्रकार पाप-पुण्य में अब दोनों भागीदार बन गए हैं। अतएव यह और भी आवश्यक हो गया है कि इतिहास के उक्त पाठ को जन-जन की भाषा में और उसके समझ सकने योग्य रूप में लिखा जाए।

अतः यह उपन्यास है मुगल सम्राट औरंगज़ेब द्वारा बनाये खण्डहरों की मुंह बोलती कहानी।

विषय-भोग तथा विलास ह्रास का बीजारोपण करते हैं और बीज वृक्ष बन जाता है जब विलास के उपरान्त विश्रान्ति काल आता है।

इसको रोकने का सुगम उपाय है सरल, शुद्ध, पवित्र और संयमपूर्वक जीवन-यापन, शासकों द्वारा और जनता द्वारा भी।

पुस्तक तीन भागों में समाप्त हुई है। प्रथम भाग पाठकों की सेवा में उपस्थित है।

इसकी औपन्यासिकता का मूल्यांकन पाठकों के लिये छोड़ा जाता है। वर्तमान भारत (हिन्दू तथा मुसलमान) के पथ-प्रदर्शन में यह प्रयास सफल हो, यही कामना है।

—गुरुदत्त

निवास-१८
मार्ग-२८, पंजाबी बाग,
नई दिल्ली-११००२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

: १ :

औरंगाबाद के इम्पीरियल होटल में ठहरा एक धोती-कुरता धारी यात्री होटल के बरामदे में खड़ा एक टैक्सी-ड्राइवर से गुफाओं को देखने के लिए टैक्सी भाड़े का मोलभाव कर रहा था। ड्राइवर ने चालीस रुपये मांगे थे। उस भद्र पुरुष का कहना था, "बहुत अधिक हैं !"

"तो ऐसा करिये।" ड्राइवर ने कहा, "कुछ स्थान छोड़ दीजिए। तब भाड़ा कम कर दूंगा।"

"क्या छोड़ने से कितना कम कर दोगे ?"

"एक तो आप दौलताबाद का किला मत देखिये और दूसरे औरंगज़ेब का मकबरा छोड़ दीजिए तो पाँच रुपये कम कर दूंगा।"

"औरंगज़ेब का मकबरा तो जरूर देखूंगा।"

"साहब ! उसमें कुछ भी तो देखने योग्य नहीं है। एक छोटा-सा स्थान ही तो है। कोई देखने योग्य इमारत भी नहीं है।"

"मगर एक निहायत काबिल आदमी की यादगार तो है।"

उस यात्री ने समझा था कि उसके ऐसा कहने पर ड्राइवर प्रसन्न होगा। वह शक्ल-सूरत से एक मुसलमान प्रतीत होता था। उसने दाढ़ी तथा मूंछें रखी हुई थीं और सलवार तथा कुरता पहिने था। सिर पर तो गांधी टोपी थी। परन्तु यात्री के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने कहा, "यदि आप उसको देखने का हठ करते हैं तो चालीस रुपये से एक पाई कम नहीं होगी।"

यात्री ने कुछ और सौदेबाजी करने के लिए कह दिया, "यदि दौलताबाद का दुर्ग न देखें ओर शेष सब स्थान देखें तो क्या लोगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही चालीस रुपये।"

"दौलताबाद न जाने पर भी ?"

"जी ! सिर्फ औरंगज़ेब के मकबरे को देखने जाने के भी चालीस ही लगेंगे।"

"ओह ! यह क्यों ?"

"जी बस। यही होगा। आप कोई और टैक्सी कर सकते हैं।" यात्री समझा कि यह औरंगज़ेब को काबिल कहे जाने पर चिढ़ गया है। अपने सन्देह की पुष्टि के लिए उसने पूछ लिया, "अच्छा जी ! अगर दौलताबाद का किला देखने जाएं और औरंगज़ेब का मकबरा देखने न जाएं तो क्या लोगे ?"

"पर साहब ! आप एक लायक शहंशाह की यादगार को देखने क्यों नहीं जाएंगे ? आपके लिए पाँच रुपये क्या चीज़ हैं ?"

इतना कह सलाम कर जाने के लिये वह बोला, "आप किसी और की टैक्सी कर लीजिये।" वह घूम कर सीढ़ियों की ओर चला तो यात्री ने उसे बुला लिया, "ए ड्राइवर साहब ! ज़रा सुनो तो भाई, नाराज़ किस लिए हो रहे हो ?"

वह खड़ा हो घूम कर बोला, "मुझे यह भावताव पसन्द नहीं है।"

"अच्छी बात। आपकी बात मान लेता हूँ। क्या नाम है आपका ?"

"मिरज़ा रामदीन।"

मिरज़ा और रामदीन। यात्री समझ गया कि यह हिन्दू है; परन्तु यह मिरज़ा क्यों है, वह समझ नहीं सका।

यात्री उसको कमरे के अन्दर ले गया और कहने लगा, "अच्छा भाई ! मैं उसका मकबरा देखने नहीं जाऊँगा और दौलताबाद दिखाना अथवा न दिखाना यह तुम्हारी इच्छा पर है; तुमको पैंतीस रुपये दे दूंगा। अब तो ठीक है न ?"

"जी। कुछ पेशगी मिल जाये, जिससे मैं बात पक्की समझूं और सवेरे छः बजे यहाँ आ जाऊँ।"

यात्री ने जेब से पाँच रुपये निकाल कर ड्राइवर के हाथ में दे दिए और पूछ लिया, "यह मिरज़ा के क्या अर्थ हैं ?"

ड्राइवर चुपचाप मुख देखने लगा। यात्री प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ओर देख रहा था। उसने टालने के लिए कह दिया, "यह हमारा पारिवारिक उपनाम है।"

"मगर यह उपनाम तो मुगल सन्तान के लिए होता है।"

"जी जानता हूँ। मगर इसकी एक लम्बी कहानी है।"

"बहुत लम्बी है ?"

"जी। एक मिनट में नहीं बताई जा सकती।" ड्राइवर ने सलाम की और चल दिया।

वह ड्राइवर अपनी श्रेणी के लोगों से कुछ भिन्न दिखाई दिया था। उसने यह कह कर कि केवल औरंगज़ेब के मकबरे पर जाने के लिए भी चालीस रुपये ही लेगा, यात्री के मन में कुछ कौतूहल उत्पन्न कर दिया था। फिर उसके व्यंगात्मक कथन ने कि आप एक लायक शहंशाह की यादगार को देखने क्यों नहीं जाएंगे, यात्री के कौतूहल को और बढ़ा दिया था।

यात्री इस ड्राइवर का रहस्य जानने के लिए मन में उत्सुकता अनुभव करने लगा। उसने मन में यह निश्चय कर लिया कि वह अगले दिन इससे जरूर पूछेगा।

अगले दिन यात्री ने एक बड़े से 'टिफिन कैरियर' में प्रातः का अल्पाहार और मध्याह्न का खाना ले लिया। दो 'थर्मस' में गरम-गरम चाय भी डलवा ली। इस प्रकार छः बजे से पहले ही वह चलने के लिए तैयार हो गया।

ठीक छः बजे टैक्सी वाला आया और यात्री ने टैक्सी की पिछली सीट पर टिफिन कैरियर और चाय का सामान रख दिया और स्वयं ड्राइवर के साथ अगली सीट पर बैठ गया। ड्राइवर ने कह दिया, "हजूर ! पीछे आपको आराम रहेगा।"

"नहीं। वहाँ टांगें सिकोड़ कर बैठना होगा। यहाँ टांगें फैलाई जा सकती हैं। मुझे आगे सुविधा रहेगी।"

ड्राइवर को इस बात पर विस्मय हुआ। प्रायः यात्रियों का ऐसा चलन नहीं होता था। वह कुछ विचार कर वह बोला, "जिस तरह आपको आराम मालूम हो।"

यात्री पिछले दिन की बात को चलाना चाहता था और उसने पीछे की सीट पर बैठ कर ड्राइबर से बातचीत करना कठिन जान उसने अगली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सीट पर बैठना पसन्द किया था।

जब गाड़ी चल पड़ी तो ड्राइवर को अपनी कहानी बताने में उत्साहित करने के लिए उसने कहा, "भाई! एक बात पूछूं, नाराज़ तो नहीं होंगे?"

"आपसे नाराज़ होने की कोई वजह नहीं हो सकती।"

"मैं कल देख रहा था कि तुम्हें औरंगज़ेब के नाम से चिढ़ थी।"

ड्राइवर मुस्कराया और बोला, "यह तो आपके हठ करने पर ही मैंने कहा था। देखिये, यहाँ लोग औरंगज़ेब का मकबरा देखने के लिए नहीं आते। लोग आते हैं एलोरा और अजन्ता की गुफाएं देखने। यहाँ, औरंगज़ेब का मकबरा देखना तो एक फोकट की बात होती है। आपने जब ... की जगहों की सूची सुनाई और उसमें औरंगज़ेब के मकबरे का नाम सबसे पहले लिया तो मैं समझ गया कि आप किसी खास खसलत के मालिक हैं। आपने अपनी इस खसलत को और भी नुमायां कर दिया, जब आपने कहा कि वह मकबरा तो जरूर देखना है। इसकी गूंज ही मेरे मन में उठी थी और मैं समझ गया कि वहाँ जाने का खास दाम लेना चाहिये।"

"परन्तु मेरे विचार में बात केवल इतनी ही नहीं है। इससे कहीं अधिक है। कुछ-न-कुछ जरूर तुम्हारे मन में भी है। जब तुमने कहा कि इतने लायक शहंशाह की यादगार देखने क्यों नहीं जाइयेगा, मैं तब ही समझ गया था कि औरंगज़ेब के लिए तुम्हारे दिल में खास जगह है।"

इस पर ड्राइवर हंस पड़ा। वह गाड़ी वेग से चला रहा था। इस कारण यात्री की ओर न देख, सामने ही दृष्टि डाले हुए उसने कहा, "मैं इस काफिर से नफरत करता हूँ। इस कारण वह तंज़ बात मेरे मुख से अपने-आप ही निकल गई थी।"

"परन्तु उससे नफरत क्यों करते हो? उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

"यह एक लम्बी कहानी है।"

"कल तुमने कहा था कि नाम के साथ तखल्लस की भी एक लम्बी कहानी है। तो क्या यह कहानी किसी से कहोगे नहीं?"

"यह बात नहीं। इसका यहाँ कइयों को पता है। मगर इससे आपकी क्या और कितनी दिलचस्पी है, मैं नहीं जानता। इसलिए आपका समय खराब करने से डरता था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर मुझे तो इसके जानने की बहुत उत्सुकता है। मैं एक लेखक हूँ, इस कारण इस किस्म की बातें सुनने और फिर उनसे अपने नतीजे निकालने में रुचि रखता हूँ। अगर कोई ऐसी बात न हो, जिससे तुम्हें किसी राज़ के फाश होने का डर हो तो बता सकते हो। मैं इस सब में वजह जानना चाहता हूँ। तुम हिन्दू हो या मुसलमान ?"

"जन्म से मुसलमान हूँ और खयालात से न हिन्दू न मुसलमान।"

"मगर यह मिरजा और रामदीन का मेल कैसे हुआ है ?"

"यह नाम तो वालिद साहब ने रख दिया है। वह भी मेरी तरह न तो हिन्दू हैं न मुसलमान। उनका नाम है मिरज़ा मुरली खाँ।"

"ओह! यह कहानी तो दिलचस्प मालूम होती है। उनका यह नाम उनके वालिद साहब ने रखा होगा ?"

"जी। उनका नाम मिरज़ा सीतलदीन था। मेरे बाबा तो अब जिन्दा नहीं हैं, मगर वालिद हैं।

"अगर एक लफ्ज़ में कहूँ तो कहानी यह है कि हमारे एक बुजुर्ग एक मुगल की औलाद थे और उनकी माँ एक हिन्दू ब्राह्मण की लड़की थी। तब से हमारे खानदान में यह रिवाज चला आता है कि हम मुगल हिन्दू हैं। हिन्दू इसलिए हैं कि हमारे वे बुजुर्ग जो एक मुगल और ब्राह्मण स्त्री की औलाद थे, मुसलमान नहीं थे और मुसलमानों से अपनी बगावत ज़ाहिर करने के लिए अपनी औलाद का नाम हिन्दुआना रखने का रिवाज़ छोड़ गए थे। साथ ही वे जानते थे कि हिन्दू उनकी औलाद को अपनी लड़की नहीं देंगे। इस लिए मिरज़ा का लकब लगाने का रिवाज छोड़ गए हैं।"

"ओह! और आप तब से इस लकीर को पीटते चले आए हैं ?"

"हाँ, मगर इसमें भी एक राज़ है। उस बुजुर्ग की माँ जो ब्राह्मण की लड़की थी, एक किताब लिखकर छोड़ गई है। वह किताब हमारे खानदान में मौजूद है। उसमें उसने अपने उस बदकार मुगल की बीवी बनने की कहानी लिखी है। साथ ही अपनी औलाद को उसमें अपना शिजरा-खसरा लिखने के लिए कहा है। हम उस जबान को जिसमें वह किताब लिखी है, पढ़ते हैं। उसमें अपना नाम और ज़िन्दगी का मुख्तार हाल लिख देते हैं। इससे यह रिवाज़ चला आता है। उस औरत से लेकर अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तक हमारे खानदान के सभी हालात उस किताब में दर्ज हैं।

"कितनी पीढ़ी हो चुकी हैं, तब से आज तक ?"

"मैं पन्द्रहवीं पीढ़ी में हूँ।"

"और आपके उस पुरखा का क्या नाम है जो ब्राह्मण की सन्तान थी ?"

"उसका हिन्दुआना नाम था नीलमणि और मुगल ने उसका नाम रख दिया था महताब बेगम।"

"भाई, यह कहानी तो बहुत दिलचस्प है।"

इस वक्त गाड़ी दौलताबाद के दुर्ग के समीप आ पहुँची थी। ड्राइवर ने मोटर खड़ी कर दी तो यात्री प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगा। ड्राइवर हंस कर बोल, "आप देख आइये। मैं यहाँ पहाड़ी के नीचे ही आपकी प्रतीक्षा करूंगा।"

यात्री समझ गया कि वह पिछले दिन हंसी कर रहा था, मगर इसका निर्णय तो यात्रा समाप्त होने पर हो सकेगा। ऐसा विचार कर वह टैक्सी से उतर आया और किला देखने के लिए पहाड़ी पर चढ़ने लगा। चढ़ाई अधिक थी, मोटरगाड़ी उस पर नहीं चढ़ सकती थी।

यात्री को किला देखने में डेढ़ घण्टा लगा। जब वह लौटा तो आठ बज चुके थे। अल्पाहार का समय हो गया था। यात्री ने ड्राइवर से पूछ लिया, "नाश्ता यहाँ ही कर लें तो कैसा रहे ?"

"यहीं लेना ठीक रहेगा। यहाँ पानी भी है।"

यात्री गाड़ी की पिछली सीट पर बैठ गया। टिफन-कैरियर खोल उसमें से मिठाई, उबले अंडे और सेण्डविचेज निकाल उसने एक तश्तरी में रख ली। मिरजा रामदीन भी अपने नाश्ते की पोटली निकाल खाने के लिए कुएँ की जगत की ओर जाने लगा। यात्री ने उसको मिठाई और दो अंडे दिये। वह मुस्कराया और उनको लेकर कुएं पर चढ़ कर जा बैठा। यात्री ने नाश्ता किया और थर्मस में से एक प्याला चाय निकाल कर पी ली और ड्राइवर को भी दी। इससे वह बहुत प्रसन्न हुआ।

जब वे वहाँ से अजन्ता की ओर चले तो यात्री ने पुनः बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मिरज़ा, तुमने कहा है कि मिरज़ा का लकब लिये आपकी पन्द्रह पीढ़ियाँ गुजर चुकी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी। तेरह गुजर चुकी हैं। चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं अभी जीवित हैं। मेरे वालिद शरीफ अभी हैं। मेरी अपनी भी औलाद है। एक लड़का और एक लड़की है।"

"इसका मतलब यह हुआ कि इस मुगल खानदान की शुरुआत हुए साढ़े तीन सौ से ज्यादा साल हो गये हैं। तो क्या ओरंगज़ेब का इससे किसी किस्म का ताल्लुक है ?"

"औरंगज़ेब का हमारे खानदान से तो इतना ही ताल्लुक है कि वह हमारी बरबादी में वजह हुआ था। उसने हमारे बुजुर्ग की मां को बहुत तंग किया था।"

"तो ये सब बातें लिखी हैं उस किताब में ?"

"जी।"

"तुमने वह किताब पढ़ी है ?"

"जी।"

"किस ज़बान में लिखी है।"

"देवनागरी लिपि में और उस काल की बोली जाने वाली ज़बान में। वह ज़बान आज कही जाने वाली हिन्दी ज़बान ही है। कई इल्फाज़ हैं जो फारसी के उसमें आ गए हैं। वह जरूर कहानी लिखने वाली ने शाही महल में सीखे होंगे।"

"और क्या-क्या लिखा है उस किताब में ?"

"साहब ! वह तो पाँच सौ बड़े-बड़े पन्नों पर लिखी किताब है। उसमें बीस पन्नों से ऊपर खानदान के दूसरे लोगों ने अपने हालात लिखे हैं।"

"फिर भी कोई तो बात बताओ।"

"नीलमणि को शाहजहाँ ने अपनी बेगम बनाया था और शाहजहाँ के दो बेटे उस पर मोहित हो उसे अपनी बीवी बनाने की कोशिश में थे। वे थे दारा और औरंगज़ेब। जहां सल्तनत उनमें झगड़े की जड़ थी वहां वह देवी भी थी। नीला ने दोनों को अपना बेटा कहकर उनके प्रेम को अस्वीकार कर दिया था। दोनों वालिद के रहते ही सल्तनत पर और उसकी सबसे छोटी बेगम पर हक हासिल करने की·ख्वाहिश कर रहे थे। इस ख्वाहिश का खात्मा हुआ शाहजहाँ के बीमार होने पर। शहज़ादे समझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि वह मर गया है। दोनों आगरा की तरफ लपके और आपस में भिड़ गये। दारा मारा गया और फिर औरंगज़ेब अपने बाप की इस बेगम को अपने हरम में डालने के लिए अपनी बीवी बनाने का प्रयत्न करने लगा। तंग आकर उस देवी ने अपने को आग लगा कर मर जाना चाहा। मगर शाही महल की दूसरी औरतों ने उसे बचा लिया। इस पर भी उसके तमाम जिस्म पर जल जाने के निशान बन जाने से वह बदसूरत हो गई। उसके मुख पर बहुत-से बदनुमा निशान बन गये। यह बेशर्म शहंशाह इंसान के कालिब में शैतान, मज़हब का ढोंग रचता हुआ ज़िन्दगी बसर करता रहा। उसके मरने के बाद वह बुज़ुर्गवार औरत महल से बाहर निकल सकी। उसका लड़का मिरजा हिदायत उल्ला इसी ब्रादर-कुश शहंशाह की अर्दली में रहता था। वह ही उसकी मौत होने पर अपनी माँ की रिहाई में मददगार हो सका। बकाया ज़िन्दगी मां-बेटे ने इसी गाँव में गुजारी थी।"

"किस गाँव में ?" यात्री का प्रश्न था।

"औरंगाबाद से थोड़ी दूर पर एक गाँव है। वह अब औरंगाबाद का हिस्सा ही बन गया है। मैं और मेरे वालिद शरीफ वहीं रहते हैं।"

"क्या मैं उस किताब के दीदार हासिल कर सकता हूँ ?"

"इसकी इजाजत तो वालिद साहब ही दे सकते हैं। एक बार, मैं अभी आठ-दस साल की उम्र का था, एक गोरा उस किताब को खरीदने की कोशिश करता रहा था। कई बार वह हमारे घर में आया था। मगर वालिद साहब ने उसे तो वह किताब दिखाने से भी इनकार कर दिया था।"

"मगर मिरज़ा ! मैं न तो खरीदने की तौफीक रखता हूँ और न ही ख्वाहिश। मैं तो सिर्फ उसके दीदार हासिल करना चाहता हूँ।"

"इससे क्या मिलेगा आपको ?"

"जो कुछ इन किले और गुफाओं को देखने से मिल रहा है।"

"क्या होता है इन खण्डहरों को देखने से ? आप लोग अपना कीमती वक्त और रुपया खर्च कर क्या हासिल करने आते हैं यहाँ ?"

"मिरज़ा ! ये खण्डहर बोल रहे हैं, मैं तो इनकी बातें सुनने आया हूं। मुझे कुछ ऐसा मालूम हो रहा है कि एक खण्डहर तुम्हारे घर में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। वह क्या कहता है, यह सुनने की लालसा मन में जाग पड़ी है।"

"तो ये खण्डहर कुछ बोलते सुनाई देते हैं आपको ?"

"बिल्कुल। इनकी कहानी निहायत ही दिलसोज़ है। अब तुम समझ सकते हो कि मैं उस किताब को देखने की क्यों लालसा करता हूं।"

: २ :

ड्राइवर ने चलते-चलते गाडी रोक ली। यात्री उसके मुख पर देखने लगा। वह अपनी जेब से एक रूमाल निकाल अपनी आँखें पोंछने लगा था। यात्री इसका मतलब समझने के लिए उसके मुख पर प्रश्नभरी दृष्टि से देखता रहा। जब वह आँखें पोंछ कुछ शान्त हो मोटर स्टॉर्ट करने लगा तो यात्री ने पूछ लिया, "मिरज़ा! क्या बात थी ? कुछ मुझसे गुस्ताखी हो गई है क्या ?"

"गुस्ताखी नहीं कह सकता। हाँ, आपके इस कहने से कि ये खण्डहर निहायत ही दिलसोज़ कहानी कहते सुने जाते हैं तो मुझे उस बुजुर्गवार देवी के इल्फाज़ याद आ गये थे। उसने लिखा है—

'ये दयालू ईमानदार मुगल किसी दूसरे के पास कोई भी खूबसूरत चीज नहीं देख सकते थे। कहीं कोई खूबसूरत मन्दिर, महल, रत्न, इल्म, औरत या बच्चा भी दिखाई दिया तो ये उसको अपने कब्ज़े में करने के लिए पेचोताव खाने लगते थे। अगर वह चीज़ उनके कब्ज़े में आ गयी तो ठीक वरना वे उनको गिरा, तबाह या तह-तेग करके ही दम लेते थे और फिर उस खण्डहर को देख-देख कर खुश हुआ करते थे।

'इनकी वह खसलत तैमूर लंग से ही चली आ रही है। महमूद भी अपने ज़ोर-जुल्म की निशानी, अपनी लूटमार को देख-देख मरा था। ज़ालिम औरंगज़ेब भी मरने से कुछ ही पहले मुझे दिल्ली से औरंगाबाद बुलाकर अपने सामने खड़ा कर मेरी बिगड़ी सूरत देख-देख दिल में तस्कीन हासिल करता मालूम होता था। जहाँ इस असभ्य शहंशाह का बाप अपनी लूटमार का नतीजा, ताज बीबी के रोज़े को मरने से पहले देखने के लिए परेशान था, वहाँ उसका बेटा अपनी माँ के रुत्बे की मुझ पचहत्तर साल की बूढ़ी औरत को नंगी कर देखना चाहता था। भगवान जाने, मरते समय क्या खुशी हासिल करते थे ये लोग अपने हाथ से बनाए खण्डहरों को देखकर! मुझे विश्वास है कि वे अपने लिए नरक का द्वार खोल रहे थे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सो साहब ! आपके 'खण्डहर बोल रहे हैं' कहने पर मुझे अपनी खानदानी किताब में देवी के ये आखिरी इल्फाज़ याद हो आए थे ।"

"तो तुम्हारे कहने का मतलब है कि तुम्हारी खानदानी किताब भी एक खण्डहर की बोलती हुई आवाज़ ही है।"

"जी। आपके कहने के बाद यही समझ में आया है।"

: ३ :

यात्री गम्भीर हो विचार करने लगा। गाड़ी अजन्ता से इलोरा की ओर जा रही थी। यात्री विचार कर रहा था कि इस मानव खण्डहर की आवाज़ सत्य ही हृदय को विदीर्ण करने वाली होगी। यात्री उस अतीत काल के इतिहास की कल्पना करने लगा था। यह तो वह जानता था कि मध्य एशिया की बर्बर जातियों ने भारत-जैसे सभ्य देशों में आकर महान् अत्याचार और अनाचार फैलाया था। इस पर भी उसने कभी यह विचार नहीं किया था कि जीवित-जागरित मानव भी, भयानक अत्याचार से खण्डहर हुए, कराह सकते हैं।

वह ड्राइवर की आँखों के भीगने का कारण समझ रहा था और अधिक प्रश्नों से उसकी अन्तरात्मा को दुःखी करना नहीं चाहता था। मिरज़ा रामदीन ने भी और अधिक कहना उचित नहीं समझा। अपने मन की व्यथा को अपने ही भीतर सुलगने के लिए छोड़ उसने गाड़ी की गति को बढ़ाना आरम्भ कर दिया। वह उस वार्तालाप को भूलने के लिए अपना पूर्ण ध्यान गाड़ी चलाने में लगा रहा था। यात्री उसके साथ की सीट पर बैठा हुआ गति देखने के मीटर पर सुई को ऊपर और ऊपर चढ़ देख रहा था। जब सुई आठ से भी उपर निकली तो यात्री ने ड्राइवर को सचेत करने के लिए कह दिया—

"मिरज़ा ! जिन्दगी का बीमा कराया हुआ है अथवा नहीं ?"

"तो आपको डर लगने लगा है ?"

"हाँ मिरज़ा ! अभी मरने को तबीयत नहीं करती।"

मीटर में सुई उतरने लगी। मिरज़ा रामदीन ने कहा, "मैं भूल गया था कि मेरी बीवी और बच्चे भी हैं। वैसे तो थोड़ी सी जमीन भी है। मगर घर में कोई बालिग़ उसकी देखभाल करने वाला नहीं।"

"तो भाई ! चालीस से नीचे ही रफ्तार रखो। मेरे सिर पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अभी कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं। साथ ही मैंने अपनी आकबत सुधारने के लिए तो कोशिश अभी शुरू ही की है। इसके लिए भी अभी अर्सा चाहिए।"

ड्राइवर मुस्कराया और बोला, "आपने आज मेरे दिल की वह तार हिला दी थी, जिसने मेरे दिल में तूफान खड़ा कर दिया है।"

जब बात इस स्तर पर होने लगी तो यात्री ने एक सवाल उपस्थित पर दिया, "मिरज़ा! क्या मैं उस आवाज़ को सुन भी सकता हूँ जिसका जिक्र हो रहा है?"

"कैसे सुनेंगे?"

"मैं उस किताब को पढ़ना चाहता हूँ।"

"मैंने बताया है न कि वह अभी वालिद सहाब के कब्ज़े में है। वे ही इसको देखने-पढ़ने की इज़ाज़त दे सकते हैं।"

"तुम्हारे वालिद साहब कहाँ मिलेंगे?"

"घर पर।"

"तो मुझे अपने घर ले चलो। मैं अपनी दर्खास्त उनके हुजूर में पेश कर दूंगा।"

"हाँ, यह हो सकता है। मगर मुझे उम्मीद बहुत कम है कि वे आपको किताब देखने दें। पढ़ने की इज़ाज़त तो और भी मुश्किल है।"

"मैं तो यह चाहूँगा कि आप वह किताब किसी सरकारी अधिकारी के पास बेच दें।"

"नामुमकिन है। पहले तो यह बात है कि उसमें इन मुगल शहंशाहों की कुछ निहायत ही घिनौनी हरकतें लिखी हैं। कोई सरकार उन बातों को मुश्तहर करने के लिए रुपया खर्च करेगी, इसका मुझे शक है। दूसरे हम मौजूदा विदेशी सरकार को वह किताब देनी पसन्द नहीं करेंगे।"

यात्री ने कुछ विचार कर कहा, "कुछ ऐसा मालूम होता है कि पाँच-छः साल में हिन्दुस्तान आजाद हो जाएगा। इस वक्त योरोप में एक निहायत ही तबाहकार जंग चल रहा है। इसमें अंग्रेजों की जीत के आसार दिखाई देने लगे हैं। और अंग्रेजों के जंग जीतने पर हम आज़ाद हो जाएँगे। मगर हमारी आज़ाद सरकार तो ऐसी किताब का कुछ भी दाम देना पसन्द नहीं करेगी और फिर इसे छपवाना पसन्द भी करेगी, यह कोई कह नहीं सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो आप समझते हैं अंग्रेज़ों के बाद फिर इस्लामी राज्य आएगा ?"

"मिरज़ा ! तुम कांग्रेस में काम करते मालूम होते हो ।"

"हाँ । मैं यहाँ की कांग्रेस कमेटी का सैक्रेटरी हूँ ।"

"ओह ! तुम क्या पढ़े हो ?"

"मैं ग्रैजुएट हूँ ।"

"फिर भी ड्राइवरी करते हो ?"

"नौकरी से अच्छे पैसे मिलते हैं । औसतन तीन सौ रुपया महीना ैदा कर लेता हूँ ।"

"तब तो ठीक है । तो सुनो, यह सन् १९४४ है । जर्मनी पराजित ो रहा है और एक साल में वह बिल्कुल हार जाएगा । इधर जापान ार अमरीका फतह हासिल करने लगा है । वह भी हारेगा । इस सब का तीजा यह होने वाला है कि हिन्दुस्तान और बहुत से दूसरे मुल्क आज़ाद ोंगे । यहाँ की हुकूमत गांधी के चेलों के हाथ में चली जाएगी । बहुत ुमकिन है कि पण्डित जवाहरलाल यहाँ के प्रधान मन्त्री बनें ।

"इसका नतीजा यह होगा कि यहाँ सरकार मुसलमानों से भी ज्यादा ुसलमान होगी । वह सरकार तो इस किताब को जला कर भस्म कर ने की कोशिश करेगी ।"

गाड़ी ऐलोरा पहुँच गई थी । यात्री उतर कर गुफाएँ देखने चला या । वहाँ से वह ढाई बजे लौटा । लौटकर उसने ड्राइवर को मध्याह्न ा भोजन करने का निमन्त्रण दे दिया । ड्राइवर ने बताया कि वह तो ोजन कर चुका है । इस पर भी जब यात्री ने आग्रह किया तो दो-तीन ेण्डविचेज़ उसने ले लीं । सेण्डविचेज़ चिकन की थी और ड्राइवर इनको ठने का प्रलोभन मन से हटा नहीं सका ।

भोजन कर जब यात्री गाड़ी में सवार हो गया तो अब ड्राइवर को कुछ जानने की लालसा हो आयी । उसने पूछा, "साहब ! क्या पंडित जवाहरलालजी मुसलमान हैं ?"

"भाई, नहीं । मेरा यह मतलब नहीं था । मेरा मतलब है कि ये लोग जो गांधीजी की नीति पर चलने वाले हैं, वे अहिंसा के बहाने अपनी भीरुता छिपाने का स्वभाव बना बैठे हैं । अतः भीरुओं की भांति ये उनको दबायेंगे जो इनके विचार के हैं अथवा उनके भक्त हैं । और जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R089.9143
GUR-K
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनको आँखें दिखायेंगे उनको प्रसन्न करने के लिए उनके पक्ष का उनसे भी अधिक समर्थन करेंगे।

"ये नेता हिन्दुओं के आश्रय हैं, परन्तु ये हिन्दुओं का विरोध कर विपक्षियों का समर्थन करेंगे।"

इस विचार से ड्राइवर गम्भीर विचार में मग्न हो गया और चुपचाप गाड़ी चलाता गया। इस समय वे औरंगाबाद की ओर लौट रहे थे।

इसके उपरान्त मार्ग में ज़्यादा लम्बी-चौड़ी बात नहीं हुई। मार्ग में एक स्थान पर पहुँच मिरज़ा ने पूछा, "तो चलियेगा, इन मुगलों की जड़ों में तेल देने वाले मकबरा देखने? यहाँ से मार्ग घूमता है।"

यात्री ने कह दिया, "नहीं, अब ज़रूरत नहीं।"

ड्राइवर ने मुस्कराते हुए कहा, "आपको पैंतीस रुपये में ही ले चलूंगा।"

"नहीं मिरज़ा! अब उसे देखने को चित्त नहीं करता।"

गाड़ी औरंगाबाद पहुँची तो यात्री ने कहा, "अपने वालिद साहब से नहीं मिलाओगे?"

"मिलाने में क्या एतराज हो सकता है? मगर उम्मीद नहीं कि कुछ हासिल हो।"

"तो ले चलो। उम्मीद और ना-उम्मीद की बात हमें पहिले ही नहीं सोच लेनी चाहिए।"

"तो अभी चलियेगा?"

"हाँ। और वहाँ आने-जाने का टैक्सी का भाड़ा पृथक् दूंगा।"

Central Library
167895
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

: ४ :

ड्राइवर ने गाड़ी अपने घर की तरफ घुमा दी। पाँच मिनट में वे वहाँ पहुँच गये। एक पुराने ढंग का बना पक्का मकान था। गाड़ी खड़ी कर मिरज़ा रामदीन ने कहा, "आप अभी गाड़ी में बैठिये। मैं उनसे पूछ कर आता हूँ।"

इतना कह मिरज़ा मकान के भीतर चला गया। यात्री गाड़ी में बैठा रह गया।

एक ही मिनट में मिरज़ा रामदीन बाहर आया और क्षमा माँग पूछने लगा, "आपका नाम पूछना तो भूल ही गया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसकी आवश्यकता है क्या ?"

"वह इसलिये कि वालिद शरीफ आपका उस किताब को देखने का मकसद जानना चाहते हैं।"

"हाँ, यह आवश्यक है। मेरा नाम रामकुमार है। मैं इतिहास का लेखक हूँ। यह पुस्तक भी इतिहास से सम्बन्ध रखती है। इसलिये इसे देखने की इच्छा हो रही है।"

रामदीन बिना एक भी शब्द कहे भीतर चला गया और कुछ देर बाद एक वृद्ध व्यक्ति के साथ बाहर आता दिखाई दिया। वह वृद्ध व्यक्ति लाठी का सहारा लिये आ रहा था। यात्री समझ गया कि यह मिरज़ा मुरली खाँ हैं। रामदीन ने तो दाढ़ी-मूँछें रखी हुई थीं, यद्यपि उसकी मूँछें मुसलमानों की भाँति बीच में कटी हुई नहीं थीं। इस पर भी उसकी रूप-रेखा मुसलमानों की प्रतीत होती थी, परन्तु उसके पिता की दाढ़ी-मूँछ सफा थीं और वह धोती-कुरता पहिने था। धोती भी हिन्दुओं के ढंग पर पहिनी हुई थी।

उसने हाथ जोड़ नमस्कार की तो यात्री नीचे उतर आया और हाथ जोड़ कहने लगा, "आपको बहुत कष्ट दिया है। मेरा यह मतलब नहीं था कि आप कष्ट करें।"

"देखो बेटा ! तुमने जब कहा कि तुम इतिहास-लेखन का काम करते हो तो मैं समझा कि कुछ तुम्हारी मदद कर दूँ। वरना मैं वह पुस्तक किसी को दिखाता नहीं।

"मैंने राम को भी कह रखा है कि इसका किसी से ज़िक्र न किया करे। अब इसने जिक्र किया है तो तुम उसको देख भी सकते हो। आओ, भीतर आ जाओ।"

यात्री रामकुमार उस वृद्ध महाशय के पीछे-पीछे भीतर चला गया। मकान में बड़ा-सा आंगन था। आँगन के एक ओर छता हुआ दालान था। उसी में एक तरफ एक खाट लगी थी और उस पर बिस्तर बिछा हुआ था। वह बिस्तर उस वृद्ध सज्जन का था। नीचे भूमि पर चटाई और उस पर साफ-सुथरी दरी बिछी हुई थी। उस वृद्ध ने यात्री को उसी दरी पर बैठाया और बोला, "रामदीन ! वह पुस्तक उठा लाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक एक चौकी पर रखी थी। वह एक लाल रंग के रेशमी वस्त्र में लपेटी हुई थी। रामदीन चौकी की चौकी ही उठा लाया। उसने वह चौकी यात्री के सामने रख दी। यह वृद्ध यात्री के एक ओर तथा रामदीन दूसरी ओर बैठ गया। यात्री समझ गया कि वे पुस्तक की रक्षार्थ इस प्रकार बैठे हैं। यात्री मुस्कराया और कहने लगा, "मिरज़ा साहब! आप चिन्ता न करें। मैं इस प्रकार की पुरानी पुस्तक के मूल्यों को समझता हूँ और जो कुछ इसका थोड़ा-सा इतिहास भाई रामदीन ने बताया है उससे मेरे मन में इस पुस्तक के लिये बहुत मान बना हुआ है। इसी श्रद्धा से भरा हुआ मैं इसको देखने चला आया हूँ।"

इस समय वृद्ध महाशय ने पुस्तक पर से कपड़ा खोल दिया और उसे सीधा कर यात्री के सामने रख दिया। यात्री ने देखा कि पुस्तक भोजपत्रों पर लिखी हुई है। लिखाई अति सुन्दर थी। यह लिखावट अभी तक स्पष्ट और गाढ़ी काली थी। प्रथम पृष्ठ पर ही लिखा था—"मेरी दुखद् कथा।"

यात्री ने वृद्ध महाशय की ओर देख कर पूछ लिया, "थोड़ा इसे पढ़ सकता हूँ।"

"हाँ, अगर पढ़कर समझ सको तो।"

यात्री ने प्रथम पृष्ठ उठाया तो पुस्तक के आरम्भ में ही उसने गणपति की स्तुति के श्लोक पढ़े। यात्री ने स्तुति के नीचे लेख पढ़ना आरम्भ किया तो उसमें पण्डित त्रिभुवन कीर्ति का परिचय, उसके परिवार का परिचय और फिर उसकी विद्वत्ता का परिचय था।

यात्री पढ़ने लगा तो फिर वह अपने को भूलकर पुस्तक पढ़ने में लीन हो गया। आधा घण्टा तक वह पढ़ता रहा। वह भूल गया कि उसकी सेवा में तथा पुस्तक की रखवाली में दो व्यक्ति बैठे हैं। वह पुस्तक की कथा में अपने को भूल गया था।

उसका ध्यान तब भंग हुआ जब रामदीन ने कहा, "आप चाय पियेंगे?"

यात्री ने चौंक कर पुस्तक पर से दृष्टि ऊपर उठाई तो सामने एक स्त्री खद्दर का श्वेत परिधान धारण किये हाथ में चाय की ट्रे लिये खड़ी दिखाई दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह !" यात्री ने कहा, "इन देवी ने बहुत कष्ट किया है। भला इन्कार कैसे कर सकता हूँ !" यात्री समझ गया कि यह रामदीन की पत्नी होगी।

उस स्त्री ने चाय की ट्रे अपने पति के सामने रख दी और वह चाय बनाने लगा। वृद्ध महाशय ने कह दिया, "यह हमारे चाय पीने का समय है। आप यहाँ थे तो आपके लिये भी बन गयी है।"

"बाबा !" यात्री ने उस वृद्ध सज्जन से कहा, "यह पुस्तक अति रोचक है और बहुत सामग्री रखती है। मैं इसको आद्योपांत पढ़ जाना चाहता हूँ।"

"इस पर तो बहुत समय लगेगा।"

"यदि आप स्वीकार करें तो मैं तीन-चार दिन यहाँ होटल में ठहर जाता हूँ। नित्य तीन-चार घंटे यहाँ आकर पढ़ जाया करूँगा।"

"और पढ़कर क्या करेंगे ?"

"इसकी सामग्री का, दूसरे स्रोतों से प्राप्त सामग्री से मुकाबिला करूँगा। यह मुगल सम्राटों के जीवन का महल के भीतर से दिखाई देने वाला चित्र है।"

"नहीं। इसमें महल से बाहर होने वाली तत्कालीन घटनाएँ भी हैं।"

"बाबा ! आप तो बहुत ही शुद्ध और मधुर हिन्दी भाषा बोलते हैं ?"

"हाँ, मैं हिन्दी हूँ।"

यात्री ने उसके कथन का संशोधन करने के लिये कह दिया, "आपका मतलब हिन्दू है ?"

"जी नहीं। मैं हिन्दी हूँ। हिन्दू नाम का सम्बन्ध ठाकुरद्वारों में जाने वाले अथवा रोटी-बेटी आदि में विशेष विचार रखने वालों से है। हिन्दी से मतलब हिन्दुस्तान में रहने वालों से है। इस देश की भाषा हिन्दी है और मैं इसे समझ तथा बोल सकता हूँ।"

चाय बन गयी थी। यात्री पुस्तक बन्द कर चाय पीने लगा तो उस वृद्ध महाशय ने कहा, "मैं मुसलमान भी नहीं हूँ यद्यपि वे मेरे साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध रखते हैं। हकीकत में हमारा खानदान चल ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है मुसलमान लड़कियों के आश्रय। हिन्दू तो हमको लड़की देते नहीं। हमारे एक बुजुर्ग ने किसी ब्राह्मण की लड़की का अपहरण किया था। हमारे परिवार में इस ग्रन्थ को लिखने वाली उसी ब्राह्मण-कन्या का रक्त है। शेष तो मुसलमानों से ही आया है। इस पर भी मैं मुसलमान नहीं हूँ। यह इस कारण कि उनके दुर्व्यवहार के कारण देश में वर्तमान वैमनस्य चल रहा है।"

यात्री वर्तमान से अधिक अतीत के विषय में जानने की रुचि रखता था। अतः उसने बात बदल दी। उसने एक घूंट चाय का निगल कर पूछ लिया, "आपका खाददान तो एक मुसलमान शहंशाह की यादगार है न ?"

"हाँ, मगर एक दुःखद् यादगार। हम जब भी इस किताब को पढ़ते हैं, तो हमें उसका और उसके बेटों का दुर्व्यवहार स्मरण हो आता है और हम उनके कर्ता को विस्मरण नहीं कर सकते।"

"परन्तु क्या आप दो सागरों के बीच में एक द्वीप की भाँति सदा एकाकी पड़े रहेंगे ?"

"हमारे मन की भावना अभी तक तो यह बनी रही है कि समय आयेगा जब हिन्दू हमको अपने में ग्रहण करने के योग्य हो सकेंगे। हम उस काल की प्रतीक्षा में हैं, परन्तु अब ज़माना बदल रहा है। यह राम बम्बई से पढ़कर आया है और अपने इस तटस्थता के जीवन पर सन्देह प्रकट करने लगा है। यह कांग्रेस में कार्य करता रहा है। महात्मा गांधी के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में एक वर्ष का दण्ड भी भोग आया है और हिन्दू मुसलमान में अन्तर नहीं मानता। इसी कारण कह रहा था कि अभी तक भावना ऐसी बनी है, परन्तु आगे के विषय में कुछ कहने से मन डरता है।"

"मैं आपकी इस किताब को आद्योपांत पढ़ना चाहता हूँ।" यात्री ने अपनी माँग दोहरा दी।

"आप आ जाइये और पढ़ लीजिये। वक्त बता दीजिये, जिससे मैं आपकी सेवा के लिए उपस्थित रह सकूँ।"

यात्री समझता था कि उसकी सेवा का अभिप्राय पुस्तक की रक्षा है। इस कारण उसने कह दिया, "मैं छोटे मिरज़ा से कहना चाहता हूँ कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुझे प्रातः अल्पाहार के उपरान्त यहाँ ले आया करे और तीन-चार दिन मेरे साथ रह जाये तो मैं उसको मोटर सहित भाड़े पर रख सकता हूँ।"

"यह राम के विचार करने की बात है।"

यात्री चाय समाप्त कर रामदीन के मुख पर देखने लगा। रामदीन ने कह दिया, "मुझे इसमें क्या ऐतराज हो सकता है!"

"तो ठीक है। कल से तीन दिन तक मैं यह करना चाहता हूँ।"

दिन-भर पुस्तक अध्ययन के उपरान्त होटल में आकर यात्री उसकी मुख्य-मुख्य बातें अपनी नोट बुक पर संक्षेप में लिख लेता था। उसने यह विचार बना लिया था कि इस पुस्तक को किसी न किसी भाँति प्रकाश में लायेगा, परन्तु उसके लिए यह तीन दिन का अध्ययन पर्याप्त नहीं था। घटनाओं की तिथियाँ, कुछ नामों का दूसरे इतिहासकारों से मिलान और फिर महल से बाहर के समाचार लाने वालों के विश्वस्त होने तथा महल के भीतर के समाचारों का बाहर के इतिहासकारों को ठीक ज्ञान प्राप्त होने आदि बातों पर मनन और उनका अध्ययन करने की आवश्यकता थी; परन्तु औरंगाबाद में उसके लिए तीन दिन से अधिक न तो रहना सम्भव था, न ही वहाँ अन्य साहित्यिक सामग्री तुलना के लिए उपलब्ध हो सकती थी। पुस्तक देने के लिए मिरज़ा किसी मूल्य पर भी तैयार नहीं था।

अतः किसी उचित समय पर, पुनः अधिक तैयारी के साथ आकर कार्य करने का निश्चय कर यात्री वहाँ से विदा हुआ।

विदा होते समय जहाँ उसने रामदीन को उसे मिलने के लिए आने का निमन्त्रण दिया, वहाँ उसने बड़े मिरज़ा को एक अपनी लिखी पुस्तक भेंट में दे दी। पुस्तक शहंशाह अकबर के विषय में थी।

: ५ :

रामकुमार को औरंगाबाद के मिरज़ा-परिवार की याद सन् १९५३ में आयी। मुगल साम्राज्य का अन्त, इस विषय पर वह अपनी पुस्तक लिख रहा था। उसकी स्मृति आते ही वह औरंगाबाद जा पहुँचा।

औरंगाबाद बहुत कुछ बदल गया था। अब सरकारी औरंगाबाद होटल की सुन्दर इमारत बन चुकी थी और यात्रियों को वहां ठहरने के लिए पहिले से कमरे रिज़र्व करवाने पड़ते थे। रामकुमार को वहाँ के किसी अच्छे होटल में स्थान नहीं मिला। स्टेशन के समीप ही उत्तर प्रदेश के एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण ने एक छोटा-सा होटल खोल रखा था। उसमें तीन-चार कमरे थे और उनकी शक्ल-सूरत ऐसी थी कि प्रायः खाली पड़े रहते थे। विवश हो रामकुमार को वहाँ ही ठहरना पड़ा। वहाँ खाने का भी कुछ अच्छा प्रबन्ध नहीं था। इस कारण उसने वहाँ पहुँचते ही सामान कमरे में रखा और मिरज़ा का घर देखने चल पड़ा। मिरज़ा के घर का कोई चिह्न वहाँ नहीं था। उस स्थान पर एक बहुत ही सुन्दर नए ढंग का मकान बन रहा था।

रामकुमार ने वहाँ के लोगों से, वहाँ पर पहले मकान वालों के विषय में पूछा तो उनको जानने वाला कोई मिला नहीं। एक बात का पता चला। यह बात एक बूढ़े व्यक्ति ने उसे बताई। उसने कहा, "यहाँ एक लड़का, बन रहे मकान के पिछवाड़े में रहता है। सुना है कि वह इस ज़मीन का मालिक था, जिस पर यह मकान बन रहा है।"

"वह लड़का कहाँ होगा ?" रामकुमार ने पूछ लिया।

"उस मकान में जाकर पता कर सकते हो।" उसने बन रहे मकान के पिछवाड़े में एक टूटे-फूटे एक-मंज़िला मकान की ओर संकेत कर दिया।

रामकुमार वहाँ चला गया। मकान के बाहर एक बुढ़िया एक बकरी के गले में बँधी रस्सी पकड़े खड़ी थी। बकरी पेड़ की पत्तियाँ खा रही थी। रामकुमार ने उससे पूछा, "माँ ! यहाँ एक मिरज़ा साहिब रहते थे। वह कहाँ चले गये हैं ?"

"बेटा ! जहाँ सब लोग जाते हैं। मिरज़ा ड्राइवर का एक बेटा इस कोठरी में रहता है। इस समय वह रेल के स्टेशन पर कुलीगीरी करता है।"

इस समाचार पर रामकुमार भौंचक्का मुख देखता रह गया। उसने स्त्री का धन्यवाद किया और स्टेशन पर जा पहुँचा। वहाँ एक कुली से मिरज़ा के लड़के के विषय में पूछने लगा। बहुत ढूंढ़ने पर वह मिला। वह पन्द्रह-सोलह वर्ष का किशोर था।

"तुम मिरज़ा रामदीन के लड़के हो ?"

"जी।"

"तुम्हारे वालिद मोटर ड्राइवरी करते थे ?"

"जी।"

"सुना है उनका देहान्त हो गया है। कब की बात है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह लड़का कुछ क्षण तक रामकुमार के मुख पर देखता रहा और फिर बोला, "आप कभी हमारे घर में आये थे क्या ?"

"हाँ; आज से सात-आठ वर्ष पहले की बात है ?"

"मैं विचार कर रहा था कि आपको कहाँ और कब देखा है। बावा आपके विषय में बहुत कहा करते थे। मगर···।"

"मगर क्या ?"

"आज से पाँच वर्ष पहले की बात है। यहाँ रजाकारों ने बलवा कर दिया और उसमें वे सब लोग जो हिन्दू समझे जाते थे, मार डाले गये।

"हम भी हिन्दू माने जाते थे। सबसे पहले हमारे ही मकान पर धावा बोला गया। मैं उस समय मकान के बाहर था और बच गया। उन बलवाइयों ने मकान को आग लगा दी और बाबा, पिता-माता तथा छोटी बहिन सब उसी में जल गये।"

"और तुम्हारे घर में एक पुस्तक थी जो लाल कपड़े में लपेटी हुई एक चौकी पर रहती थी।"

"वह भी दूसरे सबके साथ जल गयी होगी।"

यह एक अत्यन्त हृदय-विदारक सूचना थी। उस किशोर की आँखें भीग गयी थीं। रामकुमार ने बात बदल कर पूछ लिया, "और तुम यह कुलीगीरी क्यों करते हो ?"

"और कुछ काम आता ही नहीं। पाँचवीं श्रेणी तक पढ़ा हूँ। अधिक पढ़ नहीं सका।"

"उस मकान की भूमि ?"

"उस पर एक आदमी ने कब्जा कर लिया है और अपना मकान बना रहा है।"

"कुछ दाम दिया है क्या ?"

"मैंने उस पर मुकद्दमा किया हुआ है। मुकद्दमा किये छः महीना हो चुके हैं। अभी उसकी पहली पेशी भी नहीं हुई। कचहरी में कोई भी काम बिना रुपये के चलता नहीं। मेरे पास मजदूरी के अतिरिक्त कुछ है नहीं। किसी को कुछ दे नहीं सकता और भूमि पर जबरदस्ती अधिकार करने वाला एक धनी आदमी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकुमार ने पूछ लिया, "तुमने कोई वकील किया हुआ है ?"

"वकील के लिए पैसा कहाँ है ? एक अर्जी-नवीस से अर्जी लिखवा कर अदालत में दे दी थी और उस पर एक पेशी पड़ी थी, परन्तु जजसाहब ने कह दिया, फिर आना। तारीख फिर दी जायगी।"

रामकुमार देख रहा था कि इस लड़के की जिन्दगी बरवाद हो रही है। यह न पढ़ाई कर सकता है, न मुकद्दमा ही जीत सकता है। उसने लड़के से पूछा, "तुम्हारा क्या नाम है ?"

"सीताराम मिरज़ा।"

"ओह ! तो यह मिरज़ा को तुम भी पकड़े हुए हो ?"

"यह तो बापू ने नाम रखा था। जब तक जमीन का झगड़ा निबट नहीं जाता, तब तक तो यह नाम रखना ही होगा।"

"अच्छा देखो सीताराम ! इस मुकद्दमे से निपट कर यदि कुछ अच्छा काम करने की मरजी हो तो मेरे यहाँ चले आना।" रामकुमार ने अपना छपा कार्ड उसको दे दिया। साथ ही एक पाँच रुपये का नोट उसको देते हुए कहा, "यदि वहाँ आने के लिए खर्चे की आवश्यकता पड़े तो एक पोस्ट कार्ड लिखकर डाल देना। तुमको खर्च भेज दिया जायेगा।"

बात यहाँ ही समाप्त नहीं हुई। रामकुमार रेल के स्टेशन से निकल होटल की तरफ जा रहा था कि दुकानदार के पहिरावे में एक आदमी उसके साथ चलता-चलता पूछने लगा, "बाबू साहब ! कहाँ से तशरीफ लाये हैं ?"

रामकुमार ने ध्यान से उसकी तरफ देखा और पूछ लिया, "किस-लिये पूछ रहे हैं ?"

"आप मिरज़ा रामदीन के लड़के को ढूंढ रहे थे न ?"

रामकुमार के कान खड़े हो गये। वह वहीं सड़क पर खड़ा हो उससे पूछने लगा, "आप उसको जानते हैं क्या ?"

"जी। वह रेल के स्टेशन पर कुली का काम करता है।"

राजकुमार ने अपनी अनभिज्ञता प्रकट करने के लिए कह दिया, "सच ? परन्तु सुना है कि वह अपने बाप-दादाओं की भूमि पर एक बहुत बड़ा मकान बनवा रहा है।"

"मकान कहाँ से बनवायेगा ? उसकी जान बच गई यही गनीमत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। रज़ाकारों ने उसके बाप, माँ और बाबा को जीवित ही जला दिया था।"

"यह तो बहुत बुरा समाचार बताया आपने ?"

"आपकी उसमें क्या दिलचस्पी है ?"

"रामदीन से मेरी जान-पहिचान और मित्रता थी। मैं सात-आठ वर्ष के उपरान्त इस नगर में आया तो उससे मिलने की इच्छा उत्पन्न हुई। मैं उसके मकान की तरफ गया था। यहाँ एक बड़ी हवेली बनती देख वापस लौट आया हूँ।"

"वह हवेली तो यहाँ का एक बनिया बना रहा है।"

"तो यह भूमि उसने खरीद ली है ?"

"जरूर खरीद ली होगी ?"

"कौन है वह बनिया ?"

"लाला रामसुख। बाजार में ही साढ़ियों की दुकान करता है।"

"उससे मिलना चाहता हूँ।"

"किसलिए ?"

"एक तो उससे मिरज़ा के लड़के का पता करूँगा और दूसरे उसकी आर्थिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ।"

"आइये। मैं आपको वहाँ लिये चलता हूँ।"

रामकुमार औरंगाबाद साड़ी भंडार पर जा पहुँचा। वह व्यक्ति जो उसको वहाँ ले गया था, उसी दुकान पर काम करता था।

रामकुमार समझ गया कि दुकान के मालिक ने उसको बुलाने के लिये ही उसे उसके पास भेजा था।

रामकुमार ने पूछ लिया, "तो आपने मिरज़ा के पुत्र से भूमि खरीदी है ?"

"खरीदी तो नहीं। हाँ, खरीदने का विचार रखता हूँ।"

"परन्तु आप वहाँ इमारत बनवा रहे हैं ?"

"यह तो इसलिए है कि मेरा हक उस जमीन पर बन जाये। जब तक वह बालिग़ नहीं हो जाता, तब तक वह बेचने का अधिकार नहीं रखता और तब तक कोई भी बीच में टपक कर भूमि का मूल्य कई गुना करा देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उससे उस यतीम का कुछ भला ही होगा।"

"मैं तो यह चाहता हूँ कि कोई जिम्मेदार व्यक्ति बीच में पड़ जाये तो मैं अच्छे दाम अब भी दे सकता हूँ।"

"आपने भूमि पर अधिकार तो पहिले ही कर लिया है और भाव-ताव पीछे करने लगे हैं। यह तो ठीक नहीं हुआ।"

"यह लड़का तो भूमि आखिर बेचेगा ही। बाजार का भाव पता कर मैं फैसला करने के लिये राजी हूँ।"

"तो ऐसा करिए, उस लड़के को यहाँ बुला कर मेरे सामने बात-चीत कर लीजिये। मैं चाहता हूँ कि फैसला हो जाए तो उसको भी कहीं तरक्की करने का मौका मिल जाए।"

"आप उससे मिले हैं?"

"हाँ, अभी-अभी मिलकर आया हूँ। उसने मुकद्दमे की बात तो की है, मगर उसके पास किसी अच्छे से वकील के लिये दाम नहीं। मैं विचार कर रहा था कि इसमें मैं उसकी सहायता कर दूँ।"

"मेरा कहा मानिये। वकील खड़ा कर मुकद्दमा चलाने के स्थान घर पर फैसला करा दीजिये तो उसका कल्याण तो होगा ही, साथ ही हमारा भी कल्याण हो जायेगा।"

"तो उसे बुलाइए। मैं यत्न करूँगा, परन्तु दाम उचित होगा तब ही तो फैसला हो सकेगा।"

वही आदमी जो रामकुमार को बुलाने गया था, अब सीताराम को बुला लाया। सीताराम रामकुमार को वहाँ बैठे देख विस्मय करने लगा। रामकुमार ने उस लड़के को अपने समीप बैठाकर कहा, "मुझे पता चला है कि ये लाला हैं जो तुम्हारी भूमि पर मकान बना रहे हैं, इस कारण इनसे बात करने चला आया हूँ।"

"क्या बात की है?"

"यही कि तुमको भूमि का मूल्य दे दें।"

"पर मैं बेचना नहीं चाहता।"

"सीताराम! यह तुम्हारी इच्छा पर है, परन्तु मुकद्दमा तुम दस वर्ष में भी नहीं जीत सकोगे। क्या तब तक बिना पढ़े-लिखे कुलीगीरी करते रहोगे? साथ ही यह तो तुम जानते ही हो कि मुकद्दमा बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रुपये के चलाया नहीं जा सकेगा।"

सीताराम विचार करने लगा। कुछ विचार कर बोला, "लोग कहते हैं कि दस वर्ष में जमीन का दाम दस गुना हो जाएगा।"

"मगर तुम दस वर्ष तक पढ़-लिख न सके तो जीवन-भर मूर्ख-गंवार बने रह जाओगे। इससे जो जमीन में लाभ होने वाला है, उससे कई गुना अधिक हानि हो जाएगी। साथ ही जो रुपया अब लोगे उसका ब्याज दर ब्याज लगने से वह भी बढ़ जाएगा। यह लाभ भी तो हो जाएगा।"

रामसुख दुकानदार रामकुमार की युक्तियों की दाद देने लगा। सीताराम की खानदानी प्रतिभा जागृत होने लगी थी। उससे पूछा, "मगर ये क्या दाम देंगे?"

रामकुमार ने अब लाला से पूछा तो वह कहने लगा, "बाजार भाव जो हो वह दे दूंगा।"

"बताओ सीताराम! क्या कहते हो?"

"मैं उससे पूछ लूं।"

"किससे?"

"वही वसीक:-नवीस, जिसने अर्जी लिखी थी।"

इस पर लाला बोल उठा, "वही वजीरदीन न? वह तो महाबेई-मान है। वह तुमको रुपया उधार देकर मुकद्दमे पर लगाने के लिए कहता होगा। हकीकत यह है कि वह तुमसे मुकद्दमा लड़ाकर तुमको अपना कर्जाई बना लेगा और जब तुम जमीन का दाम पा जाओगे, तब वह सारी जमीन का मालिक हो चुका होगा। वह सब उसके ऋण में ही चली जाएगी।"

"क्यों सीताराम, अब क्या कहते हो?"

"मैं उससे तीन सौ रुपये उधार लेकर खर्च कर चुका हूं?"

"तीन सौ रुपये कहां खर्च किया है?"

"अपनी एक शादी कर रहा हूं।"

लाला और रामकुमार उसका मुंह देखते रह गये। रामकुमार ने पूछा, "किसकी लड़की है?"

"वजीरदीन का एक सम्बन्धी है। उसकी लड़की है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सीताराम ! तुम तो हिन्दू हो । तुम उस मुसलमान की लड़की से कैसे शादी करोगे ?"

"वह मुझे सुन्नत कराने के लिए कह रहा है। मैं डर रहा हूँ ।"

"क्यों ? डर क्यों रहे हो ?"

"पीड़ा होगी न ?"

"तो मत कराओ। मुझे तो लालाजी की बात ठीक मालूम होती है। वह तुमको बरबाद कर देगा ।"

"मुझे कुछ सोचने का मौका दीजिए ।"

"पर मैं तो कल लौट रहा हूँ ।"

"मैं सायंकाल आपके होटल में वज़ीरदीन को लेकर आऊँगा ।"

सायंकाल सीताराम एक शरै मूछों वाले और माथे पर मेहराब का निशान बनाए आदमी को रामकुमार के पास ले आया। यही वज़ीरदीन था। रामकुमार ने उससे पूछ लिया, "क्या कीमत होगी इस ज़मीन की ?"

"इसका दाम दो वर्ष हुए, पाँच हजार था। अब आठ हजार मिल रहा है। परन्तु मैं समझता हूँ कि लाला को अपना ईंट-चूना ज़मीन से उठाना पड़ेगा। इससे वह लाला तो तबाह ही हो जायेगा। इसे भी इस ज़मीन का बीस हजार मिलेगा ।"

"मुकद्दमा कितने समय में समाप्त होगा ?"

"यह कौन बता सकता है ! मुमकिन है कि इसकी अपील हाईकोर्ट तक जाए। इसमें पाँच-छः साल तो लगेंगे ही ।"

"और तब तक यह लड़का कुली का काम करता रहेगा ?"

"मैंने इसकी शादी का इन्तज़ाम किया है । इसका श्वसुर अच्छा कारीगर जुलाहा है और वह इसको अपनी दस्तकारी सिखा देगा।"

रामकुमार को यह बात पसन्द नहीं थी । उसने पूछ लिया, "क्यों सीताराम ! जुलाहा बनोगे ?"

"नहीं साहब ! मैं जुलाहे का काम नहीं करूँगा।"

"तो मेरी बात मानो। अभी तुम यह भूमि बेच दो । उससे मिले रुपयों को बैंक में जमा कर दो और स्वयं बम्बई चले आओ। मैं तुमको कुछ काम करते हुए उन्नति करने का मार्ग बता दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो आप बम्बई में रहते हैं?"
"हाँ; लाला रामसुख से सौदा करो और मेरे साथ चलो।"
"और शादी ?"
"अभी छः-सात वर्ष के बाद करनी चाहिए।"
"पर ये तो लड़की की शादी अभी करने को कह रहे हैं।"
"कितनी बड़ी है लड़की ?"
"अभी छोटी उम्र की है।"
"तो शादी एक-दो वर्ष तक रुक सकती है।"
वज़ीरदीन और सीताराम रामकुमार का मुख देखते रह गए।
"क्यों ? क्या विचार कर रहे हो ?" रामकुमार ने पूछ लिया।
"मैं कुछ भी समझ नहीं रहा।"
"ऐसा करो। तुम मेरे साथ बम्बई चलो। वहाँ काम-धन्धे में लगोगे तो सब बात समझ जाओगे। ज़मीन का दाम वसूल कर लो। उस दाम को बैंक में जमा करा दो और तुम बम्बई चल कर पढ़ो। पाँच-छः वर्ष में इतना कुछ कमा सकोगे कि अपनी बीवी को सुखी रख सकोगे।"

इसके बाद रामकुमार ने वज़ीरदीन ले पूछ लिया—

"क्यों मुंशी साहब ! आप क्या समझते हैं? क्या उम्र है लड़की की ?"

"वह इस वक्त ग्यारह साल की है। तीन साल में वह तैयार हो जाएगी। और तब तक इसको ज़मीन दिलवाने का इन्तज़ाम कर रहा हूँ।"

"बात तो आपकी ठीक है। यहाँ यह किसी को मुख्तारनामा दे-दे और तीन साल तक बम्बई में कारोबार सीखे। तब यह शादी करने चला आएगा। बम्बई में मैं इसको ऐसे काम पर लगा दूंगा कि यह उन्नीस-बीस वर्ष की आयु का होते-होते तीन-चार सौ रुपये महीना कमाने लगेगा। यह कुली बनकर न तो अपने वालदैन का नाम रोशन करेगा और न ही अपने श्वसुर का। जुलाहा तो यह बनेगा नहीं।"

"हाँ, अगर यह शादी की बात पक्की कर जाए तो हमें इस बात की बहुत खुशी होगी।"

"सीताराम ! तुम यहाँ शादी करना चाहते हो न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी।"

"तो परमात्मा को सर्वव्यापक समझ इनसे वचन करो कि तुम उस लड़की से शादी कर लोगे।"

"जी ! मुँशी साहब यह कहते हैं कि मेरी सुन्नत करा दी जाए और तब ही वायदा पक्का होता है।"

"यह तुम जानो। मैं इसमें हाँ या न, नहीं करता।"

सीताराम को कुछ गड़बड़ प्रतीत होने लगी थी। साथ ही वह सुन्नत कराने से डरता था। उसने रामकुमार से पूछ लिया, "आप कब तक यहाँ ठहर सकते हैं ?"

"मैं तो कल चला जाऊँगा।"

"मैं आपको कल मिलकर सब बात बता दूँगा।"

अगले दिन सीताराम रामसुख को लेकर आया। बात सीताराम ने ही शुरू की। उसने कहा, "मैंने वज़ीरदीन से वायदा कर लिया है कि मैं अगले महीने आऊँगा और सुन्नत करा जाऊँगा। दूसरी बात है मुख्तार मुकर्रिर करने की। वज़ीरदीन कहता है कि अगले महीने ही मैं अदालत में हाज़िर होकर उसको मुख्तार बना जाऊँ।

"परन्तु ये लाला कहते हैं कि यह बात मेरे हक में नहीं होगी। ये आठ हज़ार रुपया जमीन का देना चाहते हैं। ये कहते हैं कि यदि आप ज़ामिन बनें तो आज ही आठ हज़ार रुपया दे सकते हैं। इनका यह भी विचार है कि मुझको इन जुलाहों के यहाँ शादी नहीं करनी चाहिए।"

"मैं समझता हूँ," रामकुमार ने कह दिया, "ज़मीन का दाम दस हज़ार से कम नहीं होना चाहिए। साथ ही रुपया बैंक में जमा करा दिया जाए और यह बैंक में लिखा दिया जाये कि यह रुपया सीताराम की ज़मीन का दाम है और इसको तब मिले जब यह ज़मीन रजिस्ट्री करा दे।"

"पर बाबू साहिब !" रामसुख ने कहा, "मैं आपकी ज़मानत इस बात की माँगता हूँ कि यह ज़मीन का सौदा भंग नहीं करेगा।"

"देखिए लालाजी ! मैं ज़ामिन नहीं, गवाह बन सकता हूँ। साथ ही यह जो कुछ भी अब कहेगा अथवा करेगा, वह कानूनी रूप में मान्य नहीं हो सकता। इस कारण मैं रुपयों को बैंक में इस शर्त पर जमा कर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाने के लिए कह रहा हूँ। यदि इस समय यह नहीं मानेगा तब अवस्था वही बन जाएगी जो अब है।"

लाला रामसुख मान गया और रुपया औरंगाबाद के एक बैंक में ही जमा कर दिया गया।

: ६ :

सीताराम रामकुमार के साथ ही बम्बई चला गया। एक दिन सीताराम ने पूछा, "मुझे सुन्नत कराने के लिए औरंगाबाद जाना चाहिए क्या ?"

"तुम कौन हो ? हिन्दू अथवा मुसलमान ?"

"हमारा रहन-सहन तो हिन्दुओं की भाँति है, परन्तु हिन्दू हमें मुसलमान मानते थे। बाबा कहा करते थे कि हमारी शादियाँ हिन्दुओं के घर में नहीं होतीं।"

"मगर रज़ाकारों ने तो तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को हिन्दू माना था।"

"वह इसलिए कि बाबा बहुत शुद्ध हिन्दी बोलते थे।"

"केवल यही नहीं, बल्कि वे और उनके चौदह-पन्द्रह पीढ़ियों के पूर्वज हिन्दू थे। वे मुसलमान लड़कियों से शादी-विवाह करने पर भी हिन्दू थे।"

"और हम मिरज़ा क्यों कहे जाते थे ?"

"तो तुम नहीं जानते कि उस पुस्तक में क्या लिखा था जो तुम्हारे बाबा के पास रखी रहती थी ?"

"नहीं; बाबा कहा करते थे कि जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो उस पुस्तक को पढ़ूँगा।"

"देखो सीताराम ! मैंने वह पुस्तक पढ़ी है और अगर कहो तो उस पुस्तक के आधार पर जो पुस्तक मैंने लिखी है, वह तुमको सुना दूं।"

'तो वह आपने पढ़ी थी ?"

"हाँ; जब मैं तुम्हारे घर जाया करता था, तो उस पुस्तक को पढ़ने जाता था। उसमें से पढ़ी बातों को मैं संक्षेप में लिख लिया करता था। और अब उसके आधार पर मैंने एक पुस्तक लिखी है। मैं उस पुस्तक में एक-दो बातें और देखना चाहता था, परन्तु वह तो अब रही नहीं। अब इसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे ही छपवा दूँगा ।"

"उस पुस्तक का हमारे खानदान से क्या सम्बन्ध था ?"

"वह तुम्हारे खानदान के एक बुजुर्ग ने आत्मकथा के रूप में लिखी थी। वह एक औरत थी और एक बहुत बड़े मुसलमान ने उसे जबरदस्ती अपने हरम में डाल दिया था। वहाँ रहते हुए उसने लगभग वह सारी पुस्तक लिख दी थी। कुछ अंश, हरम से छूटने के बाद, अपने घर में आकर उसने लिखे थे।"

जब रामकुमार ने बताया कि उसकी एक बुजर्ग औरत को एक बड़े मुसलमान ने जबरदस्ती अपने हरम में डाल लिया था तो सीताराम का मुख क्रोध से लाल हो गया। रामकुमार ने उसको शान्त करने के लिये कह दिया, "यही वजह है कि तुम्हारे लगभग सब पूर्वज मुसलमान लड़कियों से विवाह कर उनसे हिन्दू औलाद पैदा करते रहे हैं।"

"तब तो साहब ! मैं यह कहानी सुनूँगा।"

"यह एक लम्बी कहानी है। कई दिन लगेंगे सुनने में। तुम अपने काम से लौट कर रात का खाना खाकर मेरे पास आ जाया करो और तुम्हें थोड़ी-थोड़ी कर सारी कहानी सुना दूंगा।"

सीताराम बहुत उत्सुकता से इस कहानी का सुनने के लिये रामकुमार का मुख देख रहा था। रामकुमार ने आंखें मूंद कुछ स्मरण किया और कह दिया—

"यह कहानी अति हृदय-विदारक है। इस पर भी इसके लिखने में लाभ प्रतीत हो रहा है। एक ओर मुसलमानों को लाभ होने की संभावना है और दूसरी ओर हिन्दुओं को। यही इतिहास लिखने का लाभ होता है।

"परन्तु यह केवल इतिहास नहीं। इतिहास तो घटनाओं को लिख देने मात्र का नाम है। मैं इस बात को अत्यावश्यक समझता हुआ भी इसको पर्याप्त नहीं मानता। इतिहास का लाभ तो उन घटनाओं का कारण और उनके परिणाम लिख देने से ही होता है और इनको ही मैंने अपनी पुस्तक में सम्मिलित करने का यत्न किया है।"

मिरज़ा सीताराम रामकुमार के साथ बम्बई में आकर अपनी उन्नति के लिए सतत प्रयत्न कर रहा था। यह तो स्पष्ट ही था कि उसके पूर्वज, सब के सब बुद्धिशील व्यक्ति थे। वह भी अपनी आठ-नौ वर्ष की आयु तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस वातावरण में रहा था। पिछले सात-आठ वर्ष के जीवन में कुलियों की संगत नें रहकर उसकी बुद्धि का विकास कुछ रुक अवश्य गया था, परन्तु अब अवसर मिलते ही पुनः उसकी बुद्धि द्रुत गति से विकसित होने लगी थी।

सीताराम को बम्बई में आये एक मास के लगभग हो गया था। अच्छा भोजन, स्वच्छ वस्त्र और आवास तथा बुद्धिशीलों की संगत के कारण उसकी बुद्धि अपना कार्य करने लगी थी।

वह सुन्नत कराने से डरता था। इसी कारण उसने रामकुमार से उंक्त प्रश्न पूछा था। वह चाहता था कि रामकुमार उसको मना कर दे तो वह सुन्नत कराने से बच जायेगा। इस पर भी वह वज़ीरदीन की साली की लड़की हमीदा से विवाह के लिए लालायित था। इस द्वन्द्व को सुलझाने के लिए ही उसने रामकुमार से प्रश्न किया था।

वह रामकुमार की कोठी के एक कमरे में ही रह रहा था। वहाँ से वह लगभग एक मील के अन्तर पर एक वर्कशाप में फिटर का काम सीखने जाता था। वहाँ से उसे चव्वन रुपये मासिक काम सीखने का भत्ता मिलता था। खाना रामकुमार के घर से मिल जाता था। अपने भत्ते से वह अपने वस्त्र इत्यादि बना लिया करता था तथा कुछ बचत भी कर रहा था।

रामकुमार उसे जुलाहे की लड़की के सम्मोहन से निकालने के लिये उसके मन में अपने पूर्वजों के प्रति गौरव और अभिमान उत्पन्न करना चाहता था। साथ ही उसके मस्तिष्क में हिन्दू और मुसलमान के अर्थों को स्पष्ट कर देना चाहता था। रामकुमार की पत्नी उसे हिन्दी और प्रारम्भिक गणित सिखा रही थी। अभी तक तो उसे उर्दू भाषा का बहुत अल्प ज्ञान था और गणित का अभ्यास न रहने से वह भूल चुका था।

रामकुमार ने जब उसके पूर्वजों की बात की तो सीताराम अपने खानदान की पुस्तक के विषय में अधिक जानने की लालसा करने लगा। रामकुमार ने इस लालसा को जीवित रखने के लिए उसी समय पुस्तक निकाली और उसके कुछ पन्ने सुना दिये।

कहानी इस प्रकार थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

प्राचीन आंध्र राज्य, काल के घात-परिघात से छटनी होता हुआ बहमनी राज्य बना और जब यह भी काल का ग्रास हुआ तो इसका एक टुकड़ा अहमदनगर राज्य बन गया। इस राज्य में एक प्राचीन गाँव इस हेर-फेर से बचता हुआ चला आ रहा था। इस पर भी यह जाम्ब से जांव हो गया था। यह गाँव दौलताबाद से कुछ अन्तर पर स्थित था।

इस गाँव में एक विद्वान ब्राह्मण रहता था। उसका नाम था त्रिभुवन कीर्ति। वह ब्राह्मण ज्योतिष विद्या का प्रख्यात विद्वान् था। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी।

पण्डित त्रिभुवन कीर्ति की पत्नी अति सुन्दर थी और पंडितजी को अति प्रिय थी। इस पत्नी ने तीन बच्चों को जन्म दिया। एक लड़की और दो लड़के थे। सबसे बड़ा लड़का था। नाम था विश्वनाथ। दूसरी लड़की थी। उसका नाम था नीलमणि। लड़की सौन्दर्य में अपनी माँ को पार कर गयी थी। तीसरा लड़का था। इसका नाम था चन्द्रशेखर। इसका देहान्त छोटी अवस्था में ही हो गया था।

त्रिभुवन कीर्ति अपने दो बच्चों को स्वयं ही अध्ययन करवाता था। नीलमणि बुद्धि की प्रखरता में अपने भाई विश्वनाथ से बढ़-चढ़ कर थी।

पण्डितजी की दिनचर्या कुछ ऐसी रहती थी कि वे प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में जागते थे और स्नानादि से निवृत्त हो पूजा-पाठ में लग जाते थे। घर में सरस्वती मूर्ति की स्थापना थी और वह ही परिवार की इष्ट देवी थी।

नीलमणि अभी सात वर्ष की ही थी कि वह सरस्वती की आराधना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में स्तोत्र अति मधुर स्वर में गाया करती थी और गाँव के लोग उसको भगवती सरस्वती का ही अवतार मानते थे।

इन्ही दिनों एक संन्यासी उस गाँव में पधारे और आतिथ्य के लिए पंडित त्रिभुवन कीर्ति के द्वार पर जा पहुँचे। नीलमणि द्वार पर खड़ी थी। स्वामीजी को नारायण हरि का घोष करते सुन झुककर नमस्कार कर वह बोली, "महाराज! पधारिये। भोजन का समय है। माताजी रसोईघर में हैं और बाबा एक पड़ोसी के यहाँ किसी अनुष्ठान के सम्बन्ध में गए हैं। आप बैठिए।" उसने द्वार के बाहर घर के प्रांगण में लकड़ी की एक बड़ी-सी चौकी की ओर संकेत कर पुनः कहा, "मैं आपके लिए भोजन लाती हूँ।"

स्वामीजी तो भोजन के लिए ही पधारे थे। वे चौकी की ओर बढ़े तो लड़की ने अपनी धोती के आँचल से चौकी को पोंछ दिया।

"बेटी! धोती गन्दी कर ली है।" स्वामीजी ने मुस्कराते हुए कहा।

"पर महाराज! आपका भगवा उत्तरीय तो गन्दा नहीं होगा।"

स्वामीजी इस सतर्क उत्तर को सुन विस्मय में लड़की का मुख देखने लगे। फिर एकाएक पूछ बैठे, "तो इस भिखारी के उत्तरीय की बहुत चिन्ता है तुम्हें?"

"हाँ महाराज!" लड़की ने तुरन्त ही उत्तर दिया, "इस भगवे रंग से ही तो देश और जाति की लाज बची हुई है।"

स्वामीजी को यह उत्तर अति रहस्यमय प्रतीत हुआ। वे समझ गये कि लड़की अति प्रतिभाशाली और किसी योग्य शिक्षक द्वारा शिक्षित है। वे एक क्षण तक तो लड़की के सुन्दर मुख की ओर देखते रहे। अगले ही क्षण वे चौकी पर बैठ बोले, "तुम्हारे बाबा कब तक आने वाले हैं?"

"बस, आते ही होंगे।" उसने आकाश की ओर देखा और सूर्य को सिर पर आये देखकर कह दिया, "आपके भोजन करते-करते आने की आशा है।"

"तो हम उनके आने पर भोजन करेंगे।"

"तो मैं माँ को कह आऊँ। वह तो आपके घोष को सुन खाना परसने लगी होंगी।"

स्वामीजी इस सतर्कता और कर्त्तव्य के प्रति तत्परता की बात सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्न हुए। लड़की तो भीतर से बाहर नहीं लौटी, परन्तु घर के स्वामी पंडित त्रिभुवन कीर्ति बाहर के द्वार से प्रांगण में आ पहुँचे। वे घर में एक संन्यासी को चौकी पर विचारमग्न बैठे देख समझ गये कि गाँव में कोई नवागन्तुक हैं और भोजन की आकांक्षा में आये हैं। वह यह भी समझ गये कि घर के किसी प्राणी ने उन्हें वहाँ बैठाया है।

पंडित त्रिभुवन समीप आये और चरण-स्पर्श कर प्रणाम कर बोले, "महाराज! ......।" परन्तु वे आगे नहीं कह सके। मौन हो वे बहुत ध्यानपूर्वक स्वामीजी का मुख देखने लगे। स्वामीजी भी मुस्करा रहे थे। उनकी मुस्कराहट से पंडितजी को समझ आया कि उनका संशय ठीक है। और वह पूछने लगे, "सूर्याजी के सुपुत्र नारायणजी हैं?"

"हाँ भैया! परन्तु अब मैं रामदास हूँ। आप समझे हैं न? राम का दास बजरंगबली।"

"हाँ महाराज!" पंडित त्रिभुवन अभी तक इस तेजपुंज संन्यासी के सामने हाथ जोड़े हुए खड़ा था।

"भैया, बैठो।" स्वामीजी ने कहा, "मैं अपने भाई के घर पर नहीं गया। वास्तव में यहाँ भी अनिच्छित निरुद्देश्य ही पहुँचा था। द्वार के बाहर खड़े हो नारायण हरि का घोष तो ऐसे ही किसी ब्राह्मण का घर समझ किया था। तुम्हारी लड़की ने यहाँ भोजन करने के लिये बैठाया तो समझ गया कि त्रिभुवन भैया के घर पहुँच गया हूँ। अभी विचार ही कर रहा था कि भैया के दर्शन हो गये।"

"तो भाई को यहाँ बुला दूं?"

"नहीं। मैं भोजन कर चल दूंगा।"

"भीतर समाचार गया है?"

"लड़की गयी है। मैंने ही कहा था कि उसका बाबा आयेगा तो भोजन करूँगा। भैया! वह बहुत ही समझदार लड़की है। मैं तुमको ऐसी सुन्दर, सुशील और बुद्धिशील लड़की पाने पर बधाई देता हूँ।"

"परन्तु महाराज! उसका पूर्ण जीवन संकटमय दिखाई दे रहा है।"

"तो तुम भी ज्योतिष का अभ्यास रखते हो?"

"इस विद्या में अपने पिताजी का उत्तराधिकारी हूँ। उन्होंने ही आपके जन्म पर यह ज्योतिष लगाया था कि आप संन्यासी बनेंगे, अखंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे। जब आप भाग गये थे तो उन्होंने ही आपकी माता और पिता को सांत्वना दी थी। मैं उस समय आपके घर पर ही था। माताजी आपके कहीं भी न मिलने पर व्याकुल हो हा-हाकार कर रही थीं। तब पिताजी ने उनको और आपके पिता सूर्याजी को कहा था, भाभी ! भाग्य में ऐसा ही लिखा था। तुमने भाग्य को टालने का यत्न किया, परन्तु टाल नहीं सकीं न ? ईश्वर के विधान और बालक के कर्म-फल के सामने तुम्हारी नहीं चली, अब सन्तोष रखो। नारायण छियासठ वर्ष की आयु तक एक महान् कार्य करता हुआ स्वर्गारोहण करेगा।"

"उस समय आप ग्यारह वर्ष के रहे होंगे। मैं उस समय बारह वर्ष की आयु का था, जिस लड़की से आपका विवाह होने वाला था, उससे मेरा विवाह हो गया और अब वह मेरे घर-आँगन को अपने दिव्य स्वरूप से प्रकाशमान कर रही है।"

"यह ऐसा ही बधा था।" स्वामीजी ने कह दिया, "लड़की को संकट-मुक्त करने के लिए भगवान राम का भजन किया करो।"

"यह तो महाराज निरन्तर करता हूँ। लड़की से भगवान सूर्य की उपासना करवाता हूँ। लड़की नीम के वृक्ष की भाँति बढ़ती चली जाती है। इसकी आयु का संकट-काल सम्वत् १७०४ से आरम्भ होगा और इसका यह शरीर सम्वत् १७७० में छूटना लिखा है।"

इस समय गृहिणी हाथ में जल भरा गिलास लिए चली आयी। लड़की हाथ में अंगोछा लिए पहुँच गयी। पंडित त्रिभुवन ने बताया, "यह मेरी पत्नी चन्द्रमुखी है।"

स्त्री ने भूमि को छूकर चरण-वन्दना कर दी और हाथ धोने के लिए पानी आगे कर दिया।

स्वामीजी ने हाथ धोये और पलथी मार भोजन करने के लिए चौकी पर बैठ गये। चौकी के एक छोर पर त्रिभुवन बैठा था। गृहिणी भीतर गयी और पत्तल पर दाल-भात, शाक, चटनी, अचार लिए हुए यहाँ आ गयी।

जब तक भोजन होता रहा, चन्द्रमुखी और नीलमणि सामने खड़ी रहीं। भोजन करते-करते ही विश्वनाथ भी खेतों से वापस आ पहुँचा। वह उस समय दस वर्ष का सुकुमार था। उसने भी एक संन्यासी को भोजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करते देखा तो झुककर प्रणाम कर दिया।

स्वामी जी ने लड़की की ओर देखकर पूछ लिया, "क्या नाम है बेटी ?"

"नीलमणि।"

"देखो बेटी ! यह शरीर नाशवान् है। इसमें चेतनस्वरूप जीवात्मा है। वास्तव में तुम वही जीवात्मा हो। जीवात्मा शरीर में बंधा होने पर भी निर्लिप्त होता है। उसका सम्बन्ध कर्मों से है। कर्म तीन प्रकार के हैं। नित्य, नैमित्तिक और काम्य। इन तीनों में काम्य कर्म ही आत्मा को पवित्र अथवा कलुषित करते हैं। नैमित्तिक कर्म विवशता हेतु होते हैं। यदि विवशता में मनुष्य कर्म करे तो वे फलहीन होते हैं। उनसे किए पुण्य अथवा पापों का प्रभाव आत्मा पर नहीं होता।"

स्वामीजी ने भोजन कर लिया था। उन्होंने हाथ धोये, कुल्ला किया और अपना कमंडलु उठा बोले, "राम जी तुम सब को सुमति दें और कठिनाई में तुम्हारे सहाई हों।"

विदा होने से पूर्व लड़की से बोले—

"आहे तितुकें जतन करावें।
पुढ़ें आणिक मेलवावें।।"[1]

"किसकी रक्षा करूँ और किसकी वृद्धि करूँ महाराज ?" लड़की का सतर्क प्रश्न था।

"यह अपने बाबा से पूछ लेना। वे विद्वान् हैं। ठीक-ठीक बता देंगे।"

स्वामीजी गए तो उनके ओजपूर्ण शब्दों से और उनकी प्रभावपूर्ण वाणी से प्रभावित चारों प्राणी उन्हें जाते देखते रह गए। तदुपरान्त पंडित त्रिभुवन ने कह दिया, "चलो, भोजन करें।"

सब हाथ धो रसोईघर में जा बैठे। भोजन करते हुए पंडितजी ने कह दिया, "ये सूर्याजी के छोटे लड़के नारायण हैं।"

बच्चे तो समझे नहीं, परन्तु चन्द्रमुखी मुख में ग्रास डालते-डालते रुकी और मुख देखती रह गई। पंडित ने अपनी बात की व्याख्या कर दी, "हाँ, गंगाधर का छोटा भाई।"

---

१. जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे बचाने का यत्न करो और उसकी वृद्धि के लिए यत्नशील रहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भगवान् इसका भला करे !"

"यह अपने जीवन से संतुष्ट प्रतीत होता है।"

"आपने मेरे विषय में भी कुछ कहा था ?"

"यही कि उसके घर से भाग जाने से मैं सौभाग्यशाली हो गया हूँ।"

"आपने ठीक नहीं किया।"

"क्या ठीक नहीं किया माँ ?" नीलमणि ने पूछ लिया।

"कुछ नहीं।" माँ ने कहा और भोजन करना आरम्भ कर दिया।

"मैं बताता हूँ। सुनो नीला ! आज से तीस वर्ष पूर्व गंगाधर पंत के छोटे भाई नारायण पंत का विवाह हो रहा था। विवाह के लिये वेदी सजाई गई और वर-वधू को लाकर वेदी पर बैठाया गया। पूर्व इसके कि विवाह-संस्कार आरम्भ हो, वर एकाएक उठा और वहाँ से भाग गया। यह स्वामी वही वर था। अब इसका नाम रामदास है। सुना है कि इसने एक चमत्कार किया है। कुछ वर्ष हुए एक युवक का देहान्त हो गया था। उसकी अर्थी जा रही थी। उसकी पत्नी उसी के साथ सती होने के लिए पूर्ण शृंगार किए साथ-साथ जा रही थी। ये स्वामीजी मार्ग के एक किनारे पर खड़े हो गये। मृत की पत्नी ने इनको देखा तो इनसे आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए इनकी चरणवन्दना कर दी।

स्वामीजी ने आशीर्वाद दे दिया, "सौभाग्यवती रहो। आठ पुत्रों की माता बनो।"

वह युवती हँसकर पूछने लगी, "महाराज ! यह आशीर्वाद इस जन्म के लिए दे रहे हैं अथवा अगले जन्म के लिए ?"

स्वामीजी एक क्षण इसका अर्थ समझने के लिए मौन हो युवती की ओर देखते रहे। फिर समझकर बोले, "वह तो इसी जन्म के लिए था। अच्छा ठहरो।" उनके हाथ में कमण्डलु था। उसमें जल भरा था। स्वामीजी ने अर्थी भूमि पर रख देने के लिए कह दिया। जब अर्थी रखी गई तो इन्होंने मृत शव के ऊपर से कपड़ा हटवाया और कमण्डलु के जल से अभिषिक्त कर दिया। वह युवक जीवित हो उठ खड़ा हुआ।

"सुना है वह स्त्री दो पुत्रों को जन्म दे चुकी है। यह घटना आज महाराष्ट्र-भर में विख्यात हो रही है।"

"पर माँ ! तुमने यह क्यों कहा कि बाबा ने यह बताकर ठीक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया कि तुम हमारी माँ हो।"

चन्द्रमुखी चुपचाप भोजन करती रही। उसकी आँखें तरल हो रही थीं। पंडित जी ने कह दिया, "नीला ! बात भाग्य और पुरुषार्थ में झगड़े की है।

"तुम्हारे बाबा ने सूर्या पंत को इसके जन्म के समय कहा था कि यह लड़का अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करेगा और संन्यासी हो जायेगा। इसकी माँ ने, जब यह ग्यारह वर्ष का था, इसका विवाह अपने भाई की लड़की से करने का निश्चय किया जिससे यह लड़का संन्यासी न हो सके। परन्तु हुआ वही जो भाग्य में बधा था। लड़का वेदी से उठकर भाग गया।

"इसकी माँ के भाई ने अपनी लड़की का विवाह मुझसे कर दिया। मेरे साथ विवाह की बातचीत पहले से ही चल रही थी। पीछे जब नारायण विवाह के लिये तैयार हुआ तो मुझसे विवाह की बात छोड़ दी गई; परन्तु नीला और नीला की माँ को मेरे घर की शोभा बनना लिखा था। अतः यह सब हो गया।"

"तो माँ ! रोने क्यों लगी हो ? जो भाग्य में लिखा था सो हो गया। अब इन स्वामीजी की ही बात को स्मरण कर लो—

'आहे तितुकें जतन करावें। पुड़ें आणिक मेलवावें।'

पंडितजी हँस पड़े और बोले, "सौभाग्यवती ! अब जो कुछ मिला है उसी में वृद्धि करो। देखो, कहीं यह भी न छूट जाए।"

: २ :

विश्वनाथ दस वर्ष का बालक मात्र था। परन्तु वह व्यायाम का बहुत शौकीन था। गाँव में एक अखाड़ा था। गाँव के लोग उसमें कुश्ती और व्यायाम के लिए जाया करते थे। विश्वनाथ भी वहाँ जाता था और डंड-बैठक लगाया करता था। बालक अपनी समावस्था के बालकों में एक प्रिय नेता बनता जा रहा था।

उस अखाड़े में देश में मच रही अंधेरगर्दी के समाचार आते रहते थे। अहमदशाही राज्य दिल्ली से संधि रखता था। इस पर भी अकबर के काल में इसे मुगल राज्य में सम्मिलित कर लिया गया था। अकबर के शासन-काल में ही अहमदनगर के हिन्दुओं को कष्ट होने लगा था। यह कष्ट जहाँगीर के काल में बढ़ता गया और शाहजहाँ के काल में यह चरम सीमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पहुंच गया था।

गाँव के लोग जानते थे कि बुरहानपुर से वार्षिक लगान प्राप्त करने सरकारी अधिकारी आते हैं और उस समय वे हिन्दू जनता को पीड़ित करते हैं।

देश में हिन्दू अपने-अपने इष्ट देव के मन्दिर बनाते थे और लगान वसूल करने आये अधिकारी उन मन्दिरों को देख चिढ़ जाया करते थे। यत्र-तत्र वे मन्दिरों को गिरा दिया करते थे और यदि कहीं किसी मन्दिर के समीप उनके खेमे लग गये तो मन्दिर को गिरा उन्हें शौचालय बनाने में वे प्रसन्नता अनुभव करते थे। एक बार गिराया गया मन्दिर पुनः बनने नहीं दिया जाता था।

अकबर के काल में तो केवल उन मन्दिरों पर आघात होता था जिन की राजसी कार्य के लिये आवश्यकता होती थी। साथ ही कभी किसी मन्दिर के पुजारी ने अकबर के पास अपनी अर्जी ले जाने का साहस किया तो फिर उसे मन्दिर की मरम्मत करने की स्वीकृति मिल जाती थी। कभी-कभी इस कार्य के लिये कुछ सहायता भी मिल जाती थी। परन्तु यह बात जहाँगीर और शाहजहाँ के काल में अति दुर्लभ हो गई थी। जहाँगीर अधिकतर पंजाब में रहता था। उसने अपना निवास-स्थान लाहौर बना लिया था। वर्ष में थोड़े दिन के लिए ही वह आगरा में आकर रहता था।

अकबर के काल में एक बात और हुई थी। जहाँगीर का नाम उस समय सलीम था। उसका अपने लड़के खुसरो के साथ झगड़ा हो गया था क्योंकि हिन्दुओं ने खुसरो को अकबर का उत्तराधिकारी बनवाने का यत्न किया था। परन्तु हिन्दुओं का यह प्रयास सफल नहीं हो पाया। सलीम ने कट्टरपंथी मुसलमानों का एक गुट अपनी सहायता के लिए बना रखा था और उस गुट ने खुसरो के प्रयत्नों को असफल करने में सलीम की सहायता की थी। अतः जब सलीम राजगद्दी पर बैठा और जहाँगीर के नाम से विख्यात हुआ, तो उन कट्टरपंथी मुसलमानों का साहस बढ़ गया और उन्हीं में से एक अहमदनगर का सूबेदार बन गया। उसने अहमदनगर के हिन्दुओं को निःशेष करने का यत्न करना आरम्भ कर दिया।

शाहजहाँ की बीवी मुमताज महल एक ऐसे ही कट्टरपंथी मुसलमान आसफखाँ की बेटी थी। आसफखाँ नूरजहाँ का भाई था और उसने उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पति को मरवा कर उसे जहाँगीर के हवाले कर दिया था।

मुमताज महल मुतअस्सिब मुसलमान थी और मुसलमानों के अतिरिक्त सब मजहब वालों से घृणा करती थी। इस कारण शाहजहाँ के प्रारम्भिक राज्यकाल में मुगल-साम्राज्य के प्रायः सब सूबों में सूबेदार इसी बेगम की सलाह पर रखे गये थे।

मुमताज का देहान्त सम्वत् १६८८ में हो गया, परन्तु तब तक शाहजहाँ मुगल-सम्राट के पद का मनमाना भोग करने लगा था। उसके राज्य की वह नीति, जो जहाँगीर के काल में चली थी और मुमताज के जीवन-काल में उग्र हुई थी, बदली नहीं जा सकी। शाहजहाँ का प्रायः सम्पूर्ण काल विषयवासना में व्यतीत होता था और राज्यकार्य वही लोग चला रहे थे, जो पहले नियुक्त हो चुके थे।

शाहजहाँ के दरबार में किसी दरबारी की सहायता और सिफारिश के बिना दरबार में कोई अर्जी उपस्थित हो नहीं सकती थी। अतः दरबारियों का दिमाग आसमान पर चढ़ रहा था।

इस परिस्थिति में हिन्दू युवकों के मन में संगठन और विद्रोह की भावना उत्पन्न होने लगी थी। गाँव-गाँव में अखाड़े खुल गये थे।

जिस दिन समर्थ रामदास उसके घर खाना खाकर गये थे, विश्वनाथ सायंकाल अखाड़े में गया तो उसने स्वामीजी की बात बता दी। उसने स्वामीजी की विदा होते समय दी सीख का उल्लेख कर दिया। जब उसने स्वामीजी का वह पद सुनाया जो उन्होंने उसकी बहिन नीलमणि को सम्बोधित कर कहा था, तो अखाड़े के नायक ने हँसते हुए कहा, "विश्वनाथ, जानते हो, देश-भर में ये जो अखाड़े खुल रहे हैं, किसके कहने से खुल रहे हैं?"

"किसके कहने से खुल रहे हैं?" विश्वनाथ ने विस्मय में नायक जादोजी का मुख देखते हुए पूछ लिया।

"यह समर्थ रामदासजी की प्रेरणा का ही फल है।"

"वे ऐसा क्यों कर रहे हैं?"

"मैं पिछली कार्तिक पूर्णिमा को चाफल गया था और वहाँ समर्थजी सभी जाने वालों को यह दीक्षा देते थे जो तुम बता रहे हो। जो कुछ तुम्हारे पास बचा है उसकी रक्षा करो, उसकी वृद्धि करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु वे युवकों को एक गुरुदीक्षा भी देते थे।"

"वह क्या थी नायक ?"

"तुम युवक नहीं हो। इसलिये तुमको नहीं दी जा सकती।"

"मैं युवक तो हूँ। अब ग्यारहवें वर्ष में पहुँच गया हूँ।"

इस पर सब हँसने लगे। अखाड़े के सब सदस्य समर्थजी की बात सुनने वहाँ एकत्रित हो गए थे। सबको हँसते देख विश्वनाथ ने कहा, "हँसते क्यों हो ? यदि किसी को सन्देह है कि मैं युवक नहीं हूँ, तो वह मुझसे कुश्ती करके देख ले।"

इस पर तो सब ने ताली पीट दी। ताली पीटने वाले विश्वनाथ के समवयस्क ही थे। वह उनका नेता था और उसे अपने बड़ों को चुनौती देते देख वे प्रसन्न हुए थे।

इस पर नायक ने मुस्कराते हुए कहा, "बात विश्वनाथ की ठीक है। जैसे किसी का शौर्य उसकी आयु से नहीं नापा जाता, वैसे ही किसी का यौवन भी उसकी आयु का विषय नहीं। बताओ, कौन उसको युवक नहीं मानता ? जो नहीं मानता उसे इससे कुश्ती लड़नी पड़ेगी।"

पन्द्रह वर्ष के एक कुमार ने आगे बढ़कर कह दिया, "नायक ! वह तो अभी कुमार भी नहीं है। उसे युवक कौन मानेगा ? मैं उसके इस दावे को झुठला सकता हूँ।"

"तो कुश्ती हो जाये ?" नायक ने कह दिया।

विश्वनाथ तो पहले ही कपड़े उतार लँगोटा बाँधे खड़ा था। विश्वनाथ की चुनौती को स्वीकार करने वाला एक दादो पन्त था। वह गंगाधर पन्त का तीसरा लड़का था। विश्वनाथ तुरन्त कूद कर अखाड़े में जा खड़ा हुआ और दादो को कुश्ती के लिए आह्वान करने लगा।

कुश्ती हुई और विश्वनाथ अपने से दो मुट्ठी ऊँचे लड़के दादो पर इतना अकस्मात झपटा कि वह पहले झटके में भूमि पर गिर कर चित हो गया। जब तक दादो को यह चेतना हुई कि वह चित हो गया है, विश्वनाथ कूद-कूद कर अपनी विजय घोषित करने लगा था। सब छोटे-बड़े विश्वनाथ के करतब की सराहना पर तालियाँ बजा रहे थे। नायक ने नारा लगा दिया, "हर हर महादेव !"

हर हर महादेव का नारा इस समय पूर्ण महाराष्ट्र प्रदेश में गूंजने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगा था। यह समर्थ गुरु रामदासजी के प्रयास का ही फल था।

अब विश्वनाथ ने अपनी माँग उपस्थित कर दी। उसने कहा, "स्वामीजी का गुप्त गुरुमन्त्र मुझे मिलना चाहिए।"

नायक जादोजी ने कहा, "हाँ, तुमने अपने को अधिकारी सिद्ध कर दिया है। परन्तु यह गुरुमन्त्र गुप्त है और गुप्त रूप में ही दिया जाएगा। सब के सामने नहीं दिया जा सकता।"

"तो नायक ! कब दोगे यह गुरुमन्त्र ?"

"घर लौटते समय। जब तुम और मैं अकेले होंगे।" इस पर पुनः हँसी होने लगी, परन्तु विश्वनाथ संतुष्ट था। उसे विदित था कि जब-जब नायक ने किसी बात का वचन दिया है, उसने उसका पालन किया है। इस कारण सब को हँसते देख भी वह प्रसन्न था।

जब पुनः सब युवक, कुमार और बालक व्यायाम में लीन हो गए तो दादो विश्वनाथ के पास आया और कहने लगा, "तुमने मुझको धोखे से चित किया है। मैं अभी असावधान ही खड़ा था।"

"दादो यह तो नीति है। युद्ध में बल से नीति प्रबल होती ही है।"

दादो को यह बात उसके नायक ने बताई थी। इससे वह इसकी सत्यता को समझ चुप कर गया। उसे चुप देख विश्व ने कहा, 'दादो ! तुम और मैं तो सम्बन्धी हैं न ? इस कारण हमारा परस्पर द्वेष नहीं है। तुम्हें मेरी चुनौती को स्वीकार नहीं करना चाहिए था। जब किया तो मुझे तुमको परास्त करना आवश्यक हो गया।"

"ठीक है, विश्वनाथ ! हम भाई-भाई हैं, मराठे हैं और एक ही उद्देश्य के पालन में संलग्न हैं।"

"कौनसा उद्देश्य ?"

"वह तुमको नायक बतायेंगे। यही गुप्त मन्त्र है जो वह देने वाले हैं।"

"तो तुमने मन्त्र लिया हुआ है।"

"हाँ।"

"क्या है वह ?"

"यह तो नायक ही बतायेंगे।"

विश्वनाथ जानता था कि सायंकाल यह मन्त्र उसको मिलने वाला है। इस पर भी बालकों की भाँति किसी रहस्य को जानने की उत्सुकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को वह नियन्त्रण में नहीं रख सका।

उस दिन सायंकाल जादोजी राव ने विश्वनाथ को बुलाकर कहा, "तुम मेरे साथ चलोगे।"

विश्वनाथ उसके साथ हो लिया। वह उसको गाँव के हनुमानजी के मन्दिर में ले गया। दोनों ने देवता को प्रणाम किया और फिर हाथ जोड़ देवमूर्ति के सम्मुख खड़े हो गए। मूर्ति के सम्मुख दीपक जल रहा था और सायं समय होने के कारण पुजारी शौचादि के लिए गया हुआ था। नायक और शिष्य दोनों कुछ देर तक खड़े रहे। फिर एकाएक जादोजी राव अपने शिष्य की ओर घूमा और बोला, "मैं तुमको यहाँ लाया हूँ। इस कारण कि जो कुछ मैं कहूँगा, वह इस देवता का कथन मान गुप्त रखोगे। उस पर आचरण करोगे, परन्तु किसी को बताओगे नहीं कि तुमको किसने यह कहा है ?

"बताओ, वचन देते हो ?"

"हाँ, नायक ! मैं वचन देता हूँ।"

"स्मरण रखो कि यही मन्दिर है, जहाँ समर्थ रामदास को, जब वे नारायण नाम से जाने जाते थे, इसी देवता ने यह वर दिया था कि वह देश में विप्लव खड़ा कर देगा। समर्थ रामदास स्वामी यही करने के लिए सब सज्ञान और बुद्धिशील युवकों को यह दीक्षा दे रहे हैं।"

"आहे तितुकें जतन करावें। पुड़ें आणिक मेलवावें ।।
महाराष्ट्र राज्यचि करावें। जिकड़े-तिकड़े ।।"[१]

विश्वनाथ अभी मुख देखता हुआ अर्थ समझने का यत्न ही कर रहा था कि जादोजी राव ने आगे कहा, "अब घर जाओ और यह किसी को नहीं बताना। परन्तु इसको पूरा करने के लिए मृत्यु का भी आलिंगन करने से नहीं डरना।"

विश्वनाथ ने महावीर की मूर्ति को प्रणाम किया और घर को चल दिया।

---

१. जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बचाने का यत्न करो और उसमें वृद्धि का यत्न करो। यत्र-तत्र सर्वत्र महाराष्ट्र राज्य की स्थापना करो और उसका प्रसार करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २ :

विश्वनाथ इस भावना से कि उसने महाराष्ट्र में स्वराज्य स्थापित करने में सहयोग देना है, पढ़ाई-लिखाई को गौण समझ शरीर निर्माण में लग गया।

कभी पण्डित त्रिभुवन कहते, "विश्वनाथ! तुम्हें पाठ स्मरण नहीं रहता। क्या कारण है?"

"बाबा! पाठ नीला स्मरण करती है और मैं डण्ड पेलता हूँ।"

"पर डंड पेले हुए क्या काम आएँगे? यदि शक्ति के संचालन के लिए बुद्धि में विकास नहीं कर सकोगे?"

"बुद्धि तो महाबली श्री हनुमान जी देंगे?"

"ओह! तो तुम बजरंगबली की उपासना करते हो?"

"हाँ बाबा!"

"फिर भी कुछ पढ़ लोगे तो ज्ञान से बल का प्रयोग सीख सकोगे।"

इस प्रकार विश्वनाथ नायक और पिता पण्डित त्रिभुवन कीर्ति की परस्पर विरोधी दिशाओं पर चलने लगा। कभी तो वह व्याकरण और गीता बाबा से पढ़ने लगता, कभी मन्दिर में जा हनुमानजी से वर पाने की माँग करने लगता।

विश्वनाथ की बहिन नीला व्याकरण और शास्त्र पढ़ती थी। साथ ही देव-भक्ति के गीत सीखती और गाती थी। उसका स्वर अति मधुर था। पण्डित त्रिभुवन अपने काल में संगीत में बहुत रुचि लेते थे और उन्होंने कला में नीला को भी अपनी शिष्या बना रखा था।

इस प्रकार सात वर्ष व्यतीत हो गए। एक ओर नीला एक विदुषी लड़की बन गई और दूसरी ओर विश्वनाथ क्षत्रिय-स्वभाव का बन गया। इस काल में वह एक-दो बार समर्थ रामदासजी के दर्शनार्थ एवं उपदेश सुनने चाफल भी गया था। चाफल में स्वामी समर्थजी का मुख्य केन्द्रीय मठ था। वे अधिकांश समय यहीं रहते थे और नित्य उपदेश, भजन-कीर्तन किया करते थे। शरद् पूर्णिमा को यहाँ एक महान उत्सव होता था और उसमें लाखों की भीड़ एकत्रित हो जाती थी। स्वामीजी ने महाराष्ट्र की भूमि पर बीसियों ऐसे मठ स्थापित कर रखे थे। वे उन सब मठों में भ्रमण भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया करते थे। इस पर भी उनका मुख्य स्थान चाफल ही था।

विश्वनाथ इस बार वहाँ गया तो उसकी विशेष भेंट स्वामीजी से हुई। नायक जादोजी राव उसके साथ था। स्वामीजी विश्वनाथ के शरीर का गठन तथा मुख पर ओज देख बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने पूछ लिया, "कहाँ के रहने वाले हो ?"

"जांव गाँव के पण्डित त्रिभुवन कीर्ति का पुत्र हूँ।"

"ओह ! पण्डितजी कैसे हैं ?"

"सब प्रकार से सुखी हैं, परन्तु मेरे विषय में चिन्तित रहते हैं।"

"किस लिए ?"

"केवल यही कहते हैं कि मैं पढ़ने में पर्याप्त ध्यान नहीं देता।"

"और तुम क्या कहते हो ?"

"पिताजी का कहना अपने विचार से ठीक है। उनके मापदंड के अनुसार मैं पढ़ाई में पूर्ण ध्यान नहीं देता; परन्तु महाराज ! मैं शरीर का ध्यान छोड़ नहीं सका। इस ओर भी मेरा ध्यान है। इस कारण शक्ति और ज्ञान-संचय में समय बँट रहा है। मैं दोनों में सन्तुलन रख रहा हूँ।"

"अच्छा, अपने पिताजी से हमारा नमस्कार कहना। और उनको कहना कि हमें तुम्हारी योजना ठीक प्रतीत हुई है। देखो, आज सात वर्ष के लगभग होने जा रहे हैं जब हम उनसे मिले थे। तब उन्होंने तुम्हारी बहिन के विषय में कुछ कहा था। हमने भी आते समय उससे एक बात कही थी। अपने पिताजी को और बहिन को कहना कि सदा सब परिस्थितियों और अवस्थाओं में हमारे उस कथन को स्मरण रखें।

"यह जीवन, हमारा अभिप्राय है मानव जीवन और वह भी ब्राह्मण के घर में दुर्लभ है। बहुत ही अधिक पुण्य-कर्मों से यह मिलता है। इस कारण इसे व्यर्थ नहीं गँवाना।

"जो कुछ प्राप्त है उसको गँवा नहीं देना। जो कुछ है उसमें वृद्धि करना। और तुम्हारे लिए हमारा आदेश है, महाराष्ट्र में स्वराज्य स्थापित करने के लिए जीवन की बाजी लगा दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मासाठीं मारावें मरोनि अवध्यांसी मारावे।
मारिता मारिता ध्यावें राज्य आपुलें ॥[1]

"देखो विश्वनाथ ! स्वराज्य लेना है। वह इसलिए कि धर्म की रक्षा करनी है। धर्म की रक्षा अपना राज्य लिए बिना सम्भव नहीं। इस समय राज्य ही धर्म का विरोध कर रहा है।"

एकाएक स्वामीजी ने बात बदल दी। उन्होंने कहा, "अभी जाओ। शीघ्र ही समय आने वाला है, जब तुम्हारा शरीर आत्मा की प्रेरणा मांगेगा। उसे प्रेरणा देने के लिए तैयार हो जाओ।"

जादोजी राव और विश्वनाथ बाहर चले आए। वे अभी मठ से निकले भी नहीं थे कि एक युवक सिर पर पगड़ी बांधे मठ के द्वार के बाहर घोड़े से उतरता दिखाई दिया। उसके साथ ही एक वृद्ध ब्राह्मण भी घोड़े से उतर वस्त्रों से धूरि झाड़ने लगा। ब्राह्मण ने बहुत ही साधारण वस्त्र पहने थे। सिर पर लम्बी और गोक्षुर के विस्तार की चोटी को गाँठ दिए हुए वह सिर से नंगा था। युवक अत्यन्त चुस्त और गठित शरीर रखता था। मुख पर अभी दाढ़ी मूंछें फूटी नहीं थीं। ऊपर के ओष्ठ पर मूंछें फूटने के पूर्व की काली रेखा ही दिखाई देती थी।

दोनों अश्वारोही अभी अपने वस्त्रों से मिट्टी झाड़ ही रहे थे कि विश्वनाथ और जादोजी राव द्वार से बाहर निकल आए।

विश्वनाथ उस युवक के हाव भाव, तीव्र आँखों और सीधी ग्रीवा को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने अपने नायक से कहा, "बहुत दूर से आए प्रतीत होते हैं।"

"युवक किसी जागीरदार का लड़का प्रतीत होता है।"

"कैसे जाना है नायक ?"

"इसके मुख को देखकर, इसके वस्त्रों को देखकर और इसकी कमर में बँधी तलवार को देखकर।"

"हाँ। कौन हो सकता है, जो स्वामीजी से मिलने के लिए आया है ? आज तो सब जागीरदार मुगल अथवा बीजापुर के अर्दली मात्र रह

---

१. धर्म के लिए प्राण समर्पित करें। मरते-मरते भी अपना राज्य ले लें और महाराष्ट्र राज्य की स्थापना करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए हैं।"

"कोई साहसी युवक प्रतीत होता है।"

"पता करना चाहिए कि यह कौन है।" विश्वनाथ ने अपने नायक को सुझाव दे दिया।

"क्या लाभ होगा इससे ?" नायक का प्रश्न था।

"शक्ति-संचय में लोक-संग्रह भी एक साधन है न ?"

नायक विश्वनाथ का अभिप्राय समझ गया। उसने कह दिया, "अभी तो डेरे पर चलते हैं। पीछे पता करेंगे।"

"डेरे पर क्या है ?" विश्वनाथ ने पूछ लिया।

"अपना बिस्तर और वस्त्र वहाँ पर हैं।"

विश्वनाथ को नायक का वस्त्रों से मोह विस्मयजनक प्रतीत हुआ। उसने कह दिया, "आप चलिए। मैं अभी ठहर कर आऊँगा।"

जादोजी राव ने विश्वनाथ के मुख पर देखा। वह विश्वनाथ के ठहरने का कारण जानना चाहता था। विश्वनाथ ने उसके भाव को समझ कर कह दिया, "अब हमारा यहाँ ठहरने का कुछ भी प्रयोजन नहीं रहा। इस कारण किसी भी समय यहाँ से चल देंगे। फिर इस युवक का पता कहाँ से करेंगे ?"

"तो तुम इस युवक से भेंट करने के लिए यहाँ ठहर रहे हो ?"

"मैं इसका नाम-धाम जानना चाहता हूँ।"

"क्या लाभ होगा ?"

"अभी तो इतना ही कहा जा सकता है कि कुछ हानि नहीं होगी।"

नायक जानता था कि विश्वनाथ बहुत हठी युवक है। इस कारण वह अपने मन की बात करेगा ही। उसे स्वयं धनीमानी लोगों पर विश्वास नहीं था। उसने पूछ लिया, "कब तक लौट आओगे ?"

"नायक ! हम किस समय यहाँ से चल रहे हैं ?"

"भोजन करने के उपरान्त विचार कर लेंगे।"

"तो भोजन की समाप्ति के पूर्व पहुँच जाऊँगा।"

जादोजी राव तो चला गया, परन्तु विश्वनाथ वहीं ठहर गया। वह मन में विचार रहा था, क्या स्वामीजी इन रईसों को भी यही दीक्षा देते हैं जो उन्होंने उसे दी है। क्या इन रईसों के मस्तिष्क पर भी वही प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होता है, जो उसके मन पर हुआ है ?

वह अपने प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए उत्सुक था, परन्तु उनको पाने का स्रोत वह नहीं जानता था।

वह युवक शाहजी भोंसले का द्वितीय पुत्र शिवा था। यह अपने गुरु दादाजी कोण्डदेव के साथ आया था। दोनों चाफल आए थे पूर्णिमा का मेला देखने और स्वामीजी से मिलने, परन्तु शिवा को मेला देखने में रुचि नहीं थी। अतः वे अपने घोड़ों से उतरे और मठ के द्वार पर एक पेड़ के साथ इनको बाँध मठ में चले गये। विश्वनाथ उन घोड़ों को देखने के बहाने उनके समीप जा खड़ा हुआ। वास्तव में वह इस युवक का परिचय प्राप्त करने और किसी जागीरदार से सम्पर्क उत्पन्न करने की इच्छा कई वर्षों से रखता था, क्योंकि वह जानता था कि राज्य जैसी वस्तु का निर्माण साधन-विहीन व्यक्ति नहीं कर सकेंगे। वह स्वयं तो एक अश्व क्रय करने की सामर्थ्य भी नहीं रखता था।

इसी उधेड़ बुन में ढाई घड़ी व्यतीत हो गयी। आखिर वह युवक और वृद्ध ब्राह्मण बाहर निकले। उनके मुख की मुद्रा गम्भीर बनी थी।

वे चलते हुए अपने अश्वों के पास पहुँचे। एक युवक को अश्वों के पास खड़े देख ब्राह्मण देवता ने डाँट के भाव में कहा, "अश्व चुरा ले जाने का विचार है क्या ?"

"ऐसा विचार होता तो इसे लेकर इस समय तक पाँच कोस निकल गया होता। पिछली अढाई घड़ी से ये यहाँ अरक्षित बँधे थे।"

"तो तुम तब से यहाँ खड़े हो ? मैंने आते समय तुमको एक अन्य युवक के साथ भीतर से निकलते देखा था।"

"जी।" विश्वनाथ ने उत्तर दिया।

"किस लिये खड़े हो ?"

"एक ऐसा घोड़ा पाने की लालसा मन में उठने पर इसे देख मन में पाने का उपाय विचार कर रहा था।"

"उपाय तो था।" ब्राह्मण ने कह दिया, "तुम कहते हो न कि ये अरक्षित बँधे थे।"

"परन्तु महाराज ! चोरी करना अधर्म है न ?"

"अच्छा तो धर्म क्या है ?" पंडितजी के साथ वाले युवक ने पूछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया।

"अभी तक एक ही धर्म-युक्त उपाय विचार कर पाया हूँ।"

"वह क्या ?"

"घोड़े के स्वामी से मल्ल-युद्ध कर इसे छीन लूं।"

"ओह !" युवक और ब्राह्मण साथी विस्मय में विश्वनाथ का मुख देखने लगे। युवक ने विश्वनाथ के समीप पहुँच उसके भुजदण्ड को दबा कर देखा। विश्वनाथ का भुजदण्ड लोहे के समान कठोर था। यह देख वह युवक विचार करने लगा कि यह सत्य ही बलशाली है और कुश्ती में चुनौती दी जा सकती है। ब्राह्मण अपने साथी युवक के मन की इच्छा जान गया। ब्राह्मण यह नहीं चाहता था। इस कारण उसने कह दिया, "यहाँ नहीं युवक ! तुम हमारे गाँव में आ जाओ और यदि वहाँ तुम इस युवक को कुश्ती में पछाड़ सके, तो अश्व तुम ले सकोगे।"

"कहाँ है आपका गाँव ?"

"पुणे। मुठा नदी के तट पर। यहाँ से तीस कोस दक्षिण-पश्चिम् की ओर बसा एक गाँव है। वहाँ आ जाना और हम तुम से युद्ध करेंगे।" युवक ने कह दिया।

"आऊँगा। श्रीमान् कब जा रहे हैं ?"

"बस अभी चल रहे हैं।"

विश्वनाथ का मतलब पूरा हो गया था। वह युवक का ग्राम जान गया था। नाम जानने के लिये उसने पूछ लिया, "परन्तु अश्व के मालिक का नाम जाने बिना कैसे पाऊँगा ?"

"शिवा। गाँव में किसी से भी पूछ लोगे तो पता पा जाओगे। मैं तुमसे कुश्ती करूँगा। यदि जीत गये तो यह अश्व पा सकोगे।"

विश्वनाथ ने ब्राह्मण देवता की ओर हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया और फिर युवक की ओर देखकर बोला, "हमारे गाँव से आपका स्थान बहुत दूर है। इस पर भी आऊँगा।" इतना कह, हाथ जोड़ नमस्कार कर वह अपने डेरे की ओर चल पड़ा।

: ४ :

विश्वनाथ मेले में डेरे की ओर जा रहा था और मन में विचार कर रहा था कि उसकी न तो इच्छा है घोड़ा चुरा कर ले जाने की, न ही वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़ कर लेने में कोई लाभ देखता था। उसका पूर्ण प्रयास तो इस ओजस्वी युवक का नाम-धाम जानना था। इस पर भी नाम-धाम जानने से वह किसी प्रकार के व्यवहार की योजना नहीं बना सका। पुणे कहीं दक्षिण की ओर था। चाफल पुणे से उत्तर की ओर था और जांव, उसका अपना गाँव तो और भी उत्तर में था। कितना दूर होगा, वह जानता नहीं था। माता-पिता किसी युवक से कुश्ती करने के लिए घर से इतनी दूर उसे जाने नहीं देंगे।

अतः उसने उस युवक की बात मन से निकाल दी और डेरे पर पहुँच गया। जादोजी राव उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने अपना और विश्वनाथ का सामान बाँध रखा था और वह विचार कर रहा था कि विश्वनाथ के आते ही भोजन कर वे चल देंगे।

उसने विश्वनाथ को देखा तो कह दिया, "बहुत देरी कर दी है।"

"हाँ। परन्तु मैं उस युवक का नाम-धाम जान आया हूँ।"

"अच्छा ? किससे ?"

"उसके अपने मुख से ही।"

"कौन है वह ?"

"पुणे रहता है। शिवा उसका नाम है। कहता था कि गाँव में किसी से भी पूछूंगा तो उससे मिल सकूँगा।"

जादोजी हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "तो घंटा भर व्यर्थ गँवा आए हो। भला इतने से क्या जान सके हो ?"

"अभी तो नाम-धाम ही जाना है, कभी पुणे जाऊँगा तो उसका पता करूँगा।"

"क्या लाभ होगा ?"

विश्वनाथ चुप रहा। वह स्वयं नहीं जान सका था कि इस सूचना से क्या लाभ हो सकता है ! दोनों ने डेरे के रसोईघर में भोजन किया, दाम दिया और अपने गाँव को लौट पड़े। तीन दिन का मार्ग था। मार्ग में धर्मशालाओं में ठहरते हुए वे जा रहे थे। वास्तव में उत्सव के दिनों में दुकानदार इन धर्मशालाओं में सफाई करा देते थे और खाने-पीने का प्रबन्ध कर व्यापार करते थे। मेला पन्द्रह दिन चलता था और इन दिनों लोग चाफल बहुत भारी संख्या में आते-जाते रहते थे। इससे धर्मशालाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की रहने योग्य व्यवस्था करने वाले, अच्छा-खासा लाभ उठाते थे।

विश्वनाथ घर पहुँचा तो माँ ने सुख समाचार जान पूछा, "क्या लाभ हुआ है ? एक सप्ताह लगा है आने जाने में। वहाँ एक दिन ही तो ठहरे हो ?"

"माँ ! स्वामीजी बाबा को और आपको आशीर्वाद भेजते हैं। देखो, कितनी बड़ी बात लाया हूँ माँ !"

"हाँ, स्वामीजी ने तुम्हारे माता-पिता को स्मरण रखा है। सत्य ही यह बड़ी बात है।"

"और एक बात पिताजी तथा नीला के लिए भी कही है।"

"क्या ?"

"यह उनको ही बताऊँगा।"

उस समय नीला अपना स्वाध्याय कर रही थी। बाबा खेतों पर गए हुए थे।

सायंकाल सब परिवार एकत्रित हुआ तो विश्वनाथ ने चाफल का वृत्तान्त बताना आरम्भ कर दिया। उसने बताया—

"बाबा ! चाफल हमारे गाँव से बड़ा है। अब स्वामीजी के वहाँ रहने से गाँव में पूर्ण वर्ष भर लोगों का आना-जाना बना रहता है। स्वामी जी सायंकाल मठ में धर्मोपदेश देते हैं। सहस्रों लोग उनकी अमृतवाणी सुनने के लिए एकत्रित हो जाते हैं।

"मठ एक स्वच्छ जला-प्रवाहिनी नदी के तट पर बसा हुआ है। हम वहाँ पहुँचे तो नदी में स्नान किया। फिर हनुमानजी के मन्दिर में प्रसाद चढ़ाया और भोजन कर स्वामीजी का उपदेश सुनने चले गये। दो घंटा भर उन्होंने प्रवचन किया। वे आत्मा के अमरत्व के विषय में कहते रहे। यह मरता नहीं, फिर मरने से डरना नहीं चाहिए।

"उनका कहना था, डर मृत्यु से नहीं होता। डर अधर्माचरण से होता है। अधर्म करने से अगले जन्म में दु:ख, कष्ट और क्लेष मिलता है। इसी कारण प्राणी मरने से भयभीत रहता है। पुण्य-कर्मा लोग तो अगले जन्म में इस जन्म से श्रेष्ठ जीवन पाते हैं। वे मरते समय इस प्रकार प्रसन्न होते हैं जैसे कोई विद्यार्थी अगली कक्षा में उन्नति पानेपर प्रसन्न होता है अथवा कोई कर्मचारी अपनी उन्नति पाने के समय अनुभव करता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पण्डित त्रिभुवन के मुख से अनायास निकल गया, "विश्व ! बहुत भाग्यशाली हो जो ऐसे विद्वान् का प्रवचन सुन सके हो। इनको इसी प्रकार समझो और ऐसा ही आचरण करो।"

"हाँ बाबा ! मैं कृत-कृत्य अनुभव करता हूँ। अगले दिन हम आधा प्रहर दिन निकल जाने पर मठ में जा पहुँचे। जादोजी रात्र के कहने पर हमको स्वामीजी के दर्शन भी हुए।

"जब उनको मैंने अपने गाँव का और आपका नाम बताया तो वे बोले, हमें स्मरण है कि सात वर्ष के लगभग हुए तुम्हारे बाबा के दर्शन हुए थे। तब तुम्हारे पिता तुम्हारी बहिन के विषय में चिन्तातुर थे। उनसे और अपनी बहिन से कहना कि जो कुछ मैंने वहाँ से चलते समय कहा था, उसका सदा ध्यान रखें। सदा, सब स्थितियों और परिस्थितियों में। ब्राह्मण जन्म बहुत ही पुण्य कर्मों से मिलता है। इसलिए इसको गँवा नहीं देना। इसमें वृद्धि करना।"

विश्वनाथ ने वह शिक्षा नहीं बतायी जो स्वामीजी ने उसके लिए दी थी।

इसके उपरान्त विश्वनाथ ने उस ओजस्वी युवक की बात बता दी, जिससे मठ के बाहर घोड़े के विषय में बात करते हुए भेंट हुई थी।

सब हँसने लगे। "परन्तु पिताजी !" विश्वनाथ ने कह दिया, "मैं उस युवक से कुश्ती करने जाना चाहता हूँ।"

"किस लिए ?"

"उसका घोड़ा लेने के लिए।"

"मैं समझता हूँ कि उसने हँसी की है। वह तुमसे परास्त होकर भी तुमको घोड़ा नहीं देगा।"

"क्यों ?"

"यह सब जागीरदारों का रिवाज है। वह यदि कहीं तुमसे परास्त हो गया तो अपने बहुत से सिपाहियों से तुमको मरवा डालेगा।"

इसने विश्वनाथ को गम्भीर विचार में डुबो दिया। कुछ विचार कर उसने कहा, "मैं भी अपने बहुत से साथी लेकर जाऊँगा। उसको परास्त करूँगा और फिर अपने साथियों का उसके सिपाहियों से युद्ध कर उनको भी परास्त कर दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुम्हारे साथी कहाँ हैं ?"[१]

"अपने अखाड़े के युवकों को साथ लूंगा।"

"वे तुम्हारे साथ जाएँगे ही नहीं। उनके माता-पिता उनको घर से इतनी दूर जाने नहीं देंगे।"

"बाबा ! तुम मुझको जाने दोगे अथवा नहीं ?"

"यदि तुम पचास युवक साथ लेकर जा सको तो जा सकोगे। मैं अपने पुत्र को पराजित हो मरने जाने नहीं दूंगा।"

पिता ने तो यह बात विश्वनाथ को जाने की योजना की असम्भवता प्रकट करने के लिए कही थी, परन्तु विश्वनाथ के मन की कल्पना को विषय मिल गया था। वह विचार करता था कि पचास युवक एकत्रित करने क्या असम्भव हैं ? उसे इसमें कुछ भी असम्भव प्रतीत नहीं होता था।

उसने अगले दिन से ही यत्न करना आरम्भ कर दिया। वह एक-एक कर अपने साथियों से पुणे चलने की योजना पर विचार-विमर्श करने लगा।

उसके अखाड़े के साथी पूछते थे, "वहाँ क्या है ?"

"कुछ नहीं। चाफल के मेले में एक युवक मिला था। वह बहुत ओजस्वी और होनहार प्रतीत हुआ था। उसका निमन्त्रण है।"

"किस अर्थ निमन्त्रण है ?"

"यदि मैं उसको कुश्ती में पराजित कर सकूं तो वह अपना घोड़ा मुझको दे देगा।"

इस पर उसके साथी हँस देते। वे विश्वनाथ को बातूनी ही मानते थे। इस पर भी वह अपने साथियों को घूमने-फिरने और फिर अनुभव प्राप्त करने के लिए उत्साहित करता रहता था। धीरे धीरे उसको साथी मिल रहे थे। सबसे पहिला युवक जो उसके साथ चलने के लिए तैयार हुआ, वह दादोजी था। यह वही युवक था, जिसको कुश्ती में पराजित कर विश्वनाथ ने नायक से गुप्त-मन्त्र लिया था।

एक वर्ष के निरन्तर प्रयत्न और उकसाने के परिणामस्वरूप बीस युवकों का एक जत्था तैयार हो गया। यह विचार बनाया गया कि शरद्पूर्णिमा के दिन चाफल चला जाये और वहाँ से पुणे की यात्रा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाये ।

इस समय एक घटना का समाचार मिला । यह समाचार गाँव-गाँव में विस्तार पाता हुआ, एक से दूसरे को कहा जाता हुआ प्रासरित हो रहा था ।

समाचार, अखाड़े में ही एक दूसरे गाँव से सुनकर आये, एक युवक ने बताया था । यह युवक माधोजी था । वह भी उन बीस में से एक था जो विश्वनाथ के साथ चाफल जाने की तैयारी कर रहे थे । और वहाँ से पुणे जाने की बात तो गुप्त थी ।

माधोजी ने बताया था, पुणे का एक जागीरदार है शाहजी । वह बीजापुर के सुल्तान का दरबारी और सेनानायक है । उसकी पदवी पाँच-हज़ारी है । पाँच हजार सैनिक उसके अधीन रहते हैं । उसका एक लड़का पुणे रहता है । उसका नाम शिवाजी है । इसी वर्ष संवत् १७०३ की वर्षा ऋतु में शिवा ने सुलतान बाजीराव के एक दुर्ग पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया । इस पर बाजीपुर से उसको आज्ञा आई कि दुर्ग खाली कर दे, परन्तु शिवा दुर्ग छोड़ने का विचार नहीं रखता । साथ ही उसने रामगढ़ के दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया है ।"

यह समाचार सुन नायक जादोजी राव ने नारा लगा दिया, "बोल बजरंग बली की……"

अखाड़े के पचास व्यायाम करने वालों ने घाषकर दिया, "जय ।"

बात यह थी कि किसी हिन्दू का पिछले चार-पाँच सौ वर्ष से साहस नहीं हुआ था कि किसी मुसलमान रजवाड़े को आँखें दिखाये ।

माधोजी ने एक सूचना और दे दी, "लोग कह रहे हैं कि शिवा ने सेना तैयार करनी आरम्भ कर दी है । उसको आशा है कि बीजापुर की सेना से मुठभेड़ होगी ।"

उसी सायंकाल हनुमानजी के मन्दिर में उनकी सभा हुई जो चाफल शरद्पूर्णिमा के मेले पर जाना चाहते थे ।

माधोजी ने कहा, "मैं तो शिवा की सेना में भरती होने जा रहा हूँ ।"

"और मैं उसको पराजित कर घोड़ा लेने जाऊँगा और फिर उसकी घुड़सवार सेना में भरती हो सकूँगा ।" विश्वनाथ का कहना था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु," जादोजी राव ने कह दिया, "तुम्हारा तो गौना आने वाला है।"

"बहू आने वाली है न ? वह माताजी जाकर ले आएँगी ।"

इस पर सब हँसने लगे । दादोजी ने कह दिया, "और तुम्हारी पत्नी तुम से रूठ जायेगी ।"

"जब लौटूंगा तो मना लूंगा। घर की दीवारों से रूठ कर क्या करेगी ?"

दादोजी की मौसी की लड़की थी, जिसका विवाह विश्वनाथ से हुआ था। इससे उसको अपनी बहिन की चिन्ता लगने लगी थी। इस पर विश्वनाथ ने उसको सान्त्वना देते हुए कह दिया, "दादोजी ! बाबा ने मेरी और पत्नी की जन्म-कुण्डली मिला कर देखी है और उससे हमारे घर में पाँच संतान का ज्योतिष लगाया है । दो लड़कियाँ होंगी और तीन लड़के होंगे। इससे मैं जानता हूँ कि तुम्हारी बहिन विधवा नहीं होगी ।

"तुम्हारी बहिन सती साधवी तो होगी ही। इस कारण मैं जीवित लौटूंगा और उससे सन्तान उत्पन्न करूँगा ।"

इससे तो सब प्रसन्न हो गये । दादोजी के तो दो बच्चे हो भी चुके थे ।

गाँव के चौबीस-पच्चीस युवक चाफल के मेले पर जाने के लिये तैयार हो गये। वे सब जानते थे कि वे पुणे जा रहे हैं, परन्तु गाँव में किसी अन्य को यह विदित नहीं था । ये सब के सब नायक दादोजी से दीक्षा ग्रहण किये हुए थे और महाराष्ट्र में अपना राज्य स्थापित करने के लिये कृत-संकल्प थे। सब के मन में एक ही धुन सवार थी और वह थी—

देव मस्तकीं घरावा अवधा हल कल्लोल करावा ।
मुलख बड़वा बुडवावा धर्म संस्थापना साठी ।।[1]

इस धुन में मस्त सब शिवाजी में एक आशा की किरण लिये हुए थे । प्रायः सब समझते थे कि यदि उनके घर वालों को पता चला कि वे सेना में भरती होने जा रहे हैं और वह भी बीजापुर राज्य के विद्रोही की

---

१. देवताओं को वंदनीय मानकर अपने मस्तक पर धारणा करो । देश की उन्नति करो और धर्म की उन्नति करो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना में, तो उन्हें कोई नहीं जाने देगा। उनके माता-पिता और जिनके विवाह हो चुके हैं, उनकी पत्नियाँ रोना-धोना आरम्भ कर देंगी और फिर उनका जाना रुक जावेगा। अतः वे पुणे जाने की योजना को अति गुप्त रखे हुए थे।

चाफल जाने से पूर्व पंडित त्रिभुवन ने अपने लड़के से कहा, "इस शरद् पूर्णिमा को तुम्हारी सुहागरात होगी। तुम जल्दी चले आना। पूर्णिमा को तुम्हारा यहाँ होना ठीक रहेगा।"

"बाबा, हम सब गाँव वाले ऐसा ही विचार रखते हैं। इस कारण कार्तिक प्रतिपदा को यहाँ से चल कर दशमी के दिन यहाँ वापिस लौट आने का हमारा विचार है। इस बार हम पूर्णिमा के दिन अपने हनुमान जी के मन्दिर में उत्सव करने वाले हैं।"

: ५ :

गाँव के युवक चाफल गये तो उनके लौटने की प्रतीक्षा होने लगी। इस वर्ष गाँव में भी हनुमानजी का उत्सव मनाया गया। दंगल हुआ, विजयी पहलवानों को पगड़ियाँ पुरस्कार में दी गईं। परन्तु चाफल गये युवक नहीं आये। इस कारण उत्सव फीका ही रहा।

विश्वनाथ की माता चन्द्रमुखी बहुत उत्सुक थी। उसके घर में बहू आने वाली थी। महीने की दशमी तक तो सब आशा से भरपूर थे और चाफल से युवकों के लौटने की आशा में थे, परन्तु इसके उपरान्त युवकों के घर वाले चिन्तित रहने लगे और फिर पूर्णिमा के दिन तो शोक छाने लगा।

अभी भी निराशा नहीं थी, परन्तु युवकों के समय पर न लौटने पर चिन्ता व्यक्त की जाने लगी थी। किसी दुर्घटना की सम्भावना की आशंका होने लगी थी।

पंडित त्रिभुवन के घर तो क्रोध भी छा रहा था। एक दिन अपनी बैठक-घर में बैठे पण्डितजी विश्वनाथ का जन्मपत्रा देख रहे थे। उनके सामने क्रोध और निराशा से भरी उनकी पत्नी चन्द्रमुखी बैठी थी और समीप ही बैठी नीलमणि उत्सुकता से बाबा के पत्रा पढ़ने को देख रही थी।

पण्डित त्रिभुवन ने अपनी पाटी पर खड़िया से पुनः गणना की और कुण्डली बनानी आरम्भ कर दी। अभी पण्डितजी यह देख ही रहे थे कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी समधिन सीतारानी आ गई और प्रणाम कर पूछने लगी, "विश्वनाथ का पता आया है क्या भैया ?"

"समधिन बहिन ! अभी नहीं । मैं यही देख रहा था कि कोई वक्र नक्षत्र तो बीच में नहीं आ गया । मेरी विद्या तो यह बताती है कि लड़का अस्सी वर्ष की आयु भोग करेगा । उसके पाँच स्वस्थ और सुन्दर सन्तान होंगी और उसकी पत्नी लक्ष्मी साठ वर्ष की आयु तक सौभाग्यवती रहेगी। वह अपने पौत्रों का मुख देखने के उपरान्त ही स्वर्ग सिधारेगी ।"

"पण्डितजी, यह ठीक है। परन्तु लड़की अब युवा हो गई है और वह अब पति की कामना करने लगी है ।"

"बहिन ! धैर्य धरो और उसे भी धैर्य दो । मैं तो जानता नहीं कि उसके न लौटने का क्या कारण है । गाँव से बीस-पच्चीस लोग इकट्ठे चाफल मेले पर गये हैं और उनमें से कोई भी तो नहीं लौटा । अभी-अभी दादो का पिता आया था और अपने लड़के के विषय में पूछ रहा था। उसकी कुण्डली में भी दीर्घ आयु का योग बना है ।"

सीतारानी उदास-मन ही लौटी । किया भी क्या जा सकता था !

दिन व्यतीत होते गये और विश्वनाथ और उसके साथियों में से कोई भी नहीं लौट रहा था । कातिक मास व्यतीत हो रहा था और मार्गशीर्ष उग रहा था । नीलमणि की सगाई हुए तो पाँच वर्ष हो चुके थे, परन्तु उसका पिता कुछ तो उसके जन्मफल से भयभीत और कुछ उसको शास्त्र पढ़ाने के लोभ में उसका विवाह टाल रहा था । अब नीलमणि की ससुराल वाले उसका विवाह माँगने लगे थे । विवाह की तिथि निश्चय हो गई और विश्वनाथ की प्रतीक्षा किये बिना विवाह की तैयारी होने लगी ।

इस प्रकार मार्गशीर्ष का मध्य आ गया । इस समय एक दुर्घटना हो गई । विवाह को एक पखवाड़ा रहता था कि बुड़हानपुर से सिपाहियों का एक दस्ता आया और गाँव में पण्डित त्रिभुवन कीर्ति के विषय में पूछ-ताछ करने लगा ।

लोग विस्मय कर रहे थे कि ऐसा क्यों हो रहा है ! प्रायः गाँवों में लगान न दे सकने पर ही सिपाही आया करते थे और इस वर्ष का लगान ठीक-ठीक दे दिया गया था । पण्डित त्रिभुवन कीर्ति ने तो कभी भी लगान में बकाया नहीं रखा था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जब सालार को पण्डितजी के मकान का पता चला तो वह सिपाहियों के साथ उनके द्वार पर जा पहुँचा। जब से अहमदनगर मुगलों के अधीन हुआ था, यह पहला अवसर था, जब सरकारी लोग गाँव में आये थे। सब लोग यह सन्देह कर रहे थे कि लापता युवकों के विषय में ही पूछ-गीछ हो रही है। इस कारण पूर्ण गाँव वहाँ एकत्रित हो गया।

सालार ने द्वार पर दस्तक दी तो पण्डितजी स्वयं बाहर चले आये और सालार का मुख देखने लगे। सालार ने पूछा—"त्रिभुवन कीर्ति तुम हो ?"

"जी।"

"तो तैयार हो जाओ। तुम्हें आगरा चलना है।"

"क्या बात है ?"

"यह हम नहीं जानते। वहाँ जाकर पता कर लेना।"

"तो ऐसा करो। हुक्म दे जाओ और मैं एक महीने में चल सकूंगा। मेरी लड़की की शादी है। उसके बाद ही मैं चल सकूंगा।"

"नहीं पण्डित ! हमारे साथ ही चलना होगा। देखो, शाम हो रही है। कल सूर्य निकलने से पहिले ही यहाँ से चल देंगे। तुम रात-भर में तैयार हो जाओ।"

साढ़े छः फुट ऊँचा, हट्टा-कट्टा सालार आसदअली खाँ पण्डितजी को यह आज्ञा दे, सिपाहियों से बोला, "इस मकान को घेर लो और देखो, पण्डित भागने न पावे।"

गाँव वाले, सब के सब पण्डितजी से स्नेह रखते थे। अतः सब सालार की बात सुन दुःख अनुभव कर रहे थे। सालार तो सिपाहियों को तैनात कर दौलताबाद अपने एक परिचित से मिलने चला गया और गाँव के लोग पण्डितजी को छुड़ाने की योजना बनाने लगे। गाँव वालों ने षड्यन्त्र किया और रात आधी व्यतीत हो जाने पर, पण्डितजी के मकान का घेरा डाले सिपाहियों पर टूट पड़े। पाँच सिपाही पहरा दे रहे थे। शेष सो रहे थे। पहरा देने वाले तो सब मार दिये गये, परन्तु इस मारधाड़ में सोये हुए जाग पड़े। अब डट कर युद्ध होने लगा। दोनों ओर मरने लगे, तो गाँव वाले भी भाग खड़े हुए।

दिन चढ़ने पर सालार आया तो वह अपने सिपाहियों में से बारह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिपाहियों को मरा और चार-पाँच को घायल देख आगबबूला हो गया। उसने पण्डित, उनकी पत्नी और लड़की के हाथ-पाँव बाँध उनको घोड़ों पर सवार किया और सिपाहियों को आज्ञा दे दी कि गाँव को लूट लो और सब कुछ जला डालो।

सिपाहियों ने आज्ञा से कुछ अधिक ही किया। उन्होंने गाँव को लूटा, जो सामने आया उसे मारा, युवा स्त्रियों का अपहरण किया और फिर मकान और खेतों को आग लगा दी। इस सब कुकृत्य में दोपहर हो गई और तब तीनों मुख्य बंदियों को घोड़ों पर बैठा और अपहरण की औरतों के गले में रस्सा डाल कर सब बुड़हानपुर को चल पड़े।

गाँव की औरतों को तो बुड़हानपुर में ही रख लिया गया। पण्डितजी को और उनके परिवार को वहाँ के सूबेदार ने इस हालत में देखा तो सालार को डांट के भाव में कह दिया, "हरामियो, यह क्या कर रखा है ?"

इस पर सालार ने जांव गाँव में हुई घटना बता दी और पंडितजी को भाग जाने से रोकने के लिये हाथ-पैर बाँधने की बात बता दी। इस पर तो सूबेदार ने और भी नाराज़ होकर कहा, "अबे, तुम पचास के होते हुए यह अकेला और फिर बीवी तथा बच्ची के साथ कैसे भाग सकता था ? खोलो इनके हाथ-पाँव। तुम भी गधे हो कि बिना इस बात को जाने कि यह कितनी बड़ी शखसीयत है, इस तरह बाँध रखा है।"

सालार जानता था कि उसे यह बताया नहीं गया था कि वह मामूली कैंदी है अथवा कोई खास हस्ती है। इस कारण वह इसमें अपने को कसूरवार नहीं समझता था। इस पर भी वह चुप था। वह सूबेदार साहब को नाराज करना नहीं चाहता था।

सूबेदार यह विचार कर रहा था कि यह ज्योतिषी है और कौन जाने यह शहंशाह के मुंह लग जाये तो अनेकों के वारे-न्यारे करता फिरे। इस कारण वह पण्डित को प्रसन्न रखना चाहता था। इस विचार का एक परिणाम तो हुआ। आगे की यात्रा के लिए पंडितजी के लिए एक खेमा, एक रसोइया और एक खिदमतगार साथ कर दिये गये। इससे पण्डितजी की शेष चालीस दिन की यात्रा सुखप्रद रही।

यह तो बुड़हानपुर के सूबेदार ने ही उन्हें बता दिया था कि उनको किसलिए आगरा बुलाया गया है। सूबेदार ने मुआफी माँगते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह कहा था, "पण्डितजी, ये लोग नहीं जानते कि किसलिए आपकी दरबार में फरमाइश है। अगर ये जानते होते तो आपको बहुत इज़्ज़त से लाते। आप बड़े आदमी हैं, इस वासते आपको इन्हें मुआफ़ कर देना चाहिए।"

पंडितजी ने सूबेदार को सहानुभूति प्रकट करते देख कहा, "मेरी लड़की की शादी होने वाली थी और मैं चाहता था कि मुझे एक महीना पीछे हाज़िर होने की स्वीकृति मिल जाती।"

"मगर इस बात की स्वीकृति ये लोग नहीं दे सकते थे। यह तो मैं भी नहीं दे सकता।"

"तो फिर इसके लिए क्या किया जाये ?"

"यह तो आप आगरा जाकर ही अर्ज़ कर सकते हैं।"

त्रिभुवन कीर्ति चुप रहा।

काफ़िला, मार्गशीर्ष की कृष्ण द्वादशी का चला हुआ, माघ मास की अमावस को आगरा पहुँचा। पंडितजी ने आगरा देखा तो उन्हें जांव गाँव के विचार से, यह नगर स्वर्ग-तुल्य ही समझ आया। बहुत सुन्दर दुकानें, माल और सोना-चाँदी से लदी दुकानें, अनेकानेक रंग और तिलई के वस्त्र पहने स्त्रियाँ और लोगों की भीड-भाड़, स्थान-स्थान पर जलसे-जुलूस और नाच-रंग ऐसा प्रतीत होता था कि नगर में कोई दुःखी नहीं। सब को पेट भर खाना मिलता है, सुन्दर वस्त्र प्राप्त हैं और सब की जेबें रुपयों से भरी हुई हैं।

पंडितजी और उनके परिवार को एक आलीशान सराय में ठहराया गया। एक बहुत खुले घास तथा पुष्पों से लदे हुए मैदान की ओर रहने के कमरे थे। उन कमरों की ऊपर की मंज़िल पर दो-दो तीन-तीन कमरों के घर बने हुए थे, जिनमें स्त्रियों के साथ आने वाले यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध था। उस सराय में सब लोग भाड़ा देकर रहते थे। पंडितजी को ऊपर के एक तीन कमरों के मकान में ठहरा दिया गया।

जिस घर में पंडितजी को ठहराया गया था, उसमें रसोई, गुसलखाना और शौचालय भी साथ था। वहाँ पर जल का भी प्रबन्ध था। यह जल सराय की तीसरी मंज़िल पर एक बहुत बड़े हौज में से पत्थर की बनी नालियों के द्वारा आता था। एक कमरे में दरी, क़ालीन और चाँदनी बिछी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। उस पर बड़े-बड़े तकिये लगे थे। पीकदान कमरे के बीच में रखा था। सब कुछ सर्वथा साफ और सुथरा था।

पंडितजी ने दूसरे कमरों को देखा। एक सोने के लिए था और दूसरा स्त्रियों के शृंगार के लिए था। रसोईघर लिपा-पुता साफ-सुथरा था। लकड़ी और रसोई बनाने के बर्तन भी वहाँ मौजूद थे।

जब पंडितजी टिक गये तो सराय का मुहाफिज़ आया और पंडितजी को दरबारी सलाम कर बोला, "मुझे आपके साथ आने वाले सालार से मालूम हुआ है कि आप शहंशाह के मेहमान हैं। इसलिये मैं हाज़िर हुआ हूँ। मैं आपकी हर किस्म की सेवा के लिए हाज़िर हूँ। आपको हर किस्म का आराम पहुँचाना मेरा फर्ज़ है। आप हुक्म करिये, मैं क्या कर सकता हूँ ?"

उस समय पंडितजी बैठक घर में दूध समान श्वेत चाँदनी पर बैठे, तकिये का आश्रय लिये आराम कर रहे थे।

पंडितजी ने पूछ लिया, "आपका क्या नाम है ?"

"मुझे कृष्णस्वरूप के नाम से याद किया जाता है।"

"तो आप हिन्दू हैं ?"

"हाँ महाराज !"

"कौन जाति हैं ?"

"कायस्थ हूँ।"

"यह सराय किसकी है ?"

"यह है तो शाही, मगर मैंने इसको ठेके पर लिया हुआ है। इसमें साज़ो समान मैंने अपने पास से लगवाया हुआ है।"

'कितने कमरे हैं इसमें ?"

"नीचे की मंज़िल में तीन सौ साठ हैं। ऊपर की मंज़िल पर तीस घर तो ऐसे हैं और चालीस दो-दो कमरों के घर हैं।"

"ऐसे मकान का कितना भाड़ा लेते हो ?"

"पाँच रुपये रोज़ भाड़ा है। कुछ लोग खाने-पीने का इन्तज़ाम के भी मुझसे करवाते हैं। उसका जैसा काम लें वैसा दाम लेता हूँ। नीचे एक कमरे का आधा रुपया लेता हूँ।"

"तो इस कमरे का भाड़ा मिल गया है क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चार दिन के बीस रुपये मिल गए हैं। सालार ने कहा है कि रसद का इन्तजाम भी मुझे करना है। इसके लिए भी कुछ पेशगी मिल गया है। हाँ, पान सुपारी इत्यादि और…।"

"और क्या ?" पंडितजी ने सराय वाले को एकाएक चुप करते देख पूछ लिया।

सराय वाले ने हिचकिचाहट अनुभव करते हुए कहा, "कुछ लोग पान-सुपारी के साथ शराब भी माँगते हैं और कुछ लोग औरत की सेवा माँगते हैं। वह भी मिल सकती है।"

"हरे राम।…तो इसका व्यापार भी करते हो ?"

"शराब तो सरकारी हुक्म के खिलाफ है और उसका प्रबन्ध बहुत चोरी-चोरी करना पड़ता है। मगर औरतों के लिए मनाही नहीं।"

पंडित त्रिभुवन कीर्ति को बात अरुचिकर प्रतीत होने लगी थी। इस कारण उसने कह दिया, "रसद के लिए आटा, चावल, मकई, दालभाजी यह सब चाहिये। घी तो ज़रूर आना चाहिये। हमारे रसोइये को शीघ्र यह मिल जाने चाहिये। शराब हम पीते नहीं। इस कारण कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। दूसरी बात मैं पाप समझता हूँ।"

"तब तो ठीक है। मगर पान ?"

"मैंने दूसरों को बकरियों की भाँति चबाते देखा है और मैं इसको पसन्द नहीं करता।"

इस पर सराय वाले ने कह दिया, "मैंने सुना है कि आप मशहूर नजूमी हैं।"

"कुछ इस इल्म को जानता हूँ।"

"कभी मुझ पर भी कृपा करिए। मेरी पत्नी है और एक ही लड़की है। वह एक लड़के की बहुत ख्वाहिश रखती है।"

"आज तो मैं आराम करूँगा। फिर किसी दिन उसकी जन्मपत्री ले आना। जो कुछ समझ में आवेगा बता दूँगा।"

: ६ :

शाहजहाँ को पण्डित त्रिभुवन कीर्ति का परिचय उसके एक अति योग्य सिपह-सालार ने दिया था। संवत् १७०२ में अली मर्दान खाँ दक्षिण विजय करने की योजना बनाने के लिए दौलताबाद में गुप्त रूप से ठहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। वहाँ वह बीमार पड़ गया था। उसने वहाँ के एक हकीम से इलाज कराना शुरू किया तो कष्ट बढ़ने लगा। हकीम साहब ने बता दिया, "यहाँ से दो कोस के फासले पर एक बहुत बड़े ज्योतिषी रहते हैं। उनसे पूछा जाए, तो पता चले कि लाभ क्यों नहीं होता। चिकित्सा तो पीछे ही चल सकेगी।"

अली मर्दान खाँ वहाँ चोरी-चोरी रह रहा था। हकीम साहब को भी मालूम नहीं था कि वह कौन है और किस प्रयोजन से रह रहा है। अली मर्दान खाँ ने हकीम साहब से ज्योतिषी का नाम-धाम पूछकर, नौकर को भेजकर बुला लिया।

पण्डितजी ने हाथ देखा और फिर कुछ गणना कर बताया, "आप दौलताबाद छोड़ दीजिये। आगरा वापस चले जाइये। यहाँ आपकी बीमारी दूर नहीं होगी।"

"क्यों ?"

"यहाँ जलवायु आपके अनुकूल नहीं है।"

"और आगरा क्यों चला जाऊँ ?"

"इसलिए कि वहाँ आपका घर है।"

मर्दान खाँ आश्चर्यवत् मुख देखता रह गया। वह समझ नहीं सका था कि किसने उसका भेद इस ब्राह्मण को बता दिया है। वह मन में भयभीत था। उसने पण्डितजी को डाँट के भाव में कहा, "बहुत बड़े नजूमी हो जी! मैं आगरा का रहने वाला नहीं हूँ। तुम्हारे भेदिये ने तुमको गलत इत्तिला दी है।"

त्रिभुवन कीर्ति ने कहा, "देखो भाई, मैं कोई राजा-रईस नहीं हूँ जो लोगों पर जासूस लगा सकूँ। जो मैं बता रहा हूँ वह तुम्हारे हाथ पर साफ-साफ लिखा है।"

"अच्छा और क्या लिखा है ?"

"यह लिखा है कि आगरा जायेंगे तो आपको कंधार फतह करने के लिए भेजा जाए जाएगा, जो आप कर नहीं सकेंगे।"

"पण्डित, कुछ पागल हो रहे हो क्या ?"

त्रिभुवन कीर्ति ने भी कुछ क्रुद्ध होकर कहा, "जब आपके साथ बीतेगी तब जानियेगा। इस समय आपका विचार है कि मैं आपका रहस्य न खोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूँ, इसलिए झूठ पर झूठ बोल रहे हैं। अच्छा एक बात और सुन लीजिये और तब मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

अली मर्दान खां स्तब्ध हो उसका मुख देखने लगा। पण्डित ने कह दिया, "जब आप आगरा से दिल्ली पहुँचियेगा तो आपकी सबसे प्यारी बीवी का देहान्त हो जायेगा।" अली मर्दान खाँ ने पण्डित को शीघ्र ही विदा करने के लिए दो मुहर देते हुए कहा, "आपको मैंने फिजूल में तकलीफ दी है। आप जिस सवारी से आये हैं, उसी से लौट जाइये।"

पण्डित ने मुहरें लेने से इनकार करते हुए वहाँ से चला जाना ही ठीक समझा। उसे क्रोध चढ़ आया था। इस कारण उसने सवारी भी नहीं ली और पैदल ही चल पड़ा। अली मर्दान खाँ ने पण्डित को पैदल ही जाते देखा तो नौकर को बुलाकर कहा, "बाहर सवारी खड़ी है। उसे लेकर पण्डितजी को बैठाकर उनके गाँव में छोड़ आओ।"

नौकर इक्का लेकर पण्डितजी के पीछे-पीछे भागा। वे अभी समीप ही थे। नौकर ने उनका मार्ग रोककर कहा, "महाराज, मालिक ने सवारी भेजी है और आपसे इल्तजाह की है कि आप इस पर जायें।"

पण्डितजी ने कह दिया, "मैंने तुम्हारे मालिक की रुचि के अनुसार काम नहीं किया, इस कारण न तो उस काम की उजरत लूंगा न ही यह सवारी प्रयोग करूँगा। उनको कह देना कि कोई दूसरा नजूमी बुलाकर यह सब कुछ उसको दें।"

"पण्डितजी, नाराज नहीं होना चाहिए। उनकी बीमारी का भी तो ख्याल करिये। बीमार आदमी का दिमाग ठीक काम नहीं करता।"

नौकर की बात सुन पण्डितजी हँस पड़े और बोले, "भाई नहीं! मैं नाराज नहीं हूँ। मैं काम किए बिना कुछ लेता नहीं। इस कारण इनकार कर रहा हूँ।"

इतना कह पण्डितजी पैदल ही चले गये। नौकर ने आकर बात बताई तो अली मर्दान खाँ ने वहाँ से चलने की तैयारी शुरू कर दी। अली मर्दान खाँ यह सोचने लगा था कि कहीं यहाँ के सुल्तान को पता चल गया कि मुगल दरबार का कोई उच्च पदाधिकारी यहाँ छुपकर रह रहा है तो आफत आ जायेगी। वह रात ही रात सीमा पार कर आगरा को चल पड़ा।

उसको यह देखकर विस्मय हुआ कि उसी रात उसका ज्वर उतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है और बुड़ाहनपुर तक पहुँचते-पहुँचते वह सर्वथा स्वस्थ हो गया है। आगरा पहुँचते-पहुँते तो वह भूल ही गया कि वह कभी बीमार भी हुआ था और दौलताबाद के एक काबिल हकीम से उसकी बीमारी का निदान भी नहीं हो सका था।

आगरा में पहुँचते ही उसको पता चला कि शहंशाह दिल्ली गए हुए हैं। वह आगरा में शहजादा दारा के दरबार में हाजिर हुआ। दारा ने ही बताया कि शहंशाह उसकी प्रतीक्षा करते हुए दिल्ली गए हैं। अली मर्दान खाँ ने पूछ लिया, "हुजूर, किस वजह से बंदे की इन्तजार की जा रही है ?"

"शहंशाह दक्खन में लाम लगाने की जगह कंधार में अपनी सल्तनत को मजबूत करने की ज्यादा जरूरत समझते हैं।"

इस सूचना से अली मर्दान खाँ का माथा ठनका। वह कंधार जाने से तो नहीं डरता था। उसे ज्योतिषी की बात के सत्य होने से डर लग रहा था। वह मन में विचार कर रहा था कि उसके एक जासूसी काम करने का तो उसको ज्ञान हो सकता था, परन्तु दौलताबाद से जाते ही उसके स्वस्थ हो जाने और फिर कन्धार लाम पर जाने की बात का ज्ञान तो उसके नजूमी होने का सही प्रमाण है। ज्योतिषी ने एक और बात कही थी कि उसकी प्रिय पत्नी उसके दिल्ली पहुँचने पर मर जायेगी। अब उसके मन में यह भय समा गया। उसका अपना परिवार दिल्ली में रहता था। अतः ज्योतिषी की बात सत्य सिद्ध होती देख वह दिल्ली को भाग जाने की बात विचार करने लगा।

शहजादा ने कह दिया, "सरदार! शहंशाह की यह ज़बरदस्त ख्वाहिश है कि आप दिल्ली फौरन पहुँच जायें, वहाँ पर ही इस मुहिम की तैयारी की जाएगी।"

"तो मैं आज ही दिल्ली के लिये रवाना हो जाता हूँ।"

"हाँ। आपको खर्चा वगैरह भी वहीं से मिल जाएगा।"

"हुजूर दिल्ली कब तशरीफ ला रहे हैं ?"

"आपके साथ शहज़ादा मुराद जा रहे हैं और मैं यहाँ राजा जयसिंह के साथ सल्तनत का काम सम्भालूँगा।"

सरदार अली मर्दान खाँ उसी सायंकाल घोड़े पर सवार हो दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए चल पड़ा। तीसरे दिन दिल्ली में सीधा अपनी जाय-रहाइश पर पहुँच गया।

शाहजहाँ ने दिल्ली के लाल कोट की मरम्मत करवा ली थी। पृथ्वीराज का लाल कोट अब लाल किला बन गया था। पठानों ने तो कोटि की महत्ता को न समझ इसकी अवहेलना कर रखी थी। वे अपना पृथक् कोटला बनवाये हुए थे। शाहजहाँ के बुजुर्ग आगरा में रहते थे। शाहजहाँ की दृष्टि इस कोट की तरफ गई तो उसने इसे मरम्मत करवा इसके महलों को सजा लिया था। अकबर के लिये राजपूतों की समस्या मुख्य थी। इस कारण उसने आगरा राजधानी बनाई थी। जहाँगीर के लिए पश्चिमोत्तरी सीमा की रक्षा अधिक आवश्यक थी। इस कारण जहाँगीर ने लाहौर को अपनी राजधानी बना रखा था। शाहजहाँ के लिए दक्षिण और पूर्व अधिक महत्त्व के स्थान हो गये थे। इस कारण उसने दिल्ली को ही अपनी राजधानी बनाने का यत्न किया।

पूर्वी इलाका पठानों ने अनायास ही अपने अधिकार में कर लिया था और पठानों के उपरान्त भी पूर्व की समस्या पठानों की समस्या बनी हुई थी। वहाँ के निवासी भेड़ों की भाँति हाँके जा रहे थे। इस पर भी वहाँ से सम्पर्क रखने के लिए आगरा से दिल्ली अधिक केन्द्रीय स्थान था। दिल्ली में बैठे हुए जहाँ पूर्व और दक्षिण पर आँख रखी जा सकती थी, वहाँ कन्धार भी नियन्त्रण में रखा जा सकता था।

पिछले कुछ वर्षों से कन्धार स्वतन्त्र हो गया था। इस कारण उसे विजय करने के लिए वर्तमान मुहिम चलाई जा रही थी। इसके लिए दक्षिण की योजना स्थगित करनी पड़ी थी।

अली मर्दान खाँ अपनी हवेली में पहुँचा, तो वहाँ कोहराम मचा हुआ था। उसकी दूसरी पत्नी सनम का देहान्त हो गया था। पहली बीवी जीवित थी और उसके तीन बच्चे भी थे। सनम छोटी थी। उसके एक ही औलाद थी। हवेली का दरवाजा खुलते ही उसकी पहली बीवी की लड़की अनार ने रोते-रोते बाप से गले लिपटते हुए छोटी माँ के मरने का समाचार सुनाया।

"क्या हुआ था ?" सरदार ने पूछा।

"कुछ पता नहीं चला। कल तक राजी-खुशी थीं। रात को एक-दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस्त हुए। दवा दी गई, मगर दस्त जारी रहे। सुबह हकीम साहब को बुलाया गया। उन्होंने भी दवा दी पर दस्त बन्द नहीं हुए। आधा घण्टा हुआ कि उनका इन्तकाल हो गया।"

अली मर्दान खाँ को फिर पण्डित त्रिभुवन कीर्ति की याद आई। अब तो उसकी योग्यता के विषय में रहा-सहा सन्देह भी समाप्त हो गया। उसे उससे और ज्यादा न पूछ सकने का अफसोस लगने लगा था।

जब शोक के दिन समाप्त हुए तो वह दरबार में हाज़िर हुआ। शाहजहाँ ने उसे हाज़िर देख कह दिया, "हमने दौलताबाद आदमी भेजा था। उसके पहुँचने से पहले तुम वहाँ से रवाना हो चुके थे। आगरा से भी पता चला कि तुम दिल्ली आ चुके हो। यहाँ पूछ-गीछ करने पर पता चला कि तुम्हारी बेगम फौत हो गई है। हमें बहुत अफसोस है।"

"मुझे शहज़ादा-ए-अज़ीम से पता चला था कि जहाँपनाह मुझे याद कर रहे हैं। मैं इसी ग़रज़ से आगरा से यहाँ चला आया था; मगर घर पर ग़म की खबर सुनकर दरबार में हाज़िर नहीं हो सका।"

"हम समझते हैं कि अब मौका है जब कन्धार वालों को मगलूब किया जा सकता है और इसे सल्तनत में फिर शामिल किया जा सकता है।"

"जहाँपनाह ! यह हो जाएगा।"

"अपने साथ शहज़ादा मुराद को लेते जाओ। उसको अब जंग का तजरबा होना चाहिए।"

"ठीक है। हुक्म मिल जाना चाहिए।"

"तुम्हारे साथ साठ हज़ार फौज जायेगी। एक सौ तोपें होंगी। इसके लिए साथ में जरूरी खर्चा और दारू-बारूद होगा। और बताओ।"

"हाज़िर हूँ, जहाँपनाह !"

"वज़ीरे आला से मिल लो।"

शहज़ादा मुराद और अली मर्दान खाँ एक महीने की तैयारी के बाद काबुल की सड़क पर चल पड़े।

एक वर्ष की भाग-दौड़ के उपरान्त वे असफल लौट आये। उज़बकों ने इतना डटकर मुकाबिला किया था कि मुगलों के किये कुछ नहीं बन पाया। शहज़ादा मुराद ने बहुत बहादुरी दिखाई मगर उज़बकों पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय तक शहंशाह आगरा लौट आये थे। मुहिम के लौट आने पर मुराद तो दिल्ली में ही ठहर गया। एक वर्ष की भाग-दौड़ के उपरान्त उसे दिल्ली मनोरंजन के लिए उचित स्थान समझ आया था। एक तो पिता और शहंशाह से दूर मनोरंजन की स्वतन्त्रता अधिक थी। दूसरे, वह शाही दरबार में चल रही घृणा और द्वेष से बाहर रहना चाहता था। अली मर्दान खाँ आगरा पहुँच गया और उसने कन्धार विजय में कठिनाई का वर्णन करते हुए, दौलताबाद के समीप मिले ज्योतिषी का उल्लेख कर दिया। उसने पण्डित त्रिभुवन कीर्ति का नाम-धाम बताते हुए उसकी योग्यता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। यह बात उसने अपनी असफलता को खुदा की मर्जी बताने के लिए कही थी। उसने बताया, "हुजूर! उस ज्योतिषी ने तो यह होने वाली बात वहाँ ही बता दी थी। उसका कहना था कि यह मुहिम नाकामयाब होगी।"

"ओह, ऐसे आदमी को तो हमारा दरबारी होना चाहिये।"

"हुजूर! हुक्म दे, उसे बुला लीजिये।"

बस फिर क्या था! हुक्म जारी हो गया। हुक्म बुड़हानपुर गया और वहाँ से जांव। वहाँ झगड़ा हो जाने से त्रिभुवन कीर्ति और उसकी पत्नी तो लाये ही गये, साथ ही गाँव लुट गया, जल गया तथा फसल नष्ट हो गई।

: ७ :

पण्डित त्रिभुवन कीर्ति को सराय में ठहरे एक सप्ताह हो गया था और अभी तक उससे कोई मिलने वाला नहीं आया था। उसकी जहाँ सेवाशुश्रूषा बहुत यत्न से की जा रही थी, वहाँ पहरेदारी भी बहुत कठोर थी। पण्डित, उसकी पत्नी तथा लड़की सब घूमते-फिरते थे और भ्रमण के लिए यमुना-तट पर भी जाते थे, परन्तु सिपाही सदा उनकी देख-रेख के लिए आगे-पीछे रहते थे। सिपाही तो इस कारण साथ रहते थे कि वे भाग न जायें और शाही पहरेदारों को उनके साथ देख लोग यह समझते थे कि उनकी गुंडों और आवारा लोगों से रक्षा की जा रही है।

इस प्रकार एक सप्ताह से अधिक व्यतीत हो गया। एक दिन अली मर्दान खाँ को देख पण्डितजी ने पहिचान लिया कि यह तो वही रोगी है जिसे देखने के लिए उसे दौलताबाद बुलाया गया था और जिससे नाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो वह चला गया था।

अली मर्दान खाँ ने पण्डितजी को हाथ जोड़ आदाब अर्ज की तो पण्डितजी तुरन्त समझ गये कि किसकी शिकायत से उसे यहाँ पकड़ बुलाया गया है। पण्डितजी ने पूछ लिया, "तो यह आप हैं जिन्होंने मुझको पकड़ यहाँ मँगवाया है?"

"तो आप पकड़े हुए हैं?"

"हाँ, मैं अपने को कैदी अनुभव करता हूँ। ये शाही सिपाही हमको इस प्रकार घेरे रहते हैं, जैसे मैं कोई बहुत बड़ा अपराधी हूँ।"

"नहीं पण्डितजी! ऐसा नहीं है। हकीकत यह है कि अगर आपकी इस तरह देखभाल न की जाये तो आपकी लड़की और बीवी के लिए यहाँ सही-सलामत रह सकना निहायत ही मुश्किल हो जाता। आप नहीं जानते, सारा शहर जानता है कि सराय में एक लड़की मलिका बनने लायक ठहरी हुई है।"

इस सूचना से पण्डितजी की चिन्ता और भी बढ़ गई। उन्हें चिन्तित देख अली मर्दानखाँ ने कहा, "मगर आपको फिक्र नहीं करनी चाहिए। ये सरकारी सिपाही आपकी हिफाज़त दिलोजान से करेंगे।

"अब सुनिये कि आपको किस मतलब के लिए बुलाया गया है। आपने जो कुछ नजूम मेरे मुताल्लिक लगाया था, वह हरफ-ब-हरफ ठीक हुआ है। मैंने शहंशाह से आपकी तारीफ की तो आपको बुलाने का हुक्म सादर हो गया।

"अभी तक आपकी सुध नहीं ली गई, इसमें एक वजह यह है कि शहंशाह मेरी इन्तजार कर रहे थे और आपकी तैनाती का हुक्म आपको मेरी मार्फत सुनाना चाहते थे।

"जहाँपनाह का यह हुक्म है कि आप आज से पाँच हजारी मुकर्रिर किए जाते हैं। आपको पाँच हजार रुपये सालाना वज़ीफ़ा मिला करेगा। इसके अलावा मौका-बे-मौका इनामो कराम भी मिला करेंगे। आपके लिए किले के अन्दर एक मकान तजवीज़ हुआ है। यह मकान महल के साथ ही लगता है। यह इस वास्ते किया गया है कि बेगमात भी आपके इल्म से फायदा उठा सकें।

"आपके किले में जाने और वहाँ जाकर रहने का परवाना आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिल जायेगा। आज शाम तक दरबार में जाने लायक आपको पोशाक मिल जायेगी। कल आप किले में पहुँच शाही खजांची को शाही हुक्म दिखा अपना वज़ीफ़ा पेशगी वसूल कर सकेंगे। मकान की चाबी भी वहाँ से ही मिल जायेगी।

"आपको दो नौकर भी मिलेंगे। एक रसोइया और एक अर्दली। आपको उन्हें तनख्वाह देनी नहीं पड़ेगी।"

"मैं अपनी लड़की की शादी करने गाँव को जाना चाहता हूँ।"

"एक-दो दिन में आपको दरबार में हाज़िर होने का हुक्म जारी होगा, तब वहाँ आप अपनी अर्ज़ी करियेगा।"

पण्डित जी गम्भीर विचार में निमग्न हो मुख देखते रह गए। उन्हें चुप देख सरदार ने कहा, "मैं अपने मुताल्लिक भी आपसे मशवरा करना चाहता हूँ।"

इस पर पण्डितजी को चेतना हुई और उन्होंने कहा, "मैं ऐसा समझ रहा हूँ कि यह सब कुछ मेरे हक में ठीक नहीं हो रहा। प्रत्यक्ष रूप में तो यह सब कुछ बहुत सुन्दर है और सुखकारक लग रहा है, परन्तु इसके पीछे कुछ छिपा है जो मेरे चित्त में बेचैनी पैदा कर रहा है।"

"देखिये पण्डितजी! आप आलम-फाजल हैं और बुजुर्ग हैं। मैं तो आपके बच्चों के बराबर हूँ। इसलिए मैं आपको क्या मशवरा दे सकता हूँ। इस पर भी इतना अर्ज कर ही सकता हूँ कि किस्मत बहुत ज़बरदस्त है और इसे कोई बदल नहीं सकता।

"इसलिए जो कुछ मिलता है उसे इनकार मत करिए और जो कुछ मिले उसे बढ़ाने की कोशिश करिए।

"हम लोगों की हालत देखिए। हम दिन-रात हथियारों से खेलते हैं और नहीं जानते कि कब ये हमारा ही खातमा कर देंगे। इस पर भी हम फिक्र नहीं करते। जो कुछ मुयस्सर होता है, उसे खुशामदीद कहते हैं और हमेशा खुश रहते हैं। शाही छत्रछाया में रहने का यही तरीका है। जब तक धूप रहे इसका लुत्फ उठाइये। क्या जाने कल को क्या होने वाला है।"

पण्डितजी को यह जीवन-मीमांसा ठीक प्रतीत नहीं हुई, किन्तु कुछ हो नहीं सकता था। इस सब सुख आराम के होने पर भी, वह अपने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक बन्दी अनुभव करता था। वह चुप था। इतना तो वह भी जानता था कि भाग्य बहुत प्रबल है, परन्तु पुरुषार्थ को छोड़ना भी उसे ठीक मालूम नहीं हो रहा था।

पण्डितजी को चुप देख अली मर्दान खाँ ने कहा, "हुजूर, मैंने अपने बारे में कुछ पूछना है।"

"हाँ, पूछ सकते हैं।"

सरदार ने अपना दाहिना हाथ आगे कर कहा, "मेरे मुस्तकबिल के मुताल्लिक कुछ बताइये।"

पण्डितजी ने हाथ को गौर से देखकर बताया, "अभी दस वर्ष के लिए बहुत सुख और आराम की जिन्दगी लिखी है।"

इस पर सरदार ने बताया, "आपके कौल के मुताबिक मेरी प्यारी बीवी फौत हो चुकी है। मैंने अभी तक नई शादी नहीं की। अब एक नया रिश्ता आ रहा है। मैं आपसे उसकी बाबत पूछना चाहता हूँ।"

"शादी के विषय में बताने के लिए दोनों के हाथ या दोनों की कुण्डलियाँ देखने की आवश्यकता रहती है।"

"हमारे यहाँ पैदा होने के वक्त तो किसी किस्म की लिखा-पढ़ी की नहीं जाती और हाथ दिखाना बहुत मुश्किल है। उसके वालिद से अर्ज कर दूंगा।"

"सरदार अपने विषय में कुछ जानना चाहते हैं तो पूछ सकते हैं।"

"दस साल के बाद क्या होगा?"

"अभी इतना तो ठीक-ठीक दिखाई देता है। आगे की रेखायें अभी साफ नहीं। कुछ सालों के बाद फिर दिखा सकते हो।"

"इसका क्या मतलब हुआ?"

"इसका मतलब यही है कि इस समय वे रेखायें, जो अब बहुत धीमी मालूम होती हैं, कुछ अर्सा बाद ठीक दिखाई देने लगेंगी। ये रेखायें बदलती रहती हैं। नई रेखायें भी बनती रहती हैं।"

"तो आपका कहना है कि मेरी जिन्दगी के आने वाले दस साल अभी ऐशो-आराम के हैं?"

"हाँ। मेरा इल्म यही बताता है।"

"पण्डितजी, बहुत-बहुत शुक्रिया। तब तो मैं यह शादी मंजूर कर लेता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डितजी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर सरदार ने अपनी जेब में से पाँच तिलै मुहरें निकाल कर पण्डितजी के कदमों में रख दीं और हाथ जोड़कर कहा, "अब तो इनको मंजूर करिये। पहिले की गुस्ताखी मुआफ फरमाइये।"

पण्डित त्रिभुवन कीर्ति को कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके भाग्य ने पलटा खाया है।

उसी दिन सायंकाल से पूर्व एक व्यक्ति अपने साथ तीन नौकरों को लिए हुए आ पहुँचा। साथ आये नौकर तीन पोशाकें और एक चाँदी की तश्तरी में पाँच हजारी की सनद तथा एक छोटी सोने की तश्तरी में पान-सुपारी, इलायजी, इत्र, साथ ही खजांची के नाम शाही फरमान कि रुपया पेशगी और मकान का कब्जा दे दिया जाये, लाये थे। फरमान में मकान की तशरीह भी लिखी थी।

लाने वाले ने यह सब सामान पण्डितजी के सामने रखा और फिर फर्शी सलाम कर कहा, "पण्डितजी, ये आपके पहिनने के वास्ते पोशाक है। इनको पहिनकर आप दरबार में आया करेंगे। ये दूसरी पोशाकें आपकी बेगम साहिबा के लिए और शहज़ादी साहिबा के लिए हैं। इनको ये साही बेगमों से मुलाकात के वक्त पहिना करेंगी।"

पण्डितजी ने यह देखा कि उनके लिए वस्त्र मराठा ढंग के हैं। पगड़ी, चोगा, चूड़ीदार पयजामा और जूता, सब मराठा ब्राह्मणों के लायक ही था। पण्डितजी ने जूता देखा तो उसको पहनने लगे और जब उसको ठीक नाप का पाया तो विस्मय में लाने वाले का मुख देखने लगे। लाने वाला मुस्कराया और बोला, "आपके कपड़ों का और जूते का नाप यहाँ आपके नौकर से ले लिया गया था।"

"कैसे और कब?"

"यह बहुत ही मालूमी बात है। आपकी खिदमत में तैनात सरकारी मुलाजमों ने यह किया है।"

"क्या नाम है तुम्हारा?" पण्डितजी ने सामान लाने वाले से पूछ लिया।

"सरकार, मैं कृष्ण था और अब आसद खाँ हूँ।"

"तो तुम हिन्दू से मुसलमान हो गए हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस पर वह हँस पड़ा और बोला, "महाराज ! मैं उस जमात में हूँ, जो न हिन्दू होते हैं न ही मुसलमान, जो न मर्द होते हैं न औरत । हम मज़हबों और मज़हबी बातों से बरी हैं।"

"ओह, समझा । मैं भी सोच रहा था कि तुम्हारी दाढ़ी-मूंछ क्यों नहीं । तुम एक जवान पुरुष मालूम होते हो मगर तुम्हारी आवाज औरतों सी मुलायम है । तो तुम खुसरे हो ?"

"जी ।"

"तुम कब से यहाँ हो ?"

"मैं चार-पाँच साल की उम्र में माँ-बाप के घर से यहाँ लाया गया था । नवाबों-रईसों की खिदमत में मुझ जैसे बदकिस्मत लड़कों के लिये यह जिन्दगी मख्सूस है ।"

"तो तुम पैदायशी ही ऐसे थे ?"

"जी नहीं । बहुत छोटी उम्र में मेरे अण्डकोषों को खत्म कर दिया गया था और फिर मुझे दलाल के हाथ बेच दिया गया था । वह दलाल मुझे यहाँ शाही खानदान के दारोगा के पास बेच गया और तब से मैं शाही खिदमत में हूँ ।"

"तो तुम शहंशाह की खिदमत में हो ?"

"जी नहीं । मैं उनकी बड़ी लड़की की खिदमत में हूँ ।"

"तो शहज़ादी यहाँ बाप के घर में ही रहती है क्या ?"

"जी ।"

"उनकी शादी नहीं हुई क्या ?"

आसद खाँ हँस पड़ा और बोला, "जी वे सूफी हैं ।"

"सूफी क्या होते हैं ?"

"वे खुदा-दोस्त बनी-नौ इन्सान को एक बराबर समझने वाले होते हैं । ऐसों को बाप-भाई, खाविन्द, बेटे, माँ, बीवी, नौकर-मालिक राजा-रियाया वगैरा में कोई फर्क मालूम नहीं होता ।"

पण्डितजी जानते थे कि ऐसे विचार ब्रह्मवादियों के हो जाते हैं । परन्तु ऐसे लोग तो संन्यासी और एकान्तवासी ही होते हैं । पंडितजी समझ नहीं सके कि इस प्रकार के विचार का आदमी शाही महल में कैसे रह सकता है । वे कुछ न समझते हुए चुप रहे । इस पर आसद खाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने कह दिया, "आप जब महल में आने-जाने लगेंगे तो सब कुछ जान जायेंगे।"

आसद खाँ ने एक परवाना किले के भीतर जाने का भी दिया और फिर वहाँ से विदा हो गया। जाने से पूर्व उसने फिर फर्शी सलाम की।

अगले दिन पंडितजी किले में जा पहुँचे। वहाँ खजांची के पास जाकर परवाना दिखाया, तो उसने अपने एक अर्दली को पंडितजी के साथ जाकर मकान खोलकर देने का हुक्म दे दिया।

उस मकान में प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधा का सामान एकत्रित था। पण्डितजी के लिये बैठक थी। उनकी पत्नी के लिये बैठने और सोने के कमरे थे और लड़की के लिए पृथक् कमरा था। जिस ओर औरतों के लिए स्थान था, उस ओर से महल के साथ सम्बन्धित एक गुप्त मार्ग था, जिसकी रक्षा खुसरे करते थे। वे सदा नंगी तलवार लिए द्वार पर खड़े रहते थे और भीतर जाने वालों पर देख-रेख रखते थे। पण्डितजी को यह मकान शहज़ादी जहानआरा बेगम की सिफारिश से दिया गया था और इस मकान से शाही महल को जाने वाले मार्ग पर नियत खुसरे इस बेगम के अधीन थे।

यद्यपि पण्डितजी का ज्योतिष यह बताता था कि उनकी लड़की नीला के जीवन में शनि की दशा आरम्भ होने वाली है, परन्तु वे देख रहे थे कि उनके अपने जीवन का उज्ज्वल-काल आता दिखाई दे रहा है। इस उज्ज्वल काल के सुख की भोक्ता नीला भी हो रही है। इस कारण वे इन परस्पर-विरोधी घटनाओं का अर्थ नहीं समझ सके थे।

पण्डितजी के मकान में पहुँचने के कुछ ही काल के पीछे खजांची स्वयं आया और पण्डितजी के सालाना बजीफे के पाँच हजार रुपये गिन कर दे गया। पण्डितजी ने एक बात देख सुख का साँस लिया। वह यह कि बुड़हानपुर से आये सिपाहियों का पहरा उठ गया है। अब उनके हाथ में रुपये थे और वे अपने सुख आराम का प्रबन्ध स्वयं कर सकते थे।

दो खिदमतगार महल की तरफ से मिल गये। इनमें एक रसोइया भी था। यह पहाड़ का रहने वाला एक हिन्दू ब्राह्मण था। दूसरा अर्दली के लिए और शाही खानदान से सम्बन्ध बनाने वाला खुसरा था। इसका नाम समद खाँ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डितजी को जब पता चला कि यह पुंसत्व-विहीन व्यक्ति है तो उन्होंने उसको घर के भीतर जाने-आने की खुली छूट्टी दे दी। यह समद भी दो सहस्र रुपये पर खरीदा गया था। वह अपने साथियों के साथ नौकरों के लिए बने मकानों में ही रहता था। दिन-भर वह पण्डितजी के साथ रहता था और रात को अपने साथियों के पास जाकर सोता था।

पण्डितजी को पता चला कि महल में एक सौ से अधिक खुसरे हैं। ये बेगमों और शहज़ादियों की सेवा के लिये और शहंशाह तथा शहज़ादों की खिदमत के लिए रखे हुए थे। उनमें से ही एक पंडितजी की अर्दली के लिये नियुक्त कर दिया गया था।

समद पण्डितजी के अन्तःपुर में आता-जाता था और महल की बातें बताता रहता था। आरम्भ में तो चन्द्रमुखी एक पुरुष के पहिरावे में व्यक्ति से बातचीत करने में संकोच अनुभव करती रही, परन्तु जब उसे समद की वास्तविक स्थिति का ज्ञान हुआ तो वह उससे महल की बातें सुनने में रस लेने लगी। नीलमणि भी उन बातों को सुनती थी।

: ८ :

एक सप्ताह से अधिक व्यतीत हो गया था और पण्डितजी को दरबार में उपस्थित होने की आज्ञा नहीं हुई। समद पण्डितजी को कायदे-कानून बताता रहता था। समद की राय से पण्डितजी ने दरबार के चोबदार को अपना नाम और छुट्टी की अर्जी दे रखी थी। पण्डितजी को शाही आज्ञा की प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया था।

पण्डितजी के दरबार में हाज़िर होने से पूर्व ही शहज़ादी जहानआरा ने पण्डितजी की पत्नी और लड़की को महल के भीतर बुला भेजा। माँ-बेटी दोनों जहानआरा बेगम के महल में हाज़िर हुईं और शहज़ादी साहिबा के सामने पेश की गयीं। शहज़ादी साहिबा इस समय पूर्ण यौवनावस्था में थीं। अति सुन्दर, दुबली-पतली, लम्बी गौरवर्णीय और शरीर की सुदृढ़ थीं। उस समय वे संगीत का अभ्यास कर रही थीं। उनको संगीत सिखाने वाली उस्तानी तथा तबला और सारंगी बजाने वाली औरतें भी उपस्थित थीं। एक युवा लड़का तबला और सारंगी बजाने वालियों के बीच बैठा था। यह दृश्य देख एक क्षण के लिए चन्द्रमुखी ठिठक कर खड़ी रह गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके विचार से वहाँ कोई पुरुष नहीं होना चाहिए था।

समद खाँ उनके साथ था। उसने नीलमणि के कान में कहा, "बेगम साहिबा को सलाम करो।"

अत: सिखाए तरीके के अनुसार नीलमणि ने सलाम की। इस पर जहानआरा बेगम ने हाथ के संकेत से उसे समीप बुला लिया और हाथ से पकड़ अपने समीप बैठा लिया। चन्द्रमुखी शहज़ादी के पीछे बैठ गयी। सामने बैठा युवक गा रहा था—

'गुलशन में लगे हैं फूल हज़ारों खुदाया
किस-किस पे मेरी है तबीयत मचल गयी।'

यह एक ठुमरी गायी जा रही थी। वह युवक राग का विस्तार करने लगा था। वह उक्त पद को ही बार-बार कहता हुआ स्वर-व्यंजना कर रहा था। इस समय शहज़ादी साहिबा ने समीप बैठी नीलमणि से पूछ लिया, "कैसा लग रहा है ?"

"बहुत अच्छा है।"

"मैं बहुत खुश हूँ कि तुम आ गई हो।"

"इनकार कैसे कर सकती थी ? मैं आपकी अपने पर अत्यन्त कृपा ही मानती हूँ।"

"समझ रही हो, यह क्या गा रहा है ?"

नीला शब्द तो समझ रही थी, इस पर भी भाव ठीक-ठीक समझ नहीं पा रही थी। अत: उसने बात बदल कर कह दिया, "मैं समझ रही हूँ कि यह क्या गा रहा है।"

"अच्छा ? भला यह क्या गा रहा है ?"

"यह खमाज की ठुमरी है।"

"ओह ! तुम तो बहुत समझती हो। गाती भी हो ?"

"बहुत ही साधारण।"

"आज तुमसे भी सुनेंगे।"

नीला ने फिर बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "पर हुज़ूर, यह लड़का है क्या ?" उसका विचार था कि यह खुसरा हो सकता है।

इस पर शहज़ादी ने कह दिया, "यह इनका," उसने उस्तानी की ओर संकेत कर कहा, "लड़का है। कितनी मीठी आवाज़ है इसकी !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीला देख रही थी कि गाने वाला हाव-भाव बना-बना कर गा रहा था। वह मंत्र-मुग्ध हो सुनती रही। गाने वाले ने ठुमरी का अंतरा गा दिया—

"सोसन हिना चम्बेली गेंदा की है रू बहार
हर रंग हर बू से मेरे में खुमार आया,
गुलशन में लगे हैं फूल हज़ारों खुदाया।"

"वाह!" अनायास ही नीला के मुख से निकल गया।

गाने वाला तान-अलाप से राग का विस्तार करने लगा। शहज़ादी साहिबा ने नीला के गले में बाँहें डालकर कहा, "क्या समझती हो ?"

"गाने वाला अति योग्य है और इसकी आवाज़ में बहुत मिठास है।"

"ओह! तुम तो बहुत कुछ समझती हो!"

गाने वाले ने गाना समाप्त किया तो शहज़ादी ने कह दिया, "अच्छा दुलारे, अब तुम जाओ।"

दुलारे गाने वाले का उपनाम था। वह उठा और झुककर सलाम कर उस कमरे से निकल गया।

अब शहज़ादी तानपूरा ले स्वयं स्वर भरने लगी। वह भी खमाज के स्वर ही अलापने लगी थी। शहज़ादी का अपना स्वर भी मीठा था। इस पर भी उस युवक के मुकाबिले का नहीं था। साथ ही शहज़ादी को संगीत का ज्ञान भी कुछ अधिक नहीं था। वह भी वही ठुमरी गाने लगी, जो दुलारे गा रहा था। वह उसकी नकल उतारने का यत्न कर रही थी परन्तु उसकी सूक्ष्मता तक पहुँच नहीं सकी।

नीला संगीत का पर्याप्त ज्ञान रखती थी। शहज़ादी स्वयं आधा घंटा-भर अभ्यास करती रही और बीच में अपनी उस्तानी से संशोधन कराती रही। जब वह कुछ थक गयी तो उसने तानपूरा नीला के हाथ में देकर कहा, "कुछ तुम भी सुनाओ।"

"आपके मुक़ाबले में मैं तो कुछ भी नहीं जानती।"

"दुनिया में सब बराबर नहीं होते। हर रुत्बे में, हर इल्म और हर किस्म के सुख और आराम में सब अपनी-अपनी किस्मत के मुताबिक ही पहुँच पाते हैं। इससे किसी को आगे-पीछे रहने में न तो अफसोस करना चाहिए न ही शर्म महसूस करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"देखो, यह हमारी उस्तानीजी हैं। ये तुमको कुछ तो बता ही सकेंगी।"

इस पर नीला ने तानपूरे का स्वर ठीक कर अपने स्वर से मिलाया और भीमपलासी के स्वर भरने आरम्भ कर दिये। यद्यपि उसका ज्ञान शहज़ादी साहिबा और दुलारे से बहुत कम था, इस पर भी जितना उसने गाया, बहुत ही साफ और शुद्ध गाया। उसके गीत के बोल थे—

सरस्वती भवानी वर दे मुझको।
स्वर वचन मधुर मैं पाऊँ
भावों को भेंट चढ़ाऊँ
चरणन में सीस नवाऊँ, वर दे मुझको ॥
कविता की मधुर स्वरों से
पुलकित कर जन मन को, वर दे मुझको ॥

तानालाप में उस्तानी ने सहायता दी। जब नीला समाप्त कर चुकी तो पुरस्कार के रूप में शहज़ादी ने नीला के गले में अपनी बाँह डाल उसे अपने समीप खींच उसका मुख चूम लिया।

यह सब व्यवहार नीला और शहज़ादी साहिबा में घनिष्ठता बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ। अन्त में उस्तानी ने भी एक गाना गाकर सुनाया। उसने शुद्ध कल्याण में राग गाया। मजलिस के अन्त होने पर सब उठ खड़े हुए। शहज़ादी साहिबा ने चन्द्रमुखी को आदर-सहित अपनी बैठकर घर में बैठाया और नीला को लेकर अपने सोने के कमरे में चली गयी। एक घण्टाभर वह वहाँ रही और जब वे कमरे से बाहर आयीं तो नीला का मुख लाल हो रहा था।

नीला और चन्द्रमुखी को शहज़ादी साहिबा ने विदा किया। उनको एक थैली में कुछ अशरफियाँ देते हुए कहा, "आप पान सुपारी तो लेती नहीं। इसलिए इसकी मिठाई लेकर खा लीजिएगा। मैं इसके वालिद शरीफ को अपना हाथ दिखाना चाहती हूँ। कब आऊँ?"

"तो आप वहाँ आयेंगी?"

"यहाँ उनके आने की शहंशाह से इज़ाज़त लेनी पड़ेगी। मुझे आपके घर में जाने की इज़ाज़त है।"

"तो क्या उस लड़के के यहाँ आने की इज़ाज़त है?"

"दुलारे की बात कर रही हैं? वह तो शाही महल का ही जमापला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। वह हमारी रस्तानी का लड़का है। ख्याल किया जाता है कि हमारा भाई ही है। मेरा मतलब है शहंशाह का लड़का। उसे महल में सब जगह आने-जाने की इजाज़त है।"

"ओह, तो यह बात है!"

एक दिन में ही चन्द्रमुखी महल के रहस्य जानने लगी। अपने मकान के कमरे में पहुँच माँ ने लड़की से पूछ लिया, "शहज़ादी के कमरे से निकलते समय तुम्हारा मुख लाल क्यों हो रहा था? ऐसा मालूम होता था कि तुम एक कोस की दौड़ लगाकर आ रही हो।"

"हाँ माँ! उस कमरे से हम पिछले आँगन में चली गयी थीं और वहाँ कुछ अन्य औरतें थीं। हम उनसे खेलती रही थीं।"

"कितना व्यर्थ का जीवन है!"

"इन बेचारियों को कुछ करने को है भी तो नहीं। यह गाना-बजाना सीखना भी तो शहज़ादी साहिबा के शौक के कारण ही है। दूसरी औरतें और इसकी दूसरी बहिनें तो इसमें भी रुचि नहीं रखतीं।"

"कैसी लगी है यह बेगम?"

"बहुत सुन्दर है माँ?"

"परन्तु मुझे तो तुम उससे इक्कीस ही मालूम हुई हो।"

"सब माताओं को अपनी सन्तान ऐसी ही लगती है। वह मुझसे बहुत अधिक सुन्दर है।"

"दरबार के लिए पिताजी को बुलाने की बात हुई है क्या?"

"बहुत जल्दी है माँ?"

"हम तुम्हारे विवाह के लिए उतावले हो रहे हैं।"

"यह मैं कह नहीं सकी।"

माँ मुस्करायी और चुप रही।

तीन-चार दिन तक बेगम साहिबा का नीला से मिलने आना और नीला का महल में जाना होता रहा। नीला इत्यादि को इस नये मकान में आये एक सप्ताह से ऊपर हो चुका था कि शहज़ादी साहिबा एक सायंकाल आईं और फिर नीला को, उसका संगीत सुनने के लिए साथ ले गयीं।

नीला आधी रात गए तक लौटी और चुपचाप सो गयी। अगले दिन पंडित त्रिभुवन कीर्ति को दरबार-ए-आम में हाज़िर होने की आज्ञा मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी । समद ने पंडितजी को दरबार के व्यवहार की सब बातें समझा रखी थीं । सलाम करने का तरीका और फिर पाँच हज़ारियों में खड़े होने का स्थान; वहाँ चुपचाप खड़े रहने की बात; जब तक शहंशाह कुछ पूछें न, तब तक कुछ न बोलना; प्रश्न का उत्तर बहुत ही संक्षेप में और अर्थयुक्त होना चाहिये, इत्यादि ।

पंडितजी के पेट में सरकारी अन्न जाने लगा था । उनकी जेब में सोने की मुहरें छलकने लगी थीं और वे उसके सम्मोहन की लपेट में आने लगे थे । इस कारण वे सब बताये व्यवहार के अनुसार सलाम कर अपने स्थान पर जा खड़े हुए ।

पंडितजी ने देखा कि जहाँ उन्हें खड़ा किया गया है, वहाँ कुछ अन्य लोग भी खड़े हैं । समद ने बताया कि ये सब सेना के सरदार हैं । वे सब पंडितजी की ओर बहुत ध्यान से देखने लगे और अपने समीप खड़े हुओं से कानाफूसी करने लगे थे । उनके और पंडितजी के सामने चाँदी का जंगला लगा हुआ था, चाँदी चमचम कर रही थी । चाँदी के जंगले के आगे थोड़ा स्थान छोड़कर सोने का जंगला बना था । सोने का जंगला एक चबूतरे पर गढ़ा हुआ था । इस चबूतरे पर बारह संगमरमर के खम्भे थे और उन खम्भों पर रत्नजड़ित संगमरमर की छत खड़ी थी । चबूतरा काफी बड़ा था और चबूतरे के पीछे संगमरमर की जालीदार दीवार थी । वह दीवार महल के अन्दर की थी । जब दरबार लगता था तो महल की बेगमात इस जाली की दीवार के पीछे आकर देखा करती थीं । जाली की दीवार में सोने-चाँदी का एक द्वार था ।

सोने के जंगले के पीछे चबूतरे पर एक सोने-चाँदी की चौकी थी, जिस पर रेशमी दरी, उस पर मखमली कालीन और उस पर तीन मखमली तकिये रखे थे । इन तकियों पर और दरी तथा कालीन पर ज़रीदार काम किया हुआ था, जिनकी झालरों से भिन्न-भिन्न प्रकार के रत्न लटक रहे थे ।

पंडितजी के पीछे लकड़ी का जंगला था जो लाल किरमची रंग से रंगा हुआ था । इस लकड़ी के जंगले के पीछे चार सजे हुए हाथी खड़े थे । जंगले के दाएँ और बाएँ नौ-नौ घुड़सवार नेज़े-तलवारों से सुसज्जित भड़कीली पोषाक पहने खड़े थे । जंगलों के बाहर चबूतरे के साथ नंगी तल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वार लिए बीस सैनिक एक ओर तथा बीस सैनिक दूसरी ओर खड़े थे। हाथियों की अगल-बगल तुरियाँ और बीस के लगभग शहनाइयाँ लिए लोग खड़े थे।

पूर्ण दृश्य अत्यन्त प्रभावशाली और भय तथा प्रशंसा जागरित करने वाला था। पंडितजी अभी यह सब कुछ देख रहे थे कि एक बहुत ही भड़कीली पोशाक पहने हुए व्यक्ति लकड़ी के जंगले से निकल चाँदी और सोने के जंगले के बीच आ खड़ा हुआ। उस व्यक्ति के सिर पर पगड़ी बँधी थी और उसके हाथ में कुछ कागज़ थे। समद पंडितजी के कान में बोला, "ये वज़ीरे आला हैं। दरबार में सब कार्रवाई इनकी मार्फत ही होती है।"

इस समय दो गुर्ज-बरदार भी जंगलों को पार करते हुए आगे आ गये। एक जिसके पास चाँदी का गुर्ज था, वह चाँदी के जंगले के समीप लकड़ी के जंगले के आगे निकल खड़ा हो गया। दूसरा गुर्ज-बरदार जिसके हाथ में सोने का गुर्ज था, वह चाँदी और सोने के जंगले के भीतर सोने के जंगले के पास जाकर खड़ा हो गया।

दरबार में पूर्ण शान्ति थी। एकाएक संगमरमर की जाली के भीतर कुछ हलचल मालूम हुई। इस हलचल को देख शहनाई वालों ने शहनाई बजानी आरम्भ कर दी। दो मिनट तक शहनाई बजती रही। तब संगमरमर की जाली में सोने का द्वार खुला और उसमें से शहंशाह शाहजहाँ स्थिर परन्तु धीरे-धीरे पग धरते हुए आए। उस समय सब खड़े लोग झुक गये और हाथों को जमीन से सिर तक ले जाकर सलाम करते रहे। शहंशाह तख्त पर बैठा तो सब के सिर सीधे हुए। पंडित त्रिभुवन कीर्ति ने देखा कि हाथी भी अपनी सूंड उठा सलाम कर रहे थे। शहंशाह के तख्त पर बैठते ही बन्दूकचियों ने बन्दूकें छोड़ीं। इसके उपरान्त चार युवक जाली वाले द्वार से निकल चबूतरे से नीचे हो सोने के जंगले के भीतर आ गए और उन्होंने शहंशाह के सामने झुक कर तीन बार सलाम की। फिर दूसरी तरफ से चबूतरे पर चढ़ तख्त के दोनों ओर परन्तु तख्त के नीचे बैठ गए।

समद ने पंडितजी के कान में बताया कि ये शहजादे हैं। अब दरबार आरम्भ हुआ। वज़ीर आला ने झुककर अपने हाथ में पकड़े कागजों में से एक निकाला और शहंशाह के सामने पढ़ दिया। पढ़ते हुए उसने पंडित त्रिभुवन कीर्ति की ओर संकेत कर दिया। शहंशाह ने पंडितजी की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नज़र घुमाई और फिर कुछ कहा। पंडितजी तो वजीर से कही बात सुन नहीं सके। न ही शहंशाह की उस पर आज्ञा सुन सके। वजीर ने शहंशाह के कहने को सुनकर झुककर सलाम की और फिर समीप खड़े चाँदी के गुर्ज-बरदार को कुछ कहा। वह चाँदी के जंगले से निकल लकड़ी के जंगले में आया और पंडितजी को संकेत से अपने साथ लेकर उसने उन्हें सोने के जंगले के समीप ले जाकर खड़ा कर दिया।

वजीर-ए-आला समीप ही खड़ा था। उसने पंडितजी से कहा, "आलीजाह जहाँपनाह शहंशाह-ए-हिन्द यह हुक्म सादर करते हैं कि आज शाम पंडित त्रिभुवन कीर्ति दीवान-ए-खास में हाज़िर हों। उनकी छुट्टी की अर्जी उस वक्त सुनी जायेगी।"

जब वह आज्ञा सुनाई जा चुकी तो गुर्ज-बरदार ने कहा, "पंडितजी, सलाम करिये और अपनी जगह पर वापस चले जाइये।"

इस प्रकार एक-एक कर अर्जियाँ पेश होती गयीं और उन पर हुक्म सादर होता रहा। हुक्म सुनाया जाता रहा। गुर्ज-बरदार अर्जी करने वालों को सोने के जंगले के बाहर वज़ीर-ए-आला के पास लाकर खड़ा कर देता था। हुक्म सुना दिया जाता था और फिर गुर्ज-बरदार प्रार्थी को वापस अपने स्थान पर ले जाता था।

दरबार का काम लगभग डेढ़ घंटा चलता रहा और तब तक सब उपस्थित लोग खड़े रहे। बैठने वालों में शहंशाह तख्त पर बैठे थे। तख्त के नीचे चबूतरे पर शहज़ादे बैठे थे। वज़ीर-ए-आला भी खड़ा-खड़ा ही अर्जियाँ पेश कर रहा था।

जब सब अर्जियाँ हो चुकीं तो सोने के गुर्ज-बरदार ने फारसी ज़बान में शहंशाह की उम्र दराज़ के लिए अल्ला ताला से दुआ की और यह ऐलान किया कि शहंशाह सब रियाया को खबरदार करते हैं कि वफादारों पर खुदा की बरकत बरसेगी और बागियों पर लानत।

इसके बाद पुनः शहनाइयाँ बजने लगीं और शहंशाह उठ खड़े हुए। शहज़ादे भी उठ खड़े हो गए। सब लोग झुककर सिर नीचे कर फर्शी सलाम करने लगे।

शहंशाह संगमरमर की जाली में सोने के द्वार से भीतर चले गए और द्वार बन्द हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबार समाप्त हुआ और समद पण्डितजी को लेकर उनके घर चला गया। पण्डित त्रिभुवन कीर्ति इस नियत कार्य को देख बहुत ही प्रभावित हुए।

: ६ :

दरबार-ए-खास में दृश्य दूसरा ही था। पण्डितजी दरबार-ए-आम से घर गए थे। नीला को शहज़ादी साहिबा का एक खुसरा आसद खाँ बुला कर ले गया था और वह अभी तक लौटी नहीं थी। उसके आने से पहले ही पण्डितजी के दरबार-ए-खास में हाज़िर होने का वक्त हो गया। दरबार में सब आने वालों के लिये बैठने का प्रबन्ध था। समद, पण्डितजी को उनके लिए नियत स्थान पर बैठा कर और शहंशाह के आने पर खड़े होकर फर्शी सलाम और फिर शहंशाह के बैठ जाने के बाद बैठने की बात बता कर पीछे के द्वार से बाहर निकल गया। इस दरबार में नौकरों को आने की स्वीकृति नहीं होती थी।

शहंशाह आकर बैठे तो सबसे पहले मराठी पगड़ी बाँधे पण्डित त्रिभुवन कीर्ति को ही सम्बोधन कर कहने लगे—"पण्डितजी! अभी आपको छुट्टी नहीं मिल सकती। अभी तो हमने आपसे अपने मुतअल्लिक मशवरा करना है। आप इस दरबार के बाद हमारी खास बैठक में आयेंगे।"

बस बात समाप्त हुई। पण्डितजी को कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिला। इसके बाद अली मर्दान खाँ ने अपनी अर्ज़ी पेश कर दी, "जहाँपनाह, पण्डितजी ने मुझे बताया है कि दस साल तक मेरी जिन्दगी बहुत ही खुशी और खुशहाली की गुजरेगी।"

"और उसके पीछे?"

"पीछे के मुतअल्लिक आपका फरमाना है कि मेरे हाथ पर का नक्शा साफ नहीं बना। उसमें तबदीली हो रही मालूम होती है। यह तब्दीली वे कुछ अर्से बाद ही बता सकेंगे।"

"तो फिर?"

"मैं एक नयी शादी कर रहा हूँ।"

"मुबारक हो, सरदार!"

"सब जहाँपनाह की मेहर और इनायत है।"

"कहाँ शादी कर रहे हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बरकन्दाज़ सैदुल्ला खाँ की लड़की मिराज-उल-निशा से।"

"ओह! मगर सरदार, वह तो एक चमारिन के पेट से है।"

"आलीजाह! जानता हूँ। मगर मिठाई तो किसी भी दुकान की हो, मीठी ही होती है।"

"तो वह मिठाई है?"

"मैंने तो चखकर देखी है।"

इस पर शहँशाह हँस पड़े। दरबारी भी कहकहा मार हंसने लगे। बरकन्दाज़ सैदुल्ला खाँ भी दरबार में हाज़िर था। वह खड़ा हो बोला, "हुज़ूर, अगर कोई जहाँपनाह के सामने झूठ बोले तो उसको क्या सज़ा होनी चाहिये?"

"झूठ की वजह से होने वाले फायदे के मुताबिक सज़ा होगी। यह मौत की सज़ा तक हो सकती है।"

इस पर सैदुल्ला खाँ ने कह दिया, "इसने कहा है कि इसने मेरी लड़की को चखकर देखा है। जहाँपनाह, यह सफेद झूठ है।"

"झूठ तो है नहीं। हुज़ूर, इसकी तसदीक हो सकती है। मगर इस राज की बात बताने में मुझे कुछ फायदा नहीं हुआ। मिराज मेरी बीवी बनने वाली है और मैंने अपनी होने वाली बीवी के मुतअल्लिक ही कहा है। इससे नेकी या बदी जो कुछ भी होने वाली है, वह मेरी अपनी बीवी की ही है। बीवी के बाप की नहीं।"

"हाँ, तो सैदुल्ला खाँ! अब क्या कहते हो?"

"जहाँपनाह, अभी तक वह मेरी लड़की है और इस झूठ बोलने से मेरी बदनामी हुई है।"

"मगर वह तो कहता है कि यह झूठ नहीं है। इसपर भी अगर बरकन्दाज़ सैदुल्ला खाँ इसरार करता है कि यह झूठ है तो हम तहकीकात कर सकते हैं।"

"कैसे?"

"उसको शाही हरम में भेज दो। हम उसका मुआयना करवा लेंगे।"

इसपर सैदुल्ला खाँ चुप होकर बैठ गया।

पंडित का ख्याल था कि सैदुल्ला खाँ को बात को इतनी दूर नहीं ले जानी चाहिये था। मगर वह इस दरबार में अभी सर्वथा नया था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण वह उत्सुकता से देखता रहा कि क्या होता है।

सैदुल्ला खाँ बैठ गया परन्तु उसका मुख क्रोध से लाल हो रहा था। शाहजहाँ ने भी वार्तालाप को बन्द नहीं होने दिया। उसने अली मर्दान खाँ से पूछ लिया, "मिठाई उठाकर खाई है या दाम देकर ?"

"दाम तय हो चुका है। वह आज दरबार के बाद शादी से पहले चुका दूंगा। यह हक मेहर की शक्ल में होगा। बीस हजार अशरफी तय हुआ है।"

"इससे तो यह साबित हुआ कि लड़की बाप से ज्यादा समझदार है।"

"नहीं हुजूर ! बाप ज्यादा समझदार है। उसने अपने एक दोस्त को शहंशाह से तबाह कराने की कोशिश की है। वह कामयाब नहीं हुआ तो इसमें उसका कसूर नहीं है। यह हुजूर आलीजाह की लियाकत की वजह से ही है कि वह अपने इस आला मक्सद में कामयाब नहीं हो सका।"

"तो काबिल लोग अपने दोस्तों को कत्ल करवाते हैं ?"

"जी अक्लमन्द लोग। मैं तो इनका बरखुरदार हूँ। इनकी खिदमत के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ।"

दरबार में मजा किरकिरा हो गया। इस पर शहंशाह उठ पड़े और ज़नानखाने में चले गये।

सैदुल्ला खाँ ने ऊँची आवाज़ में कह दिया, "अली मर्दान खाँ, तुम सुबह का सूरज नहीं देख सकोगे।"

"मैं तो अब्बा जान के घर उनकी लड़की को लेने बरात बनाकर आ रहा हूँ। मगर आप अपने प्यार का इज़हार वहाँ ही कर देंगे तो बहुत ठीक रहेगा।"

"तो आना।" इतना कह सैदुल्ला खाँ अपनी तलवार की मुट्ठी पर हाथ रखे हुए चला गया। अली मर्दान खाँ ज़ोर से हँस दिया।

पंडित खड़ा इस झगड़े के विषय में विचार ही कर रहा था कि समद भीतर आ गया और पण्डितजी से बोला, "चलिए, जहाँपनाह याद कर रहे हैं।"

उस कमरे से पण्डितजी बाहर निकले, जूता पहना और समद के साथ चल दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई रास्तों से घूम-घुमाव कर समद पण्डितजी को एक निहायत ही सजे हुए कमरे में ले गया। शहंशाह बैठे थे। कालीन पर दूध-समान श्वेत चाँदनी बिछी थी। पण्डितजी ने सलाम की तो शहंशाह ने उनको अपने समीप बैठा लिया। शहंशाह बोले, "पण्डितजी! आपने अपनी लड़की की शादी के मुतअल्लिक नजूम नहीं लगाया?"

"लगाया था। लड़की की कुण्डली में लिखा है कि वह अपने रुत्बे से ऊँचे वर को प्राप्त होगी।"

"ऊँचे का क्या मतलब?"

"हम ब्राह्मण हैं। हमारी जाति पन्त है। मैंने उसकी सगाई चितपावनों के घर में कर दी है। वे मुझसे अधिक विद्वान, प्रतिष्ठित, धन-धान्य से युक्त हैं। उनकी भूमि मेरी भूमि से दुगुनी से भी ज्यादा है।"

शहंशाह हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "पण्डित! तुमने अपनी लड़की की कुण्डली ठीक नहीं बनाई मालूम होती। उसकी शादी हिन्दुस्तान के शहंशाह से होनी लिखी मालूम होती है।"

पण्डित भौंचक्क मुख देखता रह गया। एक क्षण के लिए ही वह घबराया। दूसरे ही क्षण उसने अपने मन पर नियन्त्रण कर कहा, "जहाँपनाह उससे शादी करना चाहते हैं?"

"वह हमने कर ली है। लड़की ने तुम्हें बताया मालूम नहीं होता। शर्म महसूस करती होगी।"

"जहाँपनाह! कब और कैसे शादी की है?"

"कल रात। शाही खानदान में पहली बेगम के अलावा सब दूसरी बेगमों से एक ही तरीके से शादी की जाती है। उनसे वस्ल ही शादी होती है। हाँ, अगर औरत खाविन्द के, मेरा मतलब है शाही खानदान के रुक्न को पसन्द आ जाये तो वे उसे मलिका का रुत्बा दे देते हैं। यह तो अभी एक रोज के तजरबे से कहा नहीं जा सकता।"

"जब जहाँपनाह ने उससे शादी कर ही ली है तो फिर मैं अब छुट्टी लेकर क्या करूँगा?"

"हम राय तो किसी और बात पर लेना चाहते हैं।"

"फरमाइए।"

"मगर उससे पहले आप यह बताइए कि अली मर्दान खाँ और सैदुल्ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाँ में झगड़ा होगा क्या ?"

"हुजूर ! आज रात में ही तलवारें चलेंगी। कई मारे जायेंगे और अली मर्दान खाँ की लम्बी उम्र मालूम होती है।"

"सैदुल्ला खाँ इस लड़ाई में बचेगा या नहीं ?"

"यह तो उसका हाथ देखे बिना नहीं कह सकता। अली मर्दान खाँ का हाथ देखा है और उसके मुतअल्लिक ही कहा जा सकता है।"

"मेरा हाथ देखकर बताओ। तुम्हारी लड़की हमें खुश कर सकेगी या नहीं ?"

शहंशाह ने अपना दाहिना हाथ आगे कर दिया। पण्डितजी ने हाथ को गौर से देखा। देखकर वह चुप रह गये। शहंशाह ने पण्डित को चुप देख पूछ लिया, "क्यों ? क्या बात है पण्डितजी ?"

"कुछ अच्छी बात मालूम नहीं होती। यह लड़की जिसे आपने कल अपनी बीवी बनाया है, एक नये नाटक का सूत्रपात करने वाली सिद्ध होगी। यह नाटक शाही खानदान के लिए किसी प्रकार से भी उज्ज्वल भविष्य का सूचक नहीं है।"

"क्या हो सकता है ?"

"आपके लिए किसी प्रकार से भी खुशी का कारण नहीं हो सकता।"

"पण्डित, हमको बेवकूफ बना रहे हो ?"

"जहाँपनाह ! आप जैसे बुद्धिमान् और सौभाग्यशाली सम्राट को भला मैं कैसे बेवकूफ बना सकता हूँ। मैंने जो कुछ आपके हाथ पर लिखा देखा, वह बता दिया है।"

"कोई अच्छी बात हमारे हाथ पर नहीं लिखी क्या ?"

अब पण्डितजी ने बहुत ध्यानपूर्वक हाथ को फिर से देखा और कहा, "एक बात स्पष्ट है कि अभी दस साल तक किसी किस्म का कष्ट आने वाला नहीं है। जिस पर हुजूर हाथ रख देंगे वह निहाल हो जाएगा।"

"अच्छा यह बताओ, क्या बुराई आने वाली है हमारे खानदान में ?"

"आपके चार शहजादे हैं। चारों ही एक-दूसरे से द्वेष रखते हैं। इसकी आग में यह लड़की घी बनने वाली है।"

"यह तो मैं जानता हूँ कि वे आपस में मुहब्बत नहीं रखते। हमारे खानदान में यह बात तैमूर के वक्त से चली आती है। तैमूर ने अपने छोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भाई की औरत को अपने हरम में ले जाने के वास्ते भाई को मार डाला था। अकबर ने अपने बड़े भाइयों को अपने मातहत करने के लिए उम्र भर काबुल पर लामबन्दी जारी रखी थी। जहाँगीर ने अपने लड़के खुसरो को मरवा डाला। जहाँगीर का लड़का मैं हूँ। मुझे भी तख्त हासिल करने के लिए अपने भाई बुलाकी खुर्रम को मरवाना पड़ा था।"

पण्डित ने कहा, "मगर जहाँपनाह! आपके लड़के तो इस दिशा में बहुत दूर तक जाने वाले हैं।"

"मगर आपकी लड़की इसमें कैसे वजह बन जायेगी?"

"यह तो परमात्मा ही जानता है कि किस तरह अपने कार्य पूरे किये जा सकते हैं।"

शहंशाह का मन इस प्रकार अपने काले भविष्य की बात सुनकर काँप उठा था। पण्डित ने यह देखा था। इस कारण वार्तालाप समाप्त करने के लिए उसने कह दिया, "यदि जहाँपनाह चाहें तो अपनी जन्मकुंडली भेज दें। मैं आगामी दस साल की बातें व्याख्या के साथ पता करने का यत्न करूँगा।"

"जन्मकुण्डली तो नहीं है। हाँ, जन्म-दिन घड़ी-पल लिख रखा है। वह दिया जा सकता है।"

"उससे भी काम चल जायेगा।"

"देखो पण्डित! तुम्हारी लड़की का नाम हमने महताब रख दिया है। वह अब महल में रहेगी। आपसे मिलने के लिए आपके मकान में जा सकेगी। उसकी माँ उसके महल में आ सकेगी। लड़की का वज़ीफा अभी पाँच हज़ार मुकर्रिर किया है।

"हम समझते हैं कि आपको उसकी ज़िन्दगी के आराम और आसाइश में हारज नहीं होना चाहिए।"

पंडित ने इस आज्ञा का कुछ उत्तर नहीं दिया। वह अपने मुख से लड़की की अवस्था पर प्रसन्नता अथवा स्वीकृति प्रकट कर नहीं सका। वह ब्राह्मण होते हुए अपनी लड़की किसी मुसलमान को विवाह में देना स्वीकार नहीं कर सकता था। इस पर भी वह जानता था कि वहाँ बैठे हुए इनकार करने का क्या परिणाम हो सकता है।

उसे चुप देख शाहंशाह ने मुस्कराते हुए कहा, "यहाँ बड़े से बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीर, वज़ीर और राजा-महाराजा अपनी लड़की मुगल शहंशाह को देने में फख्र समझता है। अगर हमारी तबीयत किसी की बीवी पर भी मचल जाए तो वह भी चूं नहीं कर सकता। तुम्हारी लड़की को तो हम अपनी बेगम बना रहे हैं। उसका वज़ीफा अपनी छोटी लड़की के बराबर मुक़र्रिर कर रहे हैं।"

पंडितजी जानते थे कि लड़की की जन्मकुण्डली में उच्च का शनि पड़ा हुआ है। उसके साथ कुछ न कुछ दुर्घटना तो होने ही वाली है। अब यदि यह हो गया तो क्या जाने किसी उच्च सूर्य से सम्बन्ध बनाकर वह भी सुखी हो जाए।

इस प्रकार के विचारों में वह चुपचाप बैठे थे। शाहंशाह ने पंडित जी को विदा करते हुए कह दिया, "अब तुम जाकर आराम करो। जो कुछ मैंने कहा है उसे ध्यान में रखना और जैसी यहाँ से आज्ञा मिले वैसा करना। तुम भी सुखी रहोगे और महताब भी सुखी रहेगी।"

पंड़ितजी ने झुककर सलाम की और कमरे से बाहर निकल आए। समद वहाँ खड़ा था। वह पंडितजी को गुप्त मार्ग से ही उनके घर ले गया।

: १० :

पिछली सायंकाल जहानआरा बेगम स्वयं पण्डित त्रिभुवन कीर्ति के घर आयी थी और नृत्य-संगीत की मजलिस का बहाना कर नीलमणि को अपने साथ ले गयी थी। नीला स्वयं भी जाने के लिए उत्सुक थी।

नाच-गाने का प्रबन्ध तो था ही। नीला को शहज़ादी ने अपने पास बैठाया और मजलिस आरम्भ हो गई। अजमेर की एक रत्नमोहिनी नर्तकी आयी हुई थी। यह बहुत अच्छा गाती भी थी। उसका नाच और गाना सुनने और देखने के लिए महल की अन्य औरतें और बेगमात आई हुई थीं। रोशनआरा अपनी बड़ी बहिन शहज़ादी जहानआरा के दूसरी ओर बैठी हुई थी।

महल की सब औरतें नीला की ओर देखकर विस्मय कर रही थीं। एक बार रोशनआरा ने पूछा भी, "यह कौन लड़की है ?"

"पता चल जायेगा। अभी यह एक राज़ ही है।"

रोशनआरा समझ गई कि या तो शहंशाह के लिए या दारा के लिए यह लुक़मा लाया गया है। इस प्रकार विचार कर वह चुप कर रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन घंटा के नाच-गाने के उत्सव के उपरान्त जब सब उठ खड़े हुए तो नीलमणि ने अपने घर जाने की इच्छा प्रकट की। इस पर जहानआरा उसको अपने कमरे में ले गई और उसने उसे खाने की दावत दे दी।

जब-जब भी शहज़ादी नीला से पृथक् में मिलती थी वह उस कुँवारी लड़की से ऐसे ढंग से कलोल करती थी कि नीला उत्तेजित हो जाया करती थी। और उस उत्तेजना में दोनों परस्पर पति-पत्नी का नाटक खेला करती थीं। इस कारण उसने वापस घर जाने की स्वीकृति के लिए आग्रह कर दिया। मगर शहज़ादी ने प्रेम भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखा और कहा, "वाह, आज खाना मेरे साथ खाना होगा।"

"मगर हुज़ूर, हम तो किसी दूसरे का बना खाना खा नहीं सकतीं।" नीलमणि ने कह दिया।

"पर मैं अब कोई दूसरी तो हूँ नहीं। मैं तो तुम्हारा खाविन्द हूँ न?"

इतना कह शहज़ादी हँसने लगी। जहानआरा नीला की कमर में हाथ डालकर उसको घसीटती हुई अपने कमरे में ले गई। नीला को पहले के अनुभव स्मरण हो आए और वह पुनः वही खेल खेलने के लिए अपने को तैयार करने लगी। दोनों ख़ाने के लिए दस्तरखान पर जा बैठीं। लौंडियाँ खाना परोसने लगीं। नीला ने अभी भी संस्काराधीन कहा, "मैं माँस नहीं खा सकती। मुझे उलटी हो जाएगी।"

"मैं बताती जाऊँगी कि क्या खाना है।"

शहज़ादी ने उस दिन अपने सामने से भी माँस की सब तश्तरियाँ उठवा दीं। दोनों एक ही जैसा खाना खाती रहीं। पीने के लिए फलों के रस में मिली सुगन्धित शराब थी। नीला शराब के विषय में कुछ जानती नहीं थी और अनजाने में पीने लगी और जब उसे स्वाद लगी तो उसे पीती गई। यहाँ तक कि उसको खाना खाते-खाते उत्तेजना और पीछे खुमारी आने लगी। इस नशे में ही उसने कहा, "माँ को पता नहीं लगना चाहिए कि मैंने खाना यहाँ खाया है।"

"माँ को यहाँ की किसी भी बात का पता नहीं लगना चाहिए। ये बातें हमारी आपस की हैं। देखो नीला! माँ और बाप भी तो बहुत सी ऐसी बातें करते हैं, जो हमको नहीं बताते।"

नीला जैसी समझदार लड़की को यह बात सर्वथा फूहड़ प्रतीत होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि वह अपनी होश में होती। वह इस समय शराब के नशे में अर्ध-चेतना अवस्था में ही थी।

खाने के उपरान्त शहज़ादी ने उसे और फलों का रस पीने को दिया और फिर उसे अपने शयनागार में ले गई। इस ससय तक नीला लगभग अचेत हो चुकी थी।

इस समय नीला का साथी बदल गया। शहज़ादी की प्रतीक्षा दुलारे कर रहा था।

लगभग एक घण्टे के उपरान्त शहज़ादी कमरे में आई। उसने नीला को अपने पलँग पर सिर को दोनों हाथों में पकड़े बैठे देखा। नीला निर्वस्त्र थी। शहज़ादी भी सर्वथा वस्त्रविहीन थी। उसने नीला को गले लगाने का यत्न किया तो नीला पीछे हट गई और पूछने लगी, "आप कहाँ थीं?"

"तुम्हारे साथ ही तो लेटी हुई थी। अभी-अभी गुसलखाने में गई थी।"

"नहीं, मेरे साथ तो कोई दाढ़ी-मूँछ वाला पुरुष था।"

"तुम ख़्वाब तो नहीं ले रही थीं?"

नीला ने गम्भीर होकर कहा, "नहीं जी। यह स्वप्न नहीं हो सकता। उस समय मैं कुछ अचेत अवस्था में जरूर थी, परन्तु अब तो मैं सचेत हूँ। मैंने उस आदमी को यहाँ से जाते देखा है।"

"कैसा था वह?"

"था तो सुन्दर और···।"

"और क्या?"

"काफी बड़ी आयु का था। उसकी दाढ़ी में सफेद बाल दिखाई दे रहे थे।"

"तब तो जरूर शहंशाह मेरी गैरहाज़िरी में यहाँ आए होंगे।"

"कौन शहंशाह?"

"तो तुम नहीं जानती कि कौन शहंशाह हैं यहाँ?"

"शहज़ादी सहिबा! आपने मुझे धोखा दिया है।"

"क्या धोखा दिया है?"

"मुझे बलपूर्वक किसी की पत्नी बना दिया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कुछ छीना-झपटी हुई है ?" बेगम ने कुछ चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछा।

"मुझको ठीक-ठीक याद नहीं। जो हम नकल करती थीं, उसने सत्य ही वैसा व्यवहार किया है।"

"तब तो मुबारक हो।"

मुबारकबाद किस लिए ?"

"तुम मेरी अम्मी बन गई हो।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह है कि शहंशाह मेरे वालिद हैं। तुम उनकी बीवी बन गई हो। इस वजह से तुम अम्मी हो गई हो।"

नीला की अचेतना कम हो चुकी थी। वह समझ रही थी कि माँ के सामने एक और झूठ बोलना पड़ेगा। इस प्रकार मन में विचार कर बोली—"बेगम साहिबा, यह देखो।" उसने कमरे के द्वार के समीप मोतियों के तीन लड़ का एक हार पड़ा दिखा दिया। बेगम ने भाग कर उसे उठा लिया। "यह क्या है ?" उसने पूछा।

"वह आदमी जाते समय इसे मेरे गले में डालकर बोला, 'मैंने तुमको बीवी बनाया है। इसलिए तुमको यह देता हूँ।"

"सच ?"

"और मैंने हार उतारकर उसके मुख पर दे मारा। वह तो चला गया और हार यहाँ ही पड़ा है।"

"तो अब इसको पहन लो। जानती हो यह कितने मूल्य का है ?"

"नहीं।"

"यह दो लाख रुपए से कम दाम का नहीं है।"

"दो लाख !" नीला ने विस्मय में पूछ लिया।

"हाँ, मैं समझती हूँ तुम्हारा दाम तो इससे बहुत ज्यादा है।"

"तो मैं बिक गई हूँ क्या ?"

"यह बिकना नहीं कहा जाता। यह तो किसी कद्रदान के कद्र का अन्दाज है।"

नीला अपने भविष्य के विषय में विचार कर रही थी। शराब का नशा उतर चुका था और उसका मस्तिष्क काम करने लगा था। वह सोच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी कि अपनी इस अवस्था में कैसा व्यवहार बनाए। वह विचार कर रही थी कि यदि सत्य ही शहंशाह उसको अपनी बेगम बना लेता है तो क्या होगा ? यदि उसके माता-पिता को उसकी इस अवस्था का ज्ञान होता है तो वे क्या करेंगे ? इन प्रश्नों का उत्तर उसके मस्तिष्क में आ नहीं रहा था।

इस समय महल के घड़ियाल ने आधी रात का गजर बजाया। शहज़ादी ने घड़ियाल की आवाज़ सुनी तो कह दिया, "वक्त हो गया है। चलो तुम को तुम्हारी माँ के पास छोड़ आऊँ।"

दोनों ने वस्त्र पहने, शहज़ादी ने मोतियों का हार नीला के गले में डाल दिया।

नीला ने कहा, "यदि माँ ने यह देख लिया तो वह पूछेगी और इसकी कहानी बतानी पड़ेगी और मैं बता नहीं सकूँगी।"

"कह देना कि मैंने तुम्हारे गाने पर खुश होकर इनाम में दिया है।"

उस समय नीला को यह कहानी ठीक ही समझ आयी। इस पर भी उसने इसको वस्त्रों के नीचे छिपा लिया। वह बेगम साहिबा को साथ लिए हुए अपने घर जा पहुँची।

उसकी माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। नीला ने माँ को बैठे देखा तो कह दिया, "माँ, तुम सो जाओ। मैं भी सो रही हूँ।"

"भोजन ?" माँ ने पूछा।

"फलाहार ले लिया है।"

लड़की के देर तक वहाँ रहने की सफाई देते हुए शहज़ादी ने कह दिया—

"आपकी लड़की बहुत मीठा गाती है। आज इसने महफिल में रंग बाँध दिया था।"

माँ उठी और अपने पति के कमरे में चली गयी। नीला अपने बिस्तर में घुस लेट गई।

रात बहुत देर तक अपने बिस्तर में लेटी-लेटी नीलमणि अपने जीवन के विषय में योजना बनाती रही, परन्तु किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकी।

प्रातः समय पर उठी। उसने हार को छिपा दिया और अपने नित्य कर्म में लीन हो गई। उस दिन पण्डितजी को पहले दरबार-ए-आम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर दरबार-ए-खास में हाज़िर होने की आज्ञा मिल गई। वे अभी दरबार में जाने की तैयारी ही कर रहे थे कि एक खुसरा आया और नीलमणि को बुलाकर ले गया। नीला माँ से पूछ कर चली गयी। जाते हुए वह रात वाला मोतियों का हार साथ ले गयी।

पण्डित त्रिभुवन कीर्ति दरबार-ए-आम से लौटे तो उनको पता चला कि नीला मध्याह्न-पूर्व की गयी अभी तक नहीं लौटी। पण्डितजी को दरबार-ए-खास में जाना था। वे गए और वहाँ से ही वे शहंशाह की खास बैठक में चले गए।

इन सब बातों से छुट्टी पा और नीलमणि के विषय में शहंशाह की बात सुन चिन्तित मन वे घर पहुँचे तो चन्द्रमुखी को सिर-पर लपेटे लेटे हुए देख विस्मय में पूछने लगे, "भाग्यवान, क्या बात है ?"

चन्द्रमुखी ने मुख से चादर हटाई और कह दिया, "सर्वनाश।"

"भला सुनूं, कैसे ?"

'नीला मध्याह्न से पूर्व की महल में गयी हुई नहीं लौटी। तीसरे प्रहर एक खुसरा, वही जो हमको सराय में खिल्लत और नियुक्ति-पत्र देने आया था, मुझे यह कहकर साथ ले गया कि शहज़ादी साहिबा बुला रही हैं।"

"मैं उसके महल में पहुँची तो शहज़ादी बिना कुछ भी कहे मुझे एक सजे हुए कमरे में ले गयी। नीला वहाँ नव-वधुओं के वस्त्र-भूषण पहने बैठी थी। मैं उसको इस प्रकार शृंगार किए बैठे देख भौचक्क खड़ी रह गयी।

"शहज़ादी साहिबा ने मेरा हाथ पकड़ नील के पास बैठाकर कहा, 'शहंशाह ने इसकी शादी कर दी है।'

'किससे ?' मैंने पूछा।

'अपने से। अब ये मेरी अम्मी बन गयी हैं।'

'क्यों नीला ?' मैंने लड़की से पूछा। नीला ने कह दिया, 'शहज़ादी साहिबा ठीक कहती हैं।'

"नीला ने यह भी बताया कि वह बीवी तो पिछली रात ही बन चुकी थी। वचन इत्यादि आज हुए हैं। मैंने पूछा कि कल उसने क्यों कुछ नहीं बताया। उसका कहना था—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बताने योग्य कुछ था नहीं। जो कुछ था, वह सर्वथा लज्जा-युक्त ही था। मुझे तो आज भी बताने में लज्जा लग रही थी। इन्होंने मुझ पर कृपा की और आपको मेरी बात बता दी है।'

"मैं तो उसको आशीर्वाद दे आयी हूँ, परन्तु मेरा मन भीतर ही भीतर बैठता चला जा रहा है। मैं अपने मन को इस नई परिस्थिति में स्थिर नहीं कर पा रही।"

त्रिभुवन कीर्ति को तो यह सब कुछ पहले ही विदित हो चुका था। वह एक ओर तो लड़की की अशुभ भविष्यवाणी पर विचार कर रहा था और दूसरी ओर परिस्थितियों को उसके अनुकूल होते देख रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि किसको ठीक समझे। उसने पत्नी के पलंग पर बैठते हुए कहा, "भाग्यवान्, शहंशाह ने यह सब कुछ मुझको अपने मुख से बताया है। ऐसी अवस्था में मैं समझ नहीं सका कि क्या करूँ। लड़की तो अब पहुँच से दूर है। उसे महल से बाहर आने की स्वीकृति नहीं मिलेगी। हाँ, तुम उससे मिलने जा सकोगी।"

"हमको यहाँ से चल देना चाहिए।"

"कहाँ?"

"अपने गाँव को।"

"तो फिर पकड़ कर यहाँ मँगवा लिये जाएँगे।"

"तो बीजापुर चलें।"

"वहाँ कौन देवता राज्य करते हैं?"

"तो फिर?"

"यहाँ रहो। मेरी विद्या बताती है कि लड़की के लिए अच्छा नहीं हो रहा। यहाँ रहने से कुछ कदाचित् उसकी सहायता कर सकें।"

चन्द्रमुखी चुप हो गई।

समय व्यतीत होने लगा। इसके साथ ही धीरे-धीरे लड़की को एक म्लेच्छ से विवाहे जाने पर संतोष होने लगा। पण्डितजी की ख्याति दरबार में और बाहर फैलने लगी। पण्डितजी अब दरबार-ए-खास में ही बुलाए जाते थे।

: ११ :

जिस रात नीला के साथ शहंशाह ने पहली बार सहवास किया था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह अर्ध-चेतना अवस्था में ही थी। उसे जब चेतना लौटने लगी तो वह ध्यान-पूर्वक अपने से सहवास करने वाले को देखने लगी। उसे धीरे-धीरे यह ज्ञान होने लगा कि उसका साथी शहजादी नहीं, यह तो कोई दाढ़ी-मूंछ वाला पुरुष है। इससे वह भयभीत हो उठकर बैठ गयी और अपने साथी का मुख देखने लगी। इस भय के कारण उसका नशा उतरने लगा था। उसे अपनी नग्नावस्था का ज्ञान हुआ तो वह लपककर पलँग से उतरी, परन्तु सिर चकरा जाने पर फर्श पर गिर पड़ी।

साथी पुरुष भी उठा। उसने नीला को आश्रय दे उठाने का यत्न किया परन्तु वह अपनी अवस्था में एक पुरुष के सामने खड़ा होने में लज्जा अनुभव करने लगी थी। उसने घुटनों में सिर दे पूछा, "कौन हो तुम?"

"हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। आज से तुम हमारी बीवी बन गई हो। इसलिए तुमको यह तोहफा नजर कर रहे हैं।"

उसने अपने गले से तीन लड़ का मुक्ताहार उतार कर नीला के गले में डाल दिया। नीला ने क्रोध में गले से हार उतारा तो वह पुरुष भाग खड़ा हुआ। इस पर नीला ने वह हार उसकी ओर फेंक दिया। हार जाते पुरुष पर जाकर गिरा। वह द्वार के पास जा पहुँचा था। वह द्वार से निकल गया और हार वहाँ ही पड़ा रह गया।

उस पुरुष के चले जाने पर नीला उठकर वस्त्र पहन चली जाना चाहती थी, परन्तु उसका सिर अभी भी नशे में चक्कर काट रहा था। वह गिरने लगी तो उसने पलँग का आश्रय लिया और पलँग पर बैठ गयी। अब वह अपनी अवस्था पर विचार करने लगी। वह समझ गयी कि उसके साथ व्यभिचार हुआ है और उसको आत्महत्या कर लेनी चाहिए।

आत्महत्या की बात मन में आते ही उसे गुरु समर्थ रामदास की बात स्मरण हो आयी। स्वामीजी ने कहा था, "आहे तितुकें जतन करावें। पुड़े आणिक मेलवावें।" यह स्मरण आते ही उसको आत्महत्या उस वाणी के विपरीत समझ में आने लगी। जो कुछ बचा है उसकी रक्षा करने और उसमें वृद्धि करने की बात मन में आने लगी।

उसे कुछ ऐसा समझ आने लगा था कि स्वामीजी ने किसी ऐसे समय के लिये ही उपदेश किया था। उसके पास तो अभी पूर्ण जीवन है। वह उसकी रक्षा करने के लिये मन को तैयार करने लगी। साथ ही उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि करने की सोचने लगी। इतना विचार करने पर प्राण विसर्जन की बात तो रही नहीं। विपरीत इसके वह जीवन को बचाने और इसमें वृद्धि की बात विचार करने लगी। इस समय शहज़ादी जहानआरा आ गयी।

जहानआरा का तो विचार था कि वह अभी भी अचेतनावस्था में होगी और वह उसे कह देगी कि वह गुसलखाने में गयी थी। परन्तु यह बात चल नहीं सकी। नीला उसके अनुमान से अधिक चेतना प्राप्त कर चुकी थी।

जहानआरा ने उसे बता दिया कि वह शहंशाह की भोक्ता बन गयी है। इस पर तो उसमें जीने की लालसा और भी अधिक उग्र हो गई। यद्यपि उसने शहजादी बेगम से कहा था कि उससे धोखा खेला गया है, इसपर भी वह मन में संतोष अनुभव करने लगी थी। अब तो जीवन और भी रंगीन दिखाई देने लगा था। यद्यपि सन्देह तो बना था कि उसको महल में मान-युक्त स्थान मिल सकेगा! वह उसके लिये यत्न करना चाहती थी। स्वामी जी की बात का यही अभिप्राय उसे समझ आया था।

घर पहुँच और अपने बिस्तर में लेटे-लेटे यही विचार करती-करती सो गयी थी। प्रातः उठने पर उसका मस्तिष्क निर्मल हो चुका था और वह जहानआरा से किसी प्रकार के सन्देश की प्रतीक्षा करने लगी। जब शहज़ादी ने उसे बुला भेजा तो उसे संतोष हुआ। वह शहंशाह का किसी प्रकार का संदेश सुनने की आशा में चल पड़ी थी।

जब वह शहज़ादी के कमरे में पहुँची तो उसने उसे गले से लगाया और उसका मुख चूम लिया। इस पर नीला ने कह दिया, "हुज़ूर! मैं तो अपने को अपवित्र हो गयी महसूस करती हूँ।"

"वह क्या होता है?"

"बिना विवाह के पुरुष से सहवास हो गया है।"

"और विवाह क्या होता है?"

"जब परमात्मा को सर्व-व्यापक समझ हम यह वचन दें कि दोनों प्राणी शेष जीवन-पर्यन्त पति-पत्नी बने रहेंगे।"

"तो यह वायदा रात नहीं हुआ?"

"जहाँ तक मुझे याद है ऐसी कोई बात नहीं हुई।"

"तो अब हो जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रात की घटना के उपरांत मेरे लिए दो ही मार्ग हैं। या तो बीवी की मानयुक्त पदवी पाकर जीवन व्यतीत करूँ अन्यथा इस शरीर को भस्म कर दूं।"

"जल मरने की जरूरत नहीं, मेरी प्यारी अम्मी! जलते वक्त बहुत दर्द होता है।"

"मैं जानती हूँ, कोई दर्द नहीं होता। हमारे गाँव में एक युवती का पति मर गया था। वह युवती अपने पति के साथ बैठकर चिता पर जल मरने को तैयार हो गई। उसके माता-पिता ने उसको मना किया था और कहा था कि वे उसके पालन-पोषण का प्रबन्ध करेंगे। उसे अब अपना शेष जीवन भगवान्-भजन में लगाना चाहिये। इस पर उसने कहा था कि वह मर नहीं रही। वह तो यह शरीर को जला रही है और इससे अच्छे शरीर की आशा में वह इसे बदल रही है।

"मैं उससे मिलने गयी थी। वह मेरी परम सहेली थी। मैंने उससे कहा था कि वह जलकर न मरे, इससे उसको बहुत पीड़ा होगी। उसका कहना था कि नहीं होगी। मैं भी उसको सती होते देखने गयी थी।

"शहज़ादी साहिबा! उसके सम्बन्धी और उसके पति के घर वाले रो-रोकर विह्वल हो रहे थे और वह 'हरि ओ३म् हरि ओ३म्' का उच्चारण करती हुई मुस्करा रही थी। जब चिता बन गई और उसके पति का शव चिता पर रख दिया गगा, तो सबको हाथ जोड़ प्रणाम कर हँसती हुई लपक कर चिता पर चढ़ गई। उसने अपने पति के चरणों में बैठकर स्वयमेव चिता को आग लगा ली। जब तक उसका मुख धुएँ में छिपा नहीं, मैं देखती रही। वह प्रसन्न वदन मुस्कराती हुई, 'हरि ओ३म् हरि ओ३म्' उच्चारण करती रही थी। मैं यह समझती हूँ कि मरने के विचार से ही डर लगता है और वह विचार ही पीड़ा देता है। मरने से तो कुछ नहीं होता।"

"इस पर भी यह जिन्दगी कितनी सुहावनी है! कोई बेवकूफ ही इस को छोड़कर मरना चाहेगा।"

"मगर अपवित्र जीवन से मर जाना ठीक होगा।"

"देखो मेरी छोटी अम्मी! शहंशाह से मेरी बात हुई है। वे तुमको अपनी बीवी बना चुके हैं। मैं समझती हूँ कि दोपहर के खाने पर तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्तजार कर रहे हैं।"

"मगर मैं उनके सामने एक शर्त रखना चाहती हूँ।"

"कर लेना। चलो।"

दोनों खाने के कमरे में जा पहुँचीं। यह वही कमरा था जहाँ पिछली रात उसने शहज़ादी के साथ खाना खाया था। शहंशाह वहाँ पहले ही बैठा हुआ था। जहानआरा ने झुककर सलाम की तो नीला ने भी कर दी। शहंशाह हँस पड़े। दोनों सामने खड़ी हुक्म का इंतज़ार करती रहीं। शहंशाह ने नीला से कहा, "हमने रात कहा था कि हमने तुमको बेगम तसव्वुर कर लिया है। तुमने इनकार नहीं किया था। इस वास्ते आओ, तुम हमारे पास बैठ जाओ और जहानआरा हमारे सामने बैठेगी।"

जहानआरा ने नीला को शहंशाह द्वारा बताई गई जगह पर बिठा दिया और खुद शहंशाह के सामने बैठ गई। उसने ताली बजाई तो खाना परोसा जाने लगा। नीला के मुख पर परेशानी देख जहानआरा ने कह दिया, "अभी बेगम साहिबा के सामने सब्जी भाजी ही लाई जाये।"

खाना परोस दिया गया तो शहंशाह ने एक ग्रास उठाकर कहा, "खाओ बेगम!"

"मैं अपने शहंशाह से एक बात जानना चाहती हूँ।" नीला ने साहस बाँध कहा।

"हाँ पूछो। हम तुमसे बहुत खुश हैं।"

"मैं यह जानना चाहती हूँ कि जहाँपनाह के हरम में इतनी बेगमों के रहते एक गरीब ब्राह्मण की लड़की को बेहोशी की अवस्था में खराब क्यों किया गया है?"

शहंशाह हँस पड़ा। हँसकर बोला, "तो बेगम नहीं जानतीं कि हमने उसे क्यों हरम में दाखिल किया है?"

"आलीजाह! यही तो जानना चाह रही हूँ।"

"तो सुन लो। तुम हमारी सब बेगमों से ज्यादा खूबसूरत हो।"

"आपकी मलिका मुमताज़ से भी ज्यादा?"

"मुक़ाबिला बहुत मुश्किल है। मगर हम समझते हैं कि तुम उससे ज्यादा खुश रहोगी। हमने उसके साथ बिल्कुल वहशियों का-सा सलूक किया था। हमें उसका सख्त अफसोस था। यही वजह है कि अब हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसकी मज़ार को इतना खुबसूरत बनवा रहे हैं।

"क्या वैसा सलूक अब नहीं होगा ? आलीजाह ! मैं वैसा सलूक किये जाने के बाद किसी खुबसूरत मज़ार की चाह नहीं करती।"

"अब हम उससे सत्रह साल बूढ़े हो गए हैं। अब तुम वैसी उम्मीद हमसे नहीं कर सकतीं।"

तीनों खाना खा रहे थे। खाते-खाते शहंशाह ने बात बदल दी। उसने कहा, "देखो, हमने यह फैसला किया है कि हमारी नई बेगम का नाम महताब होगा।"

"और हज़रत ! नीला ही क्यों नहीं ?"

"नीला के क्या मायने हैं ?"

"आकाश। मेरा पूरा नाम है नीलमणि। मैं आकाश की मणि हूँ।"

"और मणि क्या होती है ?"

"रत्न-जवाहर।"

"तब तो ठीक है। महताब भी तो आसमान का एक रत्न ही है। तुम महताब ही रहोगी। और सुनो ! हमारी नई बेगम के लिए पाँच कमरों का घर महल के अन्दर तैयार करा दिया गया है। पाँच हज़ार अशर्फी सालाना उसका वजीफा होगा और हमारे तोहफे और इनामो-कराम अलहदा होंगे।

"बेगम महताब के पास तीन नौकरानियाँ और दो खूसरे खिदमत के लिए होंगे। और बताओ, खुश हो ?"

"आलीजाह ! एक बात और है। मैं जीवन-भर के लिए आपकी बीवी रहना चाहती हूँ।"

"वह तो है ही। हमारा यह कायदा है कि जो औरत हमारे हरम में आ गयी, वह फिर बाहर नहीं जा सकती।"

नीला का कुछ और मतलब था। इससे वह इन दोनों बातों में अन्तर पर विचार करने लगी। शहंशाह ने जहानआरा से कह दिया, "शहज़ादी जहानआरा ! हमारी नई शादी की खुशी में शहनाइयाँ बजवाओ।"

जहानआरा ने ताली बजाई तो एक खादिमा भीतर आई। जहानआरा ने हुक्म दे दिया—"शहनाई बजवाओ।"

शहनाई बजने लगी। जहानआरा ने नीला की ओर देखकर पूछा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अम्मीजान ! यह क्या धुन बज रही है ?"

"शुद्ध सारंग है।"

इस पर शहंशाह ने पूछ लिया, "तो हमारी बेगम इस इल्म में भी दखल रखती है ?"

उत्तर जहानआरा ने दिया, "हजरत ! नई अम्मी बहुत अच्छा गाती भी हैं।"

"आज रात हम सुनेंगे।"

नीला शहनाई की धुन में मस्त थी। शहनाई वाले बहुत ही मीठी धुन बजा रहे थे। शहंशाह को भी संगीत, खास तौर पर साज़ों पर सुनने का बहुत शौक था। वह अब खामोश हो शहनाई पर तानालाप सुनने लगे।

खाना खत्म होने तक बाहर कुछ दूर पर शहनाई बजती रही। जब शहंशाह उठे और दस्तरखान से उँगलियाँ साफ करने लगे तो नीला ने बेगम से कहा, "मैं तो हाथ धोना पसन्द करती हूँ।"

तुरन्त एक चिलमची और लोटे में पानी आ गया। दूसरी खिदमत-गारिन अँगोछा हाथ पोंछने के लिए ले आई।

शहंशाह अपनी नई बेगम को लेकर नये सजाये गये कमरों की तरफ चल पड़े।

शहनाई के बजने की आवाज़ सुन महल की सब औरतें और खुसरे उस रास्ते पर इकट्ठे हो गये थे जो नई बेगम के घर तक जाता था। यह बात उन कमरों को तैयार किये जाते देख मशहूर हो चुकी थी कि हरम में कोई नया जानवर ज़िबह होने के लिए लाया जाने वाला है; मगर शहनाई बजाकर और धूमधाम से घर में कोई आयेगा, एक ऐसी बात थी जो मुमताज महल के फौत होने के बाद नहीं हुई थी। इससे जहानआरा के घर से नई बेगम के घर तक महल में रहने वालों की भीड़ लग गई थी। शहंशाह नई बेगम के साथ उस भीड़ में से शहनाई वालों के पीछे-पीछे चल रहे थे।

उस भीड़ में चारों शहजादे और उनकी बेगमात भी पहुँच गई थीं। नीला की बाँह शहंशाह ने अपनी बाँह में डाली थी। नीला भूमि की ओर देखती हुई साथ-साथ चल रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलूस निकल गया और देखने वालों में चर्चा होने लगी। शहंशाह का एक शहज़ादा अपनी बेगमों के साथ खड़ा खादिमाओं और खुसरों की बातें सुनने लगा। इस समय शहज़ादा की छोटी बहन रोशनआरा आई और शहज़ादे के पास खड़ी हो बोली, "भाईजान ! क्या सोच रहे हैं ?"

"मैं सोच रहा था कि क्या उम्र होगी इस लड़की की ?"

"तो उससे पूछ लेते कि अम्मीज़ान, दूध के दाँत भी झड़े हैं या नहीं ?" सुनने वाले हँसने लगे।

यह शहज़ादा औरंगज़ेब था। इसकी महल में किसी के साथ बनती न थी। सिर्फ रोशनआरा ही थी, जो उसके साथ खुलकर हँसी-मज़ाक करती थी। दूसरे सब लोग इससे दूर-दूर रहते थे। यह एक क्रोधी जीव था और सख्त मुतअस्सिब मुसलमान था। महल में तो न कोई नमाज़ पढ़ता था, न ही कोई रमज़ान में रोज़े रखता था। यह शहज़ादा उन सबको काफिर कहता था और अगर कोई उसके इस कहने पर नाराज़गी ज़ाहिर करता तो कुछ ही दिनों में उसका कत्ल हो जाता और उसकी लाश किले के पिछवाड़े में यमुना के किनारे पड़ी मिल जाती थी। इस प्रकार की कई घटनाएँ हो चुकी थीं और महल में किसी की सुनवाई नहीं होती थी।

औरंगज़ेब ने यह कहा, "अच्छा ! कभी खिदमत में हाजिर होकर पूछूंगा।" यह कहकर वह अपने घर की तरफ चल पड़ा। उसकी दो बेगमें उसके साथ थीं। रोशनआरा भी अपने भाईजान के साथ-साथ चलती हुई पूछने लगी, "कैसी लगी हैं नयी अम्मी ?"

"अम्मी !" औरंगज़ेब ने मुस्कराते हुए बहिन की तरफ देखा और कह दिया, "यह या तो बीवी हो सकती है या बहिन। अम्मी तो मैं बना सकता नहीं।"

"पर वह तो बन गई है।"

"जहानआरा ने किसी किस्म की साज़िश खेली है।"

"नतीजा तो सामने है। अम्मीजान खुशो-खुर्रम मालूम होती हैं।"

"सुना है ये लोग क्या कह रहे थे ?"

"नहीं।"

"कहते थे यह दुलारे का एक और लुक़मा आया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह अब मेरी तरफ भी टेढ़ी नजर से देखने लगा है ?" रोशनआरा ने कह दिया।

"तब तो उसकी मौत सिर पर मँडराती दिखाई देती है।"

"इससे मुझे क्या फायदा होगा ?"

"और तुम क्या फायदा उठाना चाहती हो ?"

"मैं तो उससे शादी कर आगरा से कहीं दूर जाना चाहती हूँ।"

इस वक्त वे सब शहज़ादा के घर में जा पहुँचे थे। बैठक-घर में पहुँच औरंगजेब ने मुस्कराते हुए कहा, "शहंशाह की लड़की की बस इतनी ही ख्वाहिश है ?"

"क्यों, वह खूबसूरत और जवान नहीं है क्या ?"

"वह एक पेशेवर गानेवाली का लड़का है।"

"इस पर भी महल की कोई भी औरत उसको अपने सोने के कमरे में बुलाकर खुशी महसूस करती है।"

"वह बात दूसरी है।"

"मैं भी तो महल में रहती हूँ। इस वक्त मेरी उम्र उन्नीस साल की है और मैं शादी की ख्वाहिश करती हूँ।"

"देखो रोशनआरा ! अगर मैं शहंशाह बन सका तो तुम्हारे लिए एक निहायत ही खूबसूरत खाविन्द ढूंढ़ दूंगा।"

"यह कब तक हो सकेगा ?"

"सुना है एक नजूमी यहाँ आया है। उससे पता करूँगा।"

"और तब तक मैं क्या करूँ ?"

"दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ा करो।"

"पहले भावजें पढ़ेंगी तो फिर मैं भी उनसे सीख लूंगी।"

"मगर वे तो मुझे नमाज़ पढ़ते देख मेरी हँसी उड़ाती हैं।"

"पर मैं तो हँसी नहीं उड़ाती।"

"इसीलिए तो मैं तुमसे हमदर्दी रखता हूँ।"

"और मेरी शादी करने से डरते हैं ?"

"यह खानदान का रिवाज तो शहंशाह बनने के बाद ही तोड़ सकता हूँ।"

"तो बन जाओ न शहंशाह।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बूढ़ा मरे भी तो ?"

"इसको पकड़कर कैद कर दो।"

"और तीन-तीन भाइयों का क्या करूँ ?"

"उनको ग्वालियर के किले में बन्द कर दो।"

"बहुत मुश्किल है यह ! इस काम को करने के लिए दो लाख फौज चाहिए।"

"तो इकट्ठी कर लो न।"

औरंगज़ेब गम्भीर विचार में मग्न हो गया। सब सफेद बिछी चाँदनी पर बैठ गए थे। औरंगज़ेब की बड़ी बेगम दिलरस बोल उठी, "हनोज़ दिल्ली दूरस्त।"

"नहीं बेगम ! मैंने शहंशाह से अर्जी कर रखी है कि मुझे दकन का सूबदार मुकर्रर कर दिया जाये। अगर यह हो गया तो मैं इतनी फौज इकट्ठी कर लूंगा कि एक दिन आगरा के किले में शाही तख्त पर आ बैठूं।"

"कितनी देर लगेगी इस तजवीज़ को अमल में लाने में ?" रोशन-आरा का सवाल था।

"पाँच साल।"

"और तब तक मैं कुंवारी बैठी रहूंगी।"

"तुम भी अपनी बड़ी बहिन के नक्शे-कदम पर चल सकती हो।"

"बहुत अच्छा भाईजान ! पहले आपको तख्तोताज दिलवा लूं। पीछे आपकी बड़ी बहिन को अपना गुरु पीर बना लूंगी।"

रोशनआरा नाराज़ होकर उठ खड़ी हुई। औरंगज़ेब ने उसका हाथ पकड़कर उसे बैठा लिया और कहा, "तुम मेरा एक काम करो तो मैं तुम्हारा काम कर दूंगा।"

"क्या करूँ ?"

"अपनी नई अम्मी से मुलाकात करवा दो।"

"वह आपकी भी तो अम्मी हैं। आप खुद ही वहाँ जाकर मिल क्यों नहीं लेते, भला आपको कौन मना कर सकता है ?"

"मना तो नहीं कर सकता। इस पर भी मेरे वहाँ कदम रखने के वक्त से लेकर बाहर आने तक सब बात तफसीर से शहंशाह के पास पहुँच जाएगी और मैं जला-वतन कर दिया जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर मुलाकात कैसे होगी ?"

"अपने दीवानखाने में उसे बुला लो और मुझे वहाँ छुपकर उससे मिलने दो।"

"बात तो ठीक है। कोशिश करूँगी।"

"हाँ। मेरी प्यारी बहिन ! यह मेरे तख्त हासिल करने में मददगार हो जायेगी और मैं तुम्हारी शादी में मददगार हो जाऊँगा।"

रोशनआरा को यह तज़वीज़ पसन्द आई। वह औरंगज़ेब के महल से निकल गई और नई अम्मी बेगम से अपनी अकीदत का इज़हार करने जा पहुँची।

महताब बेगम को देखने वाली खादिमाओं की अभी भी वहाँ भीड़ लगी थी। रोशनआरा वहाँ पहुँची तो उसके लिए मार्ग छोड़ दिया गया। वह भीतर चली गई। वहाँ जहानआरा खड़ी थी और महताब भीतर शयनागार में थी। जहानआरा अपनी छोटी बहिन को वहाँ आती देख पूछने लगी, "तो नई अम्मी से मिलने आई हो ?"

"यहाँ अम्मियों की कमी है क्या ?" रोशनआरा ने व्यंगात्मक भाव में उत्तर दे दिया।

जहानआरा हँस पड़ी। उसने पूछ लिया, "अम्मी से मिलने नहीं आईं तो फिर किस गरज से आई हो ?"

"अपनी बड़ी आपा से मिलने के लिए। मैं आपा के दीवानखाने में गई थी। दुलारे वहाँ साज सुर कर रहा था। उससे पता चला कि आप यहाँ हैं, सो यहाँ चली आई।"

इस समय महताब नव-विवाहितों के वस्त्र पहने, शृंगार किए और भूषणों से लदी बाहर निकली। शृंगार कराने वाली नौनी साथ थी। जब महताब दोनों बहिनों के सामने आकर खड़ी हुई तो दोनों उसका सौंदर्य देख चित्रवत् खड़ी रह गईं।

जहानआरा महताब की खुबसूरती पर मुग्ध हो रही थी और रोशनआरा हसद से जल रही थी। रोशनआरा शाहज़हाँ की सब लड़कियों से ज्यादा बदसूरत थी। उसे अपने से खूबसूरत औरतों पर डाह होता था।

महताब ने पूछा, "अच्छा बेगम बहिन ! अब ?"

"तुम्हें तुम्हारी माँ से मिलाना है और उसको बताना है कि तुम कहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से कहाँ पहुँच गई हो ।"

"मुझे माँ के सामने जाते लज्जा लग रही है ।"

"तुमने कुछ नहीं कहना । चुपचाप मगर खुश बैठी रहना । बकाया मैं सब-कुछ कह-सुन लूंगी ।"

"कहाँ ?"

"मेरे दीवानखाने में । यहाँ अभी नहीं ।"

"और बाबा से ?"

"अभी बाबा से मिलने का वक्त नहीं आया । माँ की मार्फत ही उनको सब-कुछ बताना होगा और फिर उनके मन के जज़बात को जानकर ही उनसे मुलाकात मुमकिन है ।"

महताब चुप कर रही । जहानआरा ने रोशनआरा का उससे परिचय करा दिया । "छोटी अम्मी ! यह तुम्हारी एक और लड़की है । नाम है रोशनआरा बेगम ।"

रोशनआरा ने मुस्कराते हुए फ़र्शी सलाम कर दी । नीला समझ गई कि उसकी हँसी उड़ायी जा रही है । उसने रोशनआरा को पकड़ कर उठाया और गले लगा कर कहा, "मैं तो तुम्हारी छोटी बहिन ही हूँ ।"

"लाहौल विला···नहीं अम्मीजान ! मैं आपकी बहिन नहीं हो सकती । मैं नई अम्मी से एक दरखास्त कर दूं तो मन्जूर होगी क्या ?"

"हुक्म करो बहिन !"

"आज रात खाना मेरे दस्तरखान पर हो ।"

"यह तो शहंशाह की मंजूरी के बिना नहीं हो सकता । वे कह गए हैं कि रात वे मेरे घर पर भोजन करने आएँगे ।"

"तो कल सही ।"

"उनसे पूछे बिना यह नहीं हो सकेगा ।"

जहानआरा और दूसरी लौंडिया समझ रही थीं कि नई बेगम बहुत ही खबी से इनकार कर रही है । रोशनआरा भी जानती थी कि शहंशाह इस बात की इजाज़त नहीं देंने ।

अब जहानआरा ने कहा, "रोशन ! अम्मी ठीक कहती हैं । शहंशाह अपनी नई बेगम की सोहबत को कुछ दिन तक अपने लिए मखसूस रखना चाहते हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैं भी तो अपनी नई अम्मी की सोहबत की अर्जी कर रही हूँ।"

"यह अर्जी शहंशाह से करनी चाहिए।"

"मैं चाहती थी कि अम्मी मुझे रात के खाने की दावत अपने यहाँ दे दें।"

उत्तर महताब ने ही दिया, "यह भी तो उनसे पूछ कर ही दी जा सकती है।"

रोशनआरा का प्रथम प्रयास निष्फल गया। वह अपने भाई औरंगज़ेब से उसकी मुलाकात करवाना चाहती थी। रोशनआरा को कुछ ऐसा समझ आया था कि औरंगज़ेब इस नई अम्मी को अपनी साज़िश में शामिल करना चाहता है। अब वह इस उद्देश्य के लिए किसी अन्य योजना पर विचार करती हुई, अपने निवास की ओर चल दी। वहाँ पहुँच उसने अपनी अर्दल में एक खुसरे लतीफ को बुलाकर कहा, "लतीफ! देखा है आज महल में कैसी चहल-पहल है?"

"हाँ, शहज़ादी साहिबा! सुना है शहंशाह ने एक दूध-पीती बच्ची से शादी की है।"

"हुज़ूर! वह दूध पीती नहीं है। उम्र में कम जरूर है, मगर अक्ल में बहुत तेज है। बड़ों-बड़ों को चकमा देने की तौफीक रखती है।" लतीफ ने मुस्करा कर इसका उत्तर दिया। वह आगे हुक्म सुनना चाहता था।

रोशनआरा ने मसनद पर पीठ को आश्रय देते हुए कहा, "मैं चाहती हूँ कि तुम इस नई बेगम के तौर-तरीकों से हमें आगाह करते रहोगे।"

"कोशिश करूँगा हुज़ूर!"

"इसकी खिदमत में कौन-कौन खुसरा मुकर्रर किया गया है?"

"आज रात मालूम हो जायेगा।"

"और कौन-कौन खिदमतगारिन उसे मिली हैं?"

"इसका भी पता रात ही लगेगा।"

"बस अभी इतना ही। ठीक-ठीक इत्तला लाने पर इनाम भी ठीक-ठीक मिलेगा।"

लतीफ अभी गया ही था कि औरंगज़ेब आ गया। उसने कहा, "हाँ, तो कुछ काम बना?"

"बहुत जल्दी है भाईजान!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उसे बेगमों और नई शादी-शुदा औरतों की भाँति सज-धज के साथ-साथ जाते देखा है और मैं उसके हुस्न को देख बेताब हो रहा हूँ।"

"ओह ! भाईजान ! तुम आदमी अपने लिए ये सब बातें सोचते हो। तुमको कभी हम पर भी रहम आता है ?"

"क्यों तुम ज़िबह हो रही हो ? क्या है तुमको ?"

"मैं अपनी शादी करना चाहती हूँ।"

"मैंने तो बताया है कि जहानआरा के नक्शे-कदम पर चल सकती हो।"

"मैं उस बदकार औरत की तरह बीसियों खाविन्द नहीं बना सकती। मैं तो जिसको अपना हाथ पकड़ाऊँगी, बस फिर उसकी ही होकर रहना चाहूँगी।"

'तो खुदा से झगड़ा करो कि उसने तुमको शहंशाह के घर किस वास्ते पैदा किया है।"

रोशनआरा भाई का मुख देखती रह गई। उसे चुप देख औरंगज़ेब के मुख की दृढ़ मुद्रा नरम पड़ गई। उसने रोशनआरा का हाथ पकड़कर कहा, "रोशन ! मैं तुम्हारे जज़बात की कदर करता हूँ। इस वास्ते हमेशा तुम्हारी हिमायत ही करता हूँ। इसी वास्ते मैं चाहता हूँ कि जल्द-से-जल्द शाही तख्त सम्हालूं और फिर शाही लड़कियों पर से नावाज़िब पाबन्दी उठवा दूं।"

"मैं समझती हूँ कि तब तक मैं बूढ़ी हो जाऊँगी और फिर शादी का लुत्फ़ ही नहीं रहेगा।"

"नहीं। मैं बहुत जल्दी ही इसके लिए कोशिश करना चाहता हूँ। मगर तुम मेरा कोई काम नहीं कर सकीं।"

"मैंने कोशिश की थी कि नयी बेगम को अपने यहाँ खाने की दावत दूं। मगर वह बिना शाही हुक्म के किसी की भी मेहमानदारी मंजूर नहीं करेगी।

"मैंने उससे अपने लिए उसके साथ खाना खाने की दावत माँग ली। इसको भी उसने शहंशाह की मंजूरी के लिए कह दिया।"

"मैंने एक और तजवीज़ सोची है।"

"क्या ?"

"मैंने सुना है कि इसका बाप ही वह नजूमी है जिसकी शोहरत दर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार में फैल रही है।"

"क्या शोहरत फैल रही है ?"

"इसने यह कहा था कि अलीमर्दान खाँ कम से कम दस साल तक बहुत ऐश की ज़िन्दगी बसर करेगा। वह बरकन्दाज़ खाँ की लड़की का अगवा करने अकेला ही उसके घर जा पहुँचा। बरकन्दाज़ खाँ को उसके इस मतलब के लिए आने का इल्म था। उसने उसे मरवा डालने के लिए अपने सिपाही तैनात किए हुए थे। मगर अलीमर्दान खाँ वहाँ आ गया। पन्द्रह आदमियों को हलाल कर वह लड़की ले आया और उसने उससे नकाह पढ़ा लिया है। मारे जाने वालों में बरकन्दाज खाँ भी है।"

"शहंशाह को यह मालूम है क्या ?"

"हाँ। उन्होंने अलीमर्दान खाँ का रुत्बा बढ़ा दिया है। एक दिन पहले दोनों में शहंशाह के सामने ही झगड़ा हुआ था और बरकन्दाज़ खाँ ने यह ऐलान कर दिया था कि अगले दिन अलीमर्दान खाँ आफताब नहीं देख सकेगा। इस पर भी वह गया और अकेला ही यह बहादुरी का कारनामा कर आया है।"

"मगर दरबार का यह कायदा कहाँ गया कि दरबारी आपस के झगड़ों का फैसला शहंशाह से करायेंगे।"

"यह तो ठीक है। मगर जब शहंशाह की ही मरजी हो कि एक मारा जाए तो फिर क्या हो ?"

"यह तो बहुत बुरी बात है।"

"इस महल में अच्छी बात हो ही क्या रही है ? मैं इसी नजूमी से ताल्लुक पैदा करना चाहता हूँ।"

"करिये।"

: १३ :

इसके कई दिन पीछे की बात है। त्रिभुवन कीर्ति शहज़ादा दारा शिकोह के दीवानखाने में बैठा उससे बातें कर रहा था। दारा ने अपनी जन्म की तारीख लिखकर पण्डितजी के पास भेजी थी और पण्डितजी ने शहज़ादा की जन्म-कुण्डली तैयार की थी और उससे उसका एक वर्ष का फल निकाला था।

एक बात त्रिभुवन कीर्ति ने यहाँ आकर सीख ली थी। वह यह कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोई बुरी बात पता चले तो उसे नहीं बतानी चाहिये। वह उस विषय में गोलमोल बात कर देता। पण्डित देख रहा था कि जैसे अलीमर्दान खाँ का भविष्य दस वर्ष के उपरान्त अन्धकार में था, वैसा ही शहंशाह का था और वैसा ही दारा की ज़िन्दगी थी। इसलिये शहंशाह को और दारा को तो उसने एक-एक वर्ष का फल निकाल कर ही बताया था।

पण्डितजी ने दारा को वर्षफल सुनाया तो दारा ने कह दिया, "मैं इतनी बात से खुश नहीं हूँ।"

"हुजूर ! खुशी के लिये तो भगवान से प्रार्थना करनी चाहिये।"

"क्या प्रार्थना करूँ ?"

"यही कि जैसा सुख-आराम और प्रभुसत्ता आपको अभी तक मिली हुई है और जैसी एक वर्ष तक मिलने की उम्मीद पैदा हो गयी है, वैसी ही उससे अगले वर्ष और फिर उससे अगले वर्ष, इस तरह वर्षों तक चलती चले। उसके घर में सब कुछ है। वह जिसको चाहे निहाल कर सकता है।"

"इसका मतलब यह है कि इस वक्त वह सिर्फ एक साल के लिये ही यह सब ऐशो-आराम दे रहा है ?"

"मुझको इतना ही मालूम हो सका है। इसके आगे जानने की कोशिश करूँगा। इस पर भी मेरी यही इल्तजाह है कि उसकी इबादत करिये।"

दाराशिकोह का मुख उतर गया और वह समझ गया कि यह पण्डित किसी किस्म की मुसीबत देख रहा है मगर बता नहीं रहा। पण्डित ने दारा का उतरा मुख देखा तो कह दिया, "शहज़ादा साहब मेरे कहने का ठीक अर्थ नहीं समझ रहे। मैंने यह बिलकुल नहीं कहा कि अगले साल मुसीबत आने वाली है। मेरे कहने का मतलब केवल इतना है कि मनुष्य के जीवन में भाग्य और उद्योग का जंग चलता रहता है। भाग्य अपने पहले कर्मों का फल होता है और उद्योग इस जन्म में उस फल को बदलने का प्रयत्न होता है। आप जैसे श्रीमान् यदि ढंग पर यत्न करें तो भगवान आपकी सहायता करने पर विवश हो जायेगा।"

"कैसे यत्न करूँ ?"

"मैं उपाय तो बता सकता हूँ, मगर वह सब किसी से छुपा कर करने की बात होगी। अगर ऐसा करने का इरादा हो तो मैं आपको एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मन्त्र बता सकता हूँ, आप उसका जाप करिए। कामयाबी होगी।"

"मगर एक बात है ?"

"क्या ?"

"हम जो कुछ भी करते हैं, हमारे नौकर वह सब बात शहंशाह तक पहुँचा देते हैं और फिर सारे महल में उस बात की धूम मच जाती है।"

"इसका इलाज मैं बता सकता हूँ।"

"क्या ? बताइये।"

"आप अपने सोने के कमरे में बहुत प्रातःकाल उठकर उस मंत्र का एक हज़ार बार जाप करिये।"

"मगर मेरी बीवियाँ मेरे साथ मेरे कमरे में सोती हैं। अगर मैं उनसे अलहदा सोऊँ तो वे यह ख्याल करने लगती हैं कि मैंने कोई नई औरत ला रखी है।"

"तब तो बहुत मुश्किल है।"

"क्या मैं अपनी बेगम को इस राज़ में शामिल नहीं कर सकता ?"

"यदि वे इस बात पर श्रद्धा रखें और आपकी बात पर हँसी न उड़ायें।"

"और इससे होगा क्या ?"

"आप भगवान से कुछ भी माँग सकते हैं। वे प्रसन्न हो कुछ भी दे सकते हैं।"

"तब तो ठीक बात है। मैं जल्दी-से-जल्दी एक बात पूरी करना चाहता हूँ।"

"क्या है वह ?"

"एक औरत को अपनी बीवी बनाना चाहता हूँ।"

"तब तो बहुत कठिन है।"

"क्यों ?"

"इस बात में आपकी बीवियाँ मददगार नहीं होंगी।"

"मैं उनको यह बताऊँगा ही नहीं।"

"एक बात और है ?"

"क्या ?"

"मैं एक कवच दे सकता हूँ। किसी तरह वह कवच उस औरत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गले में डलवा दें।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इससे क्या होगा ?"

"वह औरत आपसे मुहब्बत करने लगेगी।"

"यह मैं कर सकूंगा।"

"तो कल आइयेगा। मैं मन्त्र दे दूंगा। उसे जिस चीज़ में लपेट कर उसके गले में डालना चाहते हैं वह ले आइयेगा। मैं खुद उसमें वह रख दूंगा।"

पण्डित त्रिभुवन कीर्ति देख रहा था कि सारा का सारा शाही परिवार मौत के मुख में भागा चला जा रहा है। इस कारण वह नीतियुक्त बातें करने लगा था। शहंशाह को भी उसने इस प्रकार एक कवच दे दिया था और कहा था, "इसको कमर से बांध रखें, तो यह उनकी रक्षा करेगा।"

अलीमर्दान खाँ की घटना ने पण्डित त्रिभुवन कीर्ति की ख्याति बहुत बढ़ा दी थी। इससे उसके पास दरबारी और सेना के अधिकारी आने लगे थे। सब अपनी सामर्थ्यानुसार भेंट देते थे। पण्डित एक धनी आदमी होने लगा था।

उस दिन वह शहज़ादा दारा शिकोह से मिलकर आया तो उसको अपनी बैठक में शहंशाह का दूसरा शहज़ादा बैठा दिखाई दिया। पण्डित त्रिभुवन औरंगज़ेब के विषय में सुन चुका था कि वह बहुत ही पक्षपाती मुसलमान है। यह बात मशहूर हो रही थी कि उसने अपने बाप और बड़े भाई दारा को कई लोगों के सामने काफ़िर कहा है। इससे पण्डित वहाँ उसे बैठा देख एक क्षण के लिये घबराया, परन्तु शीघ्र ही सतर्क हो उसने फर्शी सलाम की और खड़े-खड़े कह दिया, "हुज़ूर ! यहाँ आने का कष्ट करने की ज़रूरत नहीं थी। हुक्म भेज दिया जाता तो मैं वहाँ खुद ही हाज़िर हो जाता।"

"मुझे तकलीफ नहीं हुई। आपकी पण्डितानीजी ने बहुत इज़्ज़त से बैठाया है और पान-सुपारी भेजी है।"

पण्डित अभी भी खड़ा था और शहज़ादा के उसे बैठने के लिये कहने की प्रतीक्षा में था।

शहज़ादा ने कह दिया, "मैं चाहता हूँ कि हमारी बातचीत कोई न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन सके और आप भी किसी से न कहें।"

"आपकी आज्ञा का पालन किया जायेगा।"

"बैठक के दरवाज़े बन्द कर देना चाहता हूँ।"

"मैं कर देता हूँ।"

त्रिभुवन कीर्ति ने द्वार बन्द कर दिये। द्वार बन्द करके बैठा तो शहज़ादे ने कहा, "यह मेरी जन्म कुण्डली है। यह मैंने एक राजस्थानी ब्राह्मण से बनवाई थी। उसने कहा था कि मैं हिन्दुस्तान का शहंशाह बनूंगा। मैं चाहता हूँ कि आपसे तसदीक कराऊँ।"

पण्डित ने कुण्डली ध्यानपूर्वक देखी और फिर एक कागज़ पर कुछ अंक लिख कर ऋण-जोड़ करके देखा। इसके उपरान्त उसने आँखें मूंद कर विचार किया और कह दिया, "हुजूर! सच बात जानना चाहते हैं?"

"हाँ।"

"उसके लिये एक शर्त है।"

"क्या?"

"यहाँ पर हुई बातचीत किसी से न की जाये। खास तौर पर मेरा नाम बीच में न आये।"

"यह तो है ही। इसी वजह से दरवाज़े बन्द करवाये हैं और मैं यहाँ अपना आना चोरी रखना चाहता हूँ।"

"तो हुज़ूर! सुनिये। आपके कर्म-फल में शहंशाह बनना लिखा है। मगर···"

पण्डित चुप कर गया और परेशानी में शहज़ादे का मुख देखने लगा। औरंगज़ेब कुछ देर तक पण्डितजी के कहने की प्रतीक्षा करता रहा। जब पण्डित नहीं बोला तो उसने पूछ लिया, "पण्डित, डरो नहीं। सब बात सच-सच कह दो।"

"मैं अपनी इस धृष्टता पर क्षमा चाहता हूँ। मैं तो कहना नहीं चाहता था। यदि आप कहें तो बताता हूँ। मैंने देखा है कि दस साल में आपके शहंशाह बनने का योग है। परन्तु यदि आप चाहें तो इससे बच भी सकते हैं।"

"बच सकता हूँ? क्या मतलब पण्डित! ज़रा वाज़ा करके बताओ।"

"हाँ! हुज़ूर बता रहा हूँ। शहंशाह बनने के लिये रक्त की नदी पार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करनी पड़ेगी और फिर इतना रक्त बहाकर भी आपकी सल्तनत आपके हाथ में कम होनी शुरू होगी।"

"इस बार सल्तनत बाहरी हमलों से बरबाद नहीं होगी, बल्कि सल्तनत के भीतर से बगावतें खड़ी होंगी और आप भिखारी होकर मरेंगे। आपके जाँनशीन गद्दी पर बैठेंगे, मगर उनकी सल्तनत दिल्ली-आगरा के आसपास के क्षेत्र तक सीमित रह जागेगी। आपसे न केवल आपके लड़के असतुष्ट रहेंगे बल्कि प्रजा भी असन्तुष्ट हो जायेगी।"

"और अगर शाही तख्तोताज़ न लूँ तो ?"

"तो आप एक पैगम्बर बनकर इस जहाँ से जाएंगे।"

"और मैं क्या करूँ कि मैं इस गद्दी से बच सकूँ ?"

"एक कवच मैं दे सकता हूँ। अगर उसको पहनेंगे तो आप इस आफत से बच जाएँगे और खून का दरिया नहीं बहाना पड़ेगा।"

"क्या खर्च बैठेगा उस कवच पर ?"

"कुछ नहीं; मैं एक कागज़ पर लिख दूंगा। आप उसको पहनने के लिए जितना भी कीमती आवरण बनाना चाहें बनवा लें और अपने गले में पहन रखें।"

"उस राजस्थानी नजूमी ने भी मुझे एक तावीज़ दिया है, मगर मैं उसे पहनता नहीं।"

"किस मतलब के लिये दिया था ?"

"खतरों से मेरी हिफाज़त के लिये।"

"तो आप पहनते क्यों नहीं ?"

"इसलिए कि मुझको उस पर यकीन नहीं था।"

"मेरी राय है कि पहनिये।"

"बात यह है कि उस नजूमी ने महाराजा अम्बर के सामने बक दिया था कि मैं दीनदार मुसलमान होने पर भी हिन्दू से तावीज़ लेकर पहनता हूँ। मुझे उसके बक जाने का पता चल गया। मैंने उसे मरवा डाला। जो आदमी उसका कत्ल करने गया था, उसने उसको बताया था कि उसे क्यों कत्ल कराया जा रहा था। इस पर उस काफिर के बच्चे ने मरते-मरते मुझे बद्दुआ दी थी कि मुझ पर आने वाली पीढ़ियाँ सदियों तक लानत देती रहेंगी। इसलिये मुझे शक है कि उसने मेरे तावीज़ में भी कुछ गड़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बड़ लिखा है।"

"तो हज़ूर यह समझते हैं कि एक काफिर की बद्दुआ एक दीनदार को लग सकेगी ?"

पण्डित त्रिभुवन कीर्ति ने यह बात व्यंगात्मक भाव में कही थी, परन्तु औरंगज़ेब ने इसकी सफाई में कह दिया, "यही तो मैं कह रहा हूँ कि जब एक काफिर हिफाज़त के लिये तावीज़ दे सकता है तो बद्दुआ भी दे सकता है। अगर उसकी दुआ में ताकत है तो उसकी बद्दुआ में भी ताकत होगी। नहीं तो दुआ में भी असर नहीं हो सकता।"

"मैं समझता हूँ कि या तो दोनों ही प्रभावयुक्त होंगे अथवा दोनों ही प्रभावहीन।"

"इसी वास्ते आपसे नई तावीज़ लेना चाहता हूँ।"

"पर मैं भी तो काफिर हूँ।"

"मगर आप हमारे अहलकार हैं। आप हमारा नमक खाते हैं। इस-लिए आप हमको धोखा नहीं दे सकते। वह पण्डित तो राजा अम्बर का अहलकार था।"

पण्डित त्रिभुवन कीर्ति ने बात आगे नहीं चलाई। एक दीनदार और काफिर में भेदभाव की व्याख्या कराये बिना उसने कह दिया, "आपका विचार ठीक है। मैं तो आपके विषय में कोई बुरी बात सोच सकता ही नहीं। आपको इस विषय में निश्चिन्त रहना चाहिए।"

"तो आप किस बात का तावीज देंगे ?"

"मैं इस बात का तावीज़ दूंगा कि आप शहंशाह बनने की कोशिश ही न करें। आप शहंशाह बन तो सकते हैं, मगर वह बात न तो आपके मज़हबी विचारों के अनुकूल होगी और न ही वह शाही खानदान के फायदे की होगी।"

"आप हमारे मज़हब के मुतअल्लिक क्या जानते हैं ?"

"मैं मज़हब को एक राह समझता हूँ जिस पर चलता हुआ मनुष्य अपने भविष्य को सुधारता है।"

"आप कुछ नहीं जानते। हमारा मज़हब तो यह हुक्म देता है कि सल्त-नत के ज़ोर पर इस्लाम का आलम ऊँचा किया जाए और यही मैं करने का इरादा रखता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"यह ठीक नहीं होगा।"

"किसके वास्ते ठीक नहीं होगा ?"

"सल्तनत के वास्ते और शाही खानदान के वास्ते।"

"मगर हमारे मज़हब के वास्ते ठीक होगा।"

त्रिभुवन कीर्ति अपने मन में विस्मय कर रहा था कि यह शहज़ादा कैसे इस किस्म की बातें गैर-मुसलमान से कर रहा है। इस पर भी वह अपने मन के भावों को ठीक-ठीक व्यक्त नहीं कर सका।

पण्डित को चुप देख औरंगज़ेब ने कहा, "इसवास्ते मेरा तो यह कहना है कि कोई ऐसा तावीज़ दीजिए जिससे मैं अपने इरादों में कामयाब हो सकूं।"

"मैं दो दिन में लिखकर दे सकूंगा।"

"मैं हमेशा आपका शुक्रगुज़ार रहूँगा।"

पण्डित ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया। इस पर औरंगज़ेब ने अपनी जेब से मुहरों की एक छोटी-सी थैली निकाल कर पण्डितजी के सामने रख दी। पण्डितजी ने कहा, "इसको लेने से न कर मैं आपका अपमान करना नहीं चाहता। इस पर भी इसकी जरूरत नहीं थी। यहाँ सब कुछ आपका दिया हुआ ही है।"

"खैर! इससे कुछ नुकसान नहीं होगा।" शहजादा उठ खड़ा हुआ। पण्डितजी ने उठकर द्वार खोल दिया और शहज़ादा वहाँ से निकल मकान के बाहर अँधेरे में विलीन हो गया।

: १४ :

पण्डितजी की दुकान चल निकली थी और उन्होंने भविष्य के विषय में कई ऐसी बातें बतायी थीं कि लोग अश-अश कर रहे थे। वे शाही ज्योतिषी के नाम से विख्यात हो रहे थे।

इन दिनों महताब बेगम सप्ताह में दो-तीन बार अपने माता-पिता से मिलने आया करती थी। जब वह आती थी तो गुप्त द्वार के मार्ग से ही आती थी। आने से पहले उसका अपना खुसरा नूरबख्श पहले इत्तला कर दिया करता था कि बेगम महताब आ रही हैं। इस पर घर के द्वार बन्द कर दिये जाते थे, जिससे उसके रहते कोई बाहरी आदमी भीतर न आ सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महताब को शाही हरम में दाखिल हुए तीन महीने हो चुके थे। एक दिन महताब आयी तो उसका मुख कुछ मलिन हो रहा था। माँ ने देखा तो पूछ लिया, "नीला! क्या बात है?"

"माँ! मुझे दो मास से मासिक धर्म नहीं हुआ।"

"तो फिर क्या हुआ? यह तो होना ही था।"

"पर माँ! मुझे शहंशाह कह रहे हैं कि मैं गर्भपात करा दूँ।"

"किस लिए?"

"उनका कहना है कि शहंशाह के जितने बच्चे ज्यादा होंगे उतने ही सल्तनत के लिए झगड़े ज्यादा होंगे।"

"और तुम क्या समझती हो?"

"मेरा सल्तनत से क्या सम्बन्ध है? शहंशाह के चार शहज़ादे तो पहले ही हैं। उनमें से किसी की भी आपस में बनती नहीं। इसलिए मेरे घर में बच्चा हुआ तो उसको राज्य न तो मिलने की उम्मीद है, न ही मैं उसके मन में ऐसी आशा बना सकती हूँ।"

"परन्तु भ्रूण-हत्या तो घोर पाप है। युद्ध में शत्रु के सैकड़ों सैनिकों की हत्या से भी यह अधिक पातकी कार्य है।" चन्द्रमुखी ने कह दिया।

"पर माँ! शहंशाह कहते थे कि मुमताज़ बेगम के चौदह बच्चे हुए थे। उनमें से अधिक तो पैदा होते ही मरवा डाले गए थे। कई बार भ्रूण-हत्या भी करायी गयी थी। आखिरी बार मरा हुआ बच्चा हुआ। उसके मरने में कारण यह था कि उसको भी नष्ट करने के लिए बहुत दवाइयाँ दी गयी थीं। आखिर वह मर गया, परन्तु उस बार वह अपनी माँ को भी साथ ले गया।

"और माँ! महल में यह बात बहुत ही मामूली मानी जाती है। कोई महीना नहीं जाता, जब दो-चार गर्भपात नहीं किये जाते।"

इस सूचना से तो चन्द्रमुखी को भी बहुत चिन्ता लग गई। लड़की माँ का मुख देख रही थी। माँ ने कुछ विचार कर पूछ लिया, "नीला, इस घोर पाप से बच नहीं सकतीं क्या?"

"माँ! मैं यह नहीं करूँगी। मगर शहंशाह से झगड़ा होगा।"

"तो फिर?"

"मैं झगड़ा करूँगी। साथ ही यह भी मुमकिन है कि इस झगड़े में मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही कत्ल करने की आज्ञा जारी हो जाये ।"

"तुम्हारे बाबा से बात करती हूँ ।"

"क्या लाभ होगा ?"

"तो ?"

"माँ, तुम चुप रहो । मैं शहज़ादी साहिबा से बात कर रही हूँ कि वे शहंशाह को समझा दें कि यह भारी गुनाह हो जाएगा ।

"इस पर भी तुम्हारे बाबा से कहने में हानि नहीं । वे भी इसमें अपना दिमाग लड़ायेंगे ।"

महताब चुप रही । चन्द्रमुखी ने बात बदल दी । पण्डित त्रिभुवन कीर्ति दरबार-ए-खास में गए हुए थे । दोनों औरतें उनके आने की प्रतीक्षा करती रहीं । इस सब समय शाही महल के बाशिन्दों की बातें होती रहीं । महताब का कहना था, "माँ ! वहाँ शहज़ादे बहुत आने-जाने लगे हैं । मुझे कुछ सन्देह हो रहा है कि वे मुझसे मुहब्बत करते हैं ।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है । जितना भी अधिक महल के लोगों से मेल-मुलाकात और मुहब्बत से रहोगी, उतनी ही सुखी रहोगी ।"

नीला मुस्कराई और बोली, "यह नहीं माँ ! वे सब मुझको अपनी पत्नी बनाना चाहते हैं ।"

"पर तुम तो उनके बाप की पत्नी हो न ?"

"हाँ; मगर वे कहते हैं कि मेरी शादी किसी मज़हबी रीति-रिवाज से से तो हुई नहीं । वे मुल्ला को बुलाकर शादी करना चाहते हैं ।"

"और तुम क्या चाहती हो ?"

"मैं उनकी हँसी उड़ाया करती हूँ । उनको बेटाजान् कहकर टाल दिया करती हूँ ।"

"यह शाही महल तो एक नरक कुण्ड है ?"

"बिल्कुल ! मगर माँ ! विश्वास रखो मैं अपने को शहज़ादों की माँ समझती हूँ ।"

माँ मुस्कराई और बोली, "तुम बहुत ही गहरे पानी में तैर रही हो नीला !"

"माँ ! मैं तैर कर पार जा सकूँगी । देखो, यह हार शहज़ादा ने दिया है ।" नीला ने गले में पड़े एक मुक्ताहार की ओर संकेत कर दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके नीचे एक अशरफी के कद का हीरा लटक रहा था। माँ हार को देखने लगी तो महताब ने हार गले से उतार कर माँ के हाथ में देते हुए कहा, "इसमें दो सौ मोती हैं। पचास सोने के दाने हैं और यह सोने की तार से पिरोया हुआ है।"

"तो तुमने यह हार स्वीकार कर लिया है ?"

"इनकार तो कर सकती ही नहीं। हाँ, मेरी भावना तो यही है कि वह मेरा लड़का है और माँ को पुत्र से लेने का अधिकार है।"

"भगवान तुम्हारी रक्षा करेगा।" इतना कह वह हार लड़की के गले में डालने लगी। इस समय पण्डितजी आ गए। उन्होंने नीला को बैठे देखा और फिर उसकी माँ के हाथ में हार देखा तो चकित खड़े रह गए।

माँ ने लड़की के गले में वह हार डाला तो पण्डितजी भी माँ-बेटी के सामने बैठ बोले, "दिखाओ तो नीला ! यह क्या है ?"

लड़की ने हार पिता के हाथ में दे दिया। पण्डित ने हीरे के पीछे लगे सोने के पत्ते को ध्यान से देखा। फिर नाखून से उस पत्ते को उखाड़ा तो हीरे के पीछे एक डिबिया खुल गयी। उसमें एक पतला-सा कागज दुहरा किया रखा था। पण्डित त्रिभुवन कीर्ति ने उस कागज को बाहर निकाल-कर अपनी जेब में रख लिया और फिर सोने के पत्ते को वैसे ही जमा कर दबा दिया। वह उस हीरे के पीछे डिबिया पर ढकने के रूप में बैठ गया।

"यह क्या था ?" नीला ने पूछ लिया।

"यह हार तुमको किसने दिया है ?"

"बड़े शहजादे ने।"

"यह वशीकरण मंत्र लिखकर मैंने ही इस हार की डिबिया में रखा था। मैं तो हार देखते ही पहचान गया था।"

"इससे क्या होने वाला था ?"

"जिसके गले में यह डाला जाएगा, वहीं डालने वाले के वश में हो जायेगा।"

दोनों औरतें भौचक्क पण्डितजी का मुख देखती रह गयीं। पण्डितजी ने कह दिया, "अब ऐसा नहीं होगा।"

"पर यह बात तो पहले भी होने वाली नहीं थी। शहज़ादा मुझसे प्रेम प्रकट कर रहा था। बड़ी शहज़ादी उसे प्रोत्साहन दे रही थीं और मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके लिए पुत्र अथवा भाई का सा स्नेह अनुभव कर रही थी।"

'तुम ठीक कहती होगी, परन्तु तुमने शहंशाह को वर लिया है, इससे मैं तुमको दुर्बल मन वाला समझने लगा हूँ।"

"बाबा! जो तब हुआ वह एक षड्यंत्र का परिणाम था। अब मैं सतर्क हूँ।"

"एक बात मैं तुमको और बता देना चाहता हूँ। छोटा शहज़ादा भी किसी प्रकार का षड्यन्त्र कर रहा प्रतीत होता है। वह भी मुझसे एक कवच ले गया है। वह शहंशाह बनना चाहता है और उसने कवच इस अभिप्राय का लिया है कि सब उसकी बात का विश्वास करें। अभी तक भी महल में कुछ लोग हैं जो उसको महापापी मानते हैं।"

इस पर नीला गम्भीर हो गई। उसने कुछ विचार कर कहा, "बाबा! यह बता कर आपने ठीक किया है। अब मुझे उसकी बातों का अर्थ समझ में आने लगा है। मैं धोखे में नहीं फँसूँगी।"

"क्या कहता है?"

"वह एक पाक साफ ईमानदार और दीनदार बना फिरता है। वह चाहता है कि मैं उसकी सिफारिश करूँ कि शहंशाह उसे दक्षिण में सूबेदार बनाकर भेज दें।"

"वह दक्षिण में गया तो बस वह वहाँ दो लाख सेना एकत्रित कर आगरा पर धावा बोल देगा।"

"मैं उसके षड्यन्त्र में नहीं फँसूंगी। उसने महल में अपना एक गुट बना रखा है। उस गुट की सरगना है रोशनआरा बेगम। बहुत से खुसरों और नौकरानियों को भी उसने रुपए दे-देकर अपनी तरफ मिला रखा है।"

"और तुम किस तरफ हो?"

"अभी तक महल की हर औरत और मर्द से में मीठा बोलती हूँ। प्रत्येक की बात शहंशाह से कहती हूँ। परन्तु अब शहंशाह से इस दृष्टिकोण से विचार कर बात किया करूँगी।"

इस पर चन्द्रमुखी ने पण्डित जी के कह दिया, "परन्तु नीला, अपनी भी तो एक समस्या रखती है।"

"क्या समस्या है?" पण्डितजी ने पूछ लिया।

चन्द्रमुखी ने नीला के गर्भ ठहरने की बात बता दी और फिर शहंशाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का गर्भपात का आग्रह भी बता दिया।

"और यह क्या चाहती है ?"

"मैं यह पाप नहीं करूँगी।" नीला ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"और शहंशाह नाराज़ हो गए तो ?"

"उनके नाराज़ अथवा खुश होने की बात का इससे सम्बन्ध नहीं। इसका सम्बन्ध मेरी आत्मा से है।"

"अच्छा देखो नीला ! मैं तुमको कभी भी यह पाप-कर्म करने के लिए नहीं कहूँगा, परन्तु शहंशाह को नाराज़ करना अपनी जान-जोखिम में डालने के बराबर है। यह देख लो। यदि किसी प्रकार की सहायता मैं कर सकूँ तो बाताना।

"और एक अन्य बात भी बता देना चाहता हूँ। शहंशाह, दारा शिकोह, औरंगज़ेब, साथ ही बेगम जहानआरा और उसको संगीत सिखाने वाली अध्यापिका ने मुझसे नजूम लगवाए हैं। सिवाय औरंगज़ेब के सब के सब कराल काल का ग्रास बनते दिखाई देते हैं। मैंने सब को अनुष्ठान बताए हैं। इस पर भी देख रहा हूँ कि सब के सब मनमानी कर रहे हैं और आने वाली मौत के लिए चिन्तित नहीं। औरंगज़ेब ने मुझको स्पष्ट कह दिया है कि वह शहंशाह हिन्द बनेगा, भले ही सारा जहान नरक में पड़े।"

"बाबा ! उसने महल में अपने को पक्का दीनदार और दयालु विख्यात कर रखा है। खुसरे और नौकरानियाँ प्रायः सब उसके एक दीन-दार होने पर विश्वास रखते हैं और इसी कारण वे उसकी सहायता करते हैं।"

"यह तो ठीक है। वह एक दीनदार शख्स है, मगर उसका दीन ही ऐसा है कि वह खून की नदियाँ पार करता हुआ चला आ रहा है। जब तक यह दीन ऐसा रहेगा, जैसा है तब तक दुनिया में सुख और चैन नहीं रह सकता।

"देखो नीला ! मैंने तुमको बताया था कि तामसी बुद्धि धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म समझती है। वह कर्त्तव्य को अकर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को कर्त्तव्य, सत्य को झूठ और झूठ को सत्य कहती है। ऐसी ही बुद्धि उसकी है और यह उसके दीन के कारण ही है। जहाँ जिस देश, जाति अथवा परिवार में ऐसे तामसी बुद्धि के लोग पैदा हो जायें, उस देश, जाति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अथवा परिवार का सत्यानाश अवश्यम्भावी है।

"इस पर भी मेरा यह कहना है कि धर्म सबसे ऊपर है। अर्थ, काम और मोक्ष तीनों धर्म के पीछे चलते हैं।"

"बाबा ! दारा तो बहुत ज्ञान-ध्यान की बातें करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने उपनिषद् किसी से सुने हैं और वह अपने को उनका कायल मानता है।'

"उसने निश्चय उपनिषद् किसी अज्ञानी से सुने होंगे जो वह अपने बाप की पत्नी को अपने मोहजाल में फँसाने के लिए लालायित है।"

"बाबा ! मैं सतर्क हूँ। आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

सम्वत् १७०२ की बात है। शाहजी की पत्नी जीजाबाई पति से पृथक् पुणे में जागीर पर रहती थी। उसका लड़का शिवा उसके साथ था। शाहजी ने दूसरा विवाह कर लिया था।

जीजाबाई के एक दूसरा लड़का भी था। वह शिवा से बड़ा था। उसका नाम सम्भाजी था। यह लड़का अपने पिता के पास रहता था। सम्भाजी तो बीजापुर दरबारियों के रहन-सहन और व्यवहार की बातें सीख गया था। शिवा माँ के आचार-विचार का अनुकरण करने लगा था।

शिवा का बाल्यकाल भी अति भीषण परिस्थिति में गुजर रहा था। जब वह माँ के पेट में था, मुगल सेना ने बीजापुर पर आक्रमण कर दिया था और यह जागीर मुगल सेना के मार्ग में पड़ती थी। यह बीजापुर राज्य और मुगल राज्य की सीमा पर थी। जागीर और आसपास के क्षेत्रों में हिन्दू प्रजा का बाहुल्य था। इस कारण दोनों सेनाएँ प्रजा को लूटती थीं। शाहजी ने मुगल सेना का विरोध किया, परन्तु उसे भाग जाना पड़ा। मुगल-शक्ति के सम्मुख उसका विरोध विफल गया। जब शाहजी भागे तो जीजाबाई पीछे छूट गयीं। वह प्रसव-काल के समीप थीं। जीजाबाई ने एक पहाड़ी दुर्ग शिवनेर में आश्रय लिया और वहाँ ही शिवा उत्पन्न हुआ।

मुगल सेना शाहजी और उसके परिवार को ढूंढ़ रही थी। इस कारण जीजाबाई को लुक-छिपकर रहना पड़ रहा था। ज्यों ही प्रसव के पश्चात् वह चलने-फिरने के योग्य हुई, उसने दुर्ग छोड़ दिया और जंगली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँवों में अज्ञातवास करना आरम्भ कर दिया। कभी कहीं, कभी कहीं। शिवा उसके साथ था। छः वर्ष तक यह आँखमिचौनी होती रही। आखिर जीजाबाई और शिवा पकड़े गए।

परन्तु इसी बीच बीजापुर से मुगलों की सन्धि हो गई और मुगल सेना लौट गयी। जीजाबाई अपने पुत्र-सहित कैद से भाग निकली और मुगलों से खाली की गई अपनी जागीर पर लौट आईं।

जागीर सर्वथा उजड़ चुकी थी। भाग्य से जागीर का दीवान एक विद्वान और योग्य शासक मिल गया। यह दादाजी कोण्डदेव थे। इन्होंने अपने सुप्रबन्ध से जागीर की अवस्था को सुधारा और शिवा तथा उसकी माँ के रहने के लिए मुठा नदी के तट पर एक प्रासाद बना दिया।

जीजाबाई इस प्रासाद में पाँच-छः वर्ष से रह रही थीं।

जीजाबाई नित्य प्रातःकाल उठ, स्नान-ध्यान में लग जाया करती थीं। शिवा जो अब अठारह वर्ष की आयु का हो चुका था, वह बहुत प्रातःकाल अपने घोड़े पर सवार हो भ्रमण के लिए निकल जाता था। पहाड़ी घाटियों, कन्दराओं और शिखरों पर अश्व भगाता हुआ वह प्रासाद को वापस लौटता तो माँ पूजा समाप्त कर चुकी होती थी। शिवा माँ को प्रणाम करने और उसका आशीर्वाद प्राप्त करने, अपने भ्रमण से लौटते ही माँ के पूजागृह के बाहर जा खड़ा होता था। माँ पूजागृह से निकलतीं तो शिवा चरणस्पर्श करता और माँ शिवा को आशीर्वाद दे दिया करती थी, "बेटा! चिरंजीव हो, समृद्ध और सुखी रहो। देश और जाति के उद्धार में लगे रहो।"

शिवा इस आशीर्वाद को सुनता था और इस पर चिन्तन किया करता था। वह दादाजी कोण्डदेव से पढ़ा करता था, परन्तु दादाजी तो बीजापुर राज्य के आतंक से त्रसित रहते थे। इस कारण देश और जाति के उद्धार के विषय में वह उनसे बात नहीं कर सकता था। शिवा का बाल्यकाल का अनुभव ही यह था कि बीजापुर क्या और दिल्ली क्या, दोनों राज्य, देश और जाति के घोर विरोधी हैं। वह जब अपनी जागीर पर रहने के लिए आया था तो जागीर की अवस्था देख और उस अवस्था को उत्पन्न करने वालों की बातें सुन, वह दोनों राज्यों से ही देश तथा जाति के उद्धार की बातें सोचा करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादाजी कोण्डदेव थे तो बहुत बुद्धिमान, परन्तु वह यह जानते थे कि बीजापुर वालों से किसी प्रकार का झगड़ा नहीं करना चाहिए, अन्यथा शाहजी के घोर संकट में फँसने की सम्भावना है। शिवा यह जानता था और माँ के आशीर्वाद का अर्थ वह अपने मन में विचारा करता था।

सम्वत् १७०२ की कार्तिक की सप्तमी थी। शिवा माँ के पूजागृह के बाहर खड़ा था और माँ अभी अपनी पूजा में लीन थी। पहले भी ऐसा हो जाया करता था और शिवा को माँ के पूजागृह से बाहर निकलने की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। वह हाथ जोड़े देवता की ओर मुख किए खड़ा रहता था। माँ की पीठ उसकी तरफ और मुख देवता की ओर होता था।

माँ ने पूजा समाप्त की, ठाकुर की आरती उतारी और देवता के सामने मस्तक नवा वह उठी। पूजागृह से वह निकलने लगी तो शिवा पर उसकी दृष्टि जा पड़ी। आज उसने आशीर्वाद दिया, परन्तु वह खड़ी रही। कुछ विचार कर बोली, "शिवा! चाफल कब जा रहे हो?"

"तो माँ! वहाँ अवश्य जाना चाहिए क्या?"

"हाँ। गुरुजी बुला रहे हैं।"

"उनका संदेश आया है क्या?"

"हाँ। परन्तु किसी व्यक्ति के द्वारा नहीं। वे अभी देवता के द्वारा अपना संदेश दे रहे थे। वे तुमसे मिलना चाहते हैं।"

"तो माँ, जाऊँगा; परन्तु गुरुजी से स्वीकृति तुम ले दो।"

"उनको भी साथ ले जाओ। देखो, उनको कष्ट न हो।"

शिवा ने पुनः चरणस्पर्श किये और उसी दिन दादाजी कोण्डदेव को चाफल चलने के लिए कहने जा पहुँचा। कोण्डदेव ने कह दिया, "हाँ रानी जी की आज्ञा है कि तुम वहाँ जाना चाहते हो और तुम्हारी सुरक्षा के लिए मेरा तुम्हारे साथ जाना आवश्यक है।"

शिवा जानता था कि चाफल में समर्थ गुरु रामदास रहते हैं। वह यह भी जानता था कि समर्थ गुरु महाराष्ट्र में स्वराज्य स्थापित करने का प्रचार करते हैं। इस कारण उसे यह आशा नहीं थी कि दादाजी सुगमता से गुरुजी से मिलने जाने को तैयार हो जायेंगे। इस कारण वह विस्मय में कोण्डदेवजी का मुख देखता रह गया। कोण्डदेव शिवा के मन का भाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ कहने लगा, "देखो शिवा ! मैं जानता हूँ कि समर्थजी क्या चाहते हैं, परन्तु वे एक साधु आदमी राजनीति की बात समझ नहीं सकते। आज मुगल और बीजापुर से यदि महाराष्ट्र स्वतन्त्र हुआ तो चक्की के दो पाटों में कुचल दिया जाएगा। इस पर भी महाराष्ट्र में समर्थ की ख्याति है और जन-जन उनको महावीर का अवतार मानते हैं। अतः मैं भी उनके दर्शन कर कृतार्थ होना चाहता हूँ; परन्तु स्मरण रखो कि एक संन्यासी का राजनीति में हस्तक्षेप एक पागलपन ही है।"

शिवा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह अपने से बड़ों से विवाद करना नहीं चाहता था। बात निश्चय हो गई और त्रयोदशी को गुरु-शिष्य दोनों चाफल को चल पड़े। साथ में दो संरक्षक भी थे। परन्तु उनको चाफल से पाँच कोस इधर ही छोड़ दोनों घोड़ों पर चाफल पहुँच गए और वहाँ स्नानादि से निवृत्त हो मठ में जा पहुँचे।

वहाँ समर्थ रामदासजी से भेंट हुई तो उन्होंने साधारण बात ही गुरु के सम्मुख की। फिर शिवा को अपने निजी कक्ष में ले गए और पृथक् में बातचीत की। स्वामीजी ने अपना गुरुमन्त्र शिवाजी को भी दिया—

आहें तितुके जतन करावें, पुढ़ें अणिक मेलवावें
महाराष्ट्र राज्यांचि करावें। जिकड़े तिकड़े।
धर्म साठी मरावें मरोनि अवघ्योसि मारावें
मारिता मारिता घ्यावें राज्य आपुलें।[1]

शिवा ने अपने मन की बात कह दी, "महाराज, मैं दिन-रात इसी विषय पर विचार करता रहता हूँ, परन्तु विरोध अति प्रबल है।"

"शिवा ! परमात्मा तुम्हारे पक्ष में है। इस पर भी मैं यह कहता हूँ—

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चयः॥'[2]

---

१. धर्म हेतु प्राण विसर्जित करो। मृत्यु का आलिंगन करते-करते भी शत्रुओं का संहार करो। राज्य के लिए मारो-मारो की गूंज खड़ी कर दो।

२. मारे जाओगे तो स्वर्ग प्राप्त करोगे और जीत गए तो राज्य प्राप्त करोगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अतः उठो और युद्ध का निश्चय करो।"

इसके उपरान्त बहुत बातें हुईं और अन्त में स्वामीजी ने कहा, "मैंने तुमको पात्र समझकर बुलाया है। भगवान तुम्हारी रक्षा करेगा।"

"बुलाया है ?" शिवा ने विस्मय में पूछ लिया।

"हाँ। जब हृदय सुस्वर हो जाते हैं तो फिर दूर रहने पर भी सन्देश भेजे जा सकते हैं।"

मठ से निकलते समय विश्वनाथ से भेंट हो गई। विश्वनाथ से उसने कुश्ती की चुनौती की बात सुनी तो विस्मय में उसका मुख देखने लगा। उसने विश्वनाथ के भुजदण्ड भी देखे और वह उसके कुश्ती के निमन्त्रण को स्वीकार करने ही वाला था कि दादाजी कोण्डदेव ने विश्वनाथ को पुणे आने का निमन्त्रण दे दिया।

विश्वनाथ का उद्देश्य न तो घोड़ा लेना था न ही कुश्ती करने का था। वह तो उस युवक का नाम-धाम जानना चाहता था। वह मन में विचार करता था कि क्या स्वामी समर्थजी ने इस युवक को भी वही उपदेश दिया होगा, जो उसे दिया है ?

विश्वनाथ प्रत्यक्ष रूप में संतुष्ट हो गया तो कोण्डदेव ने शिवा को कहा, "चलो। हमें पड़ाव पर पहुँचना है।"

दोनों अश्वों पर सवार हो चल पड़े। मार्ग में विश्वनाथ के विषय में वार्तालाप हुई। शिवा ने पूछ लिया, "गुरुदेव ! आप क्या समझते थे कि यह युवक मुझको कुश्ती में चित्त कर सकेगा ?"

"मैं यह विचार नहीं कर रहा था। मैं तो यह सोच रहा था कि यहाँ मठ के बाहर एक जागीरदार का लड़का एक अपरिचित युवक के साथ कुश्ती करे तो क्या परिणाम होगा। जागीरदार का लड़का जीतता तो उसकी शोभा नहीं होती। वह एक अज्ञात युवक से जीतना होता। यदि हारता तो भारी अपमान हो जाता।"

शिवा ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं उसको अपने साथ पुणे में ले चलता और उसे अपनी जागीर पर किसी काम पर नियुक्त कर देता।"

"यह बात भी ठीक नहीं थी। वह न जाने कौन जाति और कौन देश का रहने वाला है। इस प्रकार जागीर के कर्मचारी नहीं ढूँढे जाते। क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
योग्यता देखी थी तुमने उसमें ?"

"वह युक्तिपूर्वक बात करता था। निर्भीक मालूम होता था और फिर शरीर से तैयार था।"

"ये गुण तो हैं, परन्तु ईमानदारी और वफादारी का इन गुणों से पता नहीं चलता।"

"ये गुण तो किसी में परीक्षा करने से ही पता चल सकते हैं।"

दादाजी कोण्डदेव देख रहा था कि शिवा अब तर्क करने लगा है। इस कारण वह समझ गया कि उसे अब जागीर का काम-धन्धा राजकुमार के हाथ में सौंप देना चाहिए। परन्तु उसकी नियुक्ति तो शिवा के पिता शाहजी ने की थी। इस कारण उसने अपने मन की बात शिवा से नहीं की।

शिवा चाफल से लौटकर अपनी योजनाएँ बनाने लगा। वह अपने साथी युवकों को इकट्ठा करने लगा और उनके मन को भावी संघर्ष के लिए तैयार करने लगा।

उसकी योजना उसके मन में ही थी। उसके साथी तो केवल यह समझते थे कि उनको किसी मुगल आक्रमण के विरोध के लिए तैयार किया जा रहा है।

एक दिन, यह संवत् १७०३ की वर्षा ऋतु की बात थी। पुणे में मल्ल-युद्ध के लिए आसपास के गाँवों के युवक एकत्रित हो रहे थे। इनकी संख्या कई सौ से ऊपर हो गई थी। मध्याह्न में कुश्तियाँ समाप्त हुईं तो शिवा ने युवकों को तोरण चलने का निमन्त्रण दे दिया।

एक गोविन्द ने विस्मय में शिवा की ओर देखते हुए पूछ लिया, "वहाँ क्या है ?"

"वहाँ एक दुर्ग है। वह आजकल खाली पड़ा हुआ है। उसका नायक वर्षा से हो रहे कष्ट को झेल न सकने के कारण सेना-सहित उसे छोड़ नीचे गाँव में आ गया है।"

"परन्तु महाराज ! वहाँ जाते-जाते रात हो जायेगी और खाने को भी वहाँ कुछ मिलेगा नहीं।"

"ठीक है। अपने-अपने साथ दो-दो दिन के लिये भुना मक्का और गुड़ ले चलो। दो दिन में हम वहाँ खाने-पीने का प्रबन्ध कर लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो वहाँ दो दिन से भी अधिक रहना होगा ?"

"अब वहाँ से हम लौटेंगे नहीं। हमारी जागीर में कोई दुर्ग नहीं है। उसे हम अपनी जागीर में ले लेंगे।"

गोविन्द समझ गया कि इतने दिन की बातों को कार्य में लाने का समय आ गया है।

अतः उसने हर-हर महादेव का जयघोष कर दिया और एक सौ से ऊपर युवक अपनी-अपनी तलवार कमर में लटकाये और दो दिन के भोजन के लिये मक्का तथा गुड़ की पोटली कंधे से लटकाये दुर्ग की ओर चल पड़े। वे लोग गाँव, जिसमें दुर्ग का नायक ठहरा हुआ था, को एक ओर छोड़, पहाड़ी पर चढ़ गए और रात के अन्धकार में खाली दुर्ग में जा पहुँचे। दो-चार चौकीदार वहाँ थे। उनको यमलोक की यात्रा पर भेज वे किले में पहुँच गये। किले के द्वार बन्द कर दिए गये और किले के बुर्ज पर हिन्दू धर्म का प्रतीक भगवा ध्वज फहरा दिया गया।

अगले दिन दो-दो तीन-तीन मवाली आसपास के गाँवों में भेजकर रसद पानी एकत्रित की जाने लगी।

शिवा ने देखा कि दुर्ग के नायक के पास पर्याप्त सेना नहीं है। न तो वह दुर्ग का घेरा डाल सकता है, न ही आक्रमण कर उसको विजय कर सकता है। इससे उत्साहित हो उसने गाँव में से और युवकों को एकत्रित कर एक अन्य दुर्ग पर, जो तोरण से छः मील के अन्तर पर पूर्व की ओर था, अधिकार जमा लिया। वहाँ कुछ लड़ाई करनी पड़ी। मुसलमान नायक ने भागकर जान बचाई और दोनों ओर से कुछ हत्याएँ हुईं, परन्तु दुर्ग शिवा के अधिकार में आ गया।

इन दोनों दुर्गों पर शिवा के अधिकार की सूचना बीजापुर पहुँची। दुर्गों के नायकों ने जब अपने को दुर्ग वापस लेने के अयोग्य पाया तो बीजापुर दरबार में शिवा की शिकायत कर दी। दूसरी ओर शिवा ने स्वयं ही एक पत्र बीजापुर को लिख दिया कि इन दुर्गों के नायक अयोग्य और बेखबर थे। उनकी अयोग्यता सिद्ध करने के लिये ही उसने इन दुर्गों पर अपना अधिकार कर लिया है। वह स्वयं बीजापुर की प्रजा है और राज्य की रक्षा भी तो इन दुर्ग-नायकों की अयोग्यता के कारण भय में थी।

इस सूचना पर बीजापुर में विवाद चल पड़ा और दरबार यह निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं कर सका कि शिवा के विरुद्ध कोई कार्यवाही की जाये अथवा उसको पुरस्कार दिया जाये।

दादाजी कोण्डदेव को यह सूचना मिली कि शिवा ने अपने कुछ साथियों को साथ लेकर बीजापुर के दुर्गों पर अधिकार कर उन पर भगवा ध्वज फहरा दिया है तो वह बहुत घबराया। वह जीजाबाई के पास शिवा की शिकायत लेकर जा पहुँचा। दादाजी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, 'रानी जी! यह तो विद्रोह है।"

"किसके विरुद्ध ?" जीजाबाई ने अनजाने भाव में पूछ लिया।

"बीजापुर राज्य के विरुद्ध।"

"ये दुर्ग बीजापुर वालों के थे क्या ?"

"निस्संदेह रानी जी!"

"मुझको विश्वास नहीं आता। यदि इतने बड़े राज्य के होते, तो वे इनकी रक्षा का भली प्रकार से प्रबन्ध किये होते।"

"अब वहाँ से यहाँ सेना भेजी जायेगी। दो लाख सैनिक यहाँ आ जायेंगे और इस देश को वैसे ही विनष्ट कर देंगे जैसे पन्द्रह वर्ष हुए मुगलों ने किया था। वे हमारी प्रजा का घर-बार लूट लेंगे। औरतों को अपमानित करेंगे, खेतों को आग लगा देंगे और पागल कुत्तों की भाँति, हमें ढूँढ़-ढूँढ़ कर मारेंगे।"

"बहुत बुरा होगा तब तो!" जीजाबाई ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा।

"हाँ; मैं नहीं समझ पा रहा कि इस स्थिति में क्या किया जाये।"

"दादाजी! आप चिन्ता न करें। मैं शिवा को बुलाकर समझा देती हूँ और उसे कह देती हूँ कि बीजापुर सुल्तान से क्षमा माँग ले और राज्य-भक्ति की सौगन्ध ले ले।"

"आज ही यह होना चाहिए।" कोण्डदेव ने माँ को पुत्र से अधिक समझदार जान कह दिया।

नित्य प्रातःकाल पूजा के उपरान्त शिवा माँ से आशीर्वाद लेने आया करता था। अगले दिन जब वह आया तो माँ ने दादाजी कोण्डदेव के मन का भय वर्णन कर दिया। शिवा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो माँ! तुमने उनको क्या कहा है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कहा है कि यदि बीजापुर की सेना यहाँ आ गई तो बहुत बुरा होगा। इस कारण तुमसे कहूँगी कि बीजापुर सुल्तान को एक पत्र लिख कर उससे क्षमा माँग ले।"

"किस बात की क्षमा माँग लूं माँ !"

"यही कि तुमने बिना सूचना दिये किलों पर अधिकार कर लिया है।"

"माँ ! मैंने एक पत्र सुल्तान को भेज दिया है। क्षमा नहीं बल्कि आशीर्वाद माँगा है। यह इस कारण कि मैंने नालायक दुर्ग-नायकों की नालायकी प्रकट कर दी है।"

"और यदि सुल्तान ने दुर्ग वापस माँगे तो ?"

"परन्तु वे मुझ-जैसे योग्य नायक को वहाँ का नायक ही क्यों नहीं बना देगा ?"

माँ हँस पड़ी और पूछने लगी, "पर तुम योग्य हो क्या ?"

"योग्यता की परीक्षा दे रहा हूँ माँ !"

"तो अभी परीक्षा जारी है ?"

"हाँ माँ ! मैं यत्न कर रहा हूँ कि सह्याद्री पर्वत शृंखला के वे सब दुर्ग अपने अधीन कर लूं जो बीजापुर राज्य की रक्षा के लिए बने हैं। तब बीजापुर दरबार इधर सेना भेज ही नहीं सकेगा।"

"तो ठीक है। दादाजी से कहते जाओ कि तुमने क्षमा माँग ली है। देखो, उनको अपनी भावी योजना नहीं बताना। व्यर्थ में उनको दुःख होगा।"

"ऐसा ही होगा माँ !"

वर्षा ऋतु समाप्त होते-होते शिवा ने सिंहगढ़ दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया। रामगढ़ में मिले कोश से उसने सिंहगढ़ के नायक को घूस देकर भगा दिया था।

रामगढ़ में कुछ कोश मिला था। उसके आश्रय अब शिवा ने सेना एकत्रित करनी आरम्भ कर दी। इसकी सूचना महाराष्ट्र में कानों-कान पहुँच रही थी।

: २ :

दादाजी कोण्डदेव को शिवा की कारगुजारी देख बहुत डर लग रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था और इस भय तथा अपने पन्द्रह वर्ष के कार्य के मलियामेट होने की सम्भावना देख वे सन्न हुए और फिर स्वर्ग सिधार गये।

इस पर तो जीजाबाई और शिवा खुलकर अपने मन की करने लगे। वर्षा ऋतु समाप्त हो पुनः कार्तिक की पूर्णिमा आयी और तब तक शिवा के पास कई सहस्र सैनिक एकत्रित हो गये थे। सेना तो और भी अधिक हो सकती थी। पूर्ण देश मुसलमानों के अत्याचार से त्राहि-त्राहि कर रहा था। प्रजा को जब शिवा में कुछ आशा की किरण दिखाई दी, तो इधर ही लपक पड़ी। साथ ही इस कार्य की भूमि स्वामी समर्थ रामदास जी ने तैयार कर रखी थी।

अब धनाभाव बाधक हो गया। शिवा इसकी चिन्ता करने लगा। एक दिन वह प्रातःकाल माँ के दर्शन करने उसके पूजागृह के सम्मुख पहुँचा तो माँ प्रसन्नवदन बाहर निकली और पुत्र को आशीर्वाद देने लगी।

माँ ने पुत्र का मलिन-मुख देखा तो पूछ लिया, "क्या बात है शिवा ?"

"माँ ! धन नहीं है और सेना के लिए वेतन, वस्त्र तथा अस्त्र-शस्त्र चाहिएँ। सबके लिए अश्व भी चाहिएँ।"

"शिवा ! मुझे देवता ने अभी-अभी बताया है कि देश का सब धन-दौलत तुम्हारा अपना है। तुम उसको लेकर देश के लिए प्रयोग कर सकते हो।"

"यही देख रहा हूँ कि कहाँ है वह ?"

"जहाँ पर भी इसे देखो, ले लो।"

माँ से आशीर्वाद और उत्साहवर्धक राय ले वह अपने महल के दीवान-खाने में आया तो नये भरती होने के लिए आये बीस-पच्चीस युवक खड़े दिखाई दिये।

उसने उनको एक-एक कर भीतर आने के लिए कह दिया। पहले आने वाला विश्वनाथ ही था।

शिवा ने उसे देखा और पहचान लिया। उसने समझा कि वह कुश्ती करने के लिए आया है। इस विचार के आते ही वह हँस पड़ा।

"तो तुम आ गये हो ?"

"हाँ श्रीमान् !"

"तो कुश्ती होगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं महाराज ! कुश्ती करने नहीं आया ।"

"तो घोड़ा कैसे पाओगे ?"

"अब तो मैं आपकी सेना में भरती हो आपसे घोड़ा माँगूंगा ।"

"ओह ! कहाँ से आये हो ?"

"दौलताबाद के समीप जांव गाँव से ।"

"इतनी दूर से सेना में भरती होने ?"

"जी। मेरे साथ कुछ युवक और भी हैं ।"

"परन्तु हमारे पास वेतन देने के लिए धन नहीं है।"

"हम वेतन के लिए नहीं आये ।"

"तो निर्वाह कैसे होगा ?"

"हम अपने साथ एक-एक महीने भर का खाने के लिए लाये हैं। इतने समय में हममें से एक अपने गाँव जायेगा और सब के लिए गाँव से ले आयेगा ।"

शिवा को आज इन नये प्रकार के लोगों से वास्ता पड़ा था। उसने पूछ लिया, "तुम्हारे गाँव में क्या पैदा होता है और लोग क्या खाते हैं ?"

"महाराज ! वहाँ ज्वार, मक्का, बाजरा और गेहूँ होता है ।"

शिवा ने मुस्करा कर पूछ लिया, "और तुम्हारे गाँव में घोड़े पैदा नहीं होते ?"

"नहीं महाराज ! वहाँ बकरी और भेड़ें होती हैं ।"

"तभी घोड़े की लालसा तुम्हारे मन में थी ।"

विश्वनाथ मुस्कराकर चुप कर रहा। शिवा ने आज्ञा दे दी, "हमने कुछ दिन हुए सिंहगढ़ पर अधिकार किया है। वहाँ के दुर्ग का नायक तुम को नियुक्त करते हैं। शर्त यह है कि तुम्हारे अधीन सब सैनिक अपने-अपने घर से भोजन-वस्त्र लायेंगे। वेतन हम, जब हमारे पास धन होगा, तब देंगे।"

"और महाराज !" विश्वनाथ ने गम्भीर हो पूछ लिया, "वेतन भी हम अपना स्वयं एकत्रित नहीं कर सकते क्या ?"

"तो तुम डाके डालोगे ?"

"नहीं महाराज ! हम चोर और डाकुओं से धन छीन लिया करेंगे ।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे गाँव में चोर-डाकू बहुत हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे गाँव में नहीं महाराज ! इस समय तो पूर्ण देश में कुछ लोग डाके डाल रहे हैं। किसी की नेक कमाई को हम नहीं छीनेंगे ।"

"मुझे तुम्हारी शर्त स्वीकार है, परन्तु छीनने से पहले हमसे स्वीकृति ले लेनी होगी। हम निर्णय करेंगे कि जिसकी दौलत तुम लूटने जा रहे हो, वह उसकी लूट का माल है अथवा नेक कमाई का।"

"हाँ महाराज ! यह तो होगा ही। बिना आपकी आज्ञा के किसी का एक दाना भी नहीं लिया जायेगा ।"

विश्वनाथ को सिंहगढ़ के दुर्ग का नायक बना दिया गया और वह अपने बीस साथियों को लेकर वहाँ जा पहुँचा। नायक होने का आज्ञा-पत्र दिखाकर विश्वनाथ ने सब सैनिकों को अपने अधीन कर लिया।

विश्वनाथ ने अपने पद को सम्हालते ही अपने साथियों में से एक को गाँव भेज दिया और उसे सब के घर पर सब के सही-सलामत यहाँ पर होने का समाचार देने की बात कह दी। साथ ही सब के घर से छः-छः मास का खाने भर का रसद-पानी लाने के लिए कह दिया।

उसने सिंहगढ़ दुर्ग पर अधिकार जमाते ही आसपास के गाँव में डुग्गी पिटवा दी—"आज से यह राज्य महाराष्ट्रपति महाराज शिवाजी का है। अतः आगामी कर बीजापुर को नहीं दिया जाये। कर महाराज शिवाजी के कर्मचारी लेंगे।"

फसल अभी चैत मास में कटनी थी और कट कर वैशाख में एकत्रित होनी थी। तब तक के लिए प्रबन्ध करना था। इस समय तक शिवा ने पुरन्दर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। यह दुर्ग सह्याद्री पर्वत शृंखला में एक ऊँचाई पर बना था। इसको ले लेने पर बीजापुर से सेना का मार्ग अवरुद्ध किया जा सकता था, परन्तु इन सब दुर्गों की रक्षा के लिए पर्याप्त सेना, अस्त्र-शस्त्र और धन-धान्य चाहिये था। यह शिवा के पास नहीं था।

महाराष्ट्र के प्रायः सैनिक अपने-अपने खेतों पर काम करते थे। अपने निर्वाह के लिए वहाँ से पैदा करते थे और समय-समय पर बारी-बारी से दुर्गों की रक्षा के लिए पहुँच जाते थे।

सिंहगढ़ के सेनानायक विश्वनाथ ने दारोजी को अपने गाँव में भेजा था। दारोजी एक मास तक अनुपस्थित हो वहाँ से खाली हाथ लौट आया। उसने अपने खाली हाथ लौटने का कारण बता दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने बताया, "बुड़हानपुर के मुगल सिपाहियों ने गाँव लूट लिया है। खेतों को आग लगा सब फसल तबाह कर दी है। गाँव की बहुत-सी युवा स्त्रियों का अपहरण हो गया है और सब घरों को फूंक डाला गया है।"

दारोजी ने यह भी बताया कि वहाँ के सिपाही विश्वनाथ के माता-पिता और बहिन को कैद कर ले गये हैं। गाँव के लोग जो इस मार-धाड़ से बचने के लिए भाग गये थे, अब लौट रहे हैं। विश्वनाथ की विवाहिता लक्ष्मी का अपहरण हो गया है। उसके सास और श्वसुर भी मारे गये हैं।"

यह समाचार अति दुःखद् था, परन्तु किया क्या जा सकता था ? यह विश्वनाथ समझ नहीं सका, इस कारण मौन था। अब अति विकट समस्या भोजन की हो गयी थी। सिंहगढ़ के साथ लगे गाँवों से अन्न एकत्रित कर निर्वाह हो रहा था।

विश्वनाथ ने एक योजना पर विचार किया और उस योजना को कार्य में लाने के लिए दारोजी को कल्याण भेज दिया। कल्याज बीजापुर राज्य के तटवर्ती क्षेत्र का केन्द्र स्थान था। यहाँ सूबेदार रहता था और यह सूबेदार पूर्ण इलाके का कर एकत्रित कर प्रतिवर्ष बीजापुर भेज दिया करता था। कर भेजने का समय ज्येष्ठ मास हुआ करता था। दारोजी को भेजा गया था कि वह जाकर समाचार लाये कि खजाना सूरत से कब चलने वाला है, कितना धन होगा और कितने सैनिक उसकी रक्षा के लिए उसके साथ होंगे।

दारोजी ज्येष्ठ मास के आरम्भ में कल्याण गया। उसने नकली दाढ़ी-मूंछ लगा लीं और पहरावा पठानों का सा पहन खज़ाने के कार्यालय के बाहर पहुंच गया। खजानची ने एक पठान युवक को देखा तो अपने अर्दली को यह कहकर उसके पास भेज दिया, "यह आदमी अच्छा खूबसूरत जवान मालूम होता है। देखो, यह किस काम के लिए आया है ?"

दारोजी वहाँ यह टोह लेने के लिए घूम रहा था कि खज़ाने के जाने का वृत्तान्त किससे मालूम करे ? वह अभी किसी उपयुक्त अधिकारी से बात करने के ढंग पर विचार ही कर रहा था कि खजानची का अर्दली आया और पूछने लगा, "खान ! क्या कर रहे हो यहाँ ?"

"अपनी किस्मत बनाने की कोशिश कर रहा हूँ।" दारोजी का सतर्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर था।

"कैसे कोशिश कर रहे हो ? तुम तो यहाँ बेकार खड़े हो।"

"किसी बड़े आदमी की नौकरी करना चाहता हूँ और उसकी तलाश कर रहा हूँ।"

अर्दली मुस्कराया और बोला, "तो चलो। तुमको एक बड़े आदमी से मिला दूं।"

"चलो।" दारोजी ने कहा। वह अर्दली के पीछे-पीछे चलता हुआ खजानची के सामने जा खड़ा हुआ।

अर्दली ने अपनी जाँच का नतीजा बताते हुए कह दिया, "हुजूर ! यह नौकरी की तलाश में किसी अच्छे मालिक को ढूंढ़ रहा है।"

खजानची हँसी-ठट्ठे का स्वभाव रखता था। इस कारण अर्दली की बात सुन खिलखिलाकर हँस पड़ा। दारोजी को इसमें हँसने की बात समझ नहीं आयी। वह प्रश्नभरी दृष्टि में सामने तख्तपोश पर बैठे एक प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति की ओर देखता रहा। आखिर खजानची बोला, "खान ! तुम नौकरी ढूंढ़ रहे हो या मालिक ढूंढ़ रहे हो ?"

"हुजूर ! मालिक। मालिक अच्छा मिल जाएगा तो नौकरी लगेगी ही।"

"किसकी ? तुम्हारी या तुम्हारे मालिक की ?"

"नौकरी तो मैं करूँगा। मगर मनपसन्द के मालिक की।"

"तो मिला ? है कोई मालिक ?"

"अगर आप इज़ाज़त दें तो आपको ही मालिक बनाने की कोशिश कर सकता हूं।"

"तो तुमको मैं एक अच्छा मालिक दिखाई दे रहा हूँ ?"

"यह तो हुजूर, नौकरी करके देखूंगा। अगर आप अच्छे मालिक न हुए तो···।"

खजानची ने बीच में ही बात रोक कर कहा, "तो उस मालिक को हटा दोगे ?"

अब तो दारोजी भी मुस्कराया और बोला, "हुजूर ! ऐसे नहीं। मेरा मतलब है कि उसकी नौकरी छोड़ दूंगा।"

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब्दुल समद।"

"ओह! कहाँ से आये हो?"

"बुड़हानपुर से। वहाँ एक मुगल सरदार की नौकरी करता था, मगर मुगल सब के सब बेईमान हैं। सरदार ने मेरी बीवी अपने हरम में कैद कर ली तो मैं नौकरी छोड़ चला आया हूँ।"

"एक बात तो ठीक हुई है। अब तुम्हारी कोई जवान बीवी नहीं है और कोई मालिक तुम्हारी बीवी अपने हरम में कैद नहीं करेगा।"

"पर मैं शादी तो करूँगा।"

"तब तो खतरा है। अच्छा, क्या तनख्वाह लोगे?"

"जो खुश हो दे दें।"

"पर मैं तो तुमको नौकर नहीं रख रहा।"

"तो मैं जाऊँ?"

"हाँ।"

दारोजी कमरे से बाहर जाने के लिए घूमा तो खजानची ने उसे आवाज़ दे दी, "ठहरो खान!"

दारोजी घूमा तो खजानची ने पूछा, "तलवार चलाना जानते हो?"

"हुजूर! खूब अच्छी तरह।"

"पर तुम्हारे पास तलवार तो है नहीं?"

"जो तलवार ले देगा, उसके लिए ही वह चलेगी।"

"अच्छा ठहरो। हम तुम्हारे मालिक बनेंगे। रहोगे कहाँ?"

"जहाँ रखेंगे हुजूर!"

"तो अभी बाहर खड़े हो जाओ। हम तुमको दो महीने के लिए नौकर रखते हैं।"

"और फिर?"

"अगर तब तक तुमने शादी कर ली, तो देखेंगे कि तुम्हारी बीवी कैसी है।"

"क्या मतलब?"

"यही कि अगर बीवी खूबसूरत और जवान हुई तो नौकरी बनी रहेगी और अगर बीवी बूढ़ी और बदसूरत हुई तो नौकरी से छुट्टी कर देंगे।"

"नौकरी से बीवी का क्या ताल्लुक है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"जो बुड़हानपुर में था।"

"अच्छी बात है। तब तो मैं शादी करूँगा ही नहीं।"

खजानची के पास दफ्तर में एक सिपाही पहले ही था। वह खजाने के साथ बीजापुर जा रहा था। खजाने के साथ जाने का सफर खर्च मिलता था और बीजापुर की सैर का मौका मिलता था। इस कारण सब सिपाही बीजापुर जाने के लिए लालायित रहते थे।

दारोजी बाहर आ खजाने के दरवाजे पर खड़ा हो गया। वहाँ पहले ही एक अरबी जवान लम्बी-सी तलवार लिए खड़ा था। दारोजी भी वहाँ खड़ा हो गया।

पहले खड़े जवान ने उसको चुपचाप वहाँ खड़े होते देखा तो पूछ लिया, "किसलिए खड़े हो ?"

"मैं नौकर रख लिया गया हूँ।"

"क्या नाम है ?"

"अब्दुल समद।"

"खुशआमदीद !"

"खुशआमदीद किस वास्ते कह रहे हो ?"

"मुझे बीजापुर जाना है। तुम मेरी जगह पर काम करोगे ?"

"और तुम क्या काम करते हो ?"

"खजानची साहब के जान-माल की हिफाज़त करता हूँ।"

"और बीजापुर किस वास्ते जा रहे हो ?"

"खजाने के साथ सिपाही बन कर।"

"कब जा रहे हो ?"

"हम एक-दो दिन में जाने वाले हैं। उसके साथ जाने के लिए दो सौ मोतबिर सिपाही चाहिएँ।"

दारोजी का उद्देश्य पूरा हो रहा था। अब वह ठीक वक्त और दिन जानना चाहता था। इस कारण मौन हो खड़ा रहा।

"क्या सोच रहे हो खान ?" पहले सिपाही ने पूछ लिया।

"मैं सोच रहा हूँ कि तुम बीजापुर जाने के वास्ते बहुत खुश हो।"

"खजाने के साथ जाने वाले सब लोग खुश होते हैं। एक तो जाने का भत्ता मिलता है। दूसरे नई-नई जगहें देखने को मिलती हैं और जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी बीजापुर जाता है वहाँ से एक-दो औरतें लेकर लौटता है।"

"तो वहाँ औरतों की काश्त होती है ?"

दूसरा सिपाही हँस पड़ा। इस समय अर्दली आया और पहले सिपाही को बुलाकर भीतर ले गया।

दारोजी द्वार पर खड़ा रहा। वह अब इस बात को जानना चाहता था कि खजाने में कितना रुपया जा रहा है। वह कान खड़े कर सब कुछ सुनना चाहता था। उसका साथी सिपाही कमरे से बाहर आया तो खुशी-खुशी बोला, "खान ! मैं जा रहा हूँ।"

"कहाँ ?"

"अभी तो अपने घर। वहाँ खजाने के साथ जाने की तैयारी करनी है।"

"क्या तैयारी करनी है ?"

"दो सौ मील का सफर है। जूता और कपड़े ठीक करने हैं।"

"कब तक जा रहे हो ?"

"कल शाही महल में हाज़िर होने का हुक्म है।"

"दोस्त ! क्या नाम है तुम्हारा ?"

"महबूब खाँ।"

"कहाँ रहते हो ?"

"वह देखो, महल के बाहर कोठरियाँ हैं। उनमें से एक में रहता हूँ।"

"बीवी नहीं है ?"

"बीवी बेवकूफ रखते हैं।"

"क्यों ?"

महबूब खाँ मुस्कराया और चल दिया।

: ३ :

दारोजी को खज़ानची के कार्यालय के बाहर ही रात को सोने का हुक्म मिल गया। खजाने के साथ एक कोठरी थी। उसमें वह ठहर गया। उसको समझा दिया गया कि उसको रात के समय किसी को उस कमरे के नज़दीक नहीं आने देना चाहिए। वहाँ पर खजाना तो नहीं रहता था, परन्तु खजाने का हिसाब-किताब रहता था। रुपया देहातों से एकत्रित कर लाया जाता था। वह महल के भीतर एक सुरक्षित कमरे में जमा करा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जाता था। वहाँ मुहाफिज़से रसीद ले खजानची के पास जमा करा दी जाती थी और गाँव का पटेल, जो गाँव से कर एकत्रित कर लाता था, खज़ानची को हिसाब लिखा दिया करता था। इकट्ठा कर लाने वाले को वहाँ से एक नई रसीद मिल जाती थी और फिर वह पटेल अपने गाँव को लौट जाता था।

दिन-भर यह काम होता रहता था। उसी हिसाब-किताब की रक्षा के लिये दारोजी उर्फ अब्दुल समद को रखा गया था।

महबूब खाँ शाम को आया और अब्दुल समद को रात चौकीदारी करने के विषय में समझा गया। दारोजी वहाँ से जल्दी-से-जल्दी चला जाना चाहता था। उसको भय था कि उसकी नकली दाढ़ी-मूँछ का भेद न खुल जाए। इस कारण उसने पुन: महबूब खाँ से पूछ लिया, "कब तक कूच होने वाली है?"

"मैं अभी-अभी दारोगा से मिलकर आ रहा हूँ। उसने बताया है कि कल तक सब हिसाब-किताब तैयार हो जायेगा। रुपया इकट्ठा हो चुका है। परसों बहुत सुबह हम यहाँ से रवाना हो जाएँगे।"

दारोज़ी एक टट्टू पर आया था और वह टट्टू उसने सराय में बाँध रखा था। अत: वह अगले दिन सायंकाल खजाना बन्द हो जाने के बाद वहाँ से भाग जाने की योजना पर विचार करने लगा। रात वह अपनी कोठरी के बाहर बैठा था कि महल में कुछ अन्य सिपाही उससे दोस्ती करने आ पहुँचे। ये सब महबूब खाँ के साथी थे।

कोठरी में गर्मी थी। इस कारण सब बाहर खुली हवा में बैठे थे और बातें करने लगे थे। महबूब ने ही बात आरम्भ की। उसने पूछ लिया, "समद! खाना-पीना हो चुका है?"

"हाँ दोस्त! वह अर्दली दो ज्वार की रोटियाँ और साग दे गया था। वह अभी-अभी खाकर फारिग हुआ हूँ।"

"हम यही जानने आए थे।"

"वह एक तलवार भी दे गया है, मगर तलवार बहुत अच्छी नहीं है।"

"देखें।"

अब्दुल समद कोठरी में गया और एक तलवार उठा लाया। तलवार पुराने से खोल में रखी थी और उसको जंग लगा हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो समद ! इसे तेल लगाकर साफ कर लेना और फिर किसी पत्थर से रगड़ कर तेज़ कर लेना।"

"आपमें से कौन-कौन जा रहा है ?"

"हम सब जा रहे हैं। यहाँ सूबेदार के साथ सिर्फ तीन सौ सिपाही हैं। उनमें से दो सौ तो जा रहे हैं। बकाया खज़ाने की हिफाज़त के लिए रह जाएँगे।"

"तो बकाया खजाना अभी यहीं रहेगा ?"

"सब इकट्ठा किया तो भेजा नहीं जाता। यहाँ के खर्चे के लिए रख लिया जाता है और यह तो साल भर इकट्ठा होता रहता है।"

बहुत देर तक बातचीत होती रही। दारोजी को सब कुछ मालूम हो गया। यद्यपि जाने वाले रुपये की ठीक-ठीक राशि का पता नहीं चला, मगर यह मालूम हो गया कि एक करोड़ के लगभग रुपया है। सब-का-सब चाँदी और सोने के सिक्कों में है। सब रुपया दस बैल गाड़ियों में भेजा जाएगा और दो सौ सिपाही उसके साथ जाएँगे। सिपाही प्रायः प्यादे थे। सिर्फ दरोगा नायक एक घुड़सवार था।

अगले दिन खज़ाना खुलने से पहले दारोजी सराय में गया और अपने टट्टू को सायंकाल खाना-दाना खिलाकर तैयार रखने के लिए सराय वाले को कह आया।

वह वापिस पहुँचा तो खजाने के बाहर बहुत शोर मच रहा था। बीस औरतें एक दूर के गाँव से पकड़कर लाई गई थीं और उनको महल में खजाने के स्थान पर खड़ा किया गया था। पटेल, जो उन औरतों को पकड़कर लाया था, बता रहा था कि गाँव के बहुत से लोगों ने इस वर्ष का लगान नहीं दिया। वह उनकी बीवियों और लड़कियों को पकड़ लाया है, जिससे वे लगान अपने-आप यहाँ पहुँचा दें और अपनी औरतों को छुड़ा ले जाएँ।

अब्दुल समद भी वहाँ जा पहुँचा और उन औरतों का रोना-धोना देखने लगा। महल के सिपाही और कुछ दूसरे लोग वहाँ एकत्रित हो गए थे। दारोजी ने जब उनकी सब कहानी लोगों से सुन ली तो उसने एक से पूछ लिया, "तो इन औरतों को छुड़ाने के लिए इनके घर वाले आएँगे ?"

"लगान तो देना ही पड़ेगा। अगर वे एक महीने तक भी नहीं आए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो औरतों को नीलाम कर दिया जाएगा और उस नीलामी से वसूल रकम उनके नाम जमा कर ली जाएगी।"

"तो यहाँ लोग औरतें खरीदते भी हैं ?"

"हाँ। अगर नीलामी होगी तो हम खरीदेंगे ही। अक्सर ऐसा होता है। कभी-कभी तो दो-दो सौ औरतें इकट्ठी हो जाती हैं। जो एक दफा यहाँ आ गई और जवान हो तो वह यहाँ से वापस नहीं जाती। उनके घर वाले उनको ले जाते भी नहीं।"

'पर इनका दाम तो लगान से ज्यादा ही मिल जाता होगा ?"

"हाँ। अगर कोई जवान और खूबसूरत हुई तब तो उसका दाम बहुत ज्यादा हो जाता है।"

दारोजी ने एक की ओर संकेत कर कहा, "यह तो कोई नई दुल्हन ही मालूम होती है।"

बातें करने वालों ने उधर देखा, जिधर दारोजी ने संकेत किया था। एक बहुत ही कम आयु की लड़की थी। उसके कपड़ों से ही मालूम होता था कि वह नव-विवाहिता है। वह भूमि पर बैठी सिर को घुटनों में दिये चुपचाप रो रही थी।

दारोजी के मन में इन सब औरतों को छुड़ाने की बात पैदा हुई, परन्तु वह वहाँ अकेला था। इस समय खज़ाने का मुहाफिज़ आया और औरतों के नाम लिखने लगा।

दारोजी उन औरतों का करुण-क्रन्दन देख नहीं सका और अपनी कोठरी घर जा पहुँचा। अर्दली वहाँ आया हुआ था। उसने पूछ लिया, "खान ! कहाँ गये थे ?"

"उन औरतों को देखने गया था।"

"तो कोई पसन्द आई है ?"

"वे तो चीख-पुकार कर रही हैं।"

"दो दिन में सब ठीक हो जाएँगी। रात इनको सीधा कर दिया जाएगा।"

"मगर उनके घर वाले उनको छुड़ाने नहीं आएँगे क्या ?"

"अब वे इनको ले जाकर क्या करेंगे ? सब-की-सब खराब की जा चुकी होंगी। उन्हें छुड़ाने के लिए कोई नहीं आएगा। वे सब मुसलमान

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167895

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो गयी हैं।"

दारोजी के रोंगटे खड़े हो गए। वह विचार करता था कि इनके घर वालों ने लगान क्यों नहीं दिया? कोई विशेष कारण ही रहा होगा। उसने अर्दली से यह कहा, "इनके घरवालों को लगान दे देना चाहिए था। क्यों नहीं दिया ?"

"यह तो अगर कोई छुड़ाने आएगा तो पता करेंगे।"

इस समय खज़ानची आ गया। दफ्तर खुल गया और पटेल लगान जमा कर रसीदें देने और लगान चुकता की रसीदें लेने आने लगे थे।

वह पटेल भी आया, जिसने रुपये के साथ कुछ औरतें भी खजाने में जमा कराई थीं। उसने दो हजार नकद और पाँच सौ के एवज में बीस औरतों की रसीद दे दी। खज़ानची ने पूछा, "तुम्हारे गाँव में बहुत नर्दाहद हैं ?"

"हज़ूर ! इस साल खड़ी फसल को किसी ने आग लगा फूँक दिया था। गांव वालों ने अपने भूषण बेचकर दो हज़ार रुपये तो लगान का जमा कराया है। इस पर भी पाँच सौ बकाया नहीं दे सके। इसलिए बीस औरतें पकड़ लाया हूँ।"

खजानची ने सब वृत्तान्त लिख लिया। औरतों की रसीद भी दर्ज कर ली और फिर हिसाब बना पक्की रसीद पटेल को दे दी।

दिन भर चर्चा रही औरतों की। महबूब खाँ और उसके साथी अब अपने नीलामी में बोली न दे सकने पर अफसोस कर रहे थे। औरतों की नीलामी एक हफ्ता बाद होने वाली थी।

दारोजी ने पूछ लिया, "औरतें कहाँ रखी जाएँगी ?"

"सूबेदार के महल में।"

"वहाँ इनकी हिफाज़त की जायेगी क्या ?"

जिससे सवाल पूछा गया, वह मुस्कराकर चुप कर रहा।

सायंकाल जब दफ्तर बन्द हुआ और अर्दली चला गया तो दारोजी अपनी सराय में जा पहुँचा। उसने अपना टट्टू निकलवाया और अपने दुर्ग सिंहगढ़ की तरफ चल पड़ा।

विश्वनाथ ने जब समाचार सुना तो अपने सब सिपाहियों को तथा तोरण और पुरंदर के दुर्गों में एकत्रित डेढ़ सौ सिपाहियों को इकट्ठा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कल्याण से बीजापुर आने वाली सड़क पर एक पहाड़ी की ओट में छुपने के लिए भेज दिया।

दारोजी ने कहा, "नायक ! उन औरतों को छुड़ाना चाहिए।"

"यह तो कल्याण पर आक्रमण करने से ही हो सकेगा।"

"मुझे पता चला है कि वहाँ सिर्फ एक सौ सिपाही हैं।"

"महाराज से राय करनी होगी।"

"तो अभी करनी चाहिये। मेरी राय है कि खजाना लूटने की सूचना कल्याण पहुँचने से पहिले ही वहाँ आक्रमण कर देना चाहिये।"

दारोजी और विश्वनाथ खजाना लूटने के लिए सिपाहियों को ठिकाने पर भेज स्वयं पुणे को चल पड़े। दिन निकलने से पूर्व वे महाराज शिवाजी के प्रासाद के बाहर जा पहुँचे। शिवाजी उस समय भ्रमण के लिये जाने को तैयार हो रहे थे। जब उसने विश्वनाथ की खजाना लूटने की योजना को सुना तो बोला, "मेरे दाहिने हाथ की तली में खारिश हो रही है। इससे मालूम होता है कि यह खजाना हम पा जायेंगे।"

"महाराज ! यह निश्चय ही समझिये। मैं स्वयं इस काम के लिये जा रहा हूँ, परन्तु दारोजी एक और योजना लेकर आया है।"

"क्या ?"

दारोजी ने औरतों की अवस्था वर्णन कर दी और बताया कि भेजे जाने वाले खजाने के अतिरिक्त भी वहाँ रुपया जमा है।

"क्या समझते हो कितने सिपाही इस काम के लिए चाहिएँ।" शिवा ने पूछा।

"मुझे सूचना मिली है कि वहाँ केवल एक सौ सिपाही पीछे रह जाएँगे। यदि हम खाजाना रवाना होने के पीछे एकाएक वहाँ जा धमके तो औरतों को छुड़ाने का पुण्य प्राप्त करेंगे और उसके साथ कुछ तो धन भी मिलेगा ही।"

"ठीक है।" शिवाजी ने एक सौ घुड़सवार अपने साथ ले लिए। दारोजी के लिए एक नया घोड़ा मँगवा दिया गया। सब दारोजी को लेकर कल्याण की ओर चल पड़े। विश्वनाथ तोरण के समीप जंगल में छिपे सिपाहियों की तरफ चल पड़ा।

शिवाजी चक्कर काट कर कल्याण में उस द्वार से दाखिल हुए जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खजाना ले जाने वालों के मार्ग से दूसरी तरफ था। दिन दोपहर जा चुका था। मध्याह्न की गर्मी से बचने के लिये रईस और नौकर सब मकानों के भीतर जा आराम कर रहे थे।

कल्याण का सूबेदार तो महल के नीचे सर्दखाने में अपनी बेगमात के साथ आराम कर रहा था।

एकाएक महल में हल्ला हुआ और सूबेदार मौलाना अहमद ने आवाज़ दी, "कौन है ?"

एक औरत भागी-भागी वहाँ पहुँची और बोली, "हुजूर ! शिवाजी।"

"क्या कहा ?" सूदेदार ने पलँग से लपक कर उठते हुए पूछ लिया।

"हुजूर ! महल पर हमला हो गया है।"

सूबेदार ने अपनी तलवार खूंटी से उतारी और उसे म्यान से निकाल कर तहखाने से बाहर की ओर भागा। उसकेआने से पूर्व महल के सिपाही भाग चुके थे। कुछ तो हर-हर महादेव का नारा सुनकर ही भाग खड़े हुए थे। एक वर्ष से 'हर हर महादेव' की गूंज पुणे तथा कल्याण के मध्यवर्ती इलाके में गूंज रही थी। शिवाजी ने एक-एक कर वर्ष के भीतर ही आठ दुर्गों पर अधिकार जमा लिया था और यह विख्यात हो चुका था कि वह अभी तक कहीं पराजित नहीं हुआ। अत: हर-हर महादेव के नारे के उपरान्त जब महाराज शिवाजी के नाम का जयघोष हुआ तो सूबेदार के सिपाही भागने लगे थे। आठ-दस सिपाही भागते हुए मारे गये।

सूबेदार मौलाना अहमद ऊपर आया तो वह तुरन्त समझ गया कि बाजी हारी जा चुकी है। उसे अपने सिपाहियों में से एक भी दिखाई नहीं दिया। इस बात के मस्तिष्क में आते ही वह भागकर अपने कमरे में चला गया। उसका द्वार भीतर से बन्द कर वह कमरे की खिड़की से महल के प्रांगण में कूद गया और वहाँ से जनानखाने के द्वार से जान बचा भाग गया।

शिवाजी ने आज्ञा दे दी, सब कोश ऊँटों पर लाद लिया जाये। कोशागार में ही औरतें जो पिछले दिन पकड़ कर लायी गयी थीं, मिल गयीं। उनको भी ऊँटों पर सवार करा घुड़सवारों के घेरे में ले लिया गया। इस सब में एक प्रहर से कम समय ही लगा। छ: ऊँटों पर तो कोश गया था और पाँच पर बाईस औरतें चढ़ा दी गई। इन औरतों के अतिरिक्त सूबेदार की तीन बेगमें और दो लड़कियाँ भी पकड़ी गयीं। दारोजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो इस पूर्ण मुहिम का संचालन कर रहा था, बोला, "इन औरतों को रायगढ़ किले में बन्द कर दिया जाये और इनके एवज़ में पाँच लाख रुपया माँगा जाये।"

"किस लिये ?"

"ये लोग हिन्दुओं से यही कुछ करते हैं।"

"नहीं दारोजी !" महाराज शिवाजी ने आज्ञी दे दी—"इन औरतों को इनके घर वालों के पास पहुँचाना है। कुछ शहरियों को पकड़ लाओ और उनके साथ इनको, जहाँ ये जाना चाहें भेज दो।"

यही किया गया। तीसरा प्रहर आरम्भ होने से पूर्व ही शिवाजी खजाना और औरतें लेकर पुणे की ओर चल दिये।

: ४ :

मौलाना अह्मद अरब देश का रहने वाला एक सिपाही था। यह अभी बालक मात्र ही था कि हिन्दुस्तान में आ गया था और बीजापुर राज्य में एक सिपाही के पद से उन्नति करते-करते सूबेदार बन गया था। सुलतान इस सूबेदार की कारगुजारी से प्रसन्न था और इसके समय पर कर वसूल करके भेजने से इसे पुरस्कार भी देता रहता था।

इलाके में पूर्ण शान्ति थी। इस कारण कुछ अधिक सिहाहियों को रखने की आवश्यकता नहीं थी। सागर तटवर्ती देश बहुत उपजाऊ था और कर सुगमता से प्राप्त होता रहता था। यह ठीक था कि शिवाजी द्वारा उत्तर की ओर के कुछ दुर्गों पर अधिकार कर लेने की सूचना आयी थी। परन्तु बीजापुर राज्य के प्रायः सब अधिकारी, उन दुर्गों की राज्य में किसी प्रकार की महत्ता नहीं समझते थे। मुगलों से सुलह हुए बारह वर्ष हो चुके थे और दिल्ली राज्य के इस क्षेत्र पर अधिकार जमाने के लिए आने की आशा नहीं थी। इससे सूबेदार निचिन्त था।

शिवाजी का सूबेदार के महल पर आक्रमण इतना अकस्मात् हुआ था कि सूबेदार अपना शौर्य दिखा नहीं सका। भागते समय उसे अपनी औरतों को बचाने की भी सुध नहीं रही। वह वहाँ से भागा तो नगर के एक दुकानदार के घर पर जा पहुँचा। वह दुकानदार महल में रसद-पानी दिया करता था और सूबेदार से हेल-मेल रखता था। वह भी दुकान बन्द कर दोपहर के समय अपने घर पर आराम कर रहा था। दुकानदार सूबे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार को सिर-पाँव से नंगा, हाथ में तलवार लिये आते देख विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। मौलाना ने बताया—

"बागी शिवा की शामत आयी। उसने हमला ऐसे वक्त पर किया है, जब यहाँ से बहुत से सिपाही जा चुके हैं।"

"तो हमला शिवा ने किया है ?"

"हाँ। अभी मुझे छिपा लो। पीछे इसे मजा चखाऊँगा।"

दुकानदार था भोलानाथ। उसने सूबेदार से बहुत धन पैदा किया था। इस कारण उसने अपने घर की बैठक खोल दी और सूबेदार को उसमें बैठा कर मकान का दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया।

सूबेदार को अभी वहाँ आए एक घड़ी ही हुई थी कि महल को आग लगा देने की सूचना मिली। भोलानाथ के मकान की छत पर चढ़कर सूबेदार अपने आलीशान महल और उनके लाखों रुपये के सामान को धू-धू कर जलते देख बहुत दुःखी होने लगा। उसका विचार था कि उसकी बेगमात और लड़कियाँ उसी में जल गई होंगी।

वह अति शोकग्रस्त अवस्था में छत से नीचे उतर आया और बैठक में जाने लगा तो घर के द्वार के खटखटाने का शब्द हुआ। भोलानाथ को समझ आया कि शिवा के आदमियों ने उसे इसमें आते देख लिया है और वे उसको मारने अथवा पकड़ने आये हैं। उसने दयनीय दृष्टि में भोलानाथ की ओर देखा तो भोलानाथ ने उसे अपने मकान के तहखाने में भेज ऊपर का द्वार बन्द कर दिया। इसके उपरान्त वह घर का द्वार खोलने जा पहुँचा।

द्वार खोला तो उसने देखा कि बुर्कों में कुछ औरतें हैं और उनको लाने वाले नगर के कुछ लोग साथ हैं। वह उन्हें देख भौचक्क रह गया। औरतों के साथ आए लोग बोले, "ये सूबेदार साहब के घर की औरतें हैं। शिवा-जी के हुक्म से इनको छोड़ दिया गया है।"

"और इनको यहाँ किस लिए ले आए हो ?"

"नगर में आप ही सबसे अधिक सूबेदार के मोहतबिर आदमी हैं। आप इनको उनके पास पहुँचा देंगे ?"

"और सूबेदार साहब कहाँ हैं ?"

"हम नहीं जानते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और हमला करने वाले कहाँ हैं ?"

"वे तो लूट-लाट कर चले गए हैं।"

"अच्छा भाई !" भोलानाथ ने अति शोक की मुद्रा बना कहा, "इनको यहाँ छोड़ दो और पता करो कि सूबेदार कहीं बचा हुआ हो उसे यहाँ भेज दो।"

लोग इन औरतों पर दया कर रहे थे। सबको विश्वास हो रहा था कि सूबेदार मारे गए हैं। एक औरत ने बताया था कि वे तलवार ले लड़ने के लिए तहखाने से ऊपर आए थे और फिर दिखाई नहीं दिए। इससे तो सबको विश्वास हो गया था कि वह मारा गया है।

लोगों के चले जाने पर भोलानाथ ने मकान का दरवाजा बन्द कर दिया और औरतों से कहा, "खुदा का शुक्र है कि तुम बच गयी हो। सूबेदार साहब तो यह समझ रहे हैं कि तुम भी महल में जला डाली गयी हो।"

"तो वे यहाँ हैं ?"

"हाँ आओ। तुम्हें जीवित देखकर उनको बहुत खुशी हाहिल होगी।"

उन औरतों में एक बोल उठी, "मगर उनको जिन्दा देख मुझे खुशी नहीं हो रही।"

भोलानाथ और वे औरतें उस बुर्के की तरफ देखने लगीं जिसमें की औरत ने यह कहा था। उसने क्रोध में बुर्का उतार कर भोलानाथ की ओर देखकर कहा, "बताओ कहाँ हैं अब्बाजान ?"

यह क्रोध में भरी हुई एक लड़की थी। चौदह-पन्द्रह वर्ष की आयु की प्रतीत होती थी। नाम था रमज़ान। यह मौलाना अहमद की बड़ी लड़की थी। उसके समीप खड़ी एक अन्य स्त्री ने बुर्के में से कहा, "रमज़ान! कुछ शर्म करो।"

"शर्म से ही तो मरी जा रही हूँ। चलो, अब्बाजान से ही मैं बात करूँगी।"

भोलानाथ ने कहा, "आप सब लोग बैठक में बैठें। सूबेदार साहब नीचे तहखाने में छिपे हुए हैं।"

इस पर तो रमज़ान ने उस बुर्के वाली की तरफ देखा, जिसने उसे शर्म करने के लिए कहा था, और कहा, "अम्मी ! है न बहादुरी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात ?"

भोलानाथ ने इस झगड़े में पड़ना नहीं चाहा। वैसे वह सूबेदार के व्यवहार को ठीक समझ रहा था। साथ ही वह समझ रहा था कि यह समय एक-दूसरे को गाली देने का नहीं है। यह परमात्मा का धन्यवाद करने का समय है, जिसने उस शिवा लुटेरे के मन में दया का भाव पैदा कर दिया था। अन्यथा वह औरतों को भी ले भागता तो कोई क्या कर सकता था ?

सूबेदार अपनी बेगमों के बचकर आ जाने का समाचार पा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने खुशी-खुशी बैठक-घर में प्रवेश किया तो अपनी बड़ी लड़की रमज़ान को बुर्का उठाये औरतों में खड़े देखा। दूसरी अभी भी बुर्का पहने हुए थीं। भोलानाथ तो उनके लिए ठंडा शर्बत बनाने चला गया और सूबेदार ने अपनी लड़की को बिना बुर्का के खड़े देखा तो कहा, "ओह ! रमज़ान ! यह क्या है ?"

"क्या है ?"

"भोलानाथ था न ? खैर, अब तो वह चला गया है।"

"मैं तो समझ रही थी कि यहाँ कोई मर्द रहा ही नहीं। औरतें हैं या हिजड़े हैं।"

"मैं भी मर्द नहीं ?"

"तो आप मर्द हैं ? कहाँ थे आप जब हमको तहखाने से घसीटकर सिपाही ऊपर लाये थे ?"

"तो इन काफिरों ने तुमको हाथ लगाया था ?"

"मुझे तो नहीं ? छोटी अम्मी अपने भूषण उतारकर नहीं दे रही थीं। इस पर सिपाही ने एक लात लगाई। इस पर उन काफिरों के सरदार ने उस सिपाही को डाँटा था और अम्मी से मुआफी माँगी थी।"

"तो इसका मतलब यह हो गया कि मैं हिजड़ा हूँ ?"

"पर आप तो वहाँ थे नहीं। जब वे महल को आग लगाने लगे थे तो मैंने कहा था, हमारे अब्बाजान को ढूंढ़ निकालो, वे यहीं कहीं छिपे होंगे।

"इस पर सब हँसने लगे थे। उनमें से एक जो सब का सरदार मालूम होता था बोला, इन औरतों को हिफाजत से इनके अब्बाजान के पास पहुँचा दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब्बाजान! रास्ते में अम्मी रो रही थीं और कह रही थीं कि उनके बहादुर घर वाले जरूर लड़ते-लड़ते मारे गए हैं; मगर यह तो हम ख्वाब में भी समझ नहीं सके थे कि आप यहाँ तहखाने में छुपे बैठे हैं।"

इस समय तक सूबेदार की औरतें बैठ गयी थीं। सब ने बुर्के उतार दिए थे। सूबेदार की सबसे बड़ी बेगम ने कहा, "हजरत! लड़की ठीक ही तो कहती है। रात तो आप उन औरतों में जो पकड़ कर लायी गयी थीं, बड़ी बहादुरी दिखा रहे थे। उस बेचारी की तो चीख-पुकार का भी ख्याल नहीं किया गया था, जिनके हाथों पर की महावर भी अभी उतरी नहीं थी।"

इस पर लड़की पुनः बोल उठी, "मैं कुछ वैसे ही सलूक की उम्मीद कर रही थी। मैं सोचती थी कि मैं रोऊँ-चिल्लाऊँगी नहीं।"

"तो क्या करतीं ?"

"उस बहादुर सिपहसालर से शादी कर लेती।"

"वह मूज़ी तुमसे कैसे शादी कर लेता ?"

"चुप रहो रमज़ान! कुछ शर्म करो। एक कुंवारी लड़की को ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।" उसकी अम्मी ने कह दिया।

रमज़ान ने आँसू भरे हुए कहा, "अम्मी! मैं तो रात ही अब्बाजान को दो-दो सुनाने वाली थी, मगर इन्होंने उस औरत को कमरे में ले जाकर दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया था। वह बेचारी खुदा का वास्ता डाल रही थी और ये हजरत…।"

इसके आगे रमज़ान कुछ नहीं कह सकी। सब चुप कर गए। अब रमज़ान ने पुनः कहा, "सुबह उस लड़की ने मुझे बताया था कि इसके बाद तो वह जल मरेगी। उसका घर वाला उसको वापस घर में लेगा नहीं और उसके लिए जिन्दगी अब फीकी हो गई है।

"मैंने उसे कहा था कि किसी सिपाही से उसकी शादी कर दी जाएगी। वह बोली, शादी तो हो चुकी। वह जिन्दगी में एक ही बार होती है। अब यह जिस्म पलीद हो गया है और इसको फूंक डालूंगी।"

इस पर मौलाना साहब बोले, "रमज़ान! तुम नहीं जानतीं और मैं जानता हूँ कि महल में लूट-पीट करने वालों में से एक-एक को मज़ा चखाऊँगा। एक-एक पाई उनके पेट में से तलवार के ज़ोर से निकालूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और अम्मी के जेवर छोड़ देने का इनाम नहीं दोगे उनको ?"

"वे बेवकूफ भाग गए। दुश्मन की बीवी-बच्चे सब मोमिनों के लिए हलाल हैं।"

"और अगर वे मेरे साथ भी वही सलूक करते जो एक जीते हुए सिपाही को करना चाहिए तो मैं इस समय उनके हरम में होती।"

सूबेदार ने बात बीच में ही काट कर कहा, "इन काफिरों में ऐसी जुरंत और ताकत ही कहाँ है ? इनसे एक बीवी तो समेटी नहीं जाती। दूसरी का क्या करते ?"

"और आपकी हिम्मत का नमूना तो यहाँ आपको तहखाने में छिपे हुए देखकर मिल गया है।"

"चुप करो रमज़ान !" उसकी अम्मी ने कह दिया।

बैठक के बाहर भोलानाथ एक बड़े से बर्तन में नींबू की शिकञ्जवी बनाकर लिए खड़ा आवाज़ दे रहा था।

: ५ :

शिवाजी कल्याण का महल लूट जब पुणे पहुँचा तो विश्वनाथ बीजापुर जाता हुआ कोश लूटकर ले आया था। उस कोश को लूटने में जो युद्ध हुआ था, इसमें दोनों ओर के सिपाही मारे गए थे। यदि खजाने के संरक्षक भाग न जाते तो कदाचित् कुछ और भी मारे जाते। इस पर भी जब दोनों स्थान का लूटा हुआ कोश एकत्रित किया गया तो पता चला कि डेढ़ करोड़ रुपये से ऊपर की धनराशि मिल गई है।"

शिवाजी ने मृत सिपाहियों के परिवार वालों को भेंट में धन दिया। उनकी भूमि का लगान क्षमा कर दिया। अब सैनिकों को नियम से वेतन दिया जाने लगा था।

उन औरतों की समस्या भी सम्मुख आयी जिनको कल्याण के कोशागार से छुड़ाया था। बीस औरतों में तीन तो रात ही मर चुकी थीं। उनके साथ कई-कई सिपाहियों ने बलात्कार किया था और वे बेचारी यह यन्त्रणा सह नहीं सकीं। शेष सत्रह थीं। उनमें वह नव-विवाहिता भी थी, जिसको सूबेदार अपने सोने के कमरे में ले गया था। शिवाजी ने विश्वनाथ को उनकी समस्या सुलझाने के लिए नियुक्त कर दिया। उसको यह समझ आया था कि विश्वनाथ का मस्तिष्क उर्वरा भूमि की भाँति है। वह अवश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन औरतों की समस्या का सुझाव निकालेगा।

विश्वनाथ इन औरतों के पास गया। वे तो सबकी सब चिता बना जल मरने के लिए चीख-पुकार कर रही थीं। जीजाबाई ने उनको बहुत कठिनाई से समझाया था और इस भीषण हत्याकांड से रोका हुआ था।

जब विश्वनाथ उनके पास आया तो वे अनिश्चित मन सब-की-सब शोक-मुद्रा में बैठ अपने-अपने मन में अपने भविष्य के विषय में विचार कर रही थीं। सबके मन में जीवन की लालसा थी, परन्तु अपने संस्कारों के कारण वे समझ रही थीं कि वे पतित की जा चुकी हैं और अब उनका यह शरीर रखने योग्य नहीं है। इसके साथ ही वे यह जानती थीं कि हिन्दू समाज में उनके लिए कोई स्थान नहीं। जीवित रहने के लिए दो ही मार्ग थे कि या तो किसी नगर में वेश्यावृत्ति करें अन्यथा किसी मुसलमान की सेवा में चली जाएँ। वे इन दोनों में से कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकती थीं।

विश्वनाथ पहुँचा तो सब-की-सब उसका मुख देखने लगीं। उससे पहले जीजाबाई उनको एक सुझाव दे गई थी। वह यह कि उनको कुछ भूमि जोतने बोने के लिए दी जा सकती है और वे अपने-निर्वाह भर पैदा करें तथा अपना जीवन भगवद्भजन में व्यतीत करें। यह बात उनको व्यावहारिक प्रतीत नहीं हुई थी। वे प्रायः युवा स्त्रियाँ थीं। उनमें से कई तो बीस वर्ष की आयु से ऊपर भी नहीं थीं। वे समझ रही थीं कि खेती-बाड़ी बिना किसी पुरुष की सहायता से वे कर नहीं सकेंगी। सहायक पुरुष उनका पति अथवा पुत्र ही हो सकता है। कौन उनको इस रूप में स्वीकार करेगा?

विश्वनाथ ने वहाँ पहुँचते ही कहा, "माताओ और बहिनो! महाराज शिवाजी की आज्ञा है कि तुम सबको तुम्हारे घर वालों के पास पहुँचा दिया जाये।"

एक स्त्री ने कह दिया—

"और फिर कल्याण का सूबेदार हमको पकड़ कर ले जाये। फिर वही कुछ हो जो वहाँ उस रात हमारे साथ हुआ था।"

"तो क्या तुम्हारे घर वाले तुम्हारी रक्षा नहीं करेंगे?"

"वे रक्षा करने में समर्थ होते तो फिर यह दुर्घटना हो सकती ही नहीं थी।"

"यह इस प्रकार हो सकता है कि तुम्हारे परिवार के लोग यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज के राज्य में आकर बस जाएँ। उनको हम भूमि देंगे। वे धरती में से धन पैदा करें और आपका पालन करें। महाराज के सिपाही उनके धनदौलत और उनकी औरतों की रक्षा करेंगे।"

"यह हो सकेगा क्या ?"

"जहाँ तक राज्य के संरक्षण का प्रश्न है, वह मिलेगा। जहाँ तक तुम्हारे घरवालों का यहाँ की भूमि जोतने का प्रश्न है, इसके लिये तुम्हें उनको तैयार करना चाहिए।"

"वे मानेंगे नहीं।"

"क्यों ?"

"हमारा मन कहता है कि वे न तो अपने गाँव की उपजाऊ भूमि छोड़कर यहाँ की पथरीली भूमि पर आकर खती-बाड़ी करेंगे, न ही वे अब हमको अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करेंगे।"

"देखो बहिन !" विश्वनाथ ने उस औरत को सम्बोधन कर कहा, जो विश्वनाथ की योजना में मीन-मेख निकाल रही थी—

"हम आज ही तुम्हारे गाँव में सिपाही भेज रहे हैं। उनको आने दो और उनको ही इस प्रस्ताव पर अपना निर्णय लेने दो। यदि तुम अपने प्रियजनों के घर में जाकर बस सको तो ठीक नहीं क्या ?"

इस पर वह लड़की बोल उठी, "आप यत्न करिये और फिर उनके आपकी योजना को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने की अवस्था में आप क्या करने वाले हैं, इसका भी विचार कर रखिये।"

"अच्छा बहिन ! क्या नाम है तुम्हारा ?"

"लक्ष्मी।"

"देखो लक्ष्मी ! मैं तुम्हारे पति को यहाँ पकड़ मँगवाऊँगा और उसे तुम्हें अपने घर रखने के लिये तैयार किया जायेगा।"

जीजाबाई और विश्वनाथ के समझाने में अन्तर था। जीजाबाई समझती थी कि अब उन औरतों को गृहस्थ जीवन में पुनः प्रवेश करने का अवसर नहीं रहा। विश्वनाथ अपने पिता त्रिभुवन कीर्ति की शिक्षा से शरीर और आत्मा के सम्बन्ध की बातों को अन्य हिन्दुओं से विलक्षण ढंग से समझता था। उसका मत था कि मन बुद्धि को शरीर से पृथक् कर आत्मा की ओर मोड़ा जा सकता है और तब शरीर से घोर-से-घोर पाप-कर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करता हुआ भी, प्राणी पाप के फल का भागी नहीं होता। इस दृष्टि से वह उन स्त्रियों को समझाना चाहता था। उसने कहा, "तुमने कोई पाप नहीं किया। जब तुम्हारा मन और बुद्धि उस कृत्य में रुचि नहीं रखते थे तो तुमको पाप भी नहीं लगेगा।"

यह प्राचीन मीमांसा को एक नवीन दृष्टि से देखना था। पुण्य-पाप आत्मा करता है। शरीर तो केवल एक यन्त्र है। कभी आततायी लोग यन्त्र के स्वामी की इच्छा के बिना यन्त्र पर अधिकार प्राप्त कर उससे काम ले लेते हैं। इसमें न यन्त्र का दोष है न ही स्वामी का। स्वामी को चाहिये कि अपने यन्त्र का प्रयोग किसी दूसरे को न करने दे, परन्तु विवश हो जाने की अवस्था में अपना यन्त्र वापस लेकर कार्य में लगाना उसका धर्म है। यही बात आत्मा और शरीर की है। एक यन्त्र की भाँति शरीर धो-पूंछ कर साफ किया जा सकता है।

विश्वनाथ की यह जीवन-मीमांसा लक्ष्मी बहुत रुचिपूर्वक सुन रही थी। बात जब सुख-सुविधाकारक हो तो शीघ्र ही समझ में आती है। लक्ष्मी को यही बात विश्वनाथ की युक्तियों में दिखाई दी थी।

उसने कह दिया, "भैयाजी, यह सब हमारे घरवालों को समझाइये। हम तो यन्त्र हैं। हम क्या समझेंगी? यन्त्र के स्वामी के ही तो समझने की बात है।"

विश्वनाथ भी इसको अनुभव करता था। इस पर भी उसने कहा, "परन्तु लक्ष्मी देवी! यहाँ तो यन्त्र अपने को विनष्ट ही कर देने की बात विचार कर रहा था। मैं आप सबको यन्त्र नहीं मानता, परन्तु आपमें से जो अपने को एक निर्जीव यन्त्र समझता है उसे भला इस यन्त्र को नष्ट कर देने का विचार कैसे आ गया? यन्त्र तो स्वेच्छा से कुछ करता नहीं।

"मैं आप सबको यन्त्र मानता नहीं। आपके घर वालों को आपका स्वामी समझता नहीं। वे आपके सहयोगी हैं। आप स्त्री-पुरुष दोनों अपने-अपने शरीर के स्वामी हैं। मैं आपको कह रहा था कि आपका शरीर पुनः आपकी आत्मा के अधीन हो गया है। महाराज की अनुकम्पा से आप पुनः अपने-अपने शरीर की स्वामिनी बन गयी हैं। अब आप इससे उचित कार्य लें।"

यह युक्ति ठीक थी, परन्तु समस्या दूसरी थी। जिसके सहयोग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन स्त्रियों ने जीवन चलाना था, उनके सहयोग के प्राप्त करने में ही सन्देह हो रहा था। इस पर भी स्त्रियों को यह समझ आया कि वे पापी तो हैं नहीं। पिछले दिनों की पूर्ण दुर्घटना में भला उनका क्या दोष है? साथ ही उनके साथ जो कुछ कल्याण में हुआ था, उस कर्म की न तो वे जिम्मेदार हैं, न ही उनको उस कृत्य में किसी प्रकार की रुचि थी।

अतः स्त्रियाँ और पुणे के अधिकारी उनके घर वालों के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

शिवा ने विश्वनाथ को जब इतनी सफलता प्राप्त करते देखा कि वे स्त्रियाँ अपने जीवन में रुचि लेने लगी हैं तो विश्वनाथ की विद्वत्ता का मान उसके मन में बढ़ गया।

शिवा अब उसको अपने राज्य-प्रबन्ध में परामर्शदाता मानने लगा था। कल्याण की इस घटना के बाद पुणे की जागीर एक राज्य का रूप धारण करने लगी थी। अधिकार में किये दुर्गों के घेरे में आया पूर्ण क्षेत्र राज्य मान लिया गया और वहाँ के किसानों से कर वसूली का प्रबन्ध होने लगा।

राज्य से भेजे सिपाही बहुत कठिनाई से ही उन औरतों के घर वालों को लाने में सफल हुए। इस पर भी सब नहीं आये। और जो आए वे स्त्रियों के पति नहीं थे। उनके माता-पिता अथवा भाई ही थे। केवल तीन स्त्रियों के पति आये।

अब गोष्ठियाँ होने लगीं कि उन स्त्रियों का क्या किया जाये। पहले उनकी समस्या पर विचार होने लगा जिनके पति आये थे। विचार-विनिमय त्रिभुजीय हो रहा था। एक ओर तो पत्नियों और पतियों में, दूसरी ओर पति और राज्य के प्रतिनिधि विश्वनाथ के भीतर और तीसरी ओर विश्वनाथ और स्त्रियों में।

सबसे विकट समस्या गाँव के ब्राह्मणों की थी। उन्होंने यह व्यवस्था दे दी थी कि ये स्त्रियाँ पतित हो गयी हैं और इनके लिये अब जल मरने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। जब पुरुषों को यह समझाया गया कि वे ब्राह्मण मूर्ख हैं तो उनका कहना था कि उन्होंने रहना तो वहाँ उसी गाँव में है।

"आप लोग हमारे राज्य में आकर बस सकते हैं।" विश्वनाथ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना था।

"परन्तु आपका राज्य स्थापित हो गया है क्या ?"

"हम इसके लिये लड़ मरेंगे।"

"कितने सिपाही, कितने हाथी, कितनी तोपें और कितते घुड़सवार हैं आपके महाराज के पास ?"

"हमारे पक्ष में धर्म है और जहाँ धर्म होता है वहाँ श्री और विजय पदचुम्बन करती है।"

यह धर्म की बात उनको समझ नहीं आयी। उनमें से एक बोल उठा, "धर्म तो मुगलों के पक्ष में है। एक जागीरदार का धर्म है कि अपने शासक के विरुद्ध विद्रोह न करे।"

"परन्तु कौन शासक है ?"

"जो शासन कर रहा है।"

"अब तो महाराज शिवाजी शासन कर रहे हैं।"

"हमें सन्देह है कि यह शासन कुछ अधिक काल तक टिका रह सकेगा ?"

बहुत कठिनाई से एक पुरुष अपनी पत्नी को स्वीकार करने के लिए तयार हुआ। उसने पुणे राज्य में रहना स्वीकार कर लिया। इसमें भी कारण यह था कि अपने गाँव में उसकी बहुत थोड़ी भूमि थी। इस कारण उसको अपने छोटे से खेत त्याग कर पुणे राज्य में एक बड़ा खेत मिल गया था।

दूसरे पुरुष नहीं माने और अगले दिन चुपचाप कल्याण की ओर चल दिये। इसमें लक्ष्मी का पति नहीं था। लक्ष्मी का भाई आया था।

लक्ष्मी ने अपने भाई से पूछ लिया, "आपके बहनोई क्यों नहीं आये?"

"उसके पिता ने आने नहीं दिया। वे अपने धन के बल पर अपने लड़के का नवीन विवाह कर रहे हैं।"

"तो आप किसलिए आये हैं ?"

"हम तुम्हारा पालन-पोषण करेंगे।"

"और विवाह ?"

"यह अब कैसे हो सकता है ?"

इस पर लक्ष्मी ने कह दिया, "आप यहाँ के अधिकारी विश्वनाथ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात कर लें।"

लक्ष्मी के भाई ने विश्वनाथ पन्त से बात की। विश्वनाथ पन्त लक्ष्मी को ले जाने में आपत्ति नहीं कर सकता था। उसने केवल यह कह दिया, "आप अपनी बहिन को ले जा सकते हैं और मेरी राय मानिए उसके नवीन विवाह का प्रबन्ध कर दीजिए।"

"कौन हिन्दू उससे विवाह करेगा?"

"जिसके कुछ भी बुद्धि होगी।"

"ऐसी बुद्धि वाला हमारे गाँव में कोई नहीं है।"

इस पर विश्वनाथ चुप कर रहा। उसका विचार था कि बहिन भाई के साथ विधवा समान जीवन-निर्वाह के लिए चली जायेगी, परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब लक्ष्मी ने विश्वनाथ को बुला भेजा। वह उसके बुलाने का कारण जानने आया। लक्ष्मी ने कह दिया, "मैं अपने भाई के साथ नहीं जा रही।"

"फिर?"

"क्या मैं यहाँ नहीं रह सकती?"

"कैसे रहोगी?"

"किसी से विवाह करने का यत्न करूँगी। आप सहायता करेंगे तो यह सम्भव है।"

विश्वनाथ अवाक् बैठा रह गया। उसे चुप देख लक्ष्मी ने कहा, "आपने ही तो कहा था कि पति पत्नी का स्वामी नहीं सहयोगी होता है। सहयोगी तो बदला भी जा सकता है। स्वामी या तो सम्पत्ति का भोग करेगा, अन्यथा वह उसे फूंक डालेगा। सहयोगी यह नहीं कर सकता।"

विश्वनाथ उसकी युक्ति का अर्थ समझ गया। उसने कह दिया, "हाँ, ठीक है। यहाँ का राज्य यथाशक्ति तुम्हारी सहायता करेगा।"

"तो मैं नहीं जाऊँगी।"

"मैं तुमको जाने के लिए विवश नहीं कर सकता। इस पर भी इतनी चेतावनी दे देना चाहता हूँ कि यहाँ भी पति ढूंढना कम कठिन नहीं होगा।"

"परन्तु एक पति तो मेरी दृष्टि में है। उसके लिए आप सहायक हो सकते हैं।"

"कौन है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक विश्वनाथ पन्त हैं। वे पति-पत्नी के सम्बन्ध को सहयोग का सम्बन्ध मानते हैं।"

"परन्तु मेरा तो विवाह हो चुका है।"

"और आपकी पत्नी कहाँ है ?"

"वह……।" विश्वनाथ यह स्मरण कर कि उसका अपहरण हो चुका है, चुप कर गया। वह विचार करने लगा था कि वह कहाँ होगी और जीवित भी होगी अथवा मर चुकी होगी ?

उसे चुप देख लक्ष्मी ने कह दिया, "पुरुष तो दो विवाह कर सकते हैं। मैं अपनी बड़ी बहिन के चरण दबा दिया करूँगी। उसकी प्रत्येक प्रकार की सेवा कर दिया करूँगी।"

विश्वनाथ विचार कर रहा था कि वह भी लक्ष्मी थी और यह भी लक्ष्मी है। जो अपना है उसे यत्न से रखना चाहिए और उसमें वृद्धि करनी चाहिए। समर्थ स्वामी रामदासजी के इस गुरुमन्त्र का उसे स्मरण हो आया।

लक्ष्मी उसे चुप देख मन में आशा करने लगी थी। उसने पूछ लिया, "क्या नाम है मेरी बनने वाली बहिन का ?"

विश्वनाथ की हँसी निकल गयी। उसने बताया, "नाम लक्ष्मी है। मेरा अभी गौना नहीं आया; परन्तु समाचार मिला है कि गाँव में डाका पड़ा है और उसका अपहरण हो गया है।"

"सच ? बहुत ही बुरा समाचार है। इसका घाटा तो मुझको रहेगा। आपको तो लक्ष्मी मिल सकती है परन्तु मुझे बड़ी बहिन की सेवा का अवसर नहीं मिलेगा।"

"महाराज से बात करूँगा।"

"राजमाता जी से तो बात की है। वे हम दोनों को आशीर्वाद देने का वचन दे चुकी हैं।"

"इस पर भी महाराज से पूछना होगा और फिर आपके भाई से भी अनुमति लेनी होगी।"

"पूछ लीजिये। माता-पिता तो कन्यादान का पुण्य-लाभ कर चुके हैं। दान में दे दी गयी वस्तु पर उनका कुछ भी अधिकार नहीं रहा।"

"यह तो पीछे विचार करूँगा। जब वे दी गयी वस्तु में अनाधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तक्षेप करना चाहेंगे, तब तुम विचार कर लेना।"

: ६ :

कल्याण के सूबेदार के लिए एक बड़ा-सा मकान ढूंढा गया। वह उसमें अपने परिवार को रख बीजापुर के लिए चल पड़ा। यदि तो केवल कल्याण के महल पर डाका डालने की बात होती तब वह इसकी कदाचित् सूचना भी राजधानी में भेजनी उचित न समझता। यह एक स्थानीय शान्ति-व्यवस्था की बात हो जाती, परन्तु इस डाके के साथ बीजापुर को भेजा हुआ खजाना भी लूट लिया गया था। सबसे अधिक लज्जा की बात यह हुई थी कि खजाने के साथ जा रहे सिपाहियों ने डटकर विरोध नहीं किया था। कोश लूटने वाले, संख्या में रक्षा करने वालों से कम थे। और ज्यों ही रक्त बहने लगा कि रक्षक भाग निकले। एक वर्ष से हर-हर महादेव के नारे लगने लगे थे। और नारा लगाने वालों की निरन्तर होने वाली विजय ने प्रजा और सिपाहियों में एक गहरा आतंक जमा दिया था।

इस सब कुछ होने के उपरान्त सूबेदार के लिए बीजापुर जाना आवश्यक हो गया।

मौलाना अहमद बीजापुर पहुंच चुका है, इस समाचार की चर्चा खूब ज़ोर-शोर से हो रही थी। शिवाजी का नाम एक भयानक ढंग से प्रत्येक दरबारी के मुख पर था। जब से शिवाजी ने दुर्गों पर अधिकार जमाना आरम्भ किया था, तब से ही बीजापुर के दरबारियों में दो विचार के लोग उत्पन्न हो गये थे। एक विचार यह था कि तुरन्त एक बहुत बड़ी सेना इस बागी को सबक सिखाने के लिए भेजनी चाहिए। कुछ दूसरे लोग भी थे जिनको मुगलों से युद्ध की बात भूली नहीं थी। ये मुगल सेना के राजपूतों से बहुत बड़ा हत्याकाण्ड हुआ देख चुके थे। साथ ही मुगल सेना से बीजापुर क्षेत्र में मचाई गई तबाही का भी उनको ज्ञान था। उनको यह सन्देह हो रहा था कि पुणे की जागीर, मुगल राज्य और बीजापुर राज्य के भीतर सीमा बनाती है। और जो कुछ शिवाजी कर रहा है, वह मुगल दरबार के प्रोत्साहन पर कर रहा है। इस कारण बीजापुर दरबार के इस विचार के लोग सेना भेजने के अलावा कोई दूसरा उपाय प्रयोग करना चाहते थे।

आक्रमण करने वाले विचार के लोगों में शिवाजी के पिता शाह जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सम्मिलित थे। शाहजी जानते थे कि आक्रमण करने से यह स्वीकार कर लिया जायेगा कि उनका अपने लड़के से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।

यह विवाद अभी चल ही रहा था कि कोश लूटने का समाचार आ पहुँचा। इसने तो बीजापुर के दरबार में भीषण आतंक उत्पन्न कर दिया। दरबार के वे लोग जो आक्रमण के विरोधी थे, वे खुले रूप से कह रहे थे कि इस प्रकार के साहस के कार्य में मुगल राज्य का हाथ है।

जब यह समाचार सुलतान को मिला तो शाहजी को दरबार में उपस्थित होने की आज्ञा जारी हो गयी। शाहजी दरबार में गये तो वहाँ एक दूसरा दृश्य उपस्थित था। कल्याण का सूबेदार मौलाना अहमद दरबार में उपस्थित था। उसने अपनी अत्यन्त ही दयनीय अवस्था बनाई हुई थी। उसका जूता टूटा हुआ था। कपड़े फटे थे। सिर से नंगा और सिर के बाल तथा दाढ़ी-मूंछें उलझी हुई थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि वह युद्ध भूमि से लड़ता-लड़ता ही भागा आ रहा है।

जिस समय कल्याण का सूबेदार अपनी करुण-कथा सुना रहा था, शाह जी भी वहाँ पहुँच गये। जब अहमद शिवाजी से लूटे गये खजाने का तथा महल पर आक्रमण और उस पर अधिकार कर उसे जला देने का समाचार बता चुका तो सुलतान ने शाहजी की ओर देखकर पूछा, "हमारे वफादार सरदार के बागी लड़के का क्या करना चाहिए?"

शाहजी ने स्पष्ट कह दिया, "मेरा यह कहना है कि वह लड़का न सिर्फ हुजूर का बागी है बल्कि वह मुझसे भी बागी है और मैं तो पिछले नौ मास से यह अर्ज कर रहा हूँ कि मुझे पाँच हजार सेना दी जाय तो मैं उस बागी को पकड़ कर दरबार में हाजिर कर सकता हूँ।"

"मगर हम पूछते हैं कि तुम बहुत अच्छे सरदार हो जो अपने लड़के पर भी काबू नहीं रख सकते?" सुल्तान का यह प्रश्न था।

"जहाँपनाह! लड़कों का वाल्दैन से बागी होने का रिवाज मुगल शाही खान-दान ने हिन्दुस्तान में राइज किया है। अकबर अपने उस्ताद बहराम खाँ से बागी हुआ था। जहाँगीर ने अपने बाप अकबर से बगावत की थी। खुसरो ने जहाँगीर से बगावत की तो शाहजहाँ भी पीछे नहीं रहा। उसने भी अपने बाप और बड़े भाई के खिलाफ तलवार उठाई थी।

"हाँ। मैं मुगलों के और अपने लड़के के खिलाफ तलवार लेकर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के को तहतेग करने के लिए तैयार हूँ ।"

सुल्तान को भय था कि अगर शाहजी अथवा उसके दोस्तों को सेना देकर राजधानी से दूर भेजा गया तो वे शिवाजी को परास्त करेंगे या नहीं, कहना कठिन है, परन्तु यह निश्चय है कि वे अपना एक आज़ाद राज्य बना लेंगे। मुश्किल यह थी कि सुल्तान का अपना बड़ा लड़का शाहजी का दोस्त था। यह सन्देह किया जा रहा था कि यह भी मुगलों की नकल करता हुआ बाप से बागी हो अपना राज्य कायम न कर ले और फिर अपने बाप पर आक्रमण कर दे। पिछले नौ महीने से सुल्तान इसी भय से ग्रसित शिवाजी पर हमला बोलने से डर रहा था।

इस पर मौलाना अहमद ने एक तजवीज उपस्थित कर दी। उसने कहा—

"हुजूर! यह काम सरदार शाहजी का है कि वह अपने लड़के को राह-रास्ते पर लायें। हुजूर को चाहिये कि बाप को जिम्मेदार ठहरा कर लड़के को दरबार में हाज़िर होकर सब कुछ यहाँ पर उगल देने पर मजबूर करें।"

बस हुक्म जारी हो गया कि शाहजी को कैद कर लिया जाय। इतना उनको कह दिया गया कि वह अपने लड़के को दरबार में हाज़िर होकर मुआफी माँगने और अपनी करतूत का मुआवज़ा पेश करने के लिए लिख दें। अगर तीन महीने के अन्दर उसने यह न किया तो बाप को जिन्दा दफना दिया जायेगा।

शाहजी को पकड़ कर जेल में डाल दिया गया। उन्होंने अपनी अवस्था और तीन महीने की अवधि की आज्ञा का वृत्तान्त लिख कर शिवाजी को भेज दिया।

मौलाना अहमद को यह हुक्म दे दिया गया कि जब तक शिवाजी हाजिर होकर मुआफी नहीं माँगता तब तक वह यहाँ ही रहे। यह उम्मीद की जा रही थी कि पिता की जान खतरे में देखकर वह भागा-भागा बीजापुर आयेगा और वहाँ उसको कैद कर लिया जायेगा और तब अवसर होगा जब पुणे को लूट कर सल्तनत की हानि पूरी की जा सके।

यद्यपि अहमद सूबेदार वापस अपने परिवार की सुध लेने के लिये जाना चाहता था, परन्तु वह सुलतान के हुक्म को टाल नहीं सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवा लूट का माल समेटते हुए बीजापुर में इसकी प्रतिक्रिया का अनुमान लगा रहा था। उसको तो पहले ही विस्मय हो रहा था कि किसी राज्य के दुर्ग छीने जाने पर कैसे वह राज्य मौन बैठा हुआ है? इसका कारण वह यही समझा था कि राज्य दुर्बल हो गया है, दरबारी सुख-वासना के भोग में लीन हैं और युद्ध-जैसी कठिन परिस्थिति सहन करने से बचना चाहते हैं।

इस पर भी वह सचेत और सतर्क रहना चाहता था। अब कुछ धन उसके हाथ लगा था और वह इसका उपयोग अपने क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने में कर रहा था। कल्याण के लूटने के उपरान्त उसने अपनी परामर्शदाता समिति बना ली थी। उसमें विश्वनाथ और गोविन्द पंत सम्मिलित थे। ये दोनों महानुभाव मन्त्री के रूप में कार्य करते थे। गोविन्द तो क्षत्रिय प्रवृत्ति रखता था और विश्वनाथ ब्राह्मण प्रवृत्ति का था।

वर्तमान परिस्थिति में विश्वनाथ की सम्मति यह थी कि कल्याण और बीजापुर में सतर्क भेदिये भेज देने चाहिएँ। गोविन्द का परामर्श यह था कि सेना में भरती तेज़ कर देनी चाहिये और शस्त्रास्त्र बनवाने आरम्भ कर देने चाहिएँ।

दोनों सम्मतियाँ एक-दूसरे की पूरक थीं और दोनों मान ली गईं। विश्वनाथ ने दारोजी को तो कल्याण में भेज दिया और अपने साथियों में से ही एक सोम को बीजापुर भेज दिया।

दोनों स्थानों से समाचार आने लगे थे। बीजापुर से प्रथम समाचार यह आया कि कल्याण का सूबेदार वहाँ बहुत ही शान-शौकत से पहुँच गया है। उसकी सवारी के साथ पचास के लगभग सेवक हैं।

इसके कुछ दिन बाद मौलाना अहमद के नाटकीय ढंग से दरबार में उपस्थित होने और अपनी दुर्दशा की अवस्था वर्णन करने तथा शिवाजी महाराज के विद्रोह को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करने का समाचार आया। परन्तु इस समाचार के साथ ही सोम स्वयं भी पुणे में आ पहुँचा और शाहजी के बन्दी बना लिये जाने तथा तीन मास के भीतर शिवाजी के बीजापुर में हाजिर होने की आज्ञा की सूचना ले आया।

बीजापुर दरबार का आदमी और शाहजी का पत्र दो दिन पीछे ही पहुँचा। उस पत्र में उस धमकी का भी उल्लेख था कि यदि शिवा तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने में बीजापुर आकर दरबार में उपस्थित न हुआ तो उसके बाप को जीवित ही दफना दिया जायेगा।

इस समाचार से तो पुणे में शोक छा गया। समाचार जीजाबाई के पास भी पहुँचा और माँ पुत्र में राय होने लगी। जीजाबाई ने विश्वनाथ को भी बुलाया और राय की।

इस समय तक विश्वनाथ का विवाह लक्ष्मी से हो चुका था और वह अब महाराज शिवाजी के मन्त्री-पद पर नियुक्त होने के कारण पूना में आकर रहने लगा था। जाँव से आये अन्य युवकों ने भी अपनी विवाहिताओं को बुला लिया था और सब सुखपूर्वक रहने लगे थे।

पुणे में राज्य-कार्य को विस्तार दिया जा रहा था। एक खज़ानची और लेखाकार तो दादाजी कोण्डदेव के समय से ही रखा हुआ था और एक छोटा-सा कार्यालय भी था। अब इसी कार्यालय को विस्तार दिया जाने लगा था।

जाँव गाँव का एक माधव नाम का युवक कोषाध्यक्ष नियुक्त हो चुका था। वह भी सपत्नीक वहाँ रहने लगा था। जाँव गाँव से समाचार आते रहते थे। वहाँ से आने वाले समाचारों के अनुसार विश्वनाथ के माता-पिता तथा बहिन का समाचार, जैसा सब गाँव वालों को विदित था, आया था। विश्वनाथ को यह सूचना मिली थी कि उसके माता-पिता आगरा में शाही नजूमी के नाम से कार्य करते हैं। उसकी बहिन किसी बहुत बड़े राज्याधिकारी से विवाह दी गयी है और परिवार सुखी है।

विश्वनाथ के शिवाजी के साथ पुणे में होने का समाचार उन्हीं स्रोतों द्वारा जिनसे उसके माता-पिता का समाचार आया था, आगरा भेज दिया गया था।

विश्वनाथ का श्वसुर और उसका परिवार तो मौत के घाट उतार दिया गया था। उसकी पत्नी का अपहरण हो चुका था और उसका कोई समाचार नहीं था।

जीजाबाई ने प्रश्न उपस्थित कर दिया कि शिवाजी को बीजापुर जाना चाहिए अथवा नहीं? मन्त्री-मण्डल के तीनों आदमियों में एक मत नहीं हो सका। मन्त्री-मण्डल में शिवा स्वयं था, विश्वनाथ था और गोविन्द था। जीजाबाई तो इस विषय पर सम्मति लेने के लिए वहाँ उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। विश्वनाथ का अपना निश्चित मत था कि बीजापुर नहीं जाना चाहिये। यद्यपि पिताजी का जीवन भय में है, परन्तु वहाँ जाने से यह बन रहा स्वराज्य भय में पड़ जायेगा।

गोविन्द की यह सम्मति थी कि सुल्तान को एक पत्र भेज देना चाहिए कि उसने जो कुछ किया है बीजापुर राज्य को सुदृढ़ करने के लिए किया है। कल्याण का सूबेदार महा मूर्ख था और उसको तथा राज्य को सतर्क करने के लिऐ ही यह कार्रवाई की गई थी।

शिवाजी का कहना था, "परन्तु यह बहाना एक बार चल चुका है और अब चल सकना कठिन है। मेरी सम्मति यह है कि मुझे जाना चाहिए। यदि सम्भव हो तो छापा मार कर पिताजी को बन्दीगृह से छुड़ाकर यहाँ पुणे में ले आना चाहिए।"

विश्वनाथ और जीजाबाई, दोनों शिवा और गोविन्द की सम्मति को अव्यावहारिक मानते थे।

परन्तु शिवा का कहना था, "एक बात ध्रुव की भाँति सत्य है कि पिताजी किसी भी मूल्य पर छूटने चाहिएँ। उनके प्राणों की रक्षा मेरे प्राणों से भी हो तो होनी चाहिए।"

"तो महाराज! यह भी निश्चय जानिए कि वहाँ जाने से आपके प्राण तो जाएंगे ही, साथ ही पिताजी भी नहीं बचेंगे। यहाँ का प्रयास हिन्दू महाराष्ट्र स्वराज्य भी विनष्ट हो जायेगा।"

"तो फिर तुम क्या करने को कहते हो?"

"महाराज! दो दिन का समय दीजिये। विचार कर ही बता सकता हूँ कि वहाँ जाने का विकल्प क्या हो सकता है?"

दो दिन में विश्वनाथ ने अपनी योजना बता दी और अगले ही दिन वह महाराज शिवाजी से एक पत्र लेकर बुड़हानपुर को चल पड़ा। बुड़हानपुर में मुगल सम्राट् का दक्षिण पथ का सूबेदार रहता था। इन दिनों यह शहंशाह शाहजहाँ का सबसे छोटा लड़का मुराद बख्श था।

: ७ :

आगरा में महताब बेगम के महल में आने से भारी हलचल मच गयी थी। पहले ही दिन से महताब पर शहंशाह मोहित हुआ था और उसने उसे अपनी पत्नी बना लिया था। इसे पत्नी बनाने में शाहजहाँ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी लड़की जहानआरा बेगम सहायक हो गई थी। उसके अपने पिता के साथ ऐसे सम्बन्ध थे कि वह अपने पिता तथा शहंशाह को कुछ भी इनकार नहीं कर सकती थी। जहानआरा अत्यन्त सुन्दर युवती थी और शाही खानदान के रीति-रिवाज के अनुसार उसका विवाह नहीं हुआ था।

जहानआरा अभी पन्द्रह वर्ष की ही थी कि उसके भाई शहज़ादा दारा ने उसके लक्षण देखे तो शहंशाह से शाह बलख के लड़के नजावत खाँ से उसके विवाह के लिए आग्रह करने लगा, परन्तु शहंशाह के साले, मुमताज बेगम के भाई आसफ खाँ ने इस बात की राय नहीं दी। वह जहानआरा बेगम का सगा मामा लगता था।

शाही खानदान वालों को सदा डर लगा रहता था कि जितने भी शाही खानदान के खून के रिश्ते होंगे, उतने ही तख्तोताज के हकदार हो जाएँगे। इस कारण दो बातें हो रही थीं। एक तो लड़कियों की शादियाँ नहीं की जाती थीं और दूसरे शाहजहाँ और शहज़ादों के घर औलाद होती थी तो उनके माँ के पेट में बनते ही, उनको नष्ट करने का यत्न किया जाता था।

इस कारण जहाँ बेगमों को पर्दे के अन्दर रखने की सख्त रिवाज थी वहाँ महल में शाही हकीम का आना-जाना बना हुआ था। शाही हकीम बेगमों को गर्भपात की दवाई देता रहता था और फिर गर्भपात से हुई बीमारियों का इलाज करता रहता था।

यही समस्या बेगम महताब के सामने उपस्थित हुई। एक दिन शहंशाह अपनी नई बेगम के शयनागार में पहुँचे तो बेगम को बीमार देख पूछने लगे—

"क्या माजरा है ?"

"खाया-पीया हज़म नहीं होता।"

"तो ऐसा करो, जहानआरा से कहकर थोड़ा शराब वाला फलों का रस ले लो।"

"आलीजाह ! यह तो एक कुदरती बीमारी है। शहज़ादी साहिबा ने मुझे बताया है कि आपके घर कोई शहज़ादा या शहज़ादी होने वाली है।"

"ओह ! तो यह बात है, इस हालत में हम अपने हकीम मुर्तजाअली को भेज देंगे। वह तुमको इस तकलीफ से नज़ात दिलाने का बन्दोबस्त कर देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"उसे महल में आने की इजाज़त देंगे क्या ?"

"वे पचहत्तर साल के जईफ हैं। उनको हम पाँच वर्ष के बच्चे के बराबर बेज़र समझते हैं।"

"इज़ाज़त हो तो मैं अपने पिता से राय कर लूँ। वे भी तो चिकित्सा-शास्त्र पढ़े हैं।"

"उनसे तो तुम मिलती ही हो। मगर वे वह कुछ नहीं कर सकेंगे जो हकीम साहब कर सकते हैं। तुम हकीम साहब को नब्ज़ दिखा दो और उनसे इलाज करवा लो। वैसे पंडितजी से भी राय कर सकती हो।

"देखो बेगम ! यह बीमारी इस महल के हरम की औरतों को अक्सर होती रहती है और हकीम साहब उस बीमारी का इलाज करते रहते हैं।"

अगले दिन एक पचहत्तर साल के वृद्ध टेढ़ी कमर वाले, लाठी का सहारा लिये हुए खुसरे के साथ बेगम महताब की बैठकघर में आ पहुँचे। इत्तला हुई तो बेगम उनसे मशवरा करने आ बैठीं।

हकीम साहब ने नब्ज़ देखी और कह दिया, "दो-तीन दिन में ठीक हो जाओगी।"

"हजरत ! क्या देखा है और क्या ठीक हो जाएगा ?"

हकीम साहब दाँतों के बिना मुख से हँस पड़े। उनके मुख में दाँतों के अभाव के कारण बनी उनकी मुख की भयानक आकृति देख महताब गम्भीर हो अपने बुढ़ापे के विषय में विचार करने लगी।

हकीम साहब ने हँसते हुए कहा, "बेगम साहिबा ! आपके दो महीने का बच्चा पेट में है और तीन खुराक खाने से पेट खाली हो जाएगा।"

"क्या मतलब ?"

"हमल गिर जायेगा।"

"मगर मैं तो यह नहीं चाहती।"

"तो क्या चाहती हैं ?"

"मैं तो खाया-पीया हज़म करने की दवा चाहती हूँ और वक्त पर एक खूबसूरत बच्चे की माँ बनना चाहती हूँ।"

"इसके लिए शहंशाह से पूछना पड़ेगा।"

"तो क्या हमल गिराने की बात आप पूछ कर आये हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं बेगम साहिबा! यह तो रोज़ का यहाँ का काम है। यहाँ दर्जनों-गैर शादीशुदा जवान लड़कियाँ रहती हैं और बहुत पैदावार करने वाली बेगमात हैं। यहाँ एक बात मानी हुई है कि हमल गिराने ही होते हैं। आखिर महल में इन सब औरतों के बच्चों को रखने की जगह ही कहाँ है?"

"मैं यह नहीं चाहती।"

"क्यों?"

"हमल गिराने वाली औरतें जल्द मर जाती हैं। शहंशाह की प्यारी बेगम मुमताज के साथ भी यही हुआ था। आखिर वह भरी जवानी में चल दीं। मैं उसी राह पर नहीं जा सकती।"

"यह जरूरी नहीं है कि सब मरें ही। बेगम जहानआरा से पूछ लें। शहज़ादी रोशनआरा से भी अगर अच्छे ताल्लुकात हों तो वे भी अपने तजरबे बता सकेंगी।"

"तो ये सब हमल गिरवाती हैं?"

"ये बहुत समझदार हैं। साथ ही मैं इस बात का तजरबा हासिल कर चुका हूँ और आप मेरे इल्म से फायदा उठा सकती हैं।"

"हकीम साहब! मुआफ रखें। मुझे आपकी खिदमत की ज़रूरत नहीं। मैं अपनी तकलीफ का इलाज खुद कर लूँगी।"

हकीम साहब को यह नया जानवर अभी अनुभवविहीन समझ आया। उसने कह दिया, 'अच्छी बात है। मैं आपकी तजवीज़ पर शहंशाह से बात करूँगा।"

इसके बाद महताब बेगम पर जहानआरा दबाव डालने लगी कि हमल तो गिराना ही पड़ेगा। शहंशाह भी अभी मुहब्बत और प्यार से समझा रहा था। महताब मान नहीं रही थी।

नीला को अब मालूम होने लगा था कि इस शाही महल की सुख-सुविधा का कुछ मोल भी देना पड़ेगा। इस समय एक बात विशेष हुई। शहज़ादा दारा शिकोह, जो पहले अपनी बहिन के साथ ही नई अम्मी के पास आया करता था, अब अकेला आने लगा था। एक बार जब वह आया तो उसने अपने आने का कारण बता दिया। उसने कहा—

"मैं आपसे कुछ ऐसी बात करने आया हूँ जो मैं अपनी बहिन जहान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरा के सामने करना नहीं चाहता ।"

"हाँ बताइये ।" महताव जानती थी कि जहाँ तक शहज़ादा के उससे प्रेम करने की बात है यह तो जहनाआरा को विदित है और इसमें शहज़ादी साहिबा शहज़ादा की इच्छापूर्ति में सहायक हो रही हैं । इससे वह दत्तचित्त हो सुनने लगी । इन नयी बात को जानने के लिए उसने पूछ लिया——

"शहज़ादा ए अज़ीम ! क्या आपकी कोई बात शहज़ादी से छुपी भी है ?"

"सिवाय मेरी आपके वास्ते मुहब्बत के और कुछ भी ऐसी बात नहीं जो जहानआरा को मालूम हो ।"

महताब ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरा तो ख़याल था कि आपकी कोई भी बात नहीं जो शहज़ादा बहिन से अनजानी हो ।"

"नहीं, यह बात नहीं है । बात यह है कि शहज़ादा औरंगज़ेब खुद शहंशाह बनना चाहता है और उसके शहंशाह बनने से उसकी और मेरी दोनों की आज़ादी खत्म हो जाएगी । अगर हम मार नहीं डाले गये तो कैद ज़रूर ही कर दिये जाएँगे । इस साँझी मुसीबत के तदारुक में हम हमेशा इकट्ठे रहते हैं । मगर मैं आज ऐसे मज़मून पर बात करने आया हूँ जिस का ताल्लुक मेरे शहंशाह बनने अथवा न बनने से नहीं है ।"

'फरमाइये ।"

"देखिये बेगम साहिबा ! मुझे अभी से शहंशाह मत समझिये । यह 'फरमाइये' और 'हुज़ूर' वगैरा इल्फाज़ शहंशाह के लिए मखसूस रखें । मुझे आप अपना फरज़ंद या भाई मानकर ही बात किया करें ।"

"मैं तो आपको होने वाला शहंशाह ही मानती हूँ । इसीलिए आपको उचित मान देने का अभ्यास अभी से करना चाहती हूँ ।"

"अच्छा छोड़िये इस बात को, मैंने सुना है कि आप हमल गिराने से इनकार कर रही हैं ?"

"हाँ ।"

"आज हकीम साहब यह बात शहंशाह को बता रहे थे और उन्होंने हुक्म दे दिया है कि आपको रखेल औरतों के बाड़े में भेज दिया जाये । मतलब यह कि आपको महल के हिस्से से निकाल कर उस सामने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अस्तबल में भेज दिया जाये, जहाँ बहुत-सी गाय-बकरियाँ बँधी हैं।"

"मतलब यह कि मेरा रुत्बा कम कर दिया जायेगा।"

"हाँ। मैं यही कह रहा हूँ।"

"मुझे इससे किसी किस्म का रंज नहीं होगा।"

"क्यों ? यह बे-इन्साफी नहीं होगी क्या ?"

"इन्साफ और बेइन्साफी तो करने वाले के सोचने की बात है। बे-इन्साफी का शिकार तो यह देख रहा है कि उसने कोई ऐसी बात तो नहीं की जिससे उससे ऐसा सलूक किया जा रहा है। मेरी आत्मा बेगुनाह है। इसलिए कहीं भी रखी जाऊँ मुझे अपने अमल पर अफसोस नहीं होगा।"

"अगर एक बात मानिये तो मैं आपको उस गन्दगी से बचा सकता हूँ।"

"यही न कि मैं आपकी बीवी बनना मंजूर कर लूं।"

"नहीं; जो कुछ मैं करना चाहता हूँ उसके एवज़ में मुहब्बत नहीं माँग सकता। मैं यह चाहता हूँ कि आप महल के उस हिस्से में रहने चली चलें, जिसमें मैं रहता हूँ। तब सब यह कहेंगे कि आप मेरे हरम में शामिल हो गई हैं और मैं आपसे वादा करता हूँ कि मैं वहाँ आपको अपनी अम्मी समझ कर आपकी इज्ज़त करूँगा।"

"और आपकी उन सब कोशिशों का क्या होगा जो आप पिछले तीन महीने से कर रहे हैं ?"

"मैं उनको आज से खत्म करता हूँ।"

"मगर इस सब तब्दीली की वजह क्या है ?"

"मेरे मन में हकीम साहब की बात सुनकर यह खयाल आया है कि आपके इरादे नेक हैं और नेक शखसों की मदद करनी चाहिए। जो शाही महल में रहते हुए भी उसकी गलाज़त से अलग रह सकता है, वह शखस इज्ज़त के लायक है।

"देखिए, मैं आपको एक आदमी की बात बताता हूँ। दिल्ली में एक हकीम साहब रहते हैं। उनका नाम सरमद है। वे सूफी हैं। उनके दिमाग में अमाल ही सोचने की बात है। यह हुस्न और नूर, यह रुत्बा और ओहदे तो इस दुनिया में ही रह जाने वाले हैं। कुछ भी रूह के साथ नहीं जाता। सरमद साहब आजकल आगरा आये हुए हैं। रोज शाम को उनकी मज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ख़िस लगती है और कल वे अमालों की बाबत बता रहे थे। उनका कहना था कि सच बात वह है जो इन्सान दिलो-दिमाग से ठीक समझे और तरबीयत याफ्ता आदमी वह है जो सच बात कहने और करने में परहेज़ न करे।

"मैंने यह बात आपमें देखी है और मैं आपकी मदद करने के लिये तैयार हूँ। इस मदद के लिए आपसे कुछ नहीं चाहता। बल्कि जो कुछ चाहता था वह भी छोड़ता हूँ। यह इस वास्ते कि मदद मँजूर हो सके।"

"मैं आपकी मश्कूर हूँ। मगर यह मदद तो तब ही हासिल करने की कोशिश करूँगी, जब यहाँ से निकल जाने का हुक्म सादर हो जायेगा।"

"अम्मीजान! यह आपका खुसरा नूरदीन मेरा मोहतबिर आदमी है। आप इस पर भरोसा कर सकती हैं। मैं आज से आपको शहंशाह की बेगम नहीं समझता। मैं आपको अपनी रूहानी माँ मानता हूँ।"

"तो इसके लिए हकीम सरमद का शुक्रगुजार होना चाहिये। उनकी वजह से मुझे आप-जैसा रूहानी लड़का नसीब हुआ है।"

"हाँ।"

"तो अब यह गले का हार उतार दूं न ?"

"क्यों ?"

"यह तो आपने मुझ अपनी बीवी बनाने के लिए, गले में पहनने को दिया था न ?"

"यह किसने बताया है आपको ?"

"आपकी आँखों ने, आपकी जबान ने, आपके अमालों ने।"

"मैंने तो कहा था कि यह मैं एक तोहफे के रूप में दे रहा हूँ।"

"हाँ। मगर आपकी आँखें कह रहीं थीं कि यह तोहफा अपनी महबूबा के लिए है।"

दारा कुछ देर तक मौन रहा। फिर बोला, "ठीक है आप इस हार को उतार कर मुझ वापस दे सकती हैं। इसके साथ मेरे तब के जज़बात वाबस्ता हैं।"

महताब ने हार उतार कर दे दिया। दारा ने हार लेकर हीरे के पीछे का ढकना खोला और उसे खाली देख विस्मय में महताब का मुख देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों क्या बात है ?" महताब ने विस्मय में पूछ लिया।

"इसमें एक कागज का पुरजा था।"

"कागज ?" महताब ने उससे अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हुए पूछ लिया, "कैसा कागज था ?"

"उस पर इस हार की कीमत लिखी थी।"

"और आपने इसमें रख छोड़ा था वह ?"

"हाँ, जिससे कभी आप खोलें तो जान सकें कि मैं आपकी मुहब्बत का क्या दाम लगाता था।"

"तो मुहब्बत का दाम भी लगाया जाता है ?"

"हर शै का दाम है।"

"जी नहीं। मुहब्बत तो एक अनमोल शै है। मुहब्बत से मेरा अभिप्राय औरत-मर्द सम्बन्ध नहीं। उसका दाम तो हो सकता है मगर मुहब्बत तो उसके अलावा एक मन का भाव है। यह निहायत ही पवित्र, शुद्ध और ईश्वरीय वस्तु है, जिसका ताल्लुक किसी भी दुनियावी और जिस्मानी बात से नहीं। भला इसकी क्या कीमत हो सकती है ?"

दारा इन दिनों सरमद साहब के प्रभाव में था और वह आत्मा-परमात्मा के ऐक्य को महसूस करने लगा था।

वास्तविक बात इस प्रकार थी कि जब हकीम साहब ने महताब की बातें शहंशाह को बतायीं तो वे उन बातों से अति चिन्तित हुए। हकीम साहब ने बताया था कि बेगम साहिबा कहती हैं कि हमल गिराना गुनाह-ए-अजीम है और वे यह नहीं करेंगी।

शहंशाह का कहना था, "ऐसी औरत को तो हम महल में रख नहीं सकते।"

हकीम साहब ने महताब की बात बता दी, "वह महल तो क्या अपना जिस्म भी छोड़ सकती है। मेरा मतलब है कि वह मरने के लिये भी तैयार है।"

"तो ऐसा ही करना पड़ेगा।"

इस पर शहजादा ने कह दिया, "हकीम साहब ! आप कल आइयेगा, जरा मैं भी उसको समझा लूं।"

हकीम साहब गये तो शहंशाह ने पूछ लिया, "तुम क्या समझाओगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसको ?

"मैं उसे अपने महल में रख लूँगा। इससे आप और सब यह समझेंगे कि बच्चा मेरा है और आपके तख्तो-ताज का हकदार वह नहीं होगा।"

"मगर इससे तो हमारी भारी बदनामी होगी।"

"आप कह दीजियेगा कि एक बदकार औरत को आपने तलाक दे दिया है।"

"कैसे तलाक दे दिया है ?"

"जैसे आपने शादी की है। न शादी के वक्त कोई मुल्ला-मौलाना आया था, न तलाक के वक्त किसी के आने की जरूरत है।"

"मगर वह तैयार हो जायेगी क्या ?"

"जो मरने के लिए तैयार है, वह भला मेरी तजवीज़ से कैसे इनकार कर सकती है, मैं उसे अपने शहंशाह और वालिद की बीवी समझकर ही उसको इज्ज़त से वहाँ रखूँगा।"

"मतलब यह कि उसे अपनी बीवी नहीं बनाओगे ?"

"जी नहीं। बिना उसकी मरजी के ऐसा नहीं करूँगा। कहीं मैंने धोखाधड़ी की तो वह खुदकशी कर लेगी।"

"हमारे वक्त में तो नहीं की ?"

"वह कहती है कि उस वक्त वह किसी की बीवी नहीं थी। उसने किसी की वफादार बीवी बनकर रहने का वादा तक नहीं किया था। अब बात दूसरी है।"

शहंशाह को यह प्रबन्ध ठीक मालूम हुआ और वह चुप कर रहा। साथ ही वह बच्चा होने के बाद पुनः उससे ताल्लुकात पैदा करने की बात सोचने लगा था। उसने कह दिया, "उसके लिए दो रास्ते तो पहले ही खुले थे। एक तो हमल गिरा देना या बच्चे को अफीम खिलाकर खतम कर देना। दूसरा रास्ता था खुद दवाई खाकर अपने को भी बच्चे के साथ ही खत्म कर देना।

"अब एक तीसरी राह तुमने बताई है। उसे तुम अपने महल में बच्चे पैदा करने के लिए ले जाना चाहते हो। तुम महल के बाशिन्दों में यह बात फैला देना कि बच्चा तुम्हारा है। इस बात में हमें अपने लिए कुछ नहीं करना, यही कह रहे हो न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी।"

"तो तुम कर सकते हो। अगर वह इस बात पर राजी हो जाती है तो हमें क्या एतराज हो सकता है! एक बात है। औरंगज़ेब इस क़िस्म क बात को हमारे और तुम्हारे खिलाफ नफरत का जज़बा पैदा करने में इस्ते-माल करेगा। एक औरत माँ की पदवी पर होती हुई अपने लड़के से बच्चे पैदा करे, इस पर वह उस औरत को फाँसी के तख्ते पर झुला देने लायक समझेगा।"

"मगर वह रोशनआरा के साथ ऐसा ताल्लुक रखता हुआ तो कुछ कहता नहीं।"

"इसलिए कि वह जहानआरा की सब बात जानता है। अगर हम उसको और रोशनआरा को बदनाम करते हैं तो वह जहानआरा और हमको बदनाम करेगा। शाही खानदान के औरत मर्द एक-दूसरे को बदनाम नहीं करेंगे। मगर किसी बाहरी औरत की बाबत वह लिहाज नहीं करेगा।"

"मैं शहंशाह से एक इल्तजा करना चाहता हूँ कि क्या अब वक्त नहीं आ गया कि वह अपने तीनों छोटे लड़कों को दारा-उल सल्तनत से दूर-दूर भेज दें।"

"हम अभी यही फैसला नहीं कर पा रहे कि किसको कहाँ भेजें।"

"इसमें क्या मुश्किल है? मुराद को आप दक्खन में भेज दें। शुजा को बंगाल और औरंगज़ेब को मुल्तान में। आगरा में मैं आपके साथ पूरी सल्तनत का काम देखूंगा।"

"बात तो ठीक है। औरंगज़ेब दक्खन जाने की बात कह रहा है। मैं उसको वहाँ भेजना खतरनाक समझता हूँ। इस वक्त हमारे दो जबरदस्त दुश्मन गोलकुण्डा और बीजापुर हैं। इनके साथ कहीं औरंगज़ेब की सुलह हो गई तो वह हम पर ही हावी हो जायेगा।"

"आप इसे मुल्तान भेज दें। एक पन्थ दो काज वाली बात हो जायेगी। एक तो औरंगज़ेब महताब बेगम के मुतअल्लिक किसी क़िस्म की नफरत नहीं फैला सकेगा और दूसरे वह सल्तनत के एक ऐसे हिस्से में चला जायेगा, जहाँ उसका डंक निकल सकेगा।"

"तो हम एक बात करते हैं। महताब की बात कि वह महल में तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कमरों में चली जाये, अभी कुछ दिन के लिए मुल्तवी की जाती है। जब औरंगज़ेब चला जायेगा, तब तुम उसे अपने महल के हिस्से में ले जाना, वहाँ उसके बच्चे को अपना बच्चा तसव्वर करना। इस पर हम तुमको इनामो-कराम देंगे।"

: ८ :

महताब से औरंगज़ेब खुद कभी मिलने नहीं आता था। उसका उद्देश्य महल में अपने को पाकसाफ मशहूर कर महल में एक ऐसा गुट तैयार करना था, जिसको मज़हब के नाम पर अपने हक़ में कर सके। इस कारण वह महताब को अपने गुट में मिलाने की कोशिश करता था।

जब से महताब महल में आयी थी, वह सिर्फ एक बार उसकी खिदमत में स्वयं एक बरखुदार लड़का होना ज़ाहिर करने आया था और उसे मुबारिकबाद दे गया था। पीछे वह रोशनआरा को अपना दूत बना उसके पास भेजा करता था।

महताब का रोशनआरा और औरंगज़ेब के प्रति बहुत ही मीठा और मानयुक्त व्यवहार था। वह औरंगज़ेब के एक पीड़ित शहज़ादा होने की बात सुनी थी तो उसके साथ हमदर्दी ज़ाहिर कर दिया करती थी। रोशनआरा यह चाहती थी कि जब तक महताब का सितारा बुलन्द है, वह औरंगज़ेब की तारीफ शहंशाह के पास किया करे और उसका वकील बन उसके काम करवाया करे। औरंगज़ेब और ओशनआरा के एक-दो काम महताब ने किये भी थे। उनके वज़ीफों में वृद्धि करा दी थी, उनको दरबार ए-आम में दारा और जहानआरा के साथ बैठने की इजाज़त ले दी थी। इनसे उत्साहित हो रोशनआरा ने औरंगज़ेब को दक्खन का सूबेदार बना वहाँ भजने की सिफारिश लगाने के लिए कह दिया। महताब ने यह शहंशाह से कहा और साथ ही कह दिया कि यह गलत नीति होगी। शहंशाह एक पन्द्रह वर्ष की लड़की से सल्तनत की नीति की बात सुन चकित रह गया। उसने पूछ लिया, "भला इसमें गलती क्या होगी?"

महताब का कहना था, "दीपक के तले अँधेरा होता है और वहाँ अच्छी अथवा बुरी चीज कुछ भी रखी हो तो वह दिखाई नहीं देती। इससे जिसको अँधेरे में रखना हो उसे दीपक के नीचे बैठाकर रखना चाहिए।"

शहंशास इस उदाहरण से अति प्रभावित हुए थे। परन्तु वे देख रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे कि तीनों शहज़ादे राजधानी से दूर रहना ज्यादा पसन्द करते हैं। इस-लिए वे उन्हें भेजने के लिए विवश होते जाते थे। दक्षिण की सूबेदारी मुश्किल भी थी और शत्रु से मेल-जोल में सुविधाजनक होने से भययुक्त भी थी।

दरबार-ए-खास में यह बात कई बार वजीरे आला के साथ विचारी जा चुकी थी। वजीरे आला इस बात में शहंशाह से सहमत नहीं था। वह कहता था कि शहज़ादों को दूर-दूर रखने से उनमें मुहब्बत बढ़ेगी। नज़-दीक रहने से मुहब्बत कम होती है। इस प्रकार दूर-दूर रहने से वे एक-दूसरे का मान करेंगे और मदद करने वाले हो जाएँगे।

जिस दिन दारा से महताब के मुतअल्लिक बात हुई, उसी दिन औरंगज़ेब को यह पता चल गया कि उसके दूसरे भाइयों को सूबेदार बनाकर भेजा जा रहा है। वजीरे आला से राय हुई थी और उसकी बीवी से रोशनआरा के गहरे सम्बन्ध थे। वह रोशनआरा के सामने बक गयी। मगर उस समय वजीरे आला का खयाल था कि औरंगज़ेब को दक्षिण भेजा जायेगा। इस कारण यही समाचार लेकर रोशनआरा औरंगज़ेब के पास पहुँची। रोशनआरा ने मुबारिकबाद दी तो औरंगज़ेब को यह समझ आया कि महताब बेगम ने ही यह सिफारिश की है और उसके मन में आया कि उसे खुद हाज़िर होकर महताब बेगम का शुक्रिया अदा करना चाहिए।

वह रोशनआरा को लेकर महताब बेगम के कक्ष में जा पहुँचा।

औरंगज़ेब के आने की खबर सुन महताब को बहुत अचम्भा हुआ। तीन महीने में यह दूसरा अवसर ही था।

रोशनआरा और औरंगज़ेब की इत्तला मिली तो महताब उनका स्वा-गत करने अपने बैठक के द्वार तक आई और रोशनआरा को दोनों हाथों से पकड़कर अपने पास दीवान पर ले जाकर बैठ गई। "भाईजान! बैठिए।" उसने औरंगज़ेब को समीप रखी चौकी पर बैठने के लिए कह दिया, "आज आपने यहाँ आने की तकलीफ की, इससे मैं बहुत खुश भी हूँ और शुक्रगुजार भी।"

"मैं तो," बात औरंगज़ेब ने की, "आपका शुक्रिया अदा करने आया हूँ। आपकी कोशिश से मुझे दक्खन का सूबेदार मुकर्रिर कर दिया गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आपकी ख्वाहिश वर आई। यह जानकर मुझे बहुत खुशी मुयस्सर हुई है। मेरी मुबारिकबाद मंजूर हो।"

इस पर औरंगज़ेब ने एक बात खुशामदन कह दी, "मेरी यह इल्तजा है कि शहंशाह दक्खन के दौरे पर आएँ और मेरी छोटी अम्मी को साथ लेते आएँ। इससे मुझे आपकी खिदमत करने का पूरा मौका हासिल होगा।"

"पहले आप वहाँ जाकर अपने रहने का इन्तज़ाम करिए। फिर हम सबको वहाँ आने की दावत दीजिए। तब ही मैं वहाँ चलने का आग्रह कर सकती हूँ।"

"यह होगा। दक्खन में सर्दी का मौसम बहुत खुशगवार होता है। अगले साल मैं यह दावतनामा भेजूँगा।"

इस समय रोशनआरा बेगम ने एक और बात खुशामदन कह दी, "भाईजान! अम्मी को मुबारिकबाद भी तो दो न?"

"किस बात की?"

"यह एक शहज़ादा को जन्म देने वाली हैं। आपका एक भाई और आने वाला है।"

"यह तो बहुत खुशी की बात है। मगर अम्मी! एक बात की मैं तबीह कर देना चाहता हूँ कि शहंशाह और हमारी बहिन यह कोशिश करेंगी कि इस बच्चे को ज़ाया कर दिया जाए।"

महताब यह जानती थी। उस वक्त हकीम साहब उसके पास आ चुके थे; परन्तु उसने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "भला यह क्यों?"

"उनको बच्चों से नफरत है।"

"परन्तु यह निर्दोष जीव उनको क्या तकलीफ देता है?"

"अम्मीजान! ये काफिर हैं। इनका दीन-ईमान कुछ नहीं। आपको खबरदार रहना चाहिए। हाँ, अगर कुछ ऐसी-वैसी बात हो तो रोशन को बता दें। यह आपकी, यहाँ से मेरे पास चले आने में दिलोजान से जेब के मदद देगी। हिन्दुस्तान में अगर कोई महफूज जगह हो सकती है तो औरंगमहल में हो सकती है।"

"मैं आपकी बहुत कृतज्ञ हूँ।" महताब ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा, "मैं स्वप्न में भी ऐसी बात सोच नहीं सकती। अगर कुछ ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बात करने के लिए कहा गया तो मैं इसे मंजूर नहीं कर सकती। मैं खुद मर जाना पसन्द करूँगी मगर अपने ही बच्चे का गला दबा नहीं सकती।"

"खुद मरना कबूल करेंगी तो बात वही हो जायेगी। बच्चा पेट में तड़प-तड़प कर मर जायेगा। देखिए अम्मीजान! अगर तो हमल गिराने की बात कही गई तो नामंजूर कर दीजिएगा। अगर आपकी जान पर किसी क़िस्म का हरफ आने लगे तो यहाँ से भाग निकलियेगा। रोशन आपकी मदद कर देगी। इसकी इतनी ताकत है कि यह सब की आँखों में मट्टी डालकर आपको मेरे पास पहुँचा दे और अगर बच्चा पैदा करने के बाद उसको मारने की तजवीज़ हो तो उसे मेरे पास भेज दीजिएगा। मैं उसकी परवरिश कर दूंगा। मैं हर तरह से अपनी अम्मी की खिदमत के लिए हाज़िर हूँ।"

महताब विचार करती थी कि इसके खिलाफ बहुत कुछ कहा जाता है, हकीकत में यह एक देवतास्वरूप मानव यहाँ पर है। इस पर भी उसने अपनी कठिनाई का वर्णन नहीं किया और कह दिया, "शहज़ादा साहब की इस कृपा और सहानुभूति को मैं याद रखूंगी और ज़रूरत हुई तो इस प्रस्ताव को स्वीकार करूँगी।"

औरंगज़ेब ने एक और सहायक महल में तैयार कर लिया। उसने यात्रा के लिए अपना सामान बाँधना शुरू कर दिया।

एकाएक अगले ही दिन दरबार-ए-आम में यह ऐलान कर दिया गया कि शहंशाह अपने शहज़ादों को हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ हिस्सों में सूबेदार मुकर्रर करते हैं। शहज़ादा दारा शिकोह आगरे में शहंशाह की वृद्धावस्था में उनकी मदद के लिए रहेंगे। यूं वह पंजाब और कश्मीर के सूबेदार कहायेंगे। शहज़ादा मुराद दक्खन के सूबेदार बन बुड़हानपुर में रहेंगे। शहज़ादा शुजा मशरिक की सल्तनत के इन्तजाम के लिए बंगाल में रहेंगे। मुर्शिदाबाद उनका मुकाम होगा। औरंगज़ेब हमारी सरहदों की हिफाज़त के लिए मगरबी सल्तनत की देखभाल करेंगे। उनका मुकाम मुल्तान होगा। हमारी यह ख्वाहिश है कि तीनों शहज़ादे एक हफ्ते के अन्दर अपने साजो सामान के साथ अपने-अपने मुकाम को रवाना हो जाएँ।

इस घोषणा को सुनकर औरंगज़ेब का मुख पीला पड़ गया। उसकी सब योजनाएँ रेत के महल की भाँति गिरकर मलियामेट हो गईं। वह दर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बार में ही उठकर कुछ कहना चाहता था, मगर शहंशाह उठ खड़ा हुआ, शहनाइयाँ बजने लगीं और तोपें दागी जाने लगीं। सब लोग शहंशाह के खड़े होने पर खड़े हो गए। शहंशाह संगमरमर की जाली के भीतर चला गया।

औरंगज़ेब का पूर्ण शरीर क्रोध से काँप रहा था। वह सोने के जंगले का आश्रय ले खड़ा हो गया। सब लोग खड़े रहे और वह भी वहाँ खड़ा रहा। उसका गुलाम शेख उसके पास आया और बोला, "हज़ूर ! चलना चाहिए।

औरंगजेब उसके कंधे का आश्रय ले जाली की ओर चल पड़ा।"

जाली के पीछे रोशनआरा खड़ी अपने भाई की प्रतीक्षा कर रही थी। जब औरंगज़ेब आया तो वह अपने कंधे का आश्रय दे उसको उसके कक्ष की ओर ले गई। मार्ग में उसने उसके कान में कहा, "भाईजान ! हौसला करिये। ज़िन्दगी यहीं खत्म नहीं हो गई। हमको अपनी कोशिश जारी रखनी चाहिए।"

औरंगज़ेब को पुनः अपनी बुद्धि सन्तुलित करने में दिन-भर लगा और अगले दिन वह बोरिया-बिस्तर ले मुल्तान की तरफ चल पड़ा। रोशनआरा को उसने खबरदार रहने के लिए कह दिया था और रोशन-आरा महल में अपने प्यारे भाई के लिए वातावरण अनुकूल करने में दुगुने ज़ोर से लग गई।

मुराद और शुजा तो औरंगज़ेब के जाने के एक सप्ताह पीछे गए। ये दोनों अधिक प्रसन्न थे। इस पर भी खानदानी रवायात के मुताबिक दोनों अपने-अपने मन में सोचते थे कि शहंशाह बनने के लिए आगरा से दूर रहना ठीक रहेगा अथवा समीप। दोनों अवस्थाओं के अपने-अपने गुण थे।

महताब के लिए शहंशाह की दरबार-ए-आम घोषणा विस्मयजनक नहीं हुई। उसे विस्मय तो पिछले दिन औरंगज़ेब के आने पर हुआ था, जब वह उसको दक्षिण में नया सूबेदार नियुक्त किये जाने के लिए शुक्रिया अदा करने आया था।

अब तो उसने भी अपने एक वफादार खुसरे को भेदिए का काम करने पर लगा दिया था। वह समझ गई थी कि खुसरा एक ऐसा प्राणी है जो कि बुद्धिविहीन, अति भावुक और निष्ठावान होता है। यह रहस्य उसे जहानआरा बेगम ने बताया था। इसके उपरांत उसने अपने खुसरे नूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की परीक्षा करनी आरम्भ कर दी । उसने देखा कि जब उसे विशेष खिलाया-पिलाया गया तो वह एक पालतू कुत्ते की भाँति उसके प्रत्येक काम में दिलोजान से कोशिश करने लगा । एक दिन वह बक गया कि उसे रोशनआरा बेगम ने उस पर जासूसी करने के लिए रखा हुआ है ।

"और वह मेरी बाबत क्या जानना चाहती हैं ?" महताब ने पूछ लिया ।

"दो बातें । एक तो यह कि आपका दारा के साथ कैसा ताल्लुक है और दूसरी यह कि आप अपने बाप के घर जाकर किसी आदमी से मिलती हैं या नहीं ?"

"तो तुम एक काम मेरा करो ।" महताब ने कह दिया ।

"फरमाइये । अब तो मैं अपनी भूल समझ गया हूँ । अब आपकी कोई बात किसी बाहर के आदमी को नहीं बताऊँगा ।"

"देखो नूर ! मैं चाहती हूँ कि तुम बहिन रोशनआरा से सच्ची-सच्ची बात बता दिया करो। मेरी खातिर तुम इतना यह करो कि झूठ कुछ भी मत बताया करो। जो कुछ देखो, जितना देखो, वह सब सत्य-सत्य बता दिया करो ।"

"हुजूर ! झूठ तो मैंने कभी बोला नहीं । यह हो सकता है कि मुझे कोई बात समझ न आये तो मैं उसके गलत मायने लगा लूँ । इस पर भी मैं अभी तक जो कुछ बताता रहा हूँ, उसमें गलत कभी कुछ नहीं कहा ।"

"नूर ! मैं तुमसे बहुत खुश हूँ । हाँ, अगर किसी बात को समझ न सको तो मुझसे पूछ लिया करो । मैं तुमको अपना बड़ा भाई ही मानती हूँ ।"

इसके बाद नूर महल के बेगमों की और दो-चार खास लोगों की जो महल में आ सकते थे, बातें बताने लगा । नूर के द्वारा ही महताब शहंशाह और उसकी बेगमों की सब खुरमस्तियों की बातें जानने लगी थी । यह नूर ने ही बताया था कि जहानआरा बेगम एक से ज्यादा आदमियों से ताल्लुक रखती हैं । एक बार वह अपने एक मित्र से नाराज़ हो गईं तो उसने उसे अपने सोने के कमरे में बुला शहंशाह को बुला भेजा । जब शहंशाह के आने का वक्त हुआ तो उसने उसे अँगीठी की चिमनी के सुराख में छिप जाने के लिए उसमें चढ़ा दिया । पीछे शहंशाह से बता दिया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह कहाँ छिपा है। इस पर शहंशाह ने अंगीठी में आग जलवा दी और वह बेचारा चिमनी में ही जल-भुन गया। इसी किस्म की बातें नूर बताने लगा था।

दारा के विषय में भी उसने बहुत-सी बातें बताई थीं। नूर का अनुमान था कि दारा एक अभिमानी और मूर्ख शहज़ादा है। वैसे वह दूसरे शहज़ादों से ज्यादा ईमानदार और वचन का पक्का है। वह मुसलमान तो है नहीं। किसी दूसरे मजहब को भी मानता है या नहीं, कहा नहीं जा सकता था।

नूर ने ही बताया था कि एक हकीम सरमद हैं। वे सूफी हैं और दारा की बैठक में बहुत आते रहते हैं।

"सूफी क्या होते हैं?"

"वे अपनी रूह को खुदा का ही एक छोटा-सा जुज़ मानते हैं जो जिस्मानी ख्वाहिशात की वजह से खुदा से जुदा हो गया है। सरमद साहब कहते हैं कि सच बोलना, वादा पूरा करना और सब बनी नौ इन्सान को अपने जैसा ही समझना खुदा में मिल जाने में मदद देता है। दारा साहब इन बातों पर अमल करते हैं। इस पर भी वे अपनी सादगी में कभी-कभी ऐसी बातें करने लगते हैं कि लोग उनसे नाराज़ हो जाते हैं।"

"मसलन उनकी कौन-सी बात से कौन लोग नाराज़ हैं?"

"वे नमाज़ नहीं पढ़ते। इसके खिलाफ पलथी मार फर्श पर बैठ हाथ में तस्बीह ले कुछ बार-बार गुनगुनाते रहते हैं। उनकी बेगमात इस बात पर नाराज़ होती हैं ओर वे उनको समझाते रहते हैं।"

"ये सब बातें तुम कैसे जानते हो?"

"उनकी एक नौकरानी है शम्बरी। बह बताया करती है।"

"और तुम्हारा शम्बरी से क्या ताल्लुक है?"

"वह मुझको भाई मानती है और मैं उसको बहिन मानता हूँ।"

"और तुम भी उसको यहाँ की बातें बताते होगे?"

"हाँ, यह तो है ही। मगर हुजूर! आपकी तो कोई बात ऐसी है ही नहीं, जिसके लिए कोई ख्वाहिश करे।"

"कैसी बातें जानने की ख्वाहिश करते हैं यहाँ के लोग?"

"यही कि आपका किन-किन लोगों से ताल्लुक है। महल के बाहर से कोई आदमी आपसे मिलने आता है या नहीं और फिर कैसे आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आप किस शहज़ादे की हिमायत करती हैं। आपका इस्लाम पर एतकाद है या नहीं।

"कुछ औरतें यह भी जानने की कोशिश करती रहती हैं कि शहंशाह आपके पास रात को रहने के लिए आते हैं या नहीं। आप क्या खाती हैं, क्या पीती है ? आपकी शराब कहाँ से आती है, वगैरह-वगैरह।"

महताव समझ रही थी कि महल का जीवन कितना व्यर्थ है।

जब से उसको अपने पेट में बच्चे का ज्ञान हुआ था, वह सत्य हृदय से परमात्मा का भजन करने लगी थी। उसे नमाज पढ़ाई और याद कराई गई थी, परन्तु वह उठ, बैठ तथा खड़े होकर ईश्वर की भक्ति कर नहीं सकती थी। इस कारण नित्य स्नानादि से निवृत्त हो आसन पर बैठ पूजा-चिन्तन और ध्यान लगाया करती थी। गाँव में उसके पिता ने उसे प्राणा-याम की विधि भी बताई थी और वह उसका भी अभ्यास करती थी। इस सबसे वह आत्मविश्वास अनुभव करने लगी थी।

: ९ :

शहज़ादों के चले जाने पर शहंशाह ने पुन: महताब के हमल गिराने की बात आरम्भ कर दी। महताब ने इस बार और भी दृढ़ता से इनकार किया। इस पर शहंशाह ने कह दिया, "यह बात शाही महल में नहीं चल सकती। इस वक्त महल में तीन सौ से ऊपर औरतें हैं, जिनका मुझसे ताल्लुक है और अगर हम हमल गिराने अथवा बच्चों के पैदा होते ही उनको मरवाने का बन्दोबस्त न करें तो हमारे हजारों बच्चे महल में कीड़े-मकौड़ों की तरह कुरवल-कुरवल करते होते। साथ ही शहज़ादे हैं। मैं तो एक के बाद सबको खत्म करवा देता, मगर मुमताज ने इसरार कर चार बचा लिए। लड़कियों की दूसरी मुसीबत है। हमारे खानदान में शहंशाह की लड़कियों की शादी नहीं की जाती और जो कुछ खराबी ये करती हैं तुम जान गई हो और बकाया बहुत कुछ जल्दी ही जान जाओगी।

"इसी वास्ते मैं कहता हूँ कि इसको खत्म करना होगा। या तो हकीम साहब के हवाले कर देना होगा। नहीं तो तुमको अपने-आपको खत्म करना होगा।"

"इनके इलावा कोई सूरत नहीं ?"

"नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो मुझको अपने माँ-बाप के पास भेज दीजिए। मैं चुपचाप यहाँ से चली जाऊँगी। सबको यह पता चलेगा कि मैं मर गई हूँ।"

"यह भी यहाँ का कायदा नहीं।"

"तो फिर मैं खुद मरना पसन्द करूँगी। मगर इस बच्चे के हो जाने के बाद।"

"तो एक की बजाय दो का कत्ल करना पड़ेगा।"

"मेरे लिए आपको तकलीफ नहीं करनी पड़ेगी। मैं खुद ज़हर खा लूंगी। हाँ, बच्चे को आप रखियेगा या नहीं आप जानें, आपके जज़्बात।"

"बेगम ! सल्तनत चलाना एक बहुत ही सबाब का काम है और उसके लिए कोई भी गुनाह किया जाना सबाब हो जाता है।"

"ठीक है। आपने सल्तनत चलानी है। आप जो मन में आये करिये। मैंने सल्तनत नहीं चलानी। इसलिए मैं एक च्यूंटी को मारना भी गुनाह समझती हूँ। मैं यह नहीं करूँगी।"

शहंशाह नाराज होकर जाने के लिए उठ खड़े हुए। फिर एका-एक वे घूमकर बोले, "एक तजवीज़ और है।"

"फरमाइए।"

"तुम दारा के महल में चली जाओ।"

"इससे क्या होगा ?"

"तुम उसकी बीवी बन जाओगी।"

'यह तो इस जिन्दगी में होगा नहीं।"

"असल में हो या न हो, मगर इससे महल में यह मशहूर हो जाएगा कि यह हमल दारा का है और दारा ने इसके गिराने में एतराज किया है।"

"देखिये जहाँपनाह ! मैंने आपसे शादी मंजूर की है। अब यह जिस्म किसी दूसरे के इस्तेमाल में नहीं आयेगा। आप इसे रखिए या फेंकिए। यह आपका है और जब तक है आपका होकर ही रहेगा। मैं दारा को अपना बेटा मानती हूँ। वह बेटा ही रहेगा।"

"तुम जो चाहो मानो, जो चाहो करो। मैं महल में कानून शकनी अपने जिम्मे नहीं ले सकता। अगर तुमने यह कानून नहीं मानना तो दारा के हरम में चली जाओ। वह तुम्हारे बच्चे की और तुम्हारी हिफाज़त कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेगा।"

इतना कह शहंशाह क्रोध में वहाँ से चल दिए। इसके बाद दारा और जहानआरा आए और यह वचन दे कि उसकी असमतवर्दी जबरदस्ती अथवा धोखाधड़ी से नहीं की जाएगी, साथ ही उसे अपने तरीके से पूजा-पाठ की इजाज़त होगी, उसे दारा के हरम में ले गए।

वहाँ उसने अपने लिए सिर्फ एक नौकरानी और एक खुसरा रहने दिया, बाकी सबको निकाल दिया। उसने अपने लिए सिर्फ एक कमरा ले लिया और उसमें ही रहने लगी।

एक बात यहाँ और हो गई। उसे स्वाध्याय में सुविधा मिलने लगी। इसी समय उसको विचार आया कि वह महल के भीतर और बाहर की घटनाओं को लिखे। इसमें नूर बहुत सहायक सिद्ध होने लगा। वह दारा से भी बाहर मुल्क के हालात जानती रहती थी और उनको लिखती रहती थी। दारा इस बात को जानता था और वह इसे पसन्द भी करता था। शहंशाह बाबर के ज़माने से यह रिवाज हो गया था कि शाही इतिहास लेखक रखे जायें। शाही रोज़नामचा लिखने वाले दरबार में थे। मगर दारा को घर पर ही अपनी ज़िन्दगी की घटनाओं को लिखने वाला मिला तो वह महताब से खुलकर अपने दिल के भाव बताने लगा।

इसका एक परिणाम यह हुआ कि महताब का वज़ीफा कम कर दिया गया। उसे अब दो हजार अशर्फ़ी सालाना के हिसाब से मिलने का हुक्म हो गया। उसकी इज्ज़त महल के बाशिन्दों में कम हो गई। जहाँ पहले महल की सैकड़ों औरतें उससे मिलने आती थीं, अब उन्होंने आना बन्द कर दिया। अब उसकी एक नौकरानी रफ़ीकन और नूर तथा दारा, उसकी बेगमात, जहानआरा और रोशनआरा के सिवाय कोई उससे मिलने नहीं आता था। यह सब महताब को बुरा मालूम नहीं हुआ। इससे उसका बहुत-सा समय बचने लगा और वह इस समय को परमात्मा की भक्ति, स्वाध्याय और लिखने में व्यय करने लगी।

दारा नियम से नित्य उससे मिलने आया करता था। वह बाज़ार की खबरें बाताता रहता था। इससे उसका रोजनामचा एक इतिहास का रूप लेने लगा था।

वह अब अपने माता-पिता से मिलने भी नहीं जाती थी। हाँ, उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
माँ कभी-कभी मिलने आती थी।

उसे यह विदित हो गया था कि मुगलों ने उनके गाँव को लूट लिया था और फिर आग लगा दी थी। उसे यह भी विदित था कि उसका भाई और गाँव के अन्य युवक पुणे में एक जागीरदार की नौकरी करने चले गये हैं। वह जागीरदार बीजापुर से विद्रोह कर अपना राज्य निर्माण कर रहा है और विश्वनाथ इत्यादि उस जागीरदार की मदद कर रहे हैं।

एक दिन नूर आया और बोला, "बेगम साहिबा! आपकी माँ आज आपसे मिलने आ रही थीं, मगर शाही हुक्म से उनको नहीं आने दिया गया।"

महताब बिना किसी प्रकार का उद्गार प्रकट किए चुप बैठी रही।

नूर ने यह राय दे दी, "आप शहंशाह से अर्जी करें तो पता चल जाएगा कि किससे क्या क़सूर हुआ है?"

"मैं इसकी जरूरत महसूस नहीं करती।"

"आपकी माँ का भी यही कहना है।"

"उनसे कह देना कि मैं अर्जी नहीं करूँगी। मैं किसी के किसी किस्म के एहसान को सिर पर नहीं ले सकती।"

नूर चुप कर रहा और यही बात उसने चन्द्रमुखी से जाकर कह दी। इस बात का रहस्य दारा ने प्रकट किया।

दारा ने बताया, "पुणे के जागीरदार ने बीजापुर राज्य के बगावत कर उस राज्य के कई किलों पर अधिकार कर लिया है और उस राज्य के खज़ाने को लूट लिया है। इस पर नाराज़ हो बीजापुर के सुल्तान ने पुणे के जागीरदार के बाप को कैद कर लिया है और यह हुक्म सादर किया है कि अगर जागीरदार तीन महीने के अन्दर बीजापुर पहुँचकर राज्य की इताअत कबूल नहीं कर लेता तो उसके वालिद को जिन्दा दफना दिया जाएगा।

"इस पर जागीरदार ने मुगल-राज्य की इताअत में आने की अर्जी की है। मुराद बख्श जो मुगल सल्तनत का नुमायिन्दा दक्खन में है, इस अर्जी को मंजूर करने की सिफारिश कर रहा है।

"वैसे मुराद ने यह हुक्म जारी कर दिया है कि शाहजी को दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचने की इजाजत दी जाए, नहीं तो मुगल राज्य बीजापुर पर हमला कर देगा।

"साथ ही मुराद ने उस दूत को जो मुगल राज्य में पुणे के शामिल किये जाने की अर्जी लेकर आया है, आगरा भेज दिया है। उस दूत का नाम विश्वनाथ है। वह कहता है कि जाँव-गाँव का रहने वाला है और पण्डित त्रिभुवन कीर्ति का लड़का है।

"उसका समाचार लेकर तुम्हारी माँ यहाँ आने वाली थीं। मगर जब तक पुणे की जागीर का मुगल राज्य से इल्हाक का फैसला नहीं हो जाता, जब तक तुमको उनसे मिलने नहीं दिया जायेगा।"

"मगर मैं तो महल से बाहर नहीं जा रही थी।"

"इस पर भी यह फैसला है कि तुम्हारी माँ तुमसे तब तक मिलने नहीं आएगी, जब तक तुम्हारा भाई यहाँ दिल्ली में है।"

बात यह हुई थी कि विश्वनाथ शिवाजी को यह सम्मति नहीं दे सका कि वह बीजापुर जाये। जीजाबाई विश्वनाथ का समर्थन करती थी। समस्या थी शिवा के पिता शाहजी को बचाना। विश्वनाथ ने समर्थ स्वामी रामदासजी का गुरुमन्त्र सुना कर बात समाप्त कर दी। स्वामी जी का कहना था, "जो है उसको यत्न से रखो, छोड़ो नहीं। उसमें वृद्धि के लिए यत्न करो और महाराष्ट्र में स्वराज्य स्थापित करने का यत्न करो।"

इस वाक्य को सुन जीजाबाई ने कह दिया, "शिवा को सुरक्षित रखना चाहिए। इसको भय में नहीं डालना चाहिए, परन्तु इसमें वृद्धि के उपाय करने चाहिएँ।" इस पर विश्वनाथ के उर्वरा मस्तिष्क ने यह योजना रख दी कि मुगल सम्राट को एक पत्र लिखा जाय कि पुणे की जागीर का स्वामी मुगल साम्राज्य के अधीन रहना चाहता है। इस कारण वह मुगल सम्राट के प्रति अपनी वफादारी प्रकट करने के लिए दरबार में हाजिर होना चाहता है। बीजापुर सुलतान इसमें बाधा खड़ी कर रहा है। अतः बीजापुर सुल्तान से माँग की जाये कि शाहजी को जीवित दिल्ली की ओर आने की अनुमति दे।

यह पत्र लिखा गया। शिवाजी के हस्ताक्षरों से यह पत्र विश्वनाथ ही लेकर बुरहानपुर पहुँचा। इस समय मुराद वहाँ सूबेदार बन पहुँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चुका था। विश्वनाथ ने मुराद के सामने अर्जी उपस्थित की तो वह फड़क उठा। वह समझता था कि उसको दक्षिण का सूबेदार बनाया ही इसलिए गया है कि दक्षिण को मुगल-साम्राज्य में सम्मिलित करना है। इसको एक बहुत अच्छा बहाना समझ, उसने यह प्रस्ताव तो स्वीकार कर लिया कि पुणे जागीर मुगल साम्राज्य में सम्मिलित हो, परन्तु बीजापुर राज्य को पत्र तो शहंशाह ही लिख सकते थे। अतः मुराद ने एक पत्र शहंशाह की सेवा में लिख दिया और उसमें बीजापुर को पत्र लिखने के लिए कह दिया। पत्र को उसने अपने आदमी के हाथ भेजा, साथ ही विश्वनाथ को भी भेज दिया।

इस समय दरबार अपने हरम के साथ दिल्ली गया हुआ था। विश्वनाथ वहाँ पहुँच वजीरे-आला के सामने पेश हुआ और उसने सब घटना बता दी। यह प्रकट किया गया कि शाहजी के लड़के ने कई कारणों से बीजापुर से विद्रोह कर दिया है और उसके पिता को वहाँ कैद कर लिया गया है। शिवाजी और उसके पिता दोनों यहाँ हाजिर होकर इताअत कबूल करना चाहते हैं।"

विश्वनाथ ने वज़ीरे-आला को यह भी समझाया कि शिवाजी ने ऐसे दुर्गों पर अधिकार जमाया हुआ है, जिनसे बीजापुर जाने का मार्ग मुगलों के लिए खुल जाएगा।

यद्यपि यह प्रलोभन बहुत प्रबल था, इस पर भी निर्णय लेने में देरी की जा रही थी। शहंशाह सुख-आराम में इतना पड़ गया था कि वह एक सुदृढ़ राज्य पर आक्रमण करने से डरता था। कई दिन के सोच-विचार के उपरान्त बीजापुर को एक पत्र लिखने का निर्णय हुआ।

विश्वनाथ ने वज़ीरे-आला से अपने पिता की बात पूछ ली। उसका प्रश्न था, "हजूर! दौलताबाद के समीप एक गाँव का एक ज्योतिषी यहाँ आया हुआ है। मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

"क्या नाम है?"

"पण्डित त्रिभुवन कीर्ति।"

वज़ीरे-आला समझ गया, परन्तु पण्डितजी की लड़की के शहंशाह से सम्बन्ध की बात विचार कर बोला, "मैं तहकीकात करूँगा।"

उसने विश्वनाथ की बात शहंशाह से कही तो शहंशाह ने विश्वनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को दरबार-ए-खास में हाजिर होने का हुक्म दे दिया ।

विश्वनाथ को वहाँ उपस्थित किया गया । उसने अपने पिता की बात पूछ ली । "तुम्हारा उनसे क्या ताल्लुक है ?" शहंशाह ने पूछा ।

"वे मेरे पिता हैं ।"

"और तुम मुगल साम्राज्य में रहते हुए बीजापुर के एक जागीरदार की नौकरी के लिये क्यों चले गये ?"

"वह स्थान अपने गाँव के समीप था । शिवाजी एक बहुत ही होन्-हार युवक है और जहाँपनाह ! मुगल शहंशाह की रियाया होने से ही हम मुगल शहंशाह की सल्तनत को बड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं ।"

"तुम्हारे पिता यहाँ पाँच हजारी के रुत्बे पर तैनात हैं । वे शाही नजूमची हैं । तुमको उनसे मिलने की इजाज़त है ।"

विश्वनाथ को, अपने पिता की बात सुनकर प्रसन्नता तो हुई, साथ ही वज़ीर-ए-आला के यह सब कुछ न बताने पर विस्मय भी हुआ । परन्तु जब वह अपने माता-पिता से मिला, तो अपनी बहिन की पूर्ण अवस्था सुन सब समझ गया ।

विश्वनाथ ने बहिन से मिलने की इच्छा प्रकट की तो माँ ने कह दिया—

"बिना लड़की के यत्न किये तुम नहीं मिल सकते । आजकल वह महल में बहुत बदनाम हो रही है । शहंशाह की बेगम होते हुए भी यह कहा जा रहा है कि उसके गर्भ शहज़ादे का है । आजकल उसे शहंशाह ने अपने हरम से निकाल दिया है और वह शहज़ादे के हरम में रहती है ।"

"और माँ ! नीला क्या कहती है ?"

"वह तो कहती है कि वह शहंशाह की वफादार बीवी है । उसने कोई बुरी बात नहीं की । शहज़ादा मेहरबान हो उस पर दया के भाव से ही अपने कक्ष में रख रहे हैं ।"

"तो वह यहाँ से भगाई नहीं जा सकती क्या ?"

"यह सम्भव नहीं ।"

"मुझे उससे मिलने दो । हमारे लिये कुछ भी असम्भव नहीं है ।"

माँ ने दोनों में भेंट कराने के यत्न करने की बात की परन्तु माँ-पुत्र की बात होने के आधी घड़ी में ही समाचार शहंशाह के पास पहुँच गया और हुक्म हो गया कि महताब की माँ महताब से नहीं मिल सकती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विश्वनाथ को किसी से तो नहीं मिलने दिया, मगर शाहजी की अर्जी मंज़ूर हुई और एक बहुत सख्त चिट्ठी बीजापुर दरबार को लिख दी गई कि पुणे के जागीरदार शाहजी मुगल राज्य की रियाया हैं। उनको तुरन्त छोड़ दिया जाये और उन्हें दिल्ली आने की मंजूरी दे दी जाये। यदि चिट्ठी मिलते ही ऐसा न किया गया तो मुगल सेना बीजापुर में घुस आएगी और जबरदस्ती शाहजी को छुड़ाकर ले जाएगी। इस हालत में बीजापुर को इस फौजी मुहिम का सब खर्च देना पड़ेगा।"

चिट्ठी एक शाही सालार के हाथ बीजापुर भेजी गई। पहले तो यह विचार था कि विश्वनाथ बंधक के रूप में दिल्ली में ही रख लिया जाये, परन्तु उसके इरादे का कि वह अपनी बहिन को भगा ले जाने का षड्यन्त्र करना चाहता है, जब पता चला तो उसे बन्दी बना बुड़हानपुर भेज दिया गया। यह कहा गया कि इसे वहाँ तब तक रखा जाये, जब तक शाहजी दिल्ली आकर मुनासिब नज़र-न्याज़ हासिल न कर दें।

: १० :

मुराद एक शौर्यवान सरल चित्त व्यक्ति था। जब उसके सामने विश्वनाथ को शाही हुक्म के साथ उपस्थित किया गया तो उसने विश्वनाथ को कह दिया, "यदि तुम अपने धर्म की सौगन्ध खाकर कहो कि बुड़हानपुर से भागोगे नहीं तो मैं तुमको जेलखाने में बन्द नहीं करूँगा।"

"पर हुजूर! मैंने कोई गुनाह नहीं किया। इस पर भी यह हुक्म किसलिए सादर किया गया है?"

"यह इसलिए है कि शाहजी बीजापुर की कैद से निकलते ही कहीं और दूर-दक्खन में न चले जाएँ। उन्हें आगरा दरबार में हाज़िर होना ही चाहिए।"

"तो मुझे एक पत्र पुणे लिखने की स्वीकृति दी जाये, जिससे मैं जागीरदार को छूटते ही यहाँ आने का आग्रह कर सकूँ।"

स्वीकृति मिली तो विश्वनाथ ने अपने बुड़हानपुर में ही रह जाने की बात लिख दी और यह भी लिख दिया कि उम्मीद है कि शाहजी छूट जाएँगे और उनको आगरा हाजिर होना चाहिए।"

इस पत्र का उचित प्रभाव हुआ। कुछ लोग गुप्त रूप में बीजापुर भेजे गये और शाहजी के छूटते ही उनको पूर्ण परिस्थिति से परिचित करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri करने के और उनको तुरन्त नज़र-न्याज़ लेकर आगरा पहुँचने का आग्रह करने के लिए कह दिया गया।

विश्वनाथ बुड़हानपुर में ही, परन्तु स्वतन्त्र रूप में घूमने लगा।

एक दिन विश्वनाथ बुड़हानपुर के सदर बाजार में निरुद्देश्य घूम रहा था कि एक औरत जो बुर्का में सामने आ रही थी, खड़ी हो उसको जाते हुए देखने लगी। विश्वनाथ ने उस औरत को चलते-चलते खड़े होते देखा। इस पर भी वह वहाँ रुका नहीं। वह बुर्केवालियों से बहुत सतर्क था। मुगल-साम्राज्य में कई प्रकार की साज़िशें और चालाकियाँ होती सुन चुका था। मुसलमान औरतों में चरित्र की हीनता की कहानियाँ भी उसने सुनी थीं। इस कारण वह उस औरत का विचार किये बिना अपने मार्ग पर चलता गया। कुछ ही दूर जाने पर उसे ऐसा अनुभव हुआ कि कोई उसके पीछे-पीछे आ रहा है। वह मार्ग के एक तट पर खड़ा हो गया। उसने अपनी पीठ दीवार की तरफ कर ली और हाथ तलवार के मुट्ठे पर रख लिया। वही औरत उसके पीछे-पीछे आती हुई उसके सामने खड़ी हो गई। विश्वनाथ ने उसकी तरफ प्रश्नभरी दृष्टि में देखा तो वह बुर्के में से बोली, "मैं लक्ष्मी हूँ। जानते हैं मुझे?"

विश्वनाथ को अपनी नयी विवाहिता का स्मरण हो आया। वह समझ नहीं सका कि वह यहाँ किस प्रकार और क्यों आ गई है। इस पर उसने पूछ लिया, "कौन लक्ष्मी?"

"जाँव की। आपकी विवाहिता।"

"और यहाँ क्या कर रही हो?" विश्वनाथ को उसके अपहरण की बात स्मरण हो आई।

बुर्के में से औरत ने उत्तर दिया, "यहाँ खड़े रहने से तो आफत आ जाएगी। कहीं एकान्त में चलिये। मैं वहाँ ही अपनी दुर्दशा की कहानी बता सकती हूँ।"

विश्वनाथ ने विचार किया और एक क्षण में ही कह दिया, "तो ठीक है। मेरे पीछे-पीछे चली आओ। मैं एकान्त स्थान की ओर ही जा रहा हूँ।"

विश्वनाथ नदी के तट की ओर घूम गया। वह बुर्का उसका पीछा करता रहा। दूर नदी तट पर जंगल में निर्जन स्थान देख विश्वनाथ खड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो गया। उस औरत ने अपना बुर्का उठाया तो उसमें से एक सुन्दर स्त्री का मुख दिखाई दिया। विश्वनाथ ने अपनी पत्नी को विवाह के उपरान्त केवल एक बार ही देखा था परन्तु उसका चेहरा उसको स्मरण नहीं था। उसके विवाह को दस वर्ष होने जा रहे थे, इस कारण वह उसे पहिचान नहीं सका। तब वह बालिका मात्र थी और अब एक विकसित फूल की भाँति युवती थी। विश्वनाथ ने मान लिया, "मैं तुमको पहचान नहीं सका।"

"पर मैं तो आपको झरोखे पर बैठ नित्य कुश्ती करने के लिए अखाड़े जाते देखा करती थी। कुछ भी हो, मैं आपकी विवाहिता हूँ। मुझे इस नरककुण्ड से बाहर निकालिए।"

"तुम कहाँ हो ? और अब कहाँ जाना चाहती हो ?"

"गाँव में कुछ सैनिक आए थे। वे आपके पिता को पकड़कर ले जाना चाहते थे। गाँव वालों ने विरोध किया। इस पर झगड़ा हो गया। सैनिकों ने गाँव लूट लिया। सैनिकों ने कई स्त्रियों का अपहरण कर लिया और गाँव को आग लगा दी। अपहरण की गई औरतों में एक मैं भी थी। मुझसे बलात्कार किया गया। यहाँ एक सालार मुझे अपने घर में रखे हुए है।"

"मगर मैं तो यहाँ से अभी जा नहीं सकता। शाही हुक्म से मैं बुड़हानतुर से बाहर नहीं जा सकता। इस पर भी आशा करता हूँ कि शीघ्र ही यहाँ से छूट सकूँगा। तब तक तुमको कहाँ रखूँगा ?"

"आप अब कहाँ रहते हैं ?"

"सरकारी महल में। उसके एक बाहर के कक्ष में। वहाँ और लोग भी मेरे साथ हैं।"

"तो फिर ?"

"तुम कल मुझे यहाँ ही मिलना। इसी समय। मैं यत्न करूँगा कि तुमको यहाँ से निकाल सकूँ।"

विश्वनाथ की बुद्धि सजग और सक्रिय हो उठी थी। वह वहाँ के किसी हिन्दू मुहल्ले में मकान देखने चल पड़ा। बहुत खोज करनी पड़ी। भाड़ा पेशगी जमा कराना पड़ा। उसने मकान लेकर उसमें रहने योग्य सामान लगवाया और अगले दिन निश्चित समय निश्चित स्थान पर जा पहुँचा। लक्ष्मी आयी, परन्तु उसके साथ एक पठान सरदार भी था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ समझ गया कि द्वन्द्व युद्ध होगा। तलवार उसकी कमर के साथ बँधी थी। अनायास ही उसका हाथ तलवार के मुट्ठे पर चला गया। दूसरा आदमी भी तलवार लिए था। परन्तु उसने मुस्कराते हुए कहा, "मैं लड़ने के लिए नहीं आया।"

"तब ठीक है। मगर कैसे आए हैं ?"

लक्ष्मी ने बुर्का उठा लिया और उसने ही बात की। उसने कहा, "ये हमारे पड़ोसी हैं। इनकी बीवी मेरी सहेली बनी हुई है और ये मेरी सहायता के लिए तैयार हो गए हैं।"

"क्या सहायता कर सकते हैं ?"

"यहाँ के सूबेदार से इनका मेलजोल है। ये कह रहे थे कि उससे कह-कर मुझे आपको वापस दिलवा देंगे।"

विश्वनाथ को यह बात पसन्द नहीं थी। वह सूबेदार से इस विषय में न तो किसी प्रकार की सहायता लेना चाहता था न ही सहायता की उम्मीद रखता था। यह विचार करता था कि शिवाजी के विषय में कई प्रकार की बातें फैल रही होंगी और वह उनका एक उच्च पदाधिकारी माना जाता है। अत: ज्यों ही इस औरत की बात और इसका इतिहास सूबेदार को पता चला तो एक मुसलमान औरत को हिन्दू बनाने की बात खड़ी हो जाएगी। और तब सूबेदार उसकी हिमायत तो करेगा नहीं, वरन् उस पर कठोर प्रतिबन्ध लगा देगा।

विश्वनाथ ने पूछा, "आपका परिचय क्या है ?"

"मेरा नाम यूसुफ अली खाँ है। मैं शहज़ादे का हमप्याला हूँ। वे मेरी बात मानते हैं और मैं यह औरत आपको दिलवा दूंगा।"

"देखिये खाँ साहब ! मैं इसको आपकी एक बहुत बड़ी मेहरबानी मानता हूँ, मगर मैंने आज इस औरत को ले जाने का इन्तज़ाम कर लिया है। मैं इसे दो घण्टे के अन्दर सरहद की ओर यहाँ से दस मील के अन्तर पर ले जा रहा हूँ। रातों-रात ही हम सरहद पार कर जाएँगे। इसलिए मैं आपका बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ और आपसे अब चलने की इजाज़त चाहता हूँ।"

लक्ष्मी कुछ कहना चाहती थी, परन्तु सारी बात को न समझते हुए चुप रही। इस पर यूसुफ खाँ ने पूछ लिया, "सवारी का इन्तज़ाम है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"खाँ साहब ! सब कुछ है और मेरे यहाँ कल तक लौट आने का भी इन्तज़ाम है। मैं आज की छुट्टी दरबार से ले चुका हूँ।"

यूसुफ अली खाँ ने इस मुआमले में और ज्यादा दखल देना उचित नहीं समझा। उसने विश्वनाथ से हाथ मिलाया और लौट गया। विश्वनाथ लक्ष्मी को ले पठान से उलटी तरफ चल पड़ा। कुछ ही दूर जाकर लक्ष्मी ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "आप तो कह रहे थे कि आपको यहाँ से बाहर जाने का हुक्म नहीं ?"

"यह ठीक है और मैं बुड़हानपुर से बाहर जा भी नहीं रहा। मगर मैं अपनी योजना में किसी दूसरे को जिस पर मुझे एतबार न हो, सम्मिलित करना नहीं चाहता। देखो लक्ष्मी ! बात दो के बाहर गयी तो फिर छुपी नहीं रह सकती। तुमने इस आदमी को अपने मुसलमान आदमी को छोड़ने की बात कह कर ठीक नहीं किया। इसी कारण मुझको इसके सामने झूठ बोलना पड़ा कि मैं रात-रात में सरहद को पार कर जाऊँगा।"

"मगर यह कहता था कि इसकी सूबेदार साहब से गहरी छनती है।"

"यह ठीक हो सकता है। मगर जब तुम्हारा आदमी एक मुसलमान औरत के हिन्दू होने की बात कहता तो सूबेदार क्या मुगल शहंशाह भी हम को बचा न सकता। और मुझको जिन्दा जला देने की बात हो सकती थी।"

लक्ष्मी अवाक् सुनती रही। वे दोनों घने जंगल की ओर जा रहे थे। वहाँ एक वृक्ष पर विश्वनाथ एक औरत के पहनने योग्य हिन्दुआना पहिरावा रख गया था। विश्वनाथ ने गठरी उतार कर कहा, "इनको पहिन लो। यह बुर्का वगैरा यहीं नदी में बहा देंगे।"

लक्ष्मी को समझ आने लगा था कि एक मुसलमान घर वाले को छोड़ हिन्दू के घर जाना अति भय की बात है। उसने काँपते हाँथों से कपड़े बदलने आरम्भ कर दिये।

विश्वनाथ उसे घूम-घुमाव के मार्ग से उस मकान पर ले गया जो उसने भाड़े पर ले रखा था। वहाँ उसको ठहरा उसके खाने-पीने का प्रबन्ध कर और रात को वहाँ आने की बात कह वहाँ से चला आया।

इस घटना के पन्द्रह दिन पीछे तक विश्वनाथ को वहाँ रहना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी को विश्वनाथ ने समझा दिया था कि वह इस मुहल्ले की किसी भी औरत से अपनी असल कहानी नहीं बता और किसी पड़ौसी औरत वगैरा से मिलने का अवसर बने तो यह कह दे कि वह आगरा से आयी है और उनका घर वाला शाही काम से सूबेदार के दरबार में आया हुआ है। शीघ्र ही वह और उसका घर वाला यहाँ से वापस आगरा चले जाने वाले हैं।

साथ ही विश्वनाथ ने यह कहा कि उसे घर से बाहर नहीं जाना चाहिए। कहीं उसके मुसलमान आदमी ने उसे बाजार में घूमते पहचान लिया तो आफत आ जायेगी।

लक्ष्मी सहमी हुई घर का द्वार भीतर से बन्द कर पड़ी रही। पन्द्रह दिनों में न तो लक्ष्मी का साहस हुआ कि वह विश्वनाथ को उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करने के लिए कहे, न विश्वनाथ ने इस विषय में अपनी इच्छा प्रकट की। दोनों रात को एक मकान में रहते हुए भी इस विषय पर बात नहीं कर सके।

पन्द्रह दिन में शाहजी अपने बीजापुर वाले परिवार के साथ वहाँ आ पहुँचे। जब सूबेदार के सामने उपस्थित हुए तो शाही सलाम कर बोले, "मैं आगरा जाने के लिए यहाँ आया हूँ। मुझको यह बताया गया है कि मेरे लड़के का मुलाज़िम यहाँ दरबार में मौजूद है और वह बंधक के रूप में यहाँ रखा गया है। मैं चाहता हूँ कि उसे अब छोड़ दिया जाए।"

विश्वनाथ को बुलाकर उसे शाही हुक्म सुना दिया गया, "विश्वनाथ को तब तक बुड़ाहानपुर में रखा जाए जब तक पूना के जागीरदार वहाँ आ नहीं जाते। जागीरदार को आगरा भेज कर उसे छोड़ दिया जाये।"

इसका अभिप्राय था कि जागीरदार सूबेदार की देख-रेख में आगरा भेजा जाएगा। विश्वनाथ चाहता तो था कि किसी न किसी प्रकार बहिन की खबर लेने और उसे छुड़ाने के लिए आगरा जाए, परन्तु यहाँ लक्ष्मी को भी ले जाने का प्रश्न था। दोनों औरतों को बचाने की इकट्ठी योजना वह सम्भव नहीं समझता था। इस समय उसको पुनः स्वामीजी का गुरु-मन्त्र याद आ गया। जो अपना है उसकी यत्न से रक्षा करो और उसमें वृद्धि करने का यत्न करो। इसने उसके मन को स्थिर और निश्चित कर दिशा प्रदान की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने सूबेदार साहब को सलाम की और अपने पर मेहरबानी करन के लिए शुक्रिया अदा कर कहा, "राजा साहब आपकी हिफ़ाज़त में हैं। अब मेरी इनको ज़रूरत नहीं। मैं पुणे वापस लौट जाना चाहता हूँ।"

वह शाहजी को पृथक् में भी मिला और उनसे यहाँ से बच निकलने की कथा सुनी। शाहजी ने बताया, "मैंने बार-बार सुल्तान से कहा कि मेरा शिवा की कारगुजारी से कुछ भी सम्बन्ध नहीं, मगर मेरी बात पर ऐतबार नहीं किया गया और मुझे कैद कर दिया गया। मुझे शिवा को पत्र लिखने पर मजबूर किया गया। तीन महीने तक मुझे बन्दी रखा गया। पीछे मुझे एक जेल की कोठरी में बन्द कर, उसके दरवाजों को ईंटों से चिनवाना आरम्भ कर दिया। हर रोज़ ईंटों की एक तह जोड़ दी जाती थी। मुझे आशा नहीं थी कि मैं बच सकूँगा। ख्याल था कि महीने-बीस दिन में दरवाज़ा बिल्कुल बन्द हो जाएगा और फिर मैं बिना पानी खुराक के उस कोठरी में तड़प-तड़प कर मर जाऊँगा। ईंटें कंधे की ऊँचाई तक आ गयी थीं कि एक दिन नाज़िर आया और उसने ईंटें उखड़वा दीं। उसने मुझे आज़ाद कर दिया और कहा कि मुझे आगरा जाने की इजाज़त है। मुझे छोड़ दिया गया।

"मैं अभी जेलखाने से निकला ही था कि पुणे के कुछ लोग मुझको मिले। उन्होंने मुगल शहंशाह से अर्जी की बात कही और मुझको बताया कि मुझे फौरन बुड़हानपुर पहुँच जाना चाहिए। मुझको मौत के मुख से निकालने वाला मेरे एवज़ में वहाँ बन्दी बनाकर रखा हुआ है।"

"अब आप जागीर का क्या करेंगे?" विश्वनाथ ने जागीर मुगल सल्तनत से सम्बद्ध करने के विषय में पूछ लिया।

शाहजी का उत्तर था, "दिल नहीं चाहता था कि बीजापुर छोड़ूं, मगर मजबूरी है। यह शिवा की नालायकी की वजह से है।"

"वह तो आप जानें और आपके राजकुमार। मैं तो आप दोनों का सेवक हूँ। अब स्थिति यह है कि आगरा जाइए और वहाँ एक अच्छा-सा नज़र शहंशाह, वजीरे-आला और राजा जैसिंह को पेश कीजिए और उनको खुश कर वहाँ ही रहने का प्रबन्ध कर लीजिए।"

"तुम हमारे साथ आगरा नहीं चलोगे?"

"मुझे पुणे में काम है। अब सुल्तान का पूरा क्रोध आपके राजकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के खिलाफ निकलेगा। मुझको वहाँ उनकी सहायता के लिए जाना चाहिए।"

"मगर यह शिवा ने बग़ावत का रास्ता क्यों पकड़ा है ?"

"महाराज ! हम इसको बग़ावत नहीं समझते । हम इसे बाग़ी और आततताइयों को सन्मार्ग दिखाना समझते हैं।"

"कौन बाग़ी और आततायी हैं ?"

"ये मुसलमान। अपने मुल्क के कुंजड़े कबाड़ी यहाँ इस मुल्क में आकर राजा और सुल्तान बन बैठे हैं। हमारा धन-दौलत लूट रहे हैं। ये लुटेरे आततायी हैं और यहाँ की प्रजा से विद्रोह कर रहे हैं। हम तो इनको अपने स्थान पर ही बैठा रहे हैं।"

"परन्तु बीजापुर से आगरा के अधीन होने को तुम जालिमों से छुटकारा पाना कहते हो ? हम तो प्रजा हैं। हमें तो किसी-न-किसी के अधीन रहना ही है। फिर मालिक बीजापुर हुआ क्या और आगरा हुआ तो क्या ? काला मालिक हुआ क्या और गोरा मालिक हुआ तो क्या ? हम तो सेवक के सेवक रहेंगे।"

"नहीं महाराज ! यह बात शिवाजी के लिए नहीं कही जा सकती। वे देश को दोनों राज्यों से मुक्त करने की कोशिश कर रहे हैं।"

"यह होगा नहीं।"

"आप आगरा चले जाइए। वहाँ दरबार के कहने के अनुसार व्यवहार रखिए और हम देश को स्वतन्त्र करने में लग जाएँगे।"

शाहजी को यह सब बच्चों की बात समझ आयी। इस पर उसने पूछ लिय., "युवक ! क्या आयु है तुम्हारी ?"

"इस समय बीस से ऊपर है।"

"देखो, मैं इस वक्त पचास साल का हो रहा हूँ। मैं तुम और शिवा से भी अधिक बुद्धि और अनुभव रखता हूँ। मेरा कहा मानो। किसी एक राज्य से बनाकर रखो। नहीं तो दोनों के बीच में पिस जाओगे।"

विश्वनाथ ने इस दास प्रवृत्ति के जीव से कुछ अधिक विवाद में लाभ नहीं समझा। उसने बात समाप्त करने के लिए कह दिया, "महाराज ! राजकुमार को आपका संदेश दे दूँगा।"

"हाँ। तुम मुझको एक समझदार युवक प्रतीत होते हो। इस कारण कहता हूँ कि यदि शिवा न माने और वह अपनी माँ की बात करता जाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो तुम वहाँ का काम छोड़कर मेरे पास चले आना। मैं तुमको यथाशक्ति उन्नति के मार्ग पर आरूढ़ कर दूंगा।"

लक्ष्मी के अपने पठान अपहरण करने वाले के घर से लापता हो जाने पर सेना में बहुत हो-हल्ला मचा, परन्तु यह समझा गया कि वह उसको छोड़ किसी अन्य युवक के पास भाग गयी है। अतः कुछ ही दिनों में उसकी खोज शान्त हो गयी।

जिस दिन विश्वनाथ सूबेदार से छुट्टी ले पुणे को जाने लगा, उसने लक्ष्मी के लिए एक रथ भाड़े पर कर लिया और उस पर उसे बैठा चल पड़ा।

: ११ :

महताब को अपने भाई से न मिल सकने का बहुत दुःख हुआ। उसने दुःख का वर्णन दारा से किया तो दारा ने इसमें अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। महताब ने जहानआरा से कहा तो उसने इसमें कारण बता दिया, "देखो अम्मी जान! तुमने होने वाली औलाद से अपने खाविन्द को छोटा समझा है। इस वक्त तुम्हारी इज्ज़त सारे महल में गिर रही है। शहंशाह तुमसे बहुत मुहब्बत करते थे मगर वे अपनी मुहब्बत पर अपनी औलाद को कुर्बान कर सकते थे। तुमने खाविन्द की मुहब्बत को ठुकरा कर एक अनजान जिस्म के साथ अपना ताल्लुक ज्यादा समझा। यह तुम्हारे दिमाग की खराबी की वजह से ही समझा जा सकता है। तुमने एक बात और की है कि अपनी इज्ज़त को भी औलाद के लिए कुर्बान कर दिया है। महल के सब लोग यह कह रहे हैं कि तुमने शहंशाह पर दारा को तरजीह देकर एक बूढ़े की जगह एक जवान को पसन्द किया है। इन सब बातों की वजह से महल में तुम्हारी अब वह साख नहीं रही जो पहले थी। इस वास्ते तुम्हारी महल में बदख्वाही हो रही है।"

"और शहज़ादी साहिबा भी यही समझती हैं?"

"मैं महल वालों से अलैहदा नहीं रह सकती।"

महताब इस बदलती परिस्थिति में अपने व्यवहार का चिन्तन करने लगी। उसने यह समझा कि उसे इस अग्नि-परीक्षा को पार करना चाहिए; जो कुछ उसके पास है, उसकी रक्षा करनी चाहिए, उसमें वृद्धि करनी चाहिए। इस शिक्षा के अनुसार उसके चिन्तन का परिणाम यह हुआ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अपना बच्चा और भी प्रिय हो गया । उसकी रक्षा करना उसे न केवल धर्म प्रतीत हुआ वरन् उसका सांसारिक ज्ञान भी उसे बच्चे की रक्षा की प्रेरणा देने लगा ।

उसे माँ के आने पर उसके अपमान किये जाने की सम्भावना प्रतीत हुई । अतः उसनेअपने खुसरे नूर के हाथ अपनेमाता-पिता को कहला भेजा कि वह अब उनसे मिलने नहीं आ सकेगी, न ही माँ को उससे मिलने के लिए आने का यत्न करना चाहिए । इससे माँ का अपमान हो जाने का भय है ।

इस पर पण्डित त्रिभुवन कीर्ति ने शहंशाह के समक्ष दरबार-ए-खास में हाजिर हो इल्तजाह करने की स्वीकृति माँग ली । पंडित त्रिभुवन कीर्ति की इस प्रार्थना पर वजीरे आला उससे मिलने चला आया । उसने पण्डितजी के बैठकघर में बैठकर पूछ लिया कि वे क्या अर्जी करना चाहते हैं ?

पण्डितजी का कहना था, "मेरी पत्नी को अपनी लड़की से मिलने की स्वीकृति मिलनी चाहिए ।"

इस समय तक विश्वनाथ आगरा से बुड़हानपुर के लिये चल चुका था । इस कारण वजीरे-आला का विचार था कि अब बेगम से मिलने की इजाज़त मिल सकेगी । उसने कह दिया, "आपको इसके लिए दरबार में हाज़िर होने की ज़रूरत नहीं । मैं ही आपका यह काम कर दूंगा ।"

वजीर-ए-आला के इस आश्वासन पर भी स्वीकृति नहीं मिली । इसके विपरीत महताब का उसकी माँ को यह सन्देश मिल गया कि उसे मिलने का यत्न नहीं करना चाहिए । इसमें उसका अपमान हो जाने का डर है ।

इससे तो पण्डित और उसकी पत्नी ने आगरा छोड़ देने का विचार बना लिया । वे अपना सब धन जो एक सर्राफ के पास जमा था की हुंडी लेने चल पड़े । हुंडी बुड़हानपुर के किसी साहूकार के नाम माँगी गई थी । इसकी सूचना शहंशाह को मिली तो पण्डित को ग्वालियर के किले में कैद कर रखने का हुक्म हो गया ।

एक दिन बहुत प्रातःकाल सरकारी सैनिक आए और पंडितजी तथा उनकी धर्मपत्नी को शाही फरमान दिखा कैद कर ग्वालियर को चल पड़े ।

पण्डित और पण्डिताइन दोनों घोड़ों पर सवार थे । उनके हाथ पीठ के पीछे कर रस्सों से बंधे हुए थे और उनको चारों ओर से बीस घुड़-सवार सिपाहियों ने घेर रखा था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पण्डितजी के जीवन की तीसरी यात्रा था। पहिली यात्रा में वे अपने गाँव जाँव से पकड़कर बुड़हानपुर लाए गए थे। उस यात्रा में उनको, उनकी पत्नी को और लड़की को तीनों को घोड़ों के साथ बाँधा गया था। यह यात्रा अत्यन्त कष्टदायक थी। दूसरी यात्रा बुड़हानपुर से आगरा तक थी। इसमें यात्रा तो अति सुखकारक थी, परन्तु थे वे बन्दी ही। उनको सिपाहियों से घिरे हुए यात्रा करनी पड़ी थी। यह तीसरी यात्रा आगरा से ग्वालियर के दुर्ग तक की थी। इसमें सिवाय हाथों को पीठ के पीछे बांधकर रखने के अन्य कोई असुविधा नहीं थी। पड़ाव पर उनके हाथ खोल, घोड़े से उतार, खेमे में रहने की तथा भोजन इत्यादि बनाकर खाने की सुविधा थी। इस पर भी वे बन्दी ही थे।

पंडित त्रिभुवन कीर्ति अपने जाँव गाँव से चलने से लेकर उस समय तक की अवस्था का अनुशीलन करते थे। वह समझ रहे थे कि आगरा में प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधा में रहते हुए भी कैदी ही थे। जिस क्षण उन्होंने आगरा से स्वेच्छा से जाने का निश्चय किया, उसी क्षण उन्हें स्वतन्त्र हो जाने से रोकने के लिए इस प्रकार बन्दी बना लिया गया है।

रात खेमे में लेटे हुए पण्डिताइन और पण्डित अपनी अवस्था पर कभी विचार करते तो उनको समझ आता कि कदाचित् उनकी लड़की की हत्या कर दी गई है और इस बात का हल्ला-गुल्ला होने से रोकने के लिए ही उनको कैद किया गया है।

पंडितजी का कहना था, यह अपने भाग्य की ही बात है कि जहाँ ज्ञान मनुष्यों को मोक्ष दिलाने का साधन माना जाता है, वहाँ उनका ज्ञान उनके बंधन में कारण हो रहा है। वह समझ रहे थे कि यह ज्योतिष का ज्ञान ही उनकी सारी मुसीबत का कारण हुआ है।

पाँच दिन की यात्रा के बाद उनको ग्वालियर के दुर्गनायक के हवाले कर दिया गया। दुर्गनायक आसफ अली खाँ, तीस वर्ष से वहाँ पर नायक नियुक्त था। उसको याद था कि शाहजहाँ के बाप के ज़माने में भी एक शाही कैदी वहाँ लाकर उसकी देख-रेख में रखा गया था। वह पंजाब के सिख समुदाय के गुरु थे। नाम था गुरु हरगोविन्द। वह किले में बारह वर्ष तक कैद रहे थे। आसफ अली अपनी जवानी के जमाने में बहुत जालिम समझा जाता था, परन्तु गुरु हरगोविन्द के तेज और तप के सामने उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वभाव में परिवर्तन हुआ और एक क्रूर आततायी के स्थान वह इनके प्रति हमदर्दी से भर गया था। गुरु हरगोविन्द इस किले में संवत् १६७९ से संवत् १६९१ तक रहे थे और इन बारह साल में आसफ खाँ में विपुल परिवर्तन उत्पन्न हो गया था। वह अब पढ़ता तो नमाज था मगर पलथी मार फर्श पर बैठकर। वह नित्य प्रातःकाल उठकर स्नान कर नमाज पर बैठ जाता था। पीछे वह गुरुजी के बताए तरीके पर समाधि लगाने का यत्न करता था। इससे उसके मन में प्रकाश हो रहा था और वह यत्न से दरबार से दूर इस छोटे से काम पर बैठा हुआ था।

जब पंडित त्रिभुवन कीर्ति और उनकी पत्नी को दुर्गनायक के सम्मुख उपस्थित किया गया तो उसने पूछ लिया, "यह क्या है?"

इस पर वज़ीरे-आला का लिखा हुआ हुक्मनामा किलेदार के हाथ में दे दिया गया। यह हुक्म पंडितजी और उनकी पत्नी को ग्वालियर किले में रखने और उनको भाग जाने से रोकने का था।

आसफ अली खाँ ने कहा, "मगर इस हुक्म में यह कहाँ लिखा है कि इनके हाथ पीठ के पीछे बाँधे जाएँ। इसमें तो यह हिदायत है कि इनको भाग जाने नहीं देना।"

"हुजूर! यह हमने एहतियात के तौर पर किया है।"

"अब तुम्हारे एहतियात का वक्त खत्म हुआ। इनको खोल दो।" आसफ खाँ विचार कर रहा था कि चौदह वर्ष के बाद फिर कोई वैसा ही आदमी लाया गया है, जैसे गुरु हरगोविन्द थे। उसने हाथ जोड़ पण्डितजी का अभिवादन किया और पूछ लिया, "आप कैसे फँस गये आगरा में?"

"दुर्भाग्य वहाँ ले गया था। अपनी इच्छा से तो हम गये नहीं।"

"खैर! अब आप यहाँ आ गये हैं। इन्शाअल्लाह आपको यहाँ रहते हुए किसी किस्म की तकलीफ नहीं होगी। आइए।"

इस समय आने वाले सिपाहियों ने पंडित और पण्डिताइन के हाथ खोल उनको घोड़े से नीचे उतार लिया था। वे दोनों किलेदार के पीछे-पीछे चल पड़े। आसफअली खाँ ने उनको उसी कमरे में ले जाकर खड़ा कर दिया, जिनमें गुरुजी महाराज को रखा गया था। कमरों में खिड़कियाँ थीं जो किले के बाहर का दृश्य उपस्थित करती थीं। कमरों में खुली हवा और धूप आती थी। दो कमरे थे और साफ-सथुरा रसोईघर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसफ अली ने पण्डितजी को वहाँ खड़ा कर कहा, "इस किले में इन कमरों से अच्छे कमरे नहीं हैं। यहाँ आज से चौदह साल पहले एक बहुत बड़ी हस्ती बारह साल तक कैदी की हैसियत में रही है। इस पर भी मैंने उनकी खिदमत में कभी किसी किस्म की कसर नहीं रहने दी। पहले उनको किले के तहखाने में रखा गया था। एक दिन मेरी नजर पड़ी कि किले के पिछवाड़े कई सौ आदमी इकट्‌ठे हो रहे हैं। मैं इसी खिड़की में खड़ा देख रहा था। इधर से न तो किले में से किसी के निकल भागने की गुंजाइश है, न ही किले पर हमला बोलने का रास्ता है। इसलिये मैं हैरानी में देखता रहा कि वे लोग क्या करते हैं। कुछ देर तक वे हाथ जोड़े किले की ओर मुँह किए खड़े रहे। फिर सबने हाथों से फूल किले की ओर फेंके औरलोटों मेंसे पानी इस किले की ओर उँड़ेला। मैं उनकीबात समझ नहीं सका। इसलिए मैंने दस सिपाही भेज उन लोगों के सरगने को पकड़ मँगाया। जब मैंने उससे पूछा कि वे वहाँ क्या करने आए हैं तो वह बोला, "हमारे गुरुजी इस किले में कैद हैं। हम उनकी पूजा करने आए हैं।"

"मैंने पूछा, 'पूजा से क्या होगा ? वे छूट जाएँगे क्या ?' वह बोला, 'नहीं हुजूर ! वे तो अपना कर्मफल भोग कर ही बाहर आ सकेंगे। यह तो हम अपनी श्रद्धा-भक्ति के फूल उनके चरणों में चढ़ा रहे थे। इससे हमारी आत्मा को शान्ति मिलती है। हम शाम होने से पहले यहाँ से चले जाएँगे।'

"इसके बाद पचास-साठ, सौ-सौ तक लोग रोजमर्रा आने लगे। मैंने गुरुजी से बात की तो वे बोले, 'मैं उनको रोज देखता हूँ, अगरचे वे मुझको नहीं देख सकते।'

"मैंने पूछ लिया, 'कैसे देख लेते हैं ? यहाँ तो कोई सुराख भी नहीं, जहाँ से वे दिखाई दे सकें ?'

"इस पर वे मुस्कराकर बोले, तो कल आ जाना, हम तुमको दिखा देंगे।'

"मैं हैरान देखता रह गया। अगले दिन सच ही उन्होंने मुझे लोगों के तहखाने के भीतर से दीदार कराये। जब मैं वहाँ पहुँचा तो वे बोले 'दरोगा साहब ! भक्तों के दर्शन करने आए हैं ?' मैंने कहा, 'वह तो मैं ऊपर से कर आया हूँ। मैं देखना चाहता हूँ कि आप उनको कहाँ से देखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं।'

'तो यह लो।' उन्होंने उँगली से दीवार की ओर इशारा किया और दीवार मेरी आँखों के सामने ऐसे पिघलती-सी मालूम हुई, जैसे मिश्री की डली पानी में घुल जाती है। मैंने देखा कि सामने दीवार नहीं है और दूर वही लोग हाथ जोड़े खड़े हैं, जिनको मैं ऊपर खिड़की से देख आया था।

"औरत-मर्द कई लोग थे। मेरे देखते-देखते उन्होंने फूल चढ़ाए और लोटों से पानी उँड़ेल दिया और वापस चल दिये। इसके बाद दीवार फिर दिखाई देने लगी। मैं पागल की तरह चकाचौंध हुआ गुरुजी को देखता रह गया। गुरुजी ने कहा, 'यह कोई करिश्मा नहीं। यह तो मेरी रूहानी ताकत है जो देख सकती है और दिखा सकती है।'

"उस दिन से मैं उनकी रूहानी ताकत का कायल हो गया। फिर उन्होंने वैसी ताकत हासिल करने का तरीका बताया। तब से मैं उनके बताए तरीके पर अमल करता हूँ। कुछ ही महीनों में मुझे ऐसा समझ आने लगा कि उनको इन ऊपर के कमरे में ला रखूँ जिससे उनके भक्त भी उनके दर्शन कर लें।

"मैंने अपनी जिम्मेदारी पर उनको यहाँ ला रखा। उसके बाद वे ग्यारह साल से ज्यादा अर्सा तक यहाँ रहे और लोग उनकी जियारत करने हर रोज आते थे। वे उनको इस खिड़की में खड़े हो दीदार बख्शते थे। उनकी रिहाई में मियाँमीर नाम के पीर की सिफारिश कारगर हुई। मौजूदा शहंशाह लाहौर गये थे और पीर साहब की दरगाह में ज़ियारत करने हाज़िर हुए। जब शहंशाह ने हाथ जोड़ पूछा कि वे उनके लिए क्या कर सकते हैं तो उन्होंने कह दिया, 'सिक्खों के गुरु को छोड़ दें।'

"शहंशाह ने वहाँ से ही हुक्म लिख दिया।

"मैं समझता हूँ कि आपको भी इसी जगह पर रखना चाहिये और आपको भी वैसा ही सुख और आराम पहुँचाना चाहिए।"

"परन्तु दारोगा साहब!" त्रिभुवन कीर्ति ने मुस्कराते हुए कह दिया, "मैं उतना बड़ा शख्स नहीं हूँ। मैं तो आपको वैसा चमत्कार नहीं दिखा सकता।"

"मैं भी कुछ समझता हूँ। मेरा तो यह कहना है कि मेरी रूह कहती है कि आप पर जुल्म हुआ है और आपको हर तरह से सुख और आराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचाना चाहिये ।"

इस प्रकार पंडित त्रिभुवन कीर्ति और चन्द्रमुखी को वहाँ रख दिया गया। दिन व्यतीत होने लगे ।

पंडितजी को किले में बंद हुए दो वर्ष व्यतीत हो चुके थे । एक दिन आसफअली खाँ उनसे मिलने आया । वह कभी-कभी ही मिलने आया करता था । इस पर भी किले के लोग पण्डितजी का बहुत आदर करते थे । एक ब्राह्मण रसोइया उनका खाना बनाने के लिये नियुक्त था । एक नौकर था जो उनके कमरों को साफ करता था और उनका चौका-बासन करता था । वैसे पण्डितजी को कमरों के बाहर किले में घूमने की स्वीकृति भी थी । केवल वे किले से बाहर नहीं जा सकते थे ।

इस बार किलेदार उनसे दो महीने बाद मिलने आया था । वह अपने साथ बहुत से फल-मिठाइयाँ लाया और उनसे कहने लगा, "हुक्म है कि आपके खाने-पहरने का बहुत ख्याल रखना चाहिये ।"

"किसका हुक्म आया है ?" पण्डितजी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया ।

"शहज़ादा-ए-अज़ीम दारा शिकोह साहब का । मैं अपने एक काम से आगरा गया था । हसब मामूल शाही खानदान के शहज़ादों के दरबार में हाज़िर होने गया । आजकल सिर्फ एक ही शहज़ादा वहाँ हैं । दूसरों को मुल्क के बाहर दूसरे हिस्सों में सल्तनत के काम से भेजा हुआ है ।

"शहज़ादा साहब ने मुझे अलग में ले जाकर समझाया कि आपका उनसे और शहंशाह से क्या ताल्लुक है और मुझे आपको हर किस्म का सुख-आराम पहुँचाने के लिये कहा । आप पर खर्च करने के लिये खास रकम मंजूर फरमाई गई है और मुझे हुक्म है कि आपके लिये फल और ताजी सब्जियाँ रोजमर्रा मँगवाई जाया करें ।"

चन्द्रमुखी समीप बैठी किलेदार की बातें सुन रही थी । उसने पूछ लिया—

"हमारी लड़की के बारे में भी कुछ बताया है ?"

"हाँ माताजी ! एक तो यह कि आपकी लड़की के एक लड़का हुआ था । लड़का जब दो महीने का हो गया तो शहंशाह का हुक्म सादर हुआ कि लड़के को अफीम देकर मार डाला जाये । इस पर लड़का एक दिन महल से गायब हो गया । जल्लाद कहता है कि उसे मार डाला गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर आपकी लड़की को यकीन है कि वह कहीं छिपाकर रखा गया है। वहाँ उसकी परवरिश हो रही है।"

"और शहज़ादा दारा क्या कहते हैं ?"

"उन्होंने अपनी राय नहीं बताई। उन्होंने इतना ही बताया था कि जल्लाद शहंशाह का हुक्म बजा लाया मालूम होता है। कम से कम उसे अपने इस काम का इनाम शहंशाह से मिला था।

"एक बात उन्होंने कही है कि महल के सब लोग महताब को उनकी बीवी तसव्वर करते हैं, मगर वह अपने को शाहंशाह की बेगम मानती है।"

"शाहज़ादा साहब ने और क्या कहा है ?"

"उन्होंने इस मजमून पर कुछ नहीं कहा। हाँ, एक बात कही थी। आप बहुत ही लायक ज्योतिषी हैं और उन्होंने आपसे अपनी जिन्दगी के कुछ साल के हालात मालूम कर उनको लिखने के लिये कहा है। उन्होंने अपनी जन्म-कुण्डली भेजी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: १ :

जहाँगीर का ज़माना पंजाब के सिक्खों के लिए बहुत ही कठिनाई का जमाना था; मगर गुरु अर्जुन देव से निर्मित हुआ संगठन उस सब जुल्म का बोझ सहता हुआ भी टूट नहीं सका। यह संगठन गुरु हरगोविन्द के बंदी बनाये जाने के उपरान्त ढीला हुआ और साथ ही गुप्त हो गया। यह समय था, जब मुसलमान और सरकारी सिपाही गुरुओं के शिष्यों को ढूंढ-ढूंढ कर उनको फाँसी चढ़ा देते थे या उनको जलावतन कर दिया जाता था।

गुरु अर्जुन देव के बलिदान के उपरान्त पंजाब में गुरुओं का नाम लेना पाप हो गया था। इस पर भी गुरु ग्रन्थ साहब की हस्तलिखित प्रतियाँ धीरे-धीरे घर-घर में पहुँचने लगी थीं। लोग इस तत्कालीन साहित्य की महान् पुस्तक को पढ़ते थे और उससे परमात्मा पर भरोसा करने का स्वभाव बना लेते थे। इस परमात्मा पर भरोसा करने के साथ फल अवश्य मिलने की बात जब मिल जाती थी तो बड़े-से-बड़ा त्याग और बलिदान करना भी सहज हो जाता था।

साहित्य जातियों का जीवन-स्रोत है। जिस जाति में इतिहास सत्य-दिशा का निर्देशक हो जाता है, वह जाति मरती नहीं। उसके मर कर जल जाने के उपरान्त राख से भी चिनगारियाँ निकलती हैं जो जंगलों को भी भस्म कर देने की सामर्थ्य रखती हैं।

मुसलमानी काल से कुछ ही पूर्व और मुसलमानी राज्य के यौवनकाल में हिन्दुओं में सत्-साहित्य का लोप हो जाने से ही हिन्दुओं का पतन हुआ था। हिन्दुओं का पूर्ण साहित्य संस्कृत भाषा में था। ब्राह्मणों की हठ-धर्मी के कारण संस्कृत लोक-भाषा नहीं रही थी। लोक-भाषा संस्कृत से बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर हो गई थी।

मुसलमानी राज्य-काल में लोकभाषा लगभग वह थी, जो आज हिन्दी के नाम से विख्यात है, परन्तु इसमें जो साहित्य निर्माण हुआ, वह दो दिशाओं में चल निकला। एक दिशा थी भक्ति-मिश्रित शृंगार रस और भक्ति-मिश्रित अद्वैतवाद की ओर तथा दूसरी थी केवल मात्र शृंगार रस की ओर। प्रथम श्रेणी के प्रवक्ता थे तुलसी, कबीर, मीर, सूर; और दूसरी श्रेणी के प्रवक्ता थे बिहारी, रसखान इत्यादि। इन दोनों में कर्म की महिमा गौण थी। जो कुछ कर्म की महिमा थी, वह भोग-विलास की ओर थी। परिणाम-स्वरूप हिन्दी-भाषी क्षेत्र भटकता रहा और अपने जातीय उत्थान के लिए कुछ विशेष प्रयत्न नहीं कर सका। अद्वैतवाद का सबसे बड़ा गढ़ था गंगा-यमुना के मध्य का क्षेत्र, गंगा-उत्तर का क्षेत्र और मध्य भारत का क्षेत्र। पंजाब में महाराष्ट्र में साहित्य ने मुख मोड़ा। उस दृष्टि से जिससे सूर और मीरा की रचनाएँ रची गयी थीं, पंजाब में नहीं रची जा सकीं। पंजाब में गुरुजी की साखी और गुरु ग्रन्थ साहब की रचना हुई और फिर अन्त में दशम ग्रन्थ रचा गया। यह सब-का-सब साहित्य पंजाब के हिन्दुओं में मान पा गया। वैसे तो रसखान और बिहारी के स्तर और भावों की रचनाएँ भी लिखी गयीं, परन्तु मुसलमानी रंग लिए हुए थीं। वारिसशाह की हीर, ससी पुनु और महीवाल इत्यादि रचनाओं की मान-प्रतिष्ठा वह नहीं हुई, जो गुरु ग्रन्थ साहब इत्यादि की थी।

गुरु ग्रन्थ साहब में भक्ति थी, साधारण ज्ञान भी था, परन्तु मुख्य रूप में कर्म पर बल था। इसी कारण जब मुगलों का कुठाराघात चला तो गुरुजी के साहित्य के पढ़ने वाले दब गये, वैसे ही जैसे उपलों की राख में अग्नि दब जाती है और समय पाकर यह सुलगी और फिर इस्लाम के दाँत खट्टे करने में समर्थ हो गई।

महाराष्ट्र में सत्य दिशा देने वाले साहित्यकार थे समर्थ गुरु रामदास। इस्लाम की अनुदार प्रवृत्ति तथा इसकी शिक्षा में राग और द्वेष भरा पड़ा था। इसका विरोध तो वैसे ही किसी शस्त्र से किया जा सकता था और गुरु अर्जुन देव की संगठन-शक्ति के समान संगठन-शक्ति समर्थ स्वामी रामदास में आ गयी।

जहाँ पंजाब के हिन्दुओं के घर-घर में—एक ओंकार सत नाम कर्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुरुष निर्भौ निरवैर—गूँजता था, वहाँ महाराष्ट्र में यह गूँज रहा था कि जो अपना है उसकी रक्षा करो। अपने में वृद्धि करने के लिए सब प्रकार का प्रयत्न करो और तुर्कन को मारो, मारो तथा देश में स्वराज्य स्थापित करो।

इस साहित्य का ही परिणाम था कि हिन्दू बालकों में भी, उच्च से उच्च मुसलमान पदाधिकारी को निर्भीकता से मन की बात सुनाने का साहस-सा आ गया था।

एक बार सरहिन्द के सूबेदार ने बागी हिन्दुओं के कुछ बच्चों को शाही महल में कैद कर दिया। उसका आशय था कि उनको इस्लाम की शिक्षा से मुनव्वर किया जाये। इस्लामी धर्मशास्त्र में भी ऐसा करने के लिए लिखा है। काफिरों की औरतों और बच्चों को इस्लाम की बरकत से पुर करने के लिए उनकी हिफाजत और परवरिश की बात लिखी है। यह हुजूर बनी-उल-इस्लाम की उम्मत को तरक्की देने के लिये है।

एक दिन सूबेदार उन बच्चों को महल के बगीचे में खेलते देख बहुत प्रसन्न हुआ। बच्चे स्वस्थ और सुन्दर थे और खेलते हुए भले लग रहे थे। सूबेदार उनको खेलते हुए कुछ समय तक देखता रहा। फिर उनको इकट्ठा कर पूछने लगा, "अगर हम तुमको आज़ाद कर दें तो तुम क्या करोगे ?"

लड़कों ने उत्तर दिया, "हम अपने सिक्खों को एकत्रित करेंगे। उनके हाथों में शस्त्रास्त्र देंगे और तुमसे लड़ेंगे और तुमको मार डालेंगे।"

सूबेदार ने कहा, "और यदि तुम हार गये तो क्या करोगे ?"

"हम फिर वही करेंगे।" लड़कों ने उत्तर दिया, "या तो तुम्हें मार गिरायेंगे या मारे जायेंगे।"

"तुम मारे गये तो क्या होगा ?"

"हिन्दू मरते नहीं। हम फिर जन्म लेंगे और मुसलमानों का सफाया करेंगे।"

सूबेदार इससे आग-बबूला हो गया और उसने उन निर्दोष बच्चों को कत्ल करने की आज्ञा दे दी।

ये गुरु गोविन्द सिंह के लड़के थे। इनको किले की दीवार में जीवित चिनवा दिया गया।

यह भावना साहित्य का चमत्कार ही थी। भाव तो पुराना ही था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गीता के एक-एक श्लोक में यही भाव भरा पड़ा था, परन्तु एक ओर तो कुछएक हिन्दू आचार्यों ने इसके अर्थों को विकृत कर रखा था, और दूसरी ओर ब्राह्मणों ने इसे जन-साधारण तक पहुँचने से रोक रखा था।

या तो जन-साधारण की बोल-चाल की भाषा संस्कृत हो जाती, अथवा संस्कृत साहित्य का सत्य अर्थ जन-जन तक पहुँचता। ऐसा तो नहीं हुआ इस पर भी यह भाव पहुंचा सिक्खों के गुरु ग्रन्थ साहब के द्वारा तथा समर्थ स्वामी रामदास के दोहों और उक्तियों के आश्रय।

इस पर भी दोनों साहित्य की दिशाओं में अर्वाचीन और प्राचीन में कड़ी सुदृढ़ नहीं रही। परिणामस्वरूप जाति में जीवन तो आया, परन्तु वह जीवन प्राचीन से पृथक् होता चला गया।

वाराणसी क्षेत्र में प्राचीन को प्राचीन भाषा में ही पकड़ रखने से प्राचीन से कड़ी बनी रही, परन्तु तत्कालीन समस्या का सुझाव नहीं आया। यदि संस्कृत भाषा छोड़ प्रचलित भाषा का आश्रय लिया जाता तो कदाचित् यहाँ भी वही आस्था आ जाती जो पंजाब और महाराष्ट्र में बनी थी। परन्तु उस अवस्था में वहाँ भी प्राचीन से सम्बन्ध टूट जाता।

दोनों कालों का समन्वय नहीं हो सका। कारण, वेद-शास्त्र और उनकी भाषा संस्कृत का सर्वसाधारण को ज्ञान नहीं था। कोटि-कोटि जन संस्कृत से वंचित किए जा रहे थे। तत्कालीन भाषा का साहित्य, एक ओर कोरी भक्ति और अद्वैतवाद ही रह गया था और दूसरी ओर केवल वासनामय। इन दोनों प्रवृत्तियों का प्रभाव राजस्थान में मुगलों की दासता के रूप में, महाराष्ट्र में महाराष्ट्र को ही देश मानने के रूप में और पंजाब में हिन्दुओं के पृथक् सिक्ख जाति के निर्माण में हुआ। ये दोनों प्रवृत्तियाँ प्रत्यक्ष हुईं, जब पंजाब में महाराजा रणजीतसिंह का राज्य हुआ और महाराष्ट्र में पेशवा, होल्कर, सिंधिया इत्यादि राज्य स्थापित हो गए।

जहाँगीर के काल में चलाये दमन-चक्र की प्रतिक्रिया शाहजहाँ के अंतिम काल में प्रस्फुटित होने लगी। हिन्दू समाज का दमन किया जाता था इस्लाम के नाम पर। वास्तव में यह होता था मुगल साम्राज्य को स्थायी और सुदृढ़ करने के लिए। यह नीति अकबर के काल से ही चल पड़ी थी। हिन्दुओं का सहयोग प्राप्त किया जाता था अथवा हिन्दुओं का दमन किया जाता था, केवल अकबर के शासन को सुदृढ़ करने के लिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अकवर को इस्लाम का आश्रय सुलभ और सुखकर प्रतीत होने के साथ-साथ अधिक सुदृढ़ समझ आता था। यही कारण था कि मरने से पूर्व अकबर खुसरो का पक्ष छोड़ जहाँगीर के पक्ष में हो गया था। यही कारण था कि जहाँगीर ने पंजाब और राजस्थान के हिन्दुओं को दमन-चक्र का शिकार बनाया था। और इसी कारण औरंगज़ेब अपने पिता और भाइयों की हत्या करने में सफल हुआ था।

संवत् १७११ में सिक्खों के नवम् गुरु गद्दी पर बैठे और जब औरंग-ज़ेब अपने पिता शहंशाह शाहजहाँ की हत्या की योजना बना रहा था, तब पंजाब में गुरु तेग बहादुर ने संगठन का पुनरुद्धार आरम्भ कर दिया था। मुगलशासक इस समय विषय-वासना में लिप्त हो रहे थे। शहंशाह शाह-जहाँ के हरम में औरतों की संख्या एक सहस्र की गणना पार कर चुकी थी। दाराशिकोह के हरम में भी स्त्रियों की संख्या नित्य बढ़ रही थी। यूं तो उसकी बेगमें तीन ही थीं, परन्तु उसका मन बहलाने के लिए एक लम्बा-चौड़ा हरम तैयार हो गया था और दिनानुदिन वह वृद्धि पा रहा था।

इस हरम में वृद्धि इस कारण भी हो रही थी कि न तो शहंशाह को और न ही शहज़ादा-ए-अज़ीम को किसी प्रकार का राज्य-कार्य करना पड़ता था। प्राय: प्रत्येक कार्य वज़ीर, उमराव और सिपहसालार करते थे। अब देश के दूर क्षेत्रों में शहंशाह के लड़कों के चले जाने के कारण शहंशाह और बड़े शहज़ादे पर तो राज्य-कार्य और भी कम हो गया था। मुराद शरीर से सुदृढ़ परन्तु उजड्ड प्रकृति का व्यक्ति था। बुद्धि की सूक्ष्मता उसमें सर्वथा नहीं थी। यही कारण था कि उसकी नाक के नीचे ही शिवा दिन-दुगनी रात-चौगुनी उन्नति करने लगा। शिवा के पिता शाहजी के मुगल दरबार में चले जाने के कारण मुगलों का वह मित्र समझा जाता था। इस कारण शिवा निश्चिन्त हो बीजापुर से झगड़ा जारी रख सका था। वह दिन-प्रतिदिन अपने राज्य में बीजापुर के अधिक और अधिक क्षत्र सम्मिलित करता जाता था।

मुराद रात को शराब पी स्त्रियों के संगत में पड़ा रहता था और दिन के अधिकांश समय सोया करता था। तीसरे प्रहर दरबार लगता था और उपस्थित अर्जियों पर मन माने निर्णय करता रहता था। उसकी धारणा यह थी कि दो पक्षों में एक तो सदा ठीक ही होता है। इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जो समझ में आता, तुरन्त निर्णय देता। परिणामस्वरूप देखने वाले को तो वह पक्ष ही सत्य प्रतीत होता था, जो राज्य के निर्णय पर जीत जाता था। निर्णय देने वाले की न्यायप्रियता की धूममच जाती थी।

इस पर मुराद के निर्णयों की आलोचना आगरा दरबार में होने लगी। औरंगज़ेब के पक्ष के लोग मुराद की निन्दा और उसके प्रबन्ध की आलोचना करते हुए संकोच नहीं करते थे।

औरंगज़ेब के सहायकों में दो प्रकार के लोग थे। एक वे जो शहंशाह और दारा के इस्लाम के विपरीत कार्यों को देख इस्लाम की रक्षा के लिए औरंगज़ेब को अच्छा आदमी समझते थे। ये प्रायः कट्टर-पन्थी और मुल्ला-मौलाना होते थे। मुसलमानों में इनकी संख्या अधिक थी। कुछ ऐसे लोग भी थे जो शहंशाह शाहजहाँ और दारा की अनीति की बातों पर रुष्ट हो उनके विपक्ष में सम्मिलित हो रहे थे।

महताब बेगम के बच्चे के विषय में निर्णय ने महल में उथल-पुथल मचा दी थी। उसके लड़का हुआ। लड़के का नाम हिदायतुल्ला रखा गया। लड़का तीन महीने का हो गया था कि एक दिन शहंशाह उस कक्ष में आ पहुँचे। दारा की बेगमें शहंशाह से पर्दा करती थीं। वे उठकर अपने कमरे में चली गयीं। महताब खड़ी हो शहंशाह की कदमबोसी करने लगी। बच्चा पालने में सो रहा था।

शहंशाह ने बच्चे को ध्यान से देखा और कह दिया, "बिल्कुल बद-सूरत है।"

इसमें कुछ कहने को नहीं था। इस कारण महताब चुप खड़ी रही। शहंशाह ने उसे क्रुद्ध करने के लिए पूछ लिया, "हमारी बेगम इसको कैसा समझती हैं?"

महताब ने कह दिया, "यह ईश्वरदत्त है। ईश्वर की दी वस्तु भला असुन्दर कैसे हो सकती है?"

"इसका नाम ईश्वरदत्त नहीं है। इससे यह ईश्वर का दिया नहीं।"

"अपने-अपने विचार की बात है।"

"देखो बेगम! हम अब तुम्हारे फिराक में बेताब रहते हैं।"

"शहंशाह की इस दासी पर बहुत ही इनायत है, परन्तु···।"

"परन्तु क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"यही कि अब मैं आपकी पतोहू के रूप में विख्यात हो रही हूँ। इस लिए पुनः पहले रूप में स्वीकार करने पर शहंशाह की भारी बदनामी होगी।"

'मगर हमारे मज़हब में तो इसकी मनाही नहीं है। तुम हमारे लड़के को तलाक दे दो और हम तुमसे फिर शादी कर लेंगे।"

"कैसे तलाक दे दूं ?"

"जैसे दारा से तुम्हारी शादी हुई है, या यह कहो कि जिस शरा की रूह से हमारे साथ तुम्हारी शादी हुई और फिर. हमसे तलाक हुआ था और दारा से शादी हुई थी। अब उसी तरह दारा से तलाक हो जाए और हमसे फिर शादी हो जानी चाहिए।"

"जहाँपनाह ! यह आपके मज़हब और आपकी शरा में ठीक है, मगर मेरा आत्मा इसको दुराचार मानता है। और मैं अब अपनी अवस्था को बदलना नहीं चाहती।"

"इसमें तुम्हारे आत्मा का सवाल कैसे आ गया ? जो औरत शहंशाह के हरम में आती है उसका आत्मा शहंशाह के आत्मा के साथ मिल जाता है। हम अपने आत्मा पर दोबारा अपना दावा जमाना चाहते हैं।"

"आपने अपना दावा छोड़ दिया था और हिन्दुस्तान जैसे बड़े देश के शहंशाह को अपना छोड़ा हुआ दावा वापस लेना उसकी मान-प्रतिष्ठा के विपरीत बैठेगा।"

"कौन है जो हमारी मान-प्रतिष्ठा पर उँगली करने वाला है ?"

"महल में रहने वाले बाशिन्दे हैं। उनके सब सम्बन्धी और मित्र जो महल के बाहर हैं वे भी शहंशाह को ऐसा करते देख बुरा मानेंगे और फिर उनके मित्र और फिर उनके मित्र। मतलब यह है कि सारा मुल्क शहंशाह को बहुत ही छोटे विचार का मानने लगेगा।"

"हम किसी की परवाह नहीं करते। जो कोई बोले उसका मुख रुपये से हम बन्द कर देते हैं और जो रुपये से भी न माने उसको हमेशा के लिए तलवार से चुप करा देते हैं।"

"सबसे बड़ा निन्दा करने वाला तो यही होगा।" उसने पालने की ओर संकेत कर कहा, "जब यह बड़ा होगा और इसको लोग कहेंगे कि इसकी माँ, इसके बाप और बाबा दोनों की बीवी थी तो यह माँ को जीवन-भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोसता और गाली देता रहेगा। हज़रत! अब बेगुनाह औरत को बख्शिये।"

"मगर सुना है कि तुम दारा को भी तो अपना खाविन्द तसव्वर नहीं करतीं?"

"मैं तो किसी को भी अपना खाविन्द तसव्वर नहीं करती। ऐसे ही रहना चाहती हूँ, जैसी हूँ।"

"मगर रात कैसे कटती होगी और यह लम्बी ज़िन्दगी कैसे कटेगी?"

"इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। मेरे लिए दिन और रात में कुछ भी फरक नहीं और यह जीवन पलक की झपक में निकल जायेगा। मुझे इस जीवन की चिन्ता नहीं, जितनी उस लम्बे जीवन की है जिसका आदि-अन्त पीर-पैगम्बर भी नहीं पा सके।"

यह सब कुछ शहंशाह की विचार की सीमा के बाहर था। इस कारण उन्होंने इस व्यर्थ के बाद-विवाद को छोड़कर कह दिया, "हम इतने लम्बे अर्सा की बात आज जान नहीं सकते। हम तो आज की बात कहते हैं। सुन लो, हमने तुम्हारे पहले वाले कमरे ठीक करवा दिये हैं। वहाँ साजो-सामान लगवा दिया है। इसलिए आज शाम तक तुम उसमें चली जाना। हम आज खाना तुम्हारे साथ खाएँगे।"

शहंशाह लौटने लगा तो महताब ने कह दिया, "जहाँपनाह! एक अर्जी इस नाचीज़ की भी सुनते जाइये। मैं अब वहाँ नहीं आऊँगी। मैं आपको अपना बाप मानती हूँ। इसलिए आपके बिस्तर पर कदम नहीं रखूँगी। मुझे मुआफ किया जाए और अपने शेष जीवन को शान्ति से व्यतीत करने दिया जाए।"

"अर्जी सुन ली है और इस पर हुक्म शाम तक हो जाएगा।"

: २ :

दारा की बीवियों ने महताब को राय दी कि उसे शहंशाह की बात मान जानी चाहिए। महताब ने कुछ काल तक मौन हो विचार किया और कह दिया, "बेगम बहिन! अब यह नहीं होगा। जो बचपन में हो गया सो हो गया। अब मैं अपने को एकदम युवा और सज्ञान हो गया अनुभव करती हूँ। यह दुराचार है। यह पाप है। यह घोर नरक में ले जाने वाला कार्य है। मैं तो अब इस प्रकार के कार्य को करूँगी नहीं। मैं जानती हूँ कि इसका क्या परिणाम हो सकता है। मुझे फाँसी चढ़ाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकता है। इस शरीर को रखने में मुझे रुचि नहीं रही। एक बात और हो सकती है कि मेरे साथ ज़बरदस्ती की जाए। उस हालत में मैं यह प्राण स्वेच्छा से त्याग दूँगी।"

"और यह बच्चा?"

"जब तक जीवित हूँ इसकी रक्षा करूँगी, पीछे भगवान् इसकी रक्षा करेगा।"

दारा की बेगमें विशेष रूप में उदयपुरी महताब से बहुत हमदर्दी रखती थी। उसने महताब को कह दिया, "महताब बहन! अगरचे मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती, इस पर भी तुम्हारी बहादुरी और शुजाअत की दाद दिए बिना नहीं रह सकती। मैं तुम्हारी कदमबोसी करके अपनी आक़बत सुधरती महसूस करती हूँ।"

दारा आया और उसने ही महताब को बताया, "शहंशाह का हुक्म महताब की अर्जी पर हो गया है। हुक्म यह है कि अगर महताब जिन्दा रहना चाहती है तो उसको अपना बच्चा जल्लाद के हवाले करना होगा। नहीं तो उसको बदचलनी के इल्ज़ाम में किले की दीवार से धकेल कर नीचे गिराकर खत्म कर दिया जायेगा।"

महताब ने यह हुक्म सुना और बिना कुछ भी अधिक विचार किये कह दिया, "क्या भरोसा है ऐसे शहंशाह का? वे बच्चे की जान लेकर भी अपनी वासना से बच सकेंगे क्या और फिर मुझे शान्ति से ज़िन्दगी बसर करने देंगे क्या? इस अर्थ मेरी यह अर्जी है कि मुझे हुक्म हो जाए कि मैं स्वयं ही किले की दीवार से कूद कर इस जीवन को समाप्त कर दूं।"

"मगर अम्मी बेगम! मेरी राय दूसरी है।"

"क्या?"

"बच्चे को दे दो।"

"यह मैं अपने मुख से कैसे कह सकती हूँ? यह तो मैं जानती हूँ कि मेरे पीछे उसको भी खत्म कर दिया जायेगा। इस पर भी यह मैं न अपने मुख से कह सकती हूँ न ही मैं अपने हाथ से उसको किसी के हवाले करूँगी।"

दारा इससे गम्भीर विचार में निमग्न हो गया। वह कुछ देर तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विचार करता रहा और फिर उठकर अपने कमरों में अपनी बेगमों से विचार करने चला गया।

दारा अभी गया ही था कि महताब की अपनी अर्दली में रहने वाला खुसरा नूर आया और बोला, "हजूर! रोशनआरा बेगम आपको याद कर रही हैं। वे यहाँ खुद आने वाली थीं, मगर किसी वजह से आ नहीं सकतीं और उनकी यह इल्तज़ाह है कि आप वहाँ आने की तकलीफ करें।"

महताब ने उसी समय कपड़े बदले और रोशनआरा बेगम के बैठक-घर में जा पहुँची। वह महल की कुछ औरतों के साथ बैठी हँसी-मज़ाक कर रही थी। इन औरतों में कुछ शहंशाह की रखेलें भी थीं। शहंशाह तो जब भी और जहाँ भी किसी खूबसूरत औरत को देखता, पकड़ कर अपने हरम में दाखिल कर लेता था। उनमें कई तो ऐसी थीं जिनको शहंशाह ने एक से अधिक बार देखा भी नहीं था।

जब महताब वहाँ पहुँची तो रोशनआरा ने उठकर उसे दोनों हाथों से पकड़ कर गले लगाया और फिर अपने समीप बैठा कर कहा, "देखो, यह सुल्ताना कह रही है मैं अकेली ज़िन्दगी बसर करती हुई बहुत तकलीफ में रहती हूँगी। मैंने इसको बताया है हमारी अम्मी महताब भी तो आजकल अकेली ही हैं। इस पर भी वह तकलीफ महसूस करती मालूम नहीं होतीं।

"अम्मी! बताओ, क्या मैंने कुछ गलत कहा है?"

महताब को आज इस किस्म की बातें सुहा नहीं रही थीं। वह चुप रही। इस पर एक अन्य ने पूछ लिया, "छोटे शहज़ादे साहब कब तक आयेंगे?"

"क्यों? तुमको उनका फिराक तंग कर रहा है?" रोशनआरा ने पूछ लिया।

"बेगम! मैं तो आपके मुतअल्लिक सोच रही थी।"

"हाँ, जब से वह गये हैं यह महल कुफ्रस्तान दिखाई देने लगा है। यहाँ ईमानदारी, वफादारी, दीन पर एतकाद और खुदा की याद का नामोनिशाँ नहीं रहा।"

"सुना है इन अम्मी के बच्चे को कत्ल कर देने का हुक्म सादर हुआ है।"

महल में इस किस्म की खबरों के तेज़ी से फैल जाने की वजह यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थी कि महल में एक सहस्र से ऊपर औरत रहती थीं और उनको सिवाय गप्पबाज़ी के और कुछ काम नहीं था। खुसरे जासूसी करने में बहुत चतुर थे और वे बहुत तेज़ कान रखते थे। महल के किसी भी कोने में कोई बात छिपी नहीं रहती थी। कौन औरत किस मर्द के साथ रात रही है, से लेकर किस साग के साथ खाना खाया है, तक सब बातें एक से दूसरे के कान तक पहुँच जाया करती थीं।

महताब पहले तो इस प्रकार की बातों पर विस्मय प्रकट किया करती थी, परन्तु अब उसे यह नित्यप्रति की बात मालूम होने लगी थी। कोई भी बात जब तक दिल में ही रहती थी और होठों पर नहीं आती थी, खुफिया समझी जाती थी। ज्यों ही होंठों से निकली कि वह महल भर में सब की चर्चा का विषय बन जाती थी।

महताब यह विचार कर रही थी कि उसे जल्दी अपने कमरे में चले जाना चाहिए। वह अब अपने जीवन की घड़ियाँ गिन रही थी और तब तक वह अपने बच्चे के पास रहना चाहती थी। इस कारण उसने रोशन-आरा के कान में कह दिया, "रोशनआरा बहन! मुझे जल्दी है। क्या काम है? बता दो।"

"ओह! तो अच्छा आओ।"

रोशनआरा उसको अपने सोने के कमरे में ले गयी। वहाँ अपने पलंग पर बैठा कर बोली, "मैं तुमको यह कहना चाहती हूँ कि अगर हिदायतुल्ला को कोई जल्लाद लेने आये तो ले जाने देना। मैंने उसकी हिफाज़त और परवरिश का इन्तज़ाम कर रखा है।"

"जी नहीं मानता।"

"यकीन रखो अम्मी! मैं जहानआरा की तरह धोखा देने वाली नहीं हूँ। मैं जो कहती हूँ उसको पूरा भी कर सकती हूँ।"

"रोशन बहन! मुझको तो सब-कुछ मिथ्या ही दिखाई देने लगा है। यह अजीब संसार है। यहाँ इन्सान की कीमत एक टूटे जूते से ज़्यादा नहीं समझी जाती। यहाँ भलमनसाहत, सच्चाई, निष्ठा और परमात्मा नाम की वस्तुएँ तो ढूंढने पर भी नहीं मिलतीं। यह दुनिया अब रहने के लायक नहीं रही। मैंने बड़े शहज़ादे साहब को भी कह दिया है कि मैं अपनी मौत को खुशी-खुशी स्वीकार करूँगी, मगर अपने जीते-जी अपने बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आँखों से ओझल नहीं होने दूँगी।"

"मगर मैं तो तुम दोनों की उम्र दराज़ करने का इन्तज़ाम कर चुकी हूँ।"

"मगर इस शाही दुनिया में एतबार के लिए कोई जगह है भी ?"

"देखो, मैं इसका यकीन दिलवा दूँगी। सिर्फ तुम बच्चे को छीन लिए जाने का ग़म मनाती रहना, जिससे किसी को शक न हो सके कि शहंशाह के हुक्म की अदूली की गयी है।"

महताब कुछ भी न समझती हुई मुख देखती रह गयी। इस पर रोशन-आरा ने कहा, "यकीन रखो कि हूकूमत बदलने वाली है। हमारा ज़माना भी आने वाला है। कुफ्र का किला गिरने वाला है।"

एकाएक महताब के शरीर में कँपकँपी हो उठी। उसको यह समझ आया कि सब ओर अंधकार छा रहा है। वह एकदम उठी और बोली, "अच्छा रोशन बहन! मैं चलती हूँ।"

इतना कह वह वहाँ से चली आयी। उसे सब-कुछ फीका-फीका मालूम होने लगा था।

जब वह अपने कमरे के बाहर पहुँची तो दारा, दारा की बेगमों उसकी नौकरानी और अपने खुसरे को परेशानी में वहाँ खड़े देख उसके पाँव-तले से मिट्टी खिसक गयी। वह समझ गयी कि उसके साथ धोखा खेला गया है। वह प्रश्न-भरी दृष्टि से उदयपुरी की तरफ देखने लगी तो वह महताब की कमर में हाथ डाल उसे घसीटती हुई अपने कमरे में ले गयी। उसने महताब को अपने रहने के कमरों की ओर जाने नहीं दिया।

"तो मेरे बच्चे को ले गए हैं ?" महताब की आँखों से आँसू छलक पड़े।

उदयपुरी ने महताब को अपनी बैठक में ले जाकर बैठाया। दारा और दूसरी बेगमें भी वहाँ आयीं। बात दारा ने बतायी, "हम यहाँ बैठ शहंशाह से अपने हुक्म पर नज़रसानी करने की तजवीज़ ही कर रहे थे कि बाहर रफीकन की चीखों की आवाज़ सुनाई दी। हम भागे हुए बाहर गए तो जल्लाद रोते बच्चे को बगल में दबाए भागा जाता दिखाई दिया।

महताब फूट-फूट कर रोने लगी। उदयपुरी उसकी पीठ पर हाथ फेर उसे सांत्वना देने लगी। दारा कह रहा था, "एक बात तुम समझ लो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्मी ! यह शाही महल है। यहाँ शहंशाह की हुकूमत है और किसी की मजाल नहीं कि उनकी हुक्म की अदूली कर सके। यहाँ कोई भी शख्स नहीं जो बेमौत मरना चाहे। इसलिए हम सब्र से सब-कुछ सहते चले जाते हैं।

"अब आगे की बात सोचनी चाहिए।"

महताब उठी और यह कह, "मैं तनहाई चाहती हूँ।" अपने कमरे में चली गयी। उसके कमरे में उसकी नौकरानी रफीकन एक कोने में खड़ी रो रही थी।

महताब अपने पलँग पर लेट गयी। वह पिछले डेढ़ वर्ष के जीवन पर विचार करने लगी। इतने छोटे-काल में युग बीत गया मालूम होता था।

वह गाँव में थी। उसका विवाह तो पाँच वर्ष पहले ही होने वाला था, परन्तु उसके पिता उसे शास्त्र पढ़ाने के लोभ में विवाह स्थगित करते जाते थे। आखिर उसकी ससुराल वालों की अन्तिम चेतावनी पर विवाह स्वीकार किया गया, परन्तु विवाह के कुछ दिन पहले ही बुड़हानपुर से सिपाही आए और मार-धाड़ करते हुए उन सबको पकड़ कर बुड़हानपुर ले गए। यात्रा तो अत्यन्त कष्ट-प्रद थी। इस पर भी वह और उसके माता-पिता सब-कुछ सह गये और जीवित रहे।

बुड़हानपुर से आगरा तक की यात्रा सुगम और कष्ट-रहित रही। आगरा में आकर सराय तो एक स्वर्ग स्थान प्रतीत हुई। इस पर भी वह समझ रही थी कि शहंशाह से उसके पिता मिलेंगे और फिर इनामोकराम से लदे हुए वे गाँव को वापस चले जाएँगे और वहाँ विवाह होगा तथा वह घर की रानी बन रहेगी।

इसके उपरान्त वे महल के बगल वाले मकान में पहुँचे और इतना धन मिला, जितना उसे तथा उसके माता-पिता ने देखा भी नहीं था। साथ ही बेगम जहानआरा से वाकफियत हुई। उसने इसे जीवन के सुख भोग का एक नया दृश्य दिखाया। उसमें कामुकता उत्पन्न करने में वह सफल हुई। शीघ्र ही वह शहंशाह की झपेट में आ गयी। इसकी प्रथम प्रक्रिया तो आनन्द-भोग की हुई। फिर कुछ चेतना आने पर वह पतित हो गयी अनुभव करने लगी, परन्तु शहंशाह की रूप-राशि और शरीर का गठन देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सुख और संतोष अनुभव करने लगी थी और पीछे जहानआरा की सांत्वना से तथा धन-दौलत और सुख-आराम की प्रचुरता देख वह अपने को सौभाग्यशालिनी मानने लगी। वह समझने लगी थी कि सत्य ही वह भगवान की असीम कृपा की भाजन है।

दुर्भाग्य का श्रीगणेश उस दिन से हुआ, जब उसके गर्भ ठहरा। भोग-विलास से अरुचि उत्पन्न होने लगी और एकान्तवास की इच्छा होने लगी। शहंशाह उसके व्यवहार को शीतल हो रहा समझने लगे। गर्भ-स्थिति की सूचना शहंशाह को मिलते ही गर्भपात की आज्ञा जारी हो गयी। उसके मन में अब महल के सब लोगों और फिर अपने जीवन से भी ग्लानि होने लगी।

सब परिणामों का विचार कर ही उसने गर्भपात कराने से इनकार किया था। बला कुछ काल के लिए टली। दारा इसमें साधन बन गया। बच्चा हुआ और फिर उसके मन में उसके लिए मोह बन गया। प्रसव के उपरान्त वह स्वस्थ और सुन्दर दिखाई देने लगी। इस पर दुर्भाग्य ने पुनः आ घेरा।

अब वह देख रही थी कि बच्चा गया। यह भी निश्चय था कि वह पुनः शहंशाह के हरम में घसीट कर ले जायी जायेगी। अब तो दारा भी अपने को बेबस प्रकट कर चुका था और महल में शहंशाह की हुकूमत के समक्ष शीश नवा चुका प्रतीत होता था।

उसको समस्त संसार अंधकारपूर्ण दिखाई देता था। केवल एक क्षीण-सी रेखा रोशनआरा के कथन में दिखाई दी थी। अब वह अपने व्यवहार पर विचार करने लगी। वह समझ चुकी थी कि शीघ्र ही यह जीवन समाप्त करना होगा। भविष्य के जीवन की सुध लेनी चाहिए। अतः वह इस दिशा में विचार करने लगी।

सायंकाल हो रहा था और उसके पूजा-पाठ का समय हो गया था। वह पलंग से उठी और स्नान इत्यादि के लिए गुसलखाने में चली गयी।

वह प्रतिक्षण शहंशाह की, कामनाओं के घोड़ों पर सवार होकर आने की आशा कर रही थी। वह अपने साथ बलात्कार की भी आशा कर रही थी और इस अवस्था में वह अपने व्यवहार का विचार करती हुई दिन-रात व्यतीत करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बच्चे को ले जाने के तीसरे दिन रोशनआरा उसके कमरे में आयी
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और उसको अपने साथ अपने सोने के कमरे में ले गयी। साँझ हो चुकी थी। यद्यपि महलमें जगमग-जगमग हो रही थी, परन्तु रोशनआरा के कक्ष में अँधेरा था।

रोशनआरा ने अपने सोने के कमरे में पहुँच अपने पलँग पर एक सोये हुए बच्चे की ओर संकेत कर दिया। बच्चे के ऊपर बहुत ही बारीक मलमल का कपड़ा पड़ा था। महताब ने वह कपड़ा उतारा और देखा। यह उसका अपना बच्चा था। महताब उसका मुख चूमने के लिए झुकी, मगर रोशनआरा ने उसे हाथ से रोक दिया और कहा, "बच्चा जाग पड़ेगा और फिर रोयेगा। तब बच्चे के रोने की आवाज सुन महल भर के लोग यहाँ इकट्ठे हो जाएँगे और सब भेद खुल जायेगा। शहंशाह के हुक्म की अदूली के लिए किस-किसको फाँसी चढ़ाया जाएगा, कहा नहीं जा सकता।

"मैं तो तुमको इसे दिखाने के लिए यहाँ लायी थी। मैंने भारी रकम देकर जल्लाद से इसको मोल लिया है और जब तक हुकूमत किसी खुदा-दोस्त के हाथ में नहीं आ जाती, तब तक यह कहीं दूर महफूज़ जगह पर रखा जाएगा।

"बेगम अम्मी! अब तुम जाओ और इत्मीनान से ज़िन्दगी बसर करो। वक्त आने पर यह तुमको वापस मिल जाएगा।"

"रोशन बहन! मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ। यह तुम्हारा एहसान मरण-पर्यन्त नहीं भूलूंगी।"

"अच्छा अम्मी, अब जाओ। मैं इसको महफ़ूज़ जगह पर भेजने का इन्तज़ाम करने के लिए यहाँ ठहर रही हूँ।"

महताब ने पुनः बच्चे को दूर से ही देखा। वह गहरी नींद में सोया नियमपूर्वक साँस ले रहा था। महताब प्रसन्न थी।

: ३ :

शहंशाह ने दारा से अपनी नयी बेगम वापस पाने का इरादा ज़ाहिर कर दिया। दारा महताब से मुहब्बत करता था। यद्यपि यह मुहब्बत फलीभूत नहीं हो रही थी, मगर वह अनुभव कह रहा था कि मुहब्बत तो आत्मा का गुण है। इसका शरीर के साथ सम्बन्ध नहीं और वासना शरीर की माँग है। शरीर आत्मा के सामने परास्त हो रहा था। इस विचार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रवाह में हकीम सरमद उसका पथ-प्रदर्शन कर रहा था।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरमद प्रायः दारा की बैठक में उपस्थित हुआ करता था। जब भी वह आगरा आता था तो उसका नित्य, शहज़ादा से मेल होता था। दोनों के दरम्यान आत्मा-परमात्मा के विषय में वार्तालाप हुआ करता था। यह वार्तालाप बेगमें और महताब भी बैठक की जाली के पीछे बैठ प्रायः सुना करती थीं। दारा को यह जान बहुत खुशी होती थी कि कई बार वह बात भी जो सरमद कह दिया करता था कि उसे समझ नहीं आ रही, महताब सहज ही समझा दिया करती थी।

एक दिन इसी प्रकार के एक विषय पर बात चल पड़ी। सरमद कह रहा था, "ज़िन्दगी के काम तो इन्सान की अक्ल और जिस्म करता है। रूह इन कामों को न तो करती है, न ही वह इनकी जिम्मेदार है। दुनिया में रहती हुई रूह सब किस्म के काम करती हुई भी पाक-साफ, खुदा से जाकर मिल सकती है।"

इस पर शहज़ादा ने कह दिया, "तो हज़रत! ज़बर-ज़नाह करती हुई इन्सान की रूह भी पाक और साफ मानी जाएगी और खुदा से मिल सकेगी?"

"हाँ, सिर्फ शर्त यह है कि गुनाह में उसकी लगन नहीं होनी चाहिए।"

"लगन न होने पर तो वह ज़बर-ज़नाह करेगा ही नहीं। गुनाह तो तब ही किया जाता है जब उसकी तरफ लगन होती है।

"अच्छा, लगन किसको होती है?" दारा ने आगे पूछ लिया।

"इन्सान की अक्ल को।"

"तो रूह इसमें ज़िम्मेदार नहीं न? हज़ार बार ज़बर-जनाह करने पर भी रूह पाक-साफ़ रहेगी और खुदा के पास जा सकती है?"

"हाँ, मगर शहज़ादा साहब! यह खुदाई बात है। इसमें अक्ल को दखल नहीं। मैं तो सिर्फ यह कहता हूँ कि रूह खुदा का एक जुज़ है और मौका पाते ही यह उससे जा मिलती है।"

"कैसे मौका पाती है?"

"यह मैं समझा नहीं सकता। इसके समझाने के लिए मेरी ज़बान क़ासिर है।"

सरमद गया तो दारा को उस दिन की सरमद की बात समझ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आयी। वह महताब के कमरे में जा पहुँचा और पूछने लगा, "अम्मी ! आज हकीम की गुफ्तगूह सुनी है ?"

"हाँ, भाईजान ! सुनी है।"

"कुछ समझा है ?"

"जो कुछ उन्होंने बताया है सो तो समझा ही है, परन्तु वही सब-कुछ नहीं है, उससे कुछ आगे भी है।"

"क्या है ?"

"देखिए, हमारे दिमाग में एक गुहा होती है। गुहा का मतलब है कि एक घिरी हुई खाली जगह। वहाँ पर हमारी रूह जिसको हम आत्मा के नाम से पुकारते हैं, रहती है। इस जगह पर बुद्धि और मन भी रहते हैं। मन हमारी इन्द्रियों का केन्द्र है। यहाँ सब इन्द्रियाँ अपना इल्म बताती हैं और आत्मा ही सब इन्द्रियो को काम करने की आज्ञा देता है।

"उदाहरण के रूप में आँख देखती है। देखने पर जो कुछ भी इसको पता चलता है वह मन को बता दिया जाता है। मन को देखी बात पर कार्य करने की राय बुद्धि देती है। इल्म और फैसले का आत्मा पर अक्स पड़ता है। आत्मा जानदार होने से बुद्धि से किये गए फैसले पर अमल करने की इजाजत देता है अथवा नहीं देता।

"इस अमल करने की इजाज़त में सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न आत्मा के गुणों का परिणाम होता है। इस तरह आत्मा जिम्मेदार है किसी कार्य को करने अथवा न करने में। जब यह करने का जिम्मेदार है तो यह उस काम का फल भोगने का भी जिम्मेदार ही है।

"यह ठीक है कि इन्द्रियाँ देखती-सुनती हैं; यह भी ठीक है कि इस देखे-सुने को अक्ल सोचती-विचारती है, मगर इस देखे-सुने और सोचे-विचारे पर अमल आत्मा के हुक्म पर ही होता है। इसीलिए अमल का जिम्मेदार और उसके फल को भोगने वाला आत्मा ही है।"

दारा को बात समझ आ रही थी। उसने कहा, "अम्मी बेगम ! यह सरमद तो बहुत बड़ा आलम माना जाता है, मगर तुम बात को इतनी आसानी से समझा देती हो और फिर समझती भी हो। यह कैसे है ?"

"इसकी वजह है। हकीम सरमद साहिब सिर्फ अपनी कोशिशों से इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मस्लह को जान रहे हैं। उनको अपनी कोशिशों में, पहले इसी दिशा में कोशिश करने वालों की जानकारी से मदद नहीं मिल रही। इसलिए जहाँ तक अपनी कोशिश से जा सके हैं, वहाँ तक ही गए हैं। मुझे इस सिम्त में पहले जानकारों की मदद हासिल है।"

"और वे कौन हैं?"

"अपने बुजुर्गों में कुछ लोग हो चुके हैं। उन्होंने कुछ ग्रन्थ लिखे हैं और मैंने उनमें से कुछ ग्रन्थ वालिद साहब से पढ़े हैं। इससे मैं बात को समझती हूँ।"

"क्या नाम है इन ग्रन्थों के?"

"नाम है उपनिषद्। ये कई हैं। इनमें सबसे पुराने और सबसे ज़्यादा सुलझे हुए दो हैं। एक है ईशावास्योपनिषद् और दूसरी है श्वेताश्वतर।"

"ये ग्रन्थ कहाँ से मिलेंगे?"

"किसी ब्राह्मण के पास मिल सकते हैं।"

"किस जबान में हैं?"

"संस्कृत जबान में।"

"अगर मैं ये ग्रन्थ हासिल करूँ तो तुम पढ़कर समझा सकोगी?"

"जितना पढ़ा और समझा है उतना ही समझा सकती हूँ।"

इस तरह महताब बेगम के इल्म और सूझ-बूझ का बहुत बड़ा प्रभाव दारा पर पड़ रहा था और वह महताब का मान करने लगा था। उसकी महताब के लिए मुहब्बत, उसके प्रति श्रद्धा और प्रतिष्ठा में बदल गयी थी।

यह सब कुछ तो उन दिनों ही हो चुका था, जब वह अभी गर्भवती थी। अब तो वह महताब के लिए चिन्ता भी करने लगा था। जब जल्लाद उसके बच्चे को ले गया तो दारा उसको रोक तो नहीं सका, मगर महताब को दुःखी देख उसको भी दुःख हुआ था।

दो-तीन दिन में महताब कुछ अधिक आश्वस्त दिखाई देने लगी थी। महताब को यह विश्वास हो गया था कि रोशनआरा बेगम ने उसके बच्चे की जान बचा ली है।

महताब अब प्रसन्न रहने लगी थी। एक दिन दारा ने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अम्मी ! तुम्हारे-जैसी ज्ञान-ध्यान को जानने वाली औरत भी दुःख और सुख महसूस क्यों करती है ?"

"मैं यह जानती हूँ कि आत्मा शरीर से अलग वस्तु है; मैं यह भी जानती हूँ कि सुख-दुःख शरीर को होता है। साथ ही मुझे मालूम है कि आत्मा अगर अपना ध्यान शरीर के दुःख-सुख से हटाकर परमात्मा की तरफ लगा ले तो आत्मा को सुख-दुःख, प्रिय-अप्रिय और सफलता-असफलता एक दिखाई देने लगती हैं; मगर यह तो अभ्यास की बात है कि आत्मा को परमात्मा की ओर लगाया जाए। मैं जानती तो हूँ। अभ्यास भी करती हूँ, मगर मेरा अभ्यास अभी कुछ अधिक नहीं है। इसलिए जो सुख-दुःख होता है, उसमें मैं सम-भाव नहीं रख सकती। अपने-आपको संसार से अलिप्त नहीं रख सकती।"

"कैसे अभ्यास करती हो ?"

"हर रोज़ बहुत सुबह उठकर स्नानादि से फुरसत पा मैं कुछ वक्त परमात्मा का चिन्तन करती हूँ। जैसा वह है, उसको वैसा दिमाग में बैठा कर उसकी ओर अपना चित्त लगाती हूँ। अभी सफलता बहुत कम प्राप्त हुई है।"

यह ज्ञान-ध्यान की चर्चा होती ही रहती थी। कभी-कभी उपनिषद् में से पढ़कर महताब दारा को समझाती भी थी।

बच्चे को लापता हुए कई मास व्यतीत हो गए थे कि एक दिन फिर शहंशाह को महताब की याद आ गई।

शहंशाह ने दारा को अपने पास बैठा कर पूछ लिया, "दारा ! महताब से कैसी पट रही है ?"

"अच्छी पट रही है, जहाँपनाह !"

"हम उसको अपने हरम में ले जाने की फिर कोशिश करना चाहते हैं।"

"मगर जहाँपनाह ! अब तो आपकी इस कोशिश पर मैं एतराज करूँगा।"

"दारा ! तुम हमारी ख्वाहिश में हारज होगे ?"

"जहाँपनाह ! आपकी यह कोशिश मेरी खुशी और आराम में हारज होती है। आप बड़े हैं। मुझसे ज्यादा ताकत और रसूख रखते हैं। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिए आपको मुझ पर रहम कर उसे वैसे ही रहने देना चाहिए जैसे वह है।"

"तो यह बात है ?" शहंशाह ने इसका मतलब यह समझा कि अब महताब दारा की हकीकी बीवी बन चुकी है। वह मुस्कराते हुए कहने लगे, "हम इससे खुश हैं। देखो दारा ! हम तुमसे मुहब्बत करते हैं। तुम्हारी खुशी और सहूलियत में हर्ज पैदा करना नहीं चाहते। हम इस खबर को सुनकर उसका पहला वजीफा फिर बहाल करते हैं।"

"तो जहाँपनाह ! यह हुक्म वज़ीरे-आला को दे दिया जाए, जिससे वह बेचारी फिर जिन्दगी सहूलियत से गुज़ार सके।"

अगले महीने जब महताब को अपने वज़ीफे की रकम मिली तो उसने शाही महल के खुसरे दारोगा को कह दिया, "करीम, गलती कर रहे हो। यह रकम मेरे वज़ीफे से ज़्यादा है।"

"बेगम साहिबा ! मैंने वजीरे-आला से कहा था। उन्होंने कहा है कि यह शहंशाह के हुक्म से दिया जा रहा है। उनका फरमान है कि महताब बेगम का रुत्बा अब शहज़ादा-ए-अज़ीम की दूसरी बेगमों के बराबर कर दिया गया है।"

महताब ने वह रकम ले ली मगर उसके इस्तेमाल से पहले उसने दारा से इसके मायने जानने चाहे। उसने दारा से मिलने पर बताया, "शहंशाह ने मेरा वज़ीफा बहन उदयपुरी के बराबर कर दिया है।"

"मुझे मालूम है।"

"पर क्यों ?"

"उनको ऐसा यकीन हो गया मालूम होता है कि आपका मुझसे सम्बन्ध वैसा ही है जैसा उदयपुरी बेगम से है।"

"मगर यह तो गलत है।"

"यह मैं जानता हूँ। मगर अम्मी ! मैं आपसे अपना ताल्लुक उदयपुरी से कुछ ज़्यादा गहरा ही समझता हूँ। उदयपुरी और दूसरी बेगमों से मेरा ताल्लुक तो जिस्मानी है। आपसे वह रूहानी है। मैं आपको अपनी अम्मी मानता हूँ।"

"मगर आपको जहाँपनाह को, यह ताल्लुक वाज़ा कर बता देना चाहिए था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारा ने मुस्कराते हुए कहा, "पर अम्मी ! क्या मैंने सारी दुनिया को इल्म-याफ्त: करने का ठेका ले रखा है ? कोई ठीक समझता है अथवा गलत, इसका फल उसको मिलेगा । मेरा इसमें तो इतना ही मतलब है कि मैं ठीक समझता हूँ या गलत ।"

इसके बाद महताब का जीवन पूजा-पाठ, शास्त्र पढ़ने और अपना रोजनामचा लिखने में व्यतीत होने लगा । कभी-कभी दारा को अवकाश होता तो उसके पास आकर किसी पुस्तक में से कुछ सुनने लगता था । जीवन सुख और शान्तिमय हो रहा था ।

एक बार, यह बच्चा होने के लगभग दो वर्ष उपरान्त की बात है, दारा आया और महताब से कहने लगा, "आपके वालिद और अम्मी की खबर आयी है । वे ग्वालियर के किले में कैद हैं । वहाँ का किलेदार आया था और बताता था कि एक बन्दी को जितना ज़्यादा-से-ज़्यादा आराम वह पहुँचा सकता है, पहुँचा रहा है ।"

महताब ने कुछ विचार कर कहा, "भाईजान ! क्या मैं उनको कुछ भेंट के रूप में भेज सकती हूँ ?"

"हाँ ।"

"मगर यह उनको पता नहीं लगना चाहिए कि यह मैं अपने वज़ीफे में से भेज रही हूँ । उनको यह पता चला तो स्वीकार नहीं करेंगे ।"

"तो फिर कैसे भेज सकता हूँ ?"

"आप यह अपनी तरफ से भेज दीजिए ।"

"इस पर उनको यहाँ के वाकिआत बताने पड़ेंगे ।"

"सच-सच बता दीजिएगा ।"

महताब ने आगरा से फल, मिठाइयाँ और कुछ वस्त्र इत्यादि भेज दिए । साथ ही उसने किलेदार को एक सहस्र रुपया दिया कि उनको ताज़े फल, सब्जियाँ वगैरा देने का प्रबन्ध किया जाए ।

: ४ :

शाहजी अपने पुत्र सम्भाजी और दूसरी पत्नी के परिवार के साथ आगरा पहुँचा तो दरबार आगरा आ चुका था । उसने शहंशाह शाहजहाँ के दरबार में हाज़िर हो नज़र-न्याज़ उपस्थित की और आगरा में ही रह जाने की स्वीकृति माँग ली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके उपरान्त सम्भाजी और शाहजी आगरा में ही रहने लगे। इनको गुज़ारे के लिए पुणे की जागीर से धन मिल जाता था। कहने को तो पुणे की जागीर मुगल-सम्राट के अधीन थी, परन्तु वास्तव में यह स्वतन्त्र व्यवहार रखती थी। बीजापुर से पुणे तथा मुगल साम्राज्य की ओर आने के सब मार्गों पर के सब दुर्ग शिवाजी ने अपने अधिकार में कर लिए थे। अब बीजापुर राज्य उन दुर्गों को वापस लेने का साहस नहीं करता था। बीजापुर में यह समझा जा रहा था कि वह क्षेत्र अब मुगल-सम्राट के अधीन है और इन दुर्गों को लेने का यत्न मुगल-सम्राट से युद्ध करने के तुल्य है। मुगल सल्तनत के अधिकारी यह समझते थे कि पुणे की जागीर यद्यपि किसी प्रकार की आय नहीं देती, इस पर भी यह बीजापुर पर अंकुश का काम कर रही है। बीजापुर अपना दावा अहमदनगर के राज्य पर करता था। अहमदनगर राज्य की रक्षा शिवाजी करता प्रतीत होता था।

इस सब काल में शिवाजी अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर रहे थे। वह सेना और शस्त्रास्त्रों में वृद्धि कर रहे थे और धन संचय कर रहे थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह हिन्दुओं को निर्भय कर रहे थे।

अब कल्याण से पुणे-सितारा तक और सब मध्यवर्ती क्षेत्र शिवाजी के अधिकार में हो गया था। इस पर भी शिवाजी को चिन्ता लगी रहती थी कि कहीं ये दो विशाल इस्लामी राज्य मिल गए और दोनों ने मिलकर उसके विरुद्ध अभियान चलाया तो वह दोनों का एक दिन तक मुकाबला करने में भी समर्थ नहीं है। ऐसी स्थिति में विश्वनाथ पुणे में रहता हुआ यह विभ्रम बनाए रखने में यत्नशील था कि दोनों महान् राज्यों का कल्याण इसी में है कि शिवाजी इस मध्यवर्ती क्षेत्र और दुर्गों में शासक बना रहे। इस सन्दर्भ में अधिक भय तो मुगल-सम्राट की ओर से था। अतः विश्वनाथ स्वयं कई बार बुड़हानपुर और दो बार आगरा गया था और मुगल शहज़ादा मुराद और शहंशाह शाहजहाँ की सेवा में भेंट देकर शिवाजी की अधीनता का प्रमाण प्रस्तुत करता रहा था।

इसी सम्बन्ध में सम्वत् १७०६ में वह दिल्ली आया हुआ था। उस समय शहंशाह दिल्ली में थे। आगरा से दिल्ली की शानो-शौकत ज़्यादा थी। हिन्दुस्तान भर की दौलत वहाँ आ रही थी और खर्च होती थी। इस कारण भीख माँगने वालों से लेकर शहंशाह-ए-हिन्द तक सोने से खेलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई देते थे।

दिल्ली में जहानआरा बेगम के नाम पर बनी सराय में विश्वनाथ ठहरा था। वह सराय एक महल ही प्रतीत होती थी और इसमें बड़े-बड़े और साज़ो-सामान से सजे कमरों में मेहमान ठहराए जाते थे। भाड़ा प्रत्येक कमरे का पाँच रुपये नित्य देना पड़ता था। सेवा के लिए नौकरानियाँ उपलब्ध थीं। उनके लिए पृथक् दाम देना होता था। पान, सुपारी, इलायची, मदिरा, माँस-मछली और वेश्याएँ प्रत्येक प्रकार का सुख-भोग का सामान सराय में उपलब्ध था।

विश्वनाथ अभी तक आगरा में ही आता रहा था। इस बार वह आया तो शहंशाह और उसका पूर्ण अमला दिल्ली पहुँचा हुआ था। दारा भी दिल्ली आया हुआ था। उसकी बेगमात भी साथ ही थीं। इस समय शहज़ादा मुराद भी दिल्ली में था और मुल्तान से औरंगज़ेब भी आया हुआ था। इस सब जमघट के कारण दिल्ली लोगों से भर रही थी। यही कारण था कि विश्वनाथ को किसी छोटी-मोटी सराय में स्थान नहीं मिल सका और उसे विवश होकर एक महँगी और भोग-विलास के विचार से कुख्यात सराय में रहना पड़ा।

विश्वनाथ ने अभी अपना सामान कमरे में टिकाया ही था कि सराय का दारोगा सेवा में आ उपस्थित हुआ। दारोगा ने झुककर सलाम की और अपने खाते में नाम-धाम लिखकर पूछने लगा, "कब तक रहने का खयाल है?"

"दरबार में हाज़िर हो कुछ अर्जी करनी है। ज्योंही इसके लिए मौका मिला, अर्जी पेश कर चला जाऊँगा।"

"आप गलत दिनों में आए हैं। आजकल यहाँ तीनों शहज़ादे बाहर से आये हुए हैं और उनके साथ हजारों लोग यहाँ आ पहुँचे हैं। दरबार को आपकी अर्जी सुनने में शायद कई महीने लग जाएँ।"

"मैं समझता हूँ कि इतनी देरी नहीं लगेगी। कुछ भी हो, अब आया हूँ तो काम करके ही जाऊँगा। खैर, यह बताइए दारोगा साहब! किराया पेशगी जमा कराना होगा क्या?"

दारोगा ने इस प्रस्ताव पर प्रसन्न होते हुए कह दिया, "एक मास का भाड़ा डेढ़ सौ रुपये पेशगी जमा करा दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ ने डेढ़ सौ रुपये निकाल कर दारोगा को दे दिया। इस पर दारोगा ने प्रसन्न हो भोजन-व्यवस्था की बात पूछ ली। विश्वनाथ अपने साथ अपना रसोइया और नौकर लाया था। तदनन्तर पान-सुपारी और शराब का प्रश्न उपस्थित हुआ। इस विषय में भी विश्वनाथ ने दारोगा की सेवाओं की आवश्यकता नहीं बतायी। इस सब अवस्था में दारोगा ने अन्तिम बात 'वेश्या' के विषय में पूछा ही नहीं।

विश्वनाथ इस सब झंझट से छुट्टी पा लम्बी यात्रा की थकावट दूर करने के लिए विश्राम करने लगा। वह बुड़हानपुर शहज़ादा मुराद से मिलने आया था। वहाँ से यह समाचार पा कि शहज़ादा साहब आगरा गए हैं, वह आगरा पहुंच गया। आगरा में यह समाचार मिला कि दरबार और सब शहज़ादे दिल्ली में एकत्रित हो रहे हैं, तो विश्वनाथ दिल्ली चला आया था। आगरा से दिल्ली की यात्रा दो दिन में कर वह दिन के तीसरे पहर सराय के द्वार पर पहुँचा था। अब दारोगा से निबट वह सो गया।

वह रात एक प्रहर गयी जागा और रसोइए को भोजन तैयार करने के लिए कहने लगा। उस समय नौकर ने सूचना दी कि एक घंटा से एक औरत प्रतीक्षा कर रही है।

विश्वनाथ बैठक में आ बैठा और उस औरत को भीतर लाने के लिए उसने नौकर को कह दिया। एक प्रौढ़ा स्त्री बैठक-घर में दाखिल हो सलाम कर सामने बैठ गयी।

"हाँ, बताइये अम्मीज़ान! क्या चाहती हैं आप ?"

"आप इस शहर में नये आए हैं। मैं आपकी खिदमत के लिए आई हूँ।"

"क्या खिदमत कर सकती हो तुम ?"

"शाही महल अथवा किसी शहज़ादा के महल के भीतर का किसी भी किस्म की खबर मैं ला सकती हूँ। उसके दाम से मैं अपना गुजारा करती हूँ।"

"एक खबर का क्या मोल लेती हो ?"

"यह तो खबर से हुज़ूर की खुशी पर मुनस्सर है। मैं शाही महल की खुफिया-से-खुफिया बात का ठीक-ठीक पता ला सकती हूँ।"

विश्वनाथ को अपनी बहन की याद आ गई। इस पर भी वह किसी

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का नाम-विशेष लेना नहीं चाहता था। उसने परीक्षा के रूप में यह कह दिया, "मैं चाहता हूँ कि शहज़ादा दारा शिकोह के हरम की सब मुअज़्ज़िज़ खातूनों के नाम और उनमें से कौन-कौन यहाँ है, की जानकारी मुझे मिल जाए।"

"यह कल पता चल जाएगा।"

"और जिसकी बाबत मैं जानना चाहता हूँ, यदि वह यहाँ हुई और उसके होने का प्रमाण मिल गया तो इनाम बीस रुपये और ठीक-ठीक नाम आया और वह खातून यहाँ हुई, मगर उसकी कोई निशानी प्रमाण के रूप में न ला सकीं तो दस रुपये और अगर वह खातून यहाँ न हुई तो पाँच रुपये।"

औरत ने झुक कर सलाम की और चली गई। विश्वनाथ का खयाल था कि यह शाही महल के खुसरों से खबर ले आती होगी और इस तरह अपना जीवन चलाती होगी। इस पर भी वह जानना चाहता था कि उसकी बहन यहाँ है अथवा नहीं।"

प्रातःकाल पूजा से निवृत्त होने तक वह औरत आ गई। सामने हाज़िर हो वह बोली, "हुज़ूर ! काम इनाम का किया है। उसका दाम बीस रुपए कम है ?"

"बताओ तो, फिर विचार करूँगा।"

"पहली बात यह है कि दारा शिकोह साहब अपनी तीनों बेगमात और एक दूसरी औरत के साथ यहाँ आये हुए हैं। उस दूसरी औरत के बारे में पहले तो खबर मिली थी कि वह शहंशाह की बेगम है। पीछे पता चला कि दारा की रखेल है। मगर हुज़ूर, मैं उससे मिलकर आई हूँ और पता कर आई हूँ कि वह एक हिन्दू साधनी है जो शहज़ादा की पीर मुर्शिद कही जाती है। जब मैंने दो-तीन बार दारा से उसके ताल्लुकात पर उससे सवाल किया तो वह चिढ़ कर बोली, किसलिए पूछ रही हो ? मैंने धीरे से कहा, 'हुज़ूर ! एक मराठा सरदार जानना चाहता है।' इस पर उसने चौंककर पूछा, 'क्या नाम है उसका ?'

"मैंने आपका नाम सराय में पता किया हुआ था। मैंने नाम बताया तो उस संत औरत ने मुझे इनाम दिया और कह दिया, 'उस सरदार से कह देना कि नीलमणि जिन्दा है। वह चाहती है कि आप शहज़ादा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने की कोशिश करें।' उसने मुझे पाँच रुपये दिये हैं।

"बताइए हुजूर ! ज़्यादा इनाम की बात है या नहीं ?"

"मगर कुछ इनाम तो तुम वहाँ से पा चुकी हो ?"

"यह तो और भी इनाम का काम है कि मैंने हुजूर को सच-सच बता दिया है, वरना आपको न बताती तो आप इनाम देते ही ?"

विश्वनाथ ने कुछ विचार किया और जेब से पच्चीस रुपए निकाल कर उस औरत के हाथ पर रखते हुए कहा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"खादिमा ! हुजूर, यह खुफिया नाम है। असल नाम की तो आपको न ज़रूरत है, न ही मैं बताऊँगी। मगर इस नाम से आप सराय के दारोगा को कहेंगे तो मैं हाज़िर हो सकूँगी।"

"एक बात और पता करो।"

"फरमाइए।"

"कल किसी वक्त मिलना। हम शहज़ादा साहब से आज मिलने जा रहे हैं। उसके बाद कुछ और दरियाफ्त करने के लिए तुम्हारी खिदमत की ज़रूरत पड़ेगी।"

वह औरत गयी तो विश्वनाथ दारा से मिलने की तैयारी करने लगा। वह चाहता था कि मुराद बख्श और शहंशाह से भी मिले। मगर वहाँ भेंट की न तो जल्दी थी और न ही उस दिन भेंट हो सकने की आशा थी। उसने जल्दी-जल्दी भोजन किया और दिल्ली के किले के बाहर जा पहुँचा। वह वहाँ शहज़ादा के दरबार में अपना नाम भेजने के लिए किसी को ढूँढने लगा। पता करने पर एक सिपाही निकल आया। सिपाही ने कह दिया, "हुजूर ! सिर्फ नाम शहज़ादा साहब के वज़ीर के पास ले जाने का एक रुपया। शहज़ादा के हाथ में देने के पाँच रुपए और किसी किस्म का जवाब लाना हो तो दो रुपए ऊपर।"

विश्वनाथ ने जेब से कागज़ निकाला तो उस सिपाही ने कलम-दवात सामने कर दी। विश्वनाथ ने अपना नाम और शिवाजी के दरबार में अपना ओहदा लिखा और मुलाकात के लिए वक्त माँग लिया।

उस सिपाही ने पढ़ा और विश्वनाथ को एक पेड़ के नीचे खड़ा हो प्रतीक्षा करने को कह, किले में चला गया। उसको एक प्रहर से अधिक काल तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। वह देख रहा था कि लोग सिपाहियों द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब काम करवाते हैं और रुपयों में इनाम देते हैं। उसके देखते-देखते सैकड़ों रुपए इधर से उधर हो गए थे। रुपये तो दिल्ली की नालियों में बहते दिखाई देते थे।

जब वह पेड़ के नीचे खड़ा था तो फटे-पुराने कपड़ों में एक व्यक्ति वहाँ सामने आ खड़ा हुआ और बोला, "हुज़ूर का इक़बाल बुलंद हो। हुज़ूर की अर्ज़ी मंज़ूर हो। आपके बाल-बच्चे फलें-फूलें और आक़बत सुधरे।"

विश्वनाथ उसका मुख देखने लगा। वह समझा नहीं कि यह किस लिए इतनी दुआएँ दे रहा है। इस पर उस आदमी ने कह दिया, "हुज़ूर! एक रुपया इनायत हो जाए।"

"एक रुपया?" विश्वनाथ के मुख से निकल गया।

"हुज़ूर! इतनी दुआएँ दी हैं। चार आने से कम में ही एक पड़ी।"

"तो यह सौदेबाजी है?" विश्वनाथ ने मुस्कराते हुए कहा।

"यहाँ सब चीज़ों का सौदा होता है। अगर आपके पास कुछ लाख मुहर हों तो आपको सूबेदारी भी मिल सकती है। मैंने तो एक रुपया ही माँगा है। जब तक रुपया खर्च नहीं हो जाता, हुज़ूर के नाम को दुआ देता रहूँगा।"

"और कितने दिन में यह रुपया खर्च होगा?"

"दिन हुज़ूर? एक घड़ी में। इससे इतने वक्त भर के लिए चरस मिल सकती है।"

"तो तुम ये दुआएँ वापस ले जाओ और किसी और से जाकर चरस के लिए माँगो।"

"वाह साहब! दुआ तो दे दी गई। अब वापस कैसे हो सकती है? हाँ, अगर आपको इनकी कुछ खास ज़रूरत नहीं तो कम दाम दे दीजिए।"

विश्वनाथ ने जेब में हाथ डाल कुछ ताँबे के सिक्के निकाल कर भिखारी के हाथ में रख दिए। भिखारी ने दुआ दे दी और किसी दूसरे अर्जी करने वाले को ढूंढने चला गया।

विश्वनाथ उकता कर लौट जाने की बात विचार कर रहा था कि उसके पास एक अन्य व्यक्ति आ खड़ा हुआ। यह वह सिपाही नहीं था, जिसको उसने अपना नाम-धाम लिखकर भेजा था। इससे वह कुछ परेशानी अनुभव करता हुआ उस नवागन्तुक की ओर देखने लगा। नये आए ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुस्कराते हुए पूछ लिया, "हुजूर का नाम विश्वनाथ है ?"

"हाँ भाई !" विश्वनाथ ने ध्यान से उसके मुख पर देखा। इस आदमी के कपड़े से यह स्पष्ट था कि कोई भीख माँगने वाला नहीं है।

"आप सरदार शिवाजी के राजदूत हैं ?"

"हाँ।"

"मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। आप कहाँ ठहरे हैं ?"

इस पर विश्वनाथ ने कुछ चिढ़ कर कहा, "मगर आप हैं कौन और किसलिए मिलना चाहते हैं ?"

"देखिये !" उसने कुछ समीप होकर और आगे-पीछे देखकर कि कोई सुन तो नहीं रहा, कहा, "मैं शहंशाह के तीसरे फरज़न्द औरंगज़ेब का पैग़ाम लेकर आया हूँ। वे बुड़हानपुर में सूबेदार बनाये जा रहे हैं और यह आपके फायदे की बात होगी कि उनके एक मोहतबिर आदमी से बातचीत कर लें।"

विश्वनाथ हैरान था कि किस प्रकार दिल्ली के लोग किसी भी नए आदमी के आगे-पीछे चिपट उसका रहस्य जानने में लग जाते हैं। उसे यह समझ आया कि दिल्ली की प्रत्येक ईंट के नीचे एक जासूस छिपा बैठा है। इस पर उसने कह दिया, 'मैं नहीं जानता कि आप दर-हकीकत वे हैं जो कह रहे हैं। इसका प्रमाण मिलना चाहिए और तब ही मैं आपको मुलाकात के लिए वक्त दे सकता हूँ।'

"अभी तो आप यह बताइये कि मैं आपसे कहाँ मिल सकता हूँ पीछे मैं अपनी असलियत का सबूत दूंगा। बात तो उसके पीछे होगी।"

"ठीक है। मैं जहानआरा सराय में ठहरा हूँ। कमरा तेरहवाँ है। मैं वहाँ दिया जलने के समय मिल सकूँगा।"

"अच्छी बात। अब मैं चलता हूँ। आपकी अर्ज़ी ले जाने वाला सिपाही आ रहा है।"

: ५ :

विश्वनाथ अभी इस बीच में आ टपकने वाले की बात पर विचार ही कर रहा था कि वह सिपाही जो उसके नाम की पर्ची ले गया था, आया और सलाम कर बोला, "हज़ूर ! शहज़ादा साहब एक बहुत ही ज़रूरी काम से मसरूफ थे। इसलिए आपकी अर्ज़ी का जवाब जल्दी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आ सकता। इस पर तो इनाम कुछ ज्यादा मिलना चाहिए।"

"जवान क्या है ?"

"आप अभी चलिए। शहज़ादा साहब आपसे अपनी खास बैठक में मिलना चाहते हैं।"

"तब तो तुमने इनाम की बात की है।"

इस पर उस सिपाही ने हाथ फैला दिया और विश्वनाथ ने दस रुपए उसके हाथ पर रख दिए। सिपाही ने झुककर सलाम की और विश्वनाथ को अपने साथ किले में ले गया। उसके हाथ में एक परवाना राहदारी था और दिखाते हुए वह उसे ले जा रहा था। कई घूम-घुमाव के रास्तों से जाना पड़ा और कई स्थानों पर परवाना राहदारी दिखाना पड़ा। आखिर दोनों एक बहुत ही खूबसूरत बने भवन की ड्योढ़ी में जा खड़े हुए।

उस सिपाही ने वही परवाना राहदारी वहाँ खड़े दरबान को दिया तो वह दरबान विश्वनाथ को लेकर भीतर एक बैठक में चला गया। विश्वनाथ देख रहा था कि कमरे के सामने मसनद पर तकिये का आश्रय लिये एक पेंतीस-चालीस वर्ष की आयु का पुरुष अकेला बैठा है। उस आदमी के पीछे एक संगमरमर की जाली बनी हुई थी। जाली के पीछे बिल्कुल अँधेरा था। यह बैठा व्यक्ति दारा ही था। विश्वनाथ उसके दर्शन दरबार-ए-आम में कर चुका था। अतः उसने झुककर सलाम की और सामने खड़ा हो गया।

जब दरबान बैठक से बाहर चला गया तो दारा ने विश्वनाथ को बैठने के लिए कहा। विश्वनाथ सामने मसनद के नीचे बैठ गया। दारा ने कहा, "मुझे पता चला है कि आप अपनी बहन के मुनअल्लिक खबर लेने के लिए परेशान हैं। इसी गरज से मैंने आपको बुलाया है। आपकी बहन इस वक्त इस जाली के पीछे बैठी हमारी बातें सुन रही है। मेरी ख्वाहिश थी कि आपको उसके दर्शन करा देता, मगर आजकल हमारे महल में ईंट-ईंट के नीचे जासूस छिपे रहते हैं। इसलिए यह आज मुमकिन नहीं। आज आप बात नहीं कर सकते। दो-चार दिन में हमारा छोटा भाई औरंगज़ेब दक्खन के लिए रवाना होने वाला है। तब मैं कोशिश करूँगा कि आप दोनों में मुलाकात हो सके।

"खैर, बात यह है कि आपकी बहिन महताब एक फरिश्ता है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलम-फाजिल है, और मेरे हरम की रोशनी है । हम—मेरा मतलब यह है कि मैं और मेरी बेगमें, उसके मुरीद हैं । वह हमारी पीर-मुर्शिद, जो कुछ भी समझिये, है । उसके नाते ही मैं आपकी बहुत इज्जत करता हूँ ।"

"मैं बहिन की इस तारीफ के लिए हुज़ूर का निहायत ही मशकूर हूँ । मेरी अर्जी यह है कि क्या वह आज़ाद नहीं हो सकती ?"

"इसके लिए आपको मेरे तख्त पर बैठने की इन्तज़ार करनी पड़ेगी । अभी तक महल शहंशाह के खुसरे आसद खाँ के मातहत है । यह खुसरा शहंशाह का वफादार और बहुत ही लायक मुन्तज़िम है । उसके रहते महताब महल के बाहर जा नहीं सकती ।"

"मैं आपका बहुत ही मशकूर हूँ कि आपने मुझ पर इतनी इनायत की है । मैं यहाँ शहज़ादा मुराद साहब से मिलने आया था और यहाँ आकर पता चला कि सूबेदार बदल गये हैं । अब राज्य का कार्य तो नये सूबेदार से बुड़हानपुर चलकर करूँगा । अभी शहंशाह के दीदार हासिल करने के लिए दिल्ली में ही ठहरूँगा ।"

"यह मुलाकात हम करा देंगे ।" फिर दारा ने बात एकदम बदल कर पूछ लिया—"हाँ, एक बात है । हम और शहंशाह भी यह जानने की ख्वाहिश रखते हैं कि शिवाजी का क्या इरादा है ?"

विश्वनाथ सतर्क हो बोला, "इरादा बिल्कुल ठीक और साफ है । राजा शिवाजी मुगल सल्तनत की हिफाज़त में रहना चाहते हैं । जब मुगल फौज बीजापुर पर हमला करेगी, वे अपनी पूरी ताकत से मुगल सेना की मदद करेंगे ।"

"हमारा अभी ऐसा कोई इरादा नहीं है ।"

"यह इरादा कुदरती है । हमें मालूम है कि बीजापुर ने वह मामूली-सा खराज भी जो ऐहदनामा में मुकर्रर हुआ था, कई साल से नहीं दिया । इसलिए मेरे विचार में वह दिन दूर नहीं जब दो लाख मुगल-फौज नदी की बाढ़ की तरह उमड़ती हुई बीजापुर और गोलकुण्डा पर जा पहुँचेगी ।"

दारा मुस्कराया और बोला, "मामूली दस लाख सालाना के लिए हम यह सब नहीं करेंगे ।"

"पर हज़ूर ! सवाल दस लाख का नहीं, सवाल इताअत का है । देखना यह है कि क्या शिवाजी मुगल सल्तनत को मदद गोलकुंडा के साथ जंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में करेंगे या नहीं ?"

"तो क्या शिवाजी हमारी मदद करेंगे ?"

"वह वचनबद्ध है। साथ ही वह ऐसी जगह पर बैठे हैं कि जहाँ से पुरअसर मदद कर सकते हैं। राजा शिवाजी ने कल्याण अपने अधिकार में कर लिया है। अगर मुगल शहंशाह की नज़र-ए-इनायत रही तो राजा साहब का इरादा है कि पूरे कोंकण के इलाके पर शहंशाह की सल्तनत का फैलाव कर दिया जाएगा।"

"राजा साहब तो हिन्दू-धर्म की परवरिश कर रहे हैं न ?"

"हाँ, मगर वे इस्लाम की मुखालफत नहीं कर रहे। मुसलमानों को अपने मजहब पर अमल करने की पूरी आजादी है।"

"मगर हमने सुना है कि कल्याण में कुछ औरतें जो मुसलमान बन चुकी थीं, उनको पकड़ कर फिर हिन्दू बना लिया गया है।"

"हुज़ूर ! वे तो हिन्दू थीं। उन्होंने कभी कलमा नहीं पढ़ा। उनसे सिर्फ ज़बर-ज़नाह किया गया था। ज़बर-ज़नाह तो कलमा पढ़ना नहीं माना जाता। उनको हिन्दू बनाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। वे तो हिन्दू ही थीं।"

"मगर इस पर कल्याण के मुल्लाओं ने एतराज किया है और इस बिना पर हमारे छोटे भाई ने मुराद को वहाँ से सूबेदार हटवाने में कामयाबी हासिल की है। मैं नहीं चाहता था कि मुराद वहाँ से हटाया जाय। वह खुद भी हटना नहीं चाहता था, मगर औरंगजेब साहब की ज़ेरसरपरस्ती में मुल्क-भर के मुल्ला-मौलाना इस बात के लिए बावैला मचाने की धमकी देने लगे तो मुराद साहब को हटाना पड़ा है।"

"मगर शहज़ादा साहिब ! यह तो सरासर जुल्म हुआ है। मेरा मतलब है कि एक झूठे बहाने पर इतना बावैला करना और उस पर सल्तनत के इन्तजाम में तब्दीली करनी।

"कोई मुल्ला यह साबित नहीं कर सकता कि उसमें से किसी औरत को कलमा पढ़ाया गया था या किसी औरत ने कलमा पढ़ा हो।"

"हम भी यही समझते हैं। मगर सल्तनत के काम कई किस्म के दबावों में चलते हैं। खैर, आप औरंगज़ेब साहब से मिलकर इस बात को खुशअस्लूबी से तय कर लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारी खबर है कि कल्याण पर कब्ज़ा करते वक्त मुसलमानों का कत्लेआम किया गया है।"

"इस बात की तहकीकात की जा सकती है। यह एक सरासर झूठी बात है।"

"पर क्या मुल्ला लोग भी झूठ बोलते हैं ?"

"अगर उन्होंने कुछ ऐसी बात कही है तो हम इसको झूठ साबित कर सकते हैं।"

इस पर दारा ने फिर बात बदल दी, "आपको सराय में कुछ तकलीफ तो नहीं ?"

"जी नहीं। सब किस्म का आराम है। शहंशाह-हिन्द की मेहर है जो ऐसी आरामदेह सराय यहाँ बन गयी है।"

मुलाकात खत्म हुई। दारा खड़ा हुआ तो विश्वनाथ ने झुक कर दारा को सलाम की और फिर नज़र भरकर जाली की तरफ देखा। वह उधर कुछ देख नहीं सका। जाली के पीछे बिल्कुल अँधेरा था।

दारा बगल की दीवार में एक दरवाज़े से चला गया। विश्वनाथ घूमा तो दरबान कमरे में दाखिल हो सलाम कर विश्वनाथ से बोला, "चलिए।"

विश्वनाथ रात का खाना खाकर अपने रहने की बैठक में पहुँचा ही था कि खादिमा आ गई।

विश्वनाथ उसको कहने ही वाला था कि अभी उससे कोई काम नहीं कि वह खादिमा बोली, "आज मैं महल के भीतर से आपके नाम एक पैगाम लाई हूँ।"

"हाँ, बताओ।"

"नीलमणि कहती है कि आपने शहज़ादा-ए-अज़ीम साहब से मुलाकात की, उससे उनको बहुत खुशी हासिल हुई है। जल्दी ही दूसरी मुलाकात का इन्तज़ाम करिये। आपका काम बन जाएगा।"

आज विश्वनाथ ने पाँच रुपये ही खादिमा को दिए और कहा, "इधर से कुछ भी संदेश नहीं। मैं ज़रूरत के वक्त तुमको बुलवा लूँगा।"

खादिमा ने सलाम की और चली गयी। विश्वनाथ को समझ आया कि उसके इस ऊँचे दर्जे की सराय में ठहरने का नतीजा है कि सब मुनासिब लोग मिल रहे हैं और काम तेज़ी से हो रहा है। इसके साथ वह यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देख रहा था कि [illegible] पानी की तरह [illegible] पड़ रहा है।

वह अभी खादिमा की बात पर विचार ही कर रहा था कि अपने को औरंगज़ेब का मोहतबिर आदमी कहने वाला आ पहुँचा। उसके साथ सराय का मुहाफिज़ भी था। विश्वनाथ को समझ आ गया कि वह आदमी सराय वाले को अपनी वाकफियत के लिए लाया है। इस पर भी विश्वनाथ जो कुछ दारा से सुन आया था, उससे बहुत ही सतर्क था। विश्वनाथ ने उस आदमी को कमरे में दाखिल होते देख कहा, "साहब! इनको साथ ज़ामिन के तौर पर लाए हैं ?"

"हाँ।" उत्तर सराय वाले ने दिया, "मैं इनको पिछले बीस साल से जानता हूँ। ये मोतबिर आदमी हैं। यहाँ एक बहुत बड़ी हस्ती से ताल्लुक रखते हैं। इनसे शौक से बात कर सकते हैं।"

इतना कह सराय वाले ने सलाम की और कमरे से बाहर निकल गया। सराय वाले के चले जाने के बाद उस आदमी ने कहना शुरू किया, "आपके यहाँ आने की खबर तो शहज़ादा साहब को कल रात ही मिल गयी थी। वह खादिमा बहुत काम की औरत है। एक बात उसके मुतअल्लिक बता दूं कि वह औरत सब तरह से मोतबिर है। वह नाम-धाम के अलावा और कुछ नहीं बताती। वह भी उतना ही जितना आप जानना चाहें।"

इससे तो विश्वनाथ को चिन्ता लग गई, मगर वह कुछ कह नहीं सका। वह नीलमणि की सुरक्षा की चिन्ता कर रहा था। उसे चिन्तित देख उस आदमी ने कह दिया, "आपको अपनी बहिन की बाबत फिक्र नहीं करनी चाहिए। हमारे शहज़ादा साहब उसकी खूबसूरती, उसके सलूक और सलीके पर फिदा हैं। इस वास्ते वह आपसे अपने ताल्लुकात बनाना चाहते हैं।"

"मुझे शहज़ादा साहब की बहिन-भाई पर इतनी मेहर देख बहुत तस्कीन हुआ है। मैं शहज़ादा साहब का मश्कूर हूँ।"

"खयालात का यह इज़हार उनसे कह दूंगा। इस वक्त तो मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि आप बुड़हानपुर कब तक जाने वाले हैं ?"

"यहाँ शहंशाह के दीदार हासिल करने के लिए ठहरा हूं।"

"एक बात और हो रही है। लोग आपको शहजादा के एक मुतअस्सब मुसलमान होने की बात कहेंगे। शहजादा साहब का कहना है कि वे इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजहब को लाना मुनासिब नहीं समझते, न ही वे लाते हैं । एवं उनका मक्सद अपनेहर एक काम में सियासी ही है । इसलिए आप आइए और वे आपसे दिल खोलकर बात करेंगे ।"

"मुझे यह सब कुछ सुनकर बहुत खुशी हासिल हुई है। हम भी सियासियात को मजहब से फरक कर देखते हैं । इससे हमारा खयाल है कि शहज़ादा साहब से हमारे ताल्लुकात पहले सूबेदार साहब से ज़्यादा अच्छे और दोस्ताना होंगे । मैं बुड़हानपुर में हाज़िर हो जाऊँगा ।"

वह आदमी जाने से पहले बोला, "एक शै शहजादा साहब की हिफ़ाजत में आपके खानदान की है । वे आपको उसे बुड़हानपुर में दिखायेंगे और आप उसे देखकर खुश होंगे ।"

"क्या शै है ?"

"यह मुझे मालूम नहीं । मुझे बताया भी नहीं गया कि क्या शै है । मैं तो शहज़ादा साहब का पैगाम हरफ-ब-हरफ आपको बता रहा हूँ ।"

"खैर, हम बहुत बेताबी से उस शै को देखने के लिए खिदमत में हाजिर हो जायेंगे ।"

मुलाकात खत्म हुई और अब विश्वनाथ बहुत उत्सुकता से भविष्य में होने वाली घटनाओं की प्रतीक्षा करने लगा । मगर सिवाय दिल्ली में लोगों की भीड़-भाड़, भिखमंगों की भरमार, वेश्याओं के दलालों की भाग-दौड़ और नगर-भर में शादियानों की आवाज़ के कुछ भी वह देख नहीं सका ।

वह इस बात को समझने का यत्न कर रहा था कि दिल्ली में खाने-पीने की चीजों की महँगाई है, रुपया पानी की तरह बह रहा है, इस पर भी भिखमंगों की भरमार क्यों है ? सबसे अधिक विस्मयजनक बात यह थी कि पेशेवर औरतों के सिवाय, दिल्ली में और कुछ भी सस्ता नहीं था । जहाँ जासूस और भिखारी खूब डटकर रुपया वसूल करते थे, वहाँ औरतें दिल्ली के हर कोने में खड़ी कुछ आनों पर मिल जाती थीं ।

इस विषय में वह एक दिन खादिमा से पूछ ही बैठा । वह पूछने लगा, "खादिमा बी ! यहाँ पेशेवर औरतें बहुत ज़्यादा हैं ?"

"क्यों, जी ऊब गया है उनसे ?"

'नहीं । मैंने तो उनको कभी इस्तेमाल नहीं किया तो फिर जी ऊबने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की बात हो सकती ही नहीं। मगर शहर में घूमते हुए उन औरतों और उनके दलालों से वास्ता तो हर रोज़ पड़ता रहता है।"

"हाँ हुज़ूर! यह सब उन लोगों की वजह से है जो एक से ज़्यादा औरतें रखने का शौक तो रखते हैं, मगर तौफीक नहीं रखते। न जिस्मानी न धन-दौलत की। ये लोग औरतों को फुसला कर उनके खाविन्दों के घरों से निकाल लाते हैं और फिर उनको सड़कों पर छोड़कर चले जाते हैं। उनमें से मुझ-जैसी भी हैं जो कार-आमद काम करने की अक्ल रखती हैं। ऐसी औरतें बाजार में बिकने नहीं जातीं। वे अपनी अक्ल और मेहनत के भरोसे ज़िन्दगी गुज़ार लेती हैं। मगर मुझ-जैसी खुशकिस्मत बहुत कम हैं और उन बेचारियों को टके-टके पर बाज़ार में बिकना पड़ता है।

"हुज़ूर! पेट बुरी बला है। यह हर किस्म के अच्छे-बुरे काम करने पर मजबूर कर देता है।

"अब देखिये, मैं देहात से यहाँ लाई गई थी। एक कहार की लड़की हूँ। एक पड़ोसी पठान के खेत पर काम करने जाती थी। खेत हमारे पुरखों का ही था। हमारे किसी बुजुर्ग ने फौज से भागे हुए पठान को नौकर रख लिया। उसने क्या चतुराई की सो तो मैं जानती नहीं, मगर सुना है उसने हमारे बुजुर्गों से हमारी ज़मीन लिखा ली। तब से वह मालिक और हम उसके कामे हो गये। अब उसी पठान के एक पोते ने मुझे बरगलाया और मैं उसके साथ दिल्ली भाग आई। वह नौकरी की तलाश में घूमता रहा। उसमें वह कामयाब नहीं हो सका। एक दिन मुझको दिल्ली में वह बेयारो-मददगार छोड़कर भाग गया। उसके बाद उसके दीदार हासिल नहीं हुए। कुछ देर तक तो मैं भी पेशा करती रही, मगर मेरी अक्ल ने ज़ोर मारा और मैं यह काम करने लगी।

"महल की औरतों के बहुत किस्म के काम महल से बाहर रहते हैं और उन औरतों के काम मैं किया करती हूँ। बाहर के लोग भी कई किस्म के काम महल की औरतों से रखते हैं। मैं उनके भी काम करने की कोशिश करती रहती हूँ। इससे गुज़ारा बहुत अच्छी तरह होता रहता है। मैंने वह काम छोड़ दिया है।"

"और क्या अब शादी कर ली है?"

"नहीं। शादी कोई नहीं करता। सब इस्तेमाल करके फेंक जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं। इसलिए मैंने न तो किसी से उंस पैदा की है न ही किसी के दौलत की मुझे लालसा है। मैं अब साहबे-तौफीक हूँ। अपना एक मकान खरीद लिया है। जब कभी तबीयत करती है किसी मर्द को पकड़ कर ले जाती हूँ और पीछे दो रुपये देकर, उसके चूतड़ों पर लात मारकर घर से निकाल देती हूँ।

"शाही महल के लोगों से मेरे अच्छे ताल्लुकात हैं। इसलिए मेरे अमल का बदला लेना कोई नहीं चाहता।"

विश्वनाथ समझ गया कि धन ने प्राय: सबकी मति भ्रष्ट कर रखी है।

: ६ :

आखिर विश्वनाथ को एक दिन शहंशाह के दीदार हासिल करने के लिए अवसर मिला। वज़ीर-ए-आला का हुक्म आया कि अगले दिन दोपहर से एक घड़ी पहले दरबार-ए-आम में हाज़िर हो जाए।

विश्वनाथ ठीक समय पर दरबार-ए-आम में चाँदी के जंगले और सोने के जंगले के भीतर जाकर खड़ा हो गया। समय पर शहंशाह अपने दो शहज़ादों के साथ आया और मसनद पर मोतियों के झालर वाले शामि-याने के नीचे बैठ गया। शहंशाह ऊँची चौकी पर और शहज़ादे ऊँची चौकी के नीचे फर्श पर बैठे थे।

वजीर साहब ने बारी पर गुर्ज़दारों को संकेत किया और उन्होंने विश्वनाथ को वजीर के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

शहंशाह ने वजीर साहब को कुछ कहा तो वजीर साहब ने विश्वनाथ को कह दिया, "बादशाह सलामत हुक्म फरमाते हैं कि विश्वनाथ को अपने रिश्तेदारों की हिमायत करनी चाहिए। उसे राजा शिवाजी को यहाँ दर-बार में हाज़िर होने को कहना चाहिए, जिससे हम उसको खिल्लत अता कर सकें।"

विश्वनाथ ने प्रथानुसार झुककर सलाम की। इसके साथ ही उसने कहा कि मैंने हुक्म सुन लिया है और उस पर अमल करूँगा।

इसके बाद गुर्ज़दारों के संकेत पर विश्वनाथ को पुन: अपने स्थान पर ले जाकर खड़ा कर दिया गया। दरबार समाप्त हो जाने पर विश्वनाथ दीवान-ए-आम के दालान में खड़ा दिल्ली से जाने की बात सोच रहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि वही सिपाही जो एक दिन उसे दारा के पास ले गया था, आया और बोला, "हुजूर आइये ! आपकी फरमाइंश है।"

"किसकी फरमाइश है ?"

"शहज़ादा-ए-अज़ीम साहब की।"

"तो चलो।"

उसको उसी मकान के सामने लाकर खड़ा कर दिया गया, जहाँ उसे पहले लाया गया था। वहाँ दरबान के द्वारा भीतर सूचना भेजी गयी। इस बार उसे एक घड़ी-भर प्रतीक्षा करनी पड़ी।

जब वह भीतर पहुँचा तो इस बार कोई दूसरा कमरा था। दरबान उसे वहाँ छोड़ चला गया और कुछ ही पीछे बगल की दीवार में एक द्वार खुला और नीला उसके सामने हाथ जोड़े आ खड़ी हुई।

"भैया !" उसके मुख से केवल यह ही निकला और फिर उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। आँसुओं से उसका गला रुँध गया और वह बोल नहीं सकी।

विश्वनाथ ने उसकी पीठ पर हाथ फेर उसे प्यार दिया और फिर उसे वहाँ बिछी मसनद पर बैठा कर कहा, "सुनाओ, कैसी हो ?"

"इस समय सब प्रकार से प्रसन्न हूँ। भगवद्-भजन का भरपूर समय मिलता है और चित्त शान्त रहता है।"

"बहुत अच्छा है। मुझ यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई है। सुना है शहज़ादा साहब तुम्हारा बहुत मान करते हैं ?"

"हाँ भैया ! ईश्वर की कृपा है। यह सब पिताजी से प्राप्त विद्या का फल है।"

"पिताजी का कुछ ज्ञान है ?"

"हाँ; वे ग्वालियर के दुर्ग में बन्दी हैं। सुना है वहाँ सिवाय स्वतंत्रता के और किसी प्रकार का कष्ट नहीं।"

"क्या मैं उनसे मिल सकता हूँ ?"

"कोशिश कर सकते हो। सुना है वहाँ का किलेदार बहुत ही नेक आदमी है। यहाँ से किसी किस्म का हुक्म लेना ठीक नहीं होगा।"

बहुत बातें हुईं। गाँव के विषय में, विश्वनाथ के अपने विषय में और फिर नीला के विषय में। विश्वनाथ ने अपनी पत्नी मिल जाने की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बतायी। अपने दूसरे विवाह की बात भी बतायी। नीला के लड़के की बात हुई तो नीला ने बताया, "मुझे उसका ज्ञान नहीं है। कभी-कभी सुनती हूँ कि वह जीवित है।"

आधा घंटा-भर बातों के बाद दारा शिकोह वहाँ उसी द्वार से चला आया, जिससे नीला आयी थी। इसका अभिप्राय था कि बहिन-भाई में मिलने का समय समाप्त हो गया है। नीला उठी और उसी द्वार से भीतर चली गयी।

इसके उपरान्त दारा ने ताली बजायी तो दरबान आ पहुँचा। उसके साथ विश्वनाथ को विदा कर दिया गया।

किले से निकल विश्वनाथ ने वहाँ से उसी क्षण चल देने का विचार बना लिया। उसका विचार था कि सराय में जाते ही वह अपने और अपने साथ आये नौकरों के घोड़े तैयार कर चल देगा, परन्तु ऐसा हो नहीं सका। वह अभी सराय में पहुंच अपने साथियों को तैयार होने को कह, सराय के दारोगा के पास सराय के भाड़े का हिसाब करने पहुँचा ही था कि वहाँ खादिमा से भेंट हो गयी। वह सराय वाले के सामने बैठी कुछ बता रही थी। विश्वनाथ को आया देख वह उठ खड़ी हुई और बोली, "तो आप आ गए हैं ?"

"हाँ, कुछ काम है ?"

"आपसे एक साहब मिलना चाहते हैं।"

"कौन हैं वे ?"

"यह तो मैं जानती नहीं। एक हिन्दू मराठा सरदार मालूम होते हैं।"

विश्वनाथ को शाहजी की याद आ गयी। शाहजी का अपनी पत्नी जीजाबाई से बहिष्कार का व्यवहार ऐसा रहा था कि पुणे का रहने वाला कोई भी उनसे सहानुभूति नहीं रखता था। पिछले तीन वर्ष में वह एक बार पुणे गए थे और एक मास तक वहाँ रहकर पुनः आगरा लौट आए थे। विश्वनाथ को विदित था कि शाहजी और उनके लड़के सम्भाजी आगरा में हैं। इस कारण उसको संदेह तो हुआ, परन्तु विश्वास नहीं हुआ कि यह शाहजी हैं। निश्चय करने के लिए उसने पूछ लिया, "क्या आयु होगी इस मराठा सरदार की ?"

"तीस वर्ष से कम ही होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नाम नहीं बताया ?"

"नहीं। एक बात कही है। वह यह कि वह वहीं का रहने वाला है, जहाँ के आप हैं।"

"तो कब मुलाकात हो सकेगी ?"

"आज सायंकाल।"

"पर मैं तो अभी जा रहा हूँ।"

"तो अपने हमवतन के साथ इतनी भी हमदर्दी नहीं कि एक दिन जाना रुक सके ?"

"हमदर्दी होने से पहले वाक्फिअत जरूरी होती है। इन महाशय ने अपना नाम तक नहीं बताया।"

"इसमें कुछ वजह हो सकती है। आपको उसे मौका देना चाहिए।"

"खादिमा ! मालूम होता है उसने बहुत-सा इनाम देने का वचन दिया है।"

"कुछ नहीं। हाँ, उसकी सिफारिश एक बहुत बड़े शख्स ने की है। वहाँ से हमेशा इनाम मिला करता है। इसलिए बिना इनाम की बात किए चली आई हूँ।"

"जब खादिमा किसी की सिफारिश करे तो मुझे मान जाना चाहिए। इसलिए मैं कहता हूँ कि मैं शाम को अपने कमरे में मिलूंगा।"

इस पर भी विश्वनाथ ने सराय वाले से कह दिया, "मैं कल बहुत सुबह यहाँ से चल देना चाहता हूँ। हमारे घोड़े बिलकुल तैयार, दिन निकलने से पहले सराय के द्वार पर मिल जाने चाहिएँ।"

"मिल जाएँगे।" सराय वाले ने कहा। विश्वनाथ अपने कमरे में पहुँचा और उसने साथियों को तैयारी करने के लिए कह दिया।

सायंकाल शिवाजी का बड़ा भाई सम्भाजी उपस्थित हो गया। यद्यपि सम्भाजी की आयु छब्बीस वर्ष की थी, परन्तु देखने में वह अभी बीस से कम आयु का ही प्रतीत होता था। यूँ भी उसका शरीर सुगठित तथा सुन्दर था। उसने कमरे में प्रवेश करते कहा, "भाई विश्वनाथ ! पहचाना ?"

"हाँ; आइए राजा साहब ! यहाँ गुमनाम किसलिए घूम रहे हैं ?"

सम्भाजी ने अपने चारों ओर देखकर कहा, "इसमें वजह है। यह तुमको कल मालूम हो जाएगी। मुझे मालूम हुआ था कि तुम एक-आधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन में जाना चाहते हो ?"

"मैं कल सुबह जाना चाहता हूँ ।"

"मैं तुम्हारे साथ चलूंगा ।"

"कहाँ ?"

"पुणे ।"

"मैं तो रास्ते में ठहरता हुआ जा रहा हूँ ।"

"कहाँ ?"

"पहले ग्वालियर । वहाँ के किलेदार से कुछ काम है । फिर बुड़हानपुर । वहाँ सूबेदार से काम है ।"

इस पर सम्भाजी का मुख उतर गया ।

"क्या बात है राजा साहब ?"

"मैं एक और शख्स के साथ आपके साथ जाना चाहता था ।"

"कौन है वह ?"

"शाही महल की एक खातून है ।"

"और उसको साथ किसलिए ले जा रहे हैं ?"

"अपनी पत्नी बनाने के लिए ।"

इस पर विश्वनाथ गम्भीर हो विचार करने लगा । उसे गम्भीर विचार में पड़ते देख सम्भाजी ने कह दिया, "आप ऐसा करिए । मुझे आगरा तक साथ ले चलिए । वहाँ से मैं अपने पिताजी से धन ले आगे की यात्रा का प्रबन्ध कर लूंगा । यहाँ मेरे पास पर्याप्त धन नहीं है । साथ ही आपके साथ चार-पाँच आदमी हैं और फिर मैं हूँ, आप भी हैं । मार्ग में हम उनकी रक्षा कर सकेंगे ।"

"मगर यह खातून अपने माता-पिता की रजामन्दी से जा रही है अथवा यह अपहरण हो रहा है ?"

"यह तो शुद्ध अपहरण है, परन्तु अधर्माचरण नहीं । आज देश में सहस्रों हिन्दू औरतें बल-छल से अपहरण की जा रही हैं । मैं तो एक का ही कर रहा हूँ ।"

विश्वनाथ का ध्यान अपनी दूसरी पत्नी लक्ष्मी और फिर उस पर दारा की पूछगीछ की ओर चला गया । इस स्मृति ने उसको निर्णय करने में सहायता की । उसने कहा, "राजा सम्भाजी ! मैं यहाँ से प्रातः पौ फटने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर चलूँगा और आपकी, दिल्ली दरवाज़ा के बाहर आमों के झुरमुट में प्रतीक्षा करूँगा। एक घड़ी-भर प्रतीक्षा करूँगा। यदि आप उस काल में आ सके तो मैं आपको आगरा तक पहुँचा देने का उत्तरदायित्व लेता हूँ।"

"बहुत धन्यवाद है। विश्वनाथ भाई ! मैं वहाँ समय पर पहुँचने का यत्न करूँगा।"

सम्भाजी गया, परन्तु अगले दिन वह निश्चित स्थान पर समय के भीतर नहीं आया। उसकी बहुत प्रतीक्षा की गयी। किसी कठिनाई के उत्पन्न हो जाने की सम्भावना मान समय से आधा घड़ी अधिक तक ठहर, विश्वनाथ चल दिया।

: ७ :

चार दिन में ग्वालियर पहुँच एक सराय में अपने साथियों को ठहरा, विश्वनाथ दुर्ग के प्रबन्धक आसद अली से मिलने के लिए किले के द्वार पर जा पहुँचा। आसद अली ने अकेले व्यक्ति को निरापद मान उससे मिलना स्वीकार कर लिया और विश्वनाथ से अपने दीवानखाने में भेंट की।

विश्वनाथ ने प्रारम्भिक मान-सम्मान और परिचय के उपरान्त कहा, "मैं अपने पिताजी के दर्शन करने आया हूँ।"

"आपका नाम ?"

"विश्वनाथ।"

"कहाँ से आए हैं ?"

"इस समय दिल्ली शहंशाह के दरबार में अपनी वफादारी ज़ाहिर कर और शहज़ादा दारा शिकोह के दर्शन कर चला आ रहा हूँ। वहाँ अपने राजा शिवाजी का एक पैगाम शहंशाह को देने के लिए गया था। उस पैगाम को इज्ज़त के साथ देखा गया है।"

"वहाँ आप अपनी बहिन से भी मिले हैं ?"

"नहीं।" विश्वनाथ ने झूठ बोल दिया। वह नहीं जानता था कि आसद अली कितना कुछ जानता है और वह दारा के हरम की एक औरत को बाहर बैठक में लाने के मुतअल्लिक क्या विचार करेगा।"

"तो आपको किसने बताया है कि आपके वालिद यहाँ कैद हैं ?"

"यह तो दरबार के कुछ लोगों से पता चला है। मगर जब मैंने शहज़ादा साहिब से आपके नाम पत्र माँगा तो उन्होंने आपकी तारीफ की और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि इस मामूली से काम के लिए तो आप अपने अख्तियार से इजाज़त दे सकते हैं ।"

इस पर आसद अली कुछ देर तक विचार करता रहा । फिर बोला, "यह तो ठीक है कि मैं इतनी छोटी बात के लिए शाही फरमान की ज़रूरत नहीं समझता, मगर यह तब ही हो सकता है जब आप वादा करें कि इस इजाज़त और यहाँ कैदियों से की गयी गुफ्तगू का जिक्र किसी से भी नहीं करेंगे ।"

"यह मैं वायदा करता हूँ ।"

इस पर आसद अली विश्वनाथ को त्रिभुवनकीर्ति के सामने ले गया । माता-पिता पुत्र को देख बहुत प्रसन्न हुए । यह भेंट चार वर्ष के उपरान्त हुई थी । उस समय त्रिभुवनकीर्ति आगरा में एक माननीय दरबारी माना जाता था ।"

"पिताजी, यह कैसे हुआ है ?"

"तुम्हारे आगरा से चले जाने के उपरान्त नीला ने गर्भपात कराने से इन्कार कर दिया । मुझको नीला को समझाने के लिये कहा गया । मैंने कह दिया, यह गर्भपात शहंशाह के शेष पुण्य भी क्षीण कर देगा ।

"इस पर शहंशाह ने पूछ लिया, 'पंडित ! यह क्रोध से बद्-दुआ दे रहे हो ?"

"मैंने कह दिया, 'भविष्य-वाणी तो यह है कि दस वर्ष तक जिसमें से एक वर्ष समाप्त हो चुका है, आपके भाग्य उच्च रहेंगे, परन्तु यह खुदाई उसूल है कि उसका वक्त बुरे कर्मों से कम होता जाता है और सब मज़हब हमल गिराने को बुरा फेल ही मानते हैं ।' इस पर शहंशाह बोले, 'एक शाही मज़हब है जो सब दुनियावी मज़हबों से ऊपर है । जो बात दुनियावी मजहब गलत मानते हैं वह शहंशाह को हर रोज़ करना पड़ता है । इसलिए यह शाही मजहब की रूह से बुरा नहीं बल्कि एक अच्छा काम है ।'

"मैंने अपनी सफाई पेश कर दी । मैंने कहा कि इस मज़हब के विषय में मुझको पता नहीं । मेरा इल्म वहाँ तक नहीं पहुँचता । इस पर शहंशाह ने कह दिया, 'तुमको इसकी बाबत अपनी राय नहीं देनी चाहिए ।'

"मैंने क्षमा माँग ली ।

"ऐसा मालूम होता है कि मेरी सफ़ाई पर और मुआफी पर शहंशाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को संतोष नहीं हुआ। बातचीत के दो दिन पीछे तुम्हारी माता को तुम्हारी बहन का संदेश मिला कि वह उसको मिलने न जाए। हमने आगरा छोड़ देने का विचार कर लिया। उससे अगले दिन ही हमें पकड़ कर यहाँ ले आया गया और अब यहाँ आए हमको चार वर्ष हो चुके हैं।"

विश्वनाथ इस सबको भाग्य का चक्कर मानता था। वह देख रहा था कि ये मुसलमान सब किस्म के जुल्म करते हुए भी फल-फूल रहे हैं। उसने अपने पिता से इसका कारण पूछ लिया।

त्रिभुवनकीर्ति ने कह दिया, "विश्वनाथ, जैसे व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है, वैसे ही जातियाँ भी अपने कर्मों का फल भोगती हैं। जैसे व्यक्ति सनातन धर्म का उल्लंघन कर पापी बन जाते हैं, वैसे ही जातियाँ भी सनातन धर्म का उल्लंघन कर पाप की भागी बनती हैं।

"हिन्दू समाज ने घोर पाप किया मालूम होता है, जिससे इस समाज का कई सौ वर्ष से दासता की बेड़ियों को सहन करना पड़ रहा है।"

"किस सनातन धर्म का उल्लंघन हो गया है हिन्दू समाज से, जिसका इतना भयंकर दण्ड मिल रहा है ? यह तो हिन्दू समाज को मलियामेट करके रख देगा।"

"सबसे बड़ा पाप तो यह है कि समाज के किसी भी प्राणी को कर्म का विचार छोड़ हिन्दू बड़ा-छोटा मानते हैं। राजा-रईस तो अपने धन और पद के मद में कुछ भी मान लें, परन्तु ब्राह्मण, जिनको अपनी सरलता के लिए विख्यात होना चाहिए, वे भी परमात्मा के बनाए मनुष्यों को छोटा-बड़ा मानें तो भयंकर परिणाम होने ही चाहिएँ। ब्राह्मण समाज के मुखिया रहे और जब ये ही पापी हो गए तो पूर्ण समाज ही पापी हो गया मानना चाहिए।"

"तो क्या किया जाए ?"

"देखो विश्वनाथ ! राज्य की ओर से आन्दोलन नहीं चलाए जा सकते। राज्य को तो पक्षपात से रहित होकर अपने धर्म का पालन करना चाहिए। यह ब्राह्मण वर्ग का काम था कि समाज की मनोवृत्ति को ठीक रखते। उन्होंने ऐसा नहीं किया। प्रत्युत इसके विपरीत ही आचरण किया है। इस पर भी समाज ब्राह्मणों को धन तथा प्रतिष्ठा देता रहा है। इस कारण समाज भी पापी हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर विश्वनाथ ने अपनी दूसरी पत्नी की कथा सुना दी।

"ठीक है।" त्रिभुवनकीर्ति ने कह दिया, "इसमें तुम्हारी पत्नी का क्या दोष था ? उसके पति ने राज्य का लगान नहीं दिया। सब धन अपने विवाह पर खर्च दिया और फिर उसकी पत्नी बंधक बनाकर ले जायी गयी। जब वह वहां से छूटी तो उसको अपने कर्म पर लज्जित होना चाहिए था। पत्नी को दूषित समझ त्याग देना तो घोर पाप हो गया था। वह पति और वह समाज भी, जिसमें उसे अभी भी ब्राह्मण माना जाता है, घोर पाप-कर्म की भागी तो हैं ही।

"इस लिए विश्वनाथ ! समाज में ब्राह्मण बनाओ, जो योग्य हों, बुद्धि शील हों, धर्मपरायण हों और धर्म के वास्तविक अर्थों को समझाने वाले हों। इससे जन-जन में धर्म की स्थापना होगी। फिर अधर्म उस समाज में पनप नहीं सकेगा।

"अब यहां इस दुर्ग में एकान्तवास करते हुए मैं अपनी भूलों पर भी विचार करता हूँ तो लज्जा से भूमि में गड़ जाता हूँ। एक बार दारोजी के पिताजी ने मुझे भागवत-परायण के लिए कहा था। मैं गया और भागवत पारायण आरम्भ हो गया। मैंने पूर्ण भागवत सात दिन में समाप्त कर दिया। सुनने वालों को कुछ भी समझ नहीं आया। न ही मैंने समझाने का यत्न किया। उसके लिए समय ही नहीं था। मैं आज विचार करता हूँ कि क्या लाभ हुआ उस पारायण करने का ? मैंने किस बात की दक्षिणा ली थी ? तोते की भाँति पढ़ जाने की ?

"परिणाम जानते हो क्या हुआ है ? मैं अपने पापों का फल भोग रहा हूँ और गाँव के लोग जो मुझे महान् विद्वान मानते थे, अपनी इस मान्यता का फल भोग रहे हैं।"

विश्वनाथ की विचार सारिणी को एक प्रबल धक्का लगा। वह भारत की हिन्दू समाज की दुर्दशा का चित्र अब स्पष्ट रूप से देखने लगा था।

उसने कह दिया, "पिताजी ! हमारे संत महात्मा लाखों की संख्या में देश में घूमते तथा कथा-कीर्तन करते रहे हैं ?"

"वैसे ही जैसे मैं भागवत-पारायण कर आया था। न वे महात्मा स्वयं कथा को समझते हैं, न ही उनमें प्रजा को समझा सकने की योग्यता है। भला देखो न ! भगवद्गीता को परम पवित्र शास्त्र मानने वाले मरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भागते फिरते हैं। एक पठान या तुर्क गाँव में आकर सौ को हाँक कर ले जाता है। यह शास्त्र के तत्त्व को न समझने के कारण ही हो रहा है।"

"तो फिर क्या किया जाए ?"

"विश्व! ब्राह्मण, जो विद्वान हों और कर्मठ हों, उनका निर्माण करो। यह बात उन साधु-सन्तों के करने से नहीं हो सकेगी, जो यह कहते-फिरते हैं—'वेद पढ़त ब्रह्मा मरे चारों वेद कहानी।' या यह उन लोगों के करने से नहीं होगा जो कर्म करने को पाप मानते हैं, जिनको नैष्कर्म्य के अर्थ घर छोड़ कर संन्यास ले लेना समझ आ रहा है।"

"परन्तु यह तो सब साधु-सन्त कर रहे हैं। मैं आपको एक घटना बताता हूँ। आजकल सन्त तुकाराम जी की ख्याति महाराष्ट्र-भर में फैल रही है। अपने महाराज ने भी उनकी एक कविता सुन ली और उनको ढूंढने चल पड़े। जब उनके आश्रम का पता पा लिया तो उन्होंने एक दिन उनको अपने पथ-प्रदर्शन के लिए बुला भेजा। उन्होंने बहुत सुख-सुविधा से अपने नगर में रखने का वचन दिया। संतजी का उत्तर आया, 'राजन्! मैं संसार त्याग कर उससे भागा फिरता हूँ और आप मुझको फिर उसी में फँसाना चाहते हैं।। मुझे तो एकाकी ही रहने दीजिए। एकान्त और शान्त रहने दीजिए। राजसी मान मेरे लिए बेकार है। मेरे लिए तो वन और बीहड़ ही एकमात्र निवास स्थान है। घास का बिछोना चट्टान का पलँग और आकाश की छत ही मेरा महल है।'

"शिवाजी महाराज उनके 'अभंग' में इस उत्तर को पढ़कर मुग्ध हो गए और एक दिन राज-पाट छोड़ चल दिए। वे तुकाराम जी के एकान्त आश्रम पर जा पहुँचे और वहाँ ही गुमनाम रहना आरम्भ कर दिया।

"भगवान् की कृपा से राजमाता समर्थ स्वामी रामदास जी की शिष्या हैं। उनको शिवाजी का पता चला तो वहाँ जा पहुँचीं। जीजाबाई जी ने समर्थ स्वामीजी की दो-चार उक्तियाँ सुनायीं और भर्त्सना की तो शिवाजी लौट आए। वे माताजी के आग्रह की अवहेलना नहीं कर सके।"

"हाँ बेटा! यदि तुकाराम जी को देश की अवस्था का कुछ भी ज्ञान होता और वे कोटि-कोटि हिन्दू समाज की दुःखी प्रजा का चिन्तन करते तो उनके 'अभंग' स्वामी रामदासजी के दोहों से अधिक प्रभावशाली होते। प्रभु-भक्ति तो यह है कि प्रभु की प्रजा को सुखी रखा जाए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विश्वनाथ अपने पिता की बातों से दुगने उत्साह से पूर्ण महाराष्ट्र में स्वराज्य-प्राप्ति का संकल्प बना पुणे जा पहुँचा।

: ८ :

विश्वनाथ को यह देख विस्मय हुआ कि सम्भाजी पहले ही वहाँ पहुँचा हुआ है। मार्ग में आगरा उसको एक दिन ठहरना पड़ा था और चार दिन बुड़हानपुर में सूबेदार से भेंट के लिए ठहरना पड़ा। इन दिनों में सम्भाजी आगे निकल गए थे।

पुणे में विश्वनाथ राजा साहब से मिलने गया तो बैठक के बाहर सम्भाजी को खड़े देख चकित रह गया। विश्वनाथ ने बताया, "दिल्ली में दिल्ली दरवाज़ा के बाहर मैं आपकी बहुत देर तक प्रतीक्षा करता रहा था। जब आप नहीं आए तो वहाँ से चल पड़ा था। आप वहाँ से कब चले थे ?"

"मै तो आपके दिल्ली दरवाज़ा वाले स्थान पर जा पहुँचने से पहले ही वहाँ से चल पड़ा था।"

"और उस चिड़िया को पकड़ लाए हैं क्या ?" विश्वनाथ को विश्वास नहीं आता था कि वह शाही खानदान की औरत को ला सका होगा। उसका अनुमान ठीक निकला। सम्भाजी ने कहा, "नहीं। प्रातः पौ फटने से पूर्व ही उसका समाचार आया कि वह कैद कर दी गयी है। कोई नौकरानी बक गयी थी और उसकी बड़ी बहन ने धोखे से अपने कमरे में बुला उसको बन्द कर रखा है।

"इस समाचार के मिलते ही मैं वहाँ से भाग खड़ा हुआ। मैंने वहाँ रहना सुरक्षित नहीं समझा।"

"और वह थी कौन ?"

"यदि किसी से नहीं कहें तो बता सकता हूँ।"

"कोई शौर्य की बात हुई तो बताने से लाभ ही होगा। इस पर भी जैसा आप चाहेंगे।"

"है तो शौर्य की बात, परन्तु सफल हो जाती तब ही। इस समय तो हँसी की बात बन जाएगी।"

"परन्तु क्या फिर यत्न नहीं किया जा सकता ?"

"तो आप इसमें यत्न करने को पसन्द करते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ। अगर वह खास शाही खानदान की हो तो।"

"थी तो शहंशाह की सबसे छोटी लड़की मेहरुन्निसा। आगरा में दो-तीन बार उससे मिलने में सफल हुआ था। मैं दिल्ली में उससे मिलने आया तो वह शाही खानदान की औरतों पर पाबन्दी से दुःखी हो भागने का प्रस्ताव करने लगी। मैं तैयार हो गया। सब-कुछ निश्चय हो चुका था। आपने जब उस दिन बहुत प्रातःकाल चलने की बात की तो मैं बहुत प्रसन्न था। वही समय तो उसने भागने का निश्चय किया था, परन्तु किसी प्रकार से बात बाहर निकल गयी। उसके बन्दी किए जाने का समाचार तो वह औरत ही लायी थी, जिसके द्वारा मेरा उससे सम्बन्ध बना था।"

विश्वनाथ शहंशाह की लड़की का नाम सुन स्तब्ध रह गया। यह इतनी बड़ी बात थी कि एकदम विश्वास नहीं होता था। वह विचार करता था कि सम्भाजी सफल नहीं हुआ तो ठीक ही हुआ है। औरतों के लिये तो राज्य विध्वंस हो जाते हैं।

राजा साहब से भेंट हुई तो विश्वनाथ ने अपनी यात्रा के उद्देश्य के विषय में बताना आरम्भ कर दिया। उसने कहा—"दिल्ली में इनकलाब हो गया है। शहज़ादा मुराद के विषय में शहंशाह को झूठी-सच्ची बहुत शिकायतें गयीं तो उसको वापस बुला लिया गया था।

"महाराज! मैं आगरा पहुँचा तो मालूम हुआ कि दरबार दिल्ली चला गया है। मैं वहाँ जा पहुँचा। वहाँ जाकर मालूम हुआ कि मुराद बख्श के स्थान शहंशाह का तीसरा लड़का औरंगज़ेब दक्खन का सूबेदार नियुक्त हुआ है। दिल्ली में तो उनसे बातचीत का अवसर मिला नहीं। यह अवसर बुड़हानपुर पहुँचकर मिला।

"तीन दिन प्रतीक्षा करने पर चौथे दिन सूबेदार साहब के सामने उपस्थित हो मैंने अपने राज्य के विषय में बताया तो वे इस बात से बहुत प्रसन्न हुए कि हमारा राज्य अब बीजापुर के साथ नहीं है। वे यह चाहते हैं कि युद्ध के समय हम अपने दुर्ग उनकी सेना के प्रयोग के लिए खोल दें। मैंने जब यह कहा कि हम मुगल सल्तनत में हैं तो हमारी सेना भी, जो उन दुर्गों में है, वह मुगल सेना ही है। इस पर भी यदि हमारी सेना उनकी रक्षा में असमर्थ प्रतीत हुई तो निस्सन्देह तुर्क और पठान सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ बुला ली जाएगी।

"इससे सूबेदार साहब प्रसन्न नहीं हुए, परन्तु वह मेरी बात को गलत नहीं कह सके। साथ ही मैंने यह कह दिया कि मुगल सेना उन दुर्गों में प्रसन्न और सुखी नहीं हो सकती। सुख-आराम के विचार से वे तीसरे दर्जे के दुर्ग हैं।

"इस पर शहज़ादा साहब प्रत्यक्ष में संतुष्ट प्रतीत होते थे, परन्तु भीतर-भीतर से नाराज़ प्रतीत होते थे। उन्होंने सिंहगढ़ में उनके एक मुहाफिज़ अधिकारी को बैठाने की बात कही।

"मैंने कह दिया, 'हुज़ूर! कभी आप सिंहगढ़ आएँ और उसकी हालत देखें तो खुद अन्दाजा लगाइएगा कि वहाँ कोई मुगल सिपाही रहना भी पसन्द करेगा या नहीं।'

"इस पर शहज़ादा शाहब ने बात बदल दी। उनका कहना था कि आपने अधीनता तो स्वीकार की है, परन्तु उसके अनुरूप खराज नहीं भेजा।

"मेरा कहना था, 'पुणे राज्य सीमावर्ती राज्य है। उसकी खूबी तो सीमा की रक्षा करने में है। वैसे यह बहुत बड़ा उपजाऊ क्षेत्र नहीं। इस कारण सुचारु रूप से रक्षा के लिए सल्तनत को कुछ देना चाहिए। वहाँ से लेने का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।'

"इस युक्ति ने उनके दिमाग में कुछ असर पैदा किया है। वे पूछने लगे, 'मरकज से कितनी मदद आप लोग चाहते हैं ?'

"मैंने बताया, 'सरहद पर दस दुर्ग हैं और उनकी रक्षा के लिए दस सहस्र सेना रखनी पडती है। दस सहस्र सेना तैयार और सब प्रकार के हथियारों से लैस रखने के लिए बीस लाख सालाना आवश्यक है। यह कम-से-कम है। इसमें राज्य का खर्च नहीं डाला गया। साथ ही मुगल सेना के खर्चे से यह बहुत कम है। हमारे लोग तो मक्का और बाजरा खाकर निर्वाह कर लेते हैं। अगर मुगल सेना वहाँ रखेंगे तो दस हज़ार के लिए एक करोड़ रुपया खर्च करना पड़ सकता है।'

"मेरी इस गिनती से वे प्रभावित तो हुए, परन्तु चिन्तित भी प्रतीत होते थे। उन्होंने पूछ लिया, 'इस समय इन दुर्गों में कितनी सेना है ?'

'दस सहस्र है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और आप बीस लाख सालाना खर्च कर रहे हैं ?'

'हाँ हुजूर।'

'इसका मतलब है कि आपको इतनी आमदन है ?'

'नहीं हुज़ूर ! राज्य की आमदन इससे कम है। इसलिए तीन वर्ष हुए हमें बीजापुर का कोश लूटना पड़ा था। तब का लूटा हुआ अभी तक काम चलाता रहा है। मगर अब फिर मुश्किल महसूस होने लगी है।'

'तो फिर कहीं डाला जायगा ?'

'अगर कहीं से यह मदद नहीं मिली तो यह करना ही पड़ेगा।'

'मगर यह लूट मुगल खजाने की नहीं होनी चाहिए।'

'मैंने मुस्कराते हुए कह दिया, 'हम जानते हैं कि मुगल सूबेदार इतने मूर्ख और दुर्बल नहीं हैं. जितना कल्याण का सूबेदार था।'

"इसके बाद बिना किसी किस्म के निर्णय के मुलाकात समाप्त कर दी गयी और मैं इधर चला आया हूँ।"

"देखो विश्वनाथ !" राजा शिवाजी ने कह दिया, "हम अब किसी भी सल्तनत को खराज नहीं देंगे। हम एक स्वतन्त्र राज्य हैं, परन्तु हमारी शक्ति नहीं कि हम दो बड़े पड़ोसी राज्यों में से किसी से भी युद्ध कर सकें। इस पर भी हमें अपने स्वराज्य को विस्तार देना है। कम-से-कम महाराष्ट्र में स्वराज्य स्थापित करना है। इसके लिए नीति ही कार्य कर सकती है। हमें यह यत्न करना चाहिए कि बीजापुर, दिल्ली और गोल-कुण्डा परस्पर तनाव की हालत में रहें और उनमें तनाव की अवस्था में हमको राज्य-विस्तार का अवसर मिल सकेगा।

"साथ ही औरंगज़ेब लूमड़ा है। लूमड़े में गुण उसकी मक्कारी होती है। हमको इसके गुण से अधिक गुणवान बनकर रहना होगा।

"हमारे नीति-विशारद मन्त्री तुम हो। इस कारण कोई ऐसी बात निकालो कि शहज़ादा मुसलमानी राज्यों से सदा उलझा रहे और हमारी ओर ध्यान देने का इसे अवकाश ही न मिले।"

विश्वनाथ ने कह दिया, "इसके लिए यत्न किया जा सकता है।"

"कोई ढंग विचार करो।"

"होगा, तनिक विचार करने का अवसर दीजिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ के साथ औरंगज़ेब की एक और विषय पर बातचीत हुई थी। उसको उसने राजा शिवाजी को बताने की आवश्यता नहीं समझी। यह उसके अपने परिवार के साथ सम्बन्ध रखने वाली बात थी।

राज्य-कार्य समाप्त कर औरंगज़ेब ने ही बात आरम्भ की। उसने कहा, "हमने दिल्ली में अपना एक खास आदमी आपके पास भेजा था।"

"हाँ, हज़ूर ! उसने कहा था कि मुझे एक शै दिखानी है।"

"हाँ। आप अपनी बहिन से मिले हैं ?"

"नहीं मिल सका।"

"उसके लड़के के विषय में कुछ पता चला है ?"

'जी नहीं।"

"बात यह है कि जब शहंशाह ने जल्लादों को हुक्म दिया कि बच्चे को ज़बरदस्ती पकड़ कर गला घोंटकर मार डाला जाए तो रोशनआरा बेगम को बच्चे पर रहम आ गया और उसने जल्लाद को एक कसीद रकम की रिश्वत देकर बच्चे को बचा लिया। बच्चा महल से बाहर मेरे पास मुल्तान भेजने से पहले उसे महताब बेगम को दिखाया गया था। उसके बाद मौका नहीं मिला। मैं उसे दिल्ली साथ नहीं ले जा सका। जब मेरी तक़र्रुरी यहाँ हो गयी तो मैंने उस बच्चे को यहाँ मँगवा लिया है। क्या आप उसे देखना चाहेंगे ?"

"मगर हज़ूर ! कैसे सिद्ध होगा कि वह नीला बहन का ही लड़का है ?"

"उसकी सूरत यह सबूत मुहैय्या कर रही है। वह बिल्कुल अपनी माँ से मिलती है।"

"तब तो उसके दर्शन करना चाहूँगा।"

इस पर औरंगज़ेब ने तकिए के पीछे रखी घण्टी बजा दी। एक नौकरानी आयी तो उसने हुक्म दे दिया—"हिदायत को ले आओ।"

उस नौकरानी ने बहुत ध्यान से विश्वनाथ की ओर देखा और फिर मुस्कराकर चली गयी। पाँच मिनट में तीन वर्ष की आयु का एक लड़का उस नौकरानी की उँगली पकड़े हुए विश्वनाथ के सामने लाकर खड़ा कर दिया गया।

विश्वनाथ ने देखा और पहचान लिया। उसने उसे गोद में लेने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए दोनों अपने हाथ फैला दिए। लड़का ऐसे खिच आया जैसे चुम्बक की लोहे का टुकड़ा खिच आता है।

विश्वनाथ ने उसे गले से लगा लिया। लड़का भी उससे चिपक तो गया, परन्तु शीघ्र ही वह संकोच अनुभव करने लगा और फिर बाँहों में पकड़े हुए, परन्तु कुछ पीछे हटकर पूछने लगा, "कौन हो तुम ?"

"तुम किससे गले मिल रहे हो ?" विश्वनाथ ने मुस्कराकर पूछा।

लड़का इस बात का उत्तर नहीं दे सका।

इस पर विश्वनाथ ने स्वयं ही बता दिया, "मैं तुम्हारा मामा हूँ।"

"वह क्या होता है ?"

"तुम्हारी माँ का भाई हूँ।"

"माँ का ? पर तुम कभी उससे मिलने नहीं आये?"

"कहाँ है तुम्हारी माँ ?"

"भीतर है।"

विश्वनाथ ने लड़के को अपनी गोद में बैठाते हुए औरंगज़ेब से कहा, "बहुत प्यारा लग रहा है। आपको इसे इसकी माँ का इल्म कराना चाहिए।"

"जब मैं शहंशाह बनूँगा, तब इसकी माँ मेरी बेगम बनेगी। उस वक्त यह अपनी माँ को जान जाएगा।"

इस विचार से विश्वनाथ का हृदय भीतर-ही-भीतर काँप उठा। शहंशाह की पत्नी, शहज़ादा की रखेल और छोटे शहज़ादा की भावी पत्नी। वह मन में कल्पना कर अपनी बहन की दुर्दशा पर परेशानी अनुभव करने लगा था।

औरंगज़ेब समझ गया। उसने पूछ लिया, "तो आपको संदेह है इस बात पर ?"

"किस बात पर हुज़ूर ?"

"यही कि हम शहंशाह बन सकेंगे ?"

"आप शहंशाह की तीसरी औलाद हैं।"

"हाँ। मगर मौजूदा शहंशाह भी तो अपने वालिद की पहली औलाद नहीं। जानते हो कितनी बड़ी खून की नदी पार कर वे तख्तो-ताज़ तक पहुंचे थे ? एक भाई की आँखें निकाल दी गयी थीं और फिर उसे मरवा डाला गया था। दूसरे को, जो गद्दी पर बैठ चुका था, भी मरवा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही साँस लिया था ।"

"हज़ूर, तवारीख पढ़ी है ।"

"और फिर हमारे बाबा को भी अपने बाप से बगावत करनी पड़ी थी । यह तो बाबा के बाप की काबलियत थी कि वे मारे नहीं गये, वरना बाबा ने मार डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी ।

"और फिर शहंशाह अकबर के बाप हुमायूँ भी तो कुदरती मौत नहीं मरे थे । कहते हैं कि उनको कुतुबखाने की छत पर से धकेल दिया गया था । अगरचे मशहूर यही किया गया था कि उनका पाँव फिसल गया था । यह शहंशाह अकबर के उस्ताद बहरामखाँ ने खुद शहंशाह बनने के लिए करवाया था ।"

"हज़ूर ! मेरा इल्म इतना वसीह नहीं । इस पर भी मैं समझता हूँ कि आपको दिल्ली के तख्त तक पहुँचने में बहुत मुश्किलें दरपेश होंगी ।"

विश्वनाथ ने यह सब-कुछ ऐसे ढंग से कहा था कि जिससे शहज़ादा यह समझे कि वह इस योजना की कठिनाई डराने के लिए नहीं कह रहा, प्रत्युत उनमें सहायक होने के लिए कह रहा है । कम से कम औरंगज़ेब यही समझा था । उसने विश्वनाथ को और उसके द्वारा शिवाजी को अपने पक्ष में करने के लिए कह दिया, "आगरा में एक नजूमी थे । नाम था पंडित त्रिभुवन कीर्ति । उन्होंने मेरे मुस्तकबिल का नजूम लगाया है । वे कहते हैं कि आज से पाँच साल बाद मेरा सितारा बुलन्द होने वाला है । मैं हिन्दुस्तान का शहंशाह बनने वाला हूँ ।"

औरंगज़ेब जानता था कि ज्योतिषी का विश्वनाथ से क्या सम्बन्ध है । इस पर भी उसने बताया नहीं ।

विश्वयाथ ने कह दिया, "अगर इस नजूम का इल्म आपके बड़े भाई को लग गया तो वे इन पंडितजी को जीवित दफना देंगे ।"

"पता तो चल गया है और इसी वजह से वे ग्वालियर के किले में कैद कर दिये गए हैं ।"

"यह आपको किसने बताया है ?"

"नजूमी ग्वालियर के किले में कैद है । यह मैं जानता हूँ । यह भी मैं जानता हूँ कि उनसे शहंशाह और दारा ने भी नजूम लगवाया था । पंडितजी ने सच-सच बात बता दी होगी । इससे मैं इस नतीजे पर पहुँचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हूँ कि उन्होंने ज़रूर बता दिया होगा कि उनका काम खत्म होने वाला है। उन्होंने मुझे एक तावीज़ भी दिया है, जो मेरी हिफाज़त करता है।"

विश्वनाथ चुप कर रहा। उसे चुप देख औरंगज़ेब ने पूछा, "मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे राजा शिवाजी मेरी मदद का वादा करें तो मैं राजा साहब को जागीर में कुछ और इलाका दे सकता हूँ। यह इलाका समुद्र के नज़दीक का होगा और उनको नमक के खांचों से लाखों रुपये सालाना की आमदन बढ़ जायेगी।"

"और क्या मदद आप चाहते हैं ?"

"यही कि अगर कहीं मुझ पर कोई मुसीबत आ जाए तो राजा साहब मेरी हिफाज़त करेंगे।"

"यह मदद हो सकेगी, मगर इसके लिए आपस के ताल्लुकात गहरे होने चाहिएँ। आप अब यहाँ आए हैं और मैं आपसे अक्सर मिलने आया करूँगा। परमात्मा ने चाहा तो आपके राजा साहब से अच्छे ताल्लुकात बन जायेंगे और इनसे दोनों को फायदा होगा।"

दोनों गम्भीर विचार में पड़ गए। विश्वनाथ जानता था कि उसके सामने बैठा शहज़ादा मतान्ध व्यक्ति है। वह इस विषय में उसके विचार जानता था। इस कारण उसने कहा, "मैं एक महीने के करीब दिल्ली में रह आया हूँ। उससे किसी भी भले आदमी की हमदर्दी वहाँ के तरज़-ए-हुकूमत के साथ नहीं हो सकती।"

"क्या देखा है वहाँ आपने ?"

"बिल्कुल बद-इन्तज़ामी। वहाँ रुपया सब काम करा सकता है। लोगों का इखलाक इतना गिर चुका है कि बड़े-से-बड़े रईस की बीवी को उसका दाम देकर खरीदा जा सकता है।

'हुजूर ! मैंने सुना है कि दरबारियों की बीवियाँ शहंशाह की रखेल होने को फख्र की बात मानती हैं। रात को दिल्ली की गलियों में शराब की दुकानें खुलती हैं और उसको खरीदने वाली मर्दों से ज्यादा औरतें होती हैं।"

"किस दरबारी की बीवी के मुतअल्लिक ऐसी बात सुनी है ?"

"सुनी नहीं, बल्कि आँखों से देखी है। एक दिन मैं किले के बाहर खड़ा बाजीगरों के करतब देख रहा था कि दो औरतें पालकियों में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतरीं और किले के अन्दर जाने लगीं। इस पर वहाँ खड़े भिखमंगों ने ऊँची आवाज़ में कह दिया, "रास्ता छोड़ दो। शहंशाह जहाँपनाह के लुकमे आ रहे हैं।"

"वे औरतें खड़ी हो गयीं और हज़रत! बुर्का उठा उन भीख माँगने वालों की तरफ मुस्कराते हुए देखने लगीं। इस पर एक ने आगे बढ़ सलाम कर दी और कहा, 'सुभान अल्लाह'! इस पर दोनों औरतों ने अपनी ज़ेबों से रेजगारी निकाली और उन 'लुकमा' कहने वालों की तरफ फेंकी और बुर्का डाल किले में चली गयीं।

"मैंने उन भिखमंगों से पूछा, 'ये कौन थीं?'

"इस पर वे हैरानी से मेरे मुख की तरफ देखते हुए पूछने लगे, 'तो आप नहीं जानते?'

"मैंने कहा, 'मैं दिल्ली में एक अजनबी हूँ।'

"उन्होंने अपना हाथ फैला दिया। मैंने एक चवन्नी उनको दी तो वे सलाम कर बोले, 'वह, जो कुछ लम्बी है सरदार जफर खाँ की दूसरी बीवी है और जो कुछ नाटे कद की है वह सरदार खलीलउल्ला खाँ की सबसे छोटी बेगम है।"

इस पर औरंगज़ेब ने हँसकर कहा, "तो आप यह माजरा देख आए हैं?"

"हाँ, हजूर!"

"मैं यह सब खुराफात बन्द कर दूंगा। यह सब सल्तनत की जड़ों में तेल दे रही हैं।"

"इस वक्त दिल्ली में जूआ, चोरी, अय्याशी, राहज़नी, ज़बर-ज़नाह और कत्ल लबे-सड़क होते देख जाते हैं।"

औरंगज़ेब अपने बाप की हुकूमत में दोष सुनकर बहुत खुश हो रहा था। उसने कह दिया, "तो आपको मेरी मदद करनी चाहिए।"

"हाँ। हम चाहते हैं कि रिआया के साथ इन्सानों का-सा सलूक किया जाए। उन पर जुल्म करने वालों को सज़ा दी जाए। रिश्वत लेना व देना गुनाह करार दिया जाए।"

"यह सब होगा।"

विश्वनाथ ने जाते समय हिदायत से पूछ लिया, "मेरे साथ चलोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहाँ ?"

"मेरे घर पर ।"

"वह कहाँ है ?"

"यहाँ से दूर है ।"

"बाबा कहेंगे तो चलूँगा ।" बच्चे ने औरंगज़ेब की ओर लालसा भरी दृष्टि से देखा ।

औरंगज़ेब ने फिर वह घंटी बजाई और नौकरानी भीतर आ गई । औरंगज़ेब ने उसे कहा, "इसे ले जाओ ।"

विश्वनाथ ने अपने गले से एक स्वर्णहार उतारा और लड़के के गले में डालते हुए कहा, "यह पहना करना ।"

लड़के ने नौकरानी की गोद में जाते हुए पूछ लिया, "क्यों ?"

"अपने मामा को याद रखने के लिए ।"

नौकरानी चली गई तो औरंगज़ेब ने कहा, "यह किसी की अमानत है । मैं उसके पास इसको पहुँचाने के लिए जिम्मेदार हूँ ।"

विश्वनाथ समझ गया कि शहज़ादे ने उसे बंधक के रूप में रखा हुआ है । कदाचित् नीला को अपनी बीवी बनाने के लिए यह षड्यंत्र हो रहा है ।

: ६ :

सम्भाजी की पहुँच शाही महल में थी । इस पहुँच में खादिमा ही सहायक हुई थी । दरबार-ए-आम लगा था और शहंशाह की बड़ी लड़की जहानआरा बेगम दरबार में सज-धज कर पहुँची थी । यह अवसर उसे कभी-कभी ही मिलता था और उस दिन संगमरमर की जाली के पीछे महल की प्राय: सभी औरतें देखने के लिए आ खड़ी होती थी ।

इस दिन जहानआरा बेगम की सबसे छोटी बहन मेहरुन्निसा भी अपनी बड़ी बहन की शानो-शौकत देखने चली आयी थी । वह जाली के पीछे खड़ी दरबारियों को देख रही थी कि एक मरहटा सरदार अपने युवक पुत्र के साथ सोने के जंगले के समीप शहंशाह को भेंट देने के लिए आया । वजीरे-आला ने उसका परिचय और आगरा आने का कारण बता दिया । इस पर शहंशाह का हुक्म इस मरहटा सरदार को सुना दिया गया ।

यह सरदार शाहजी था और उसके साथ उसका युवक पुत्र सम्भाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था । वज़ीरे-आला ने शहंशाह का हुक्म सुनाया कि सरदार की नज़र कबूल की जाती है, उसे मुगल राज्य में पनाह दी जाती है । उसका लड़का सम्भाजी आगरा में ही रहेगा और शाहजी अपनी जागीर पर भी जा सकेंगे ।

मेहरुन्निसा ने जाली के पीछे से सम्भाजी को देखा तो उस पर मोहित हो गयी और वह उससे विवाह की लालसा करने लगी । इस समय वह अभी चौदह-पन्द्रह की कुमारी थी । उसे महल में चल रहे औरतों के व्यवहार का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं था । उसको अभी तक यह पता था कि बड़ी बहिन का प्रेमी दुलारा है । दुलारा और जहानआरा का क्या सम्बन्ध है, वह अभी समझती नहीं थी ।

इस पर भी वह इच्छा करने लगी थी कि दुलारे की भाँति यदि वह भी इस युवक को महल में बुला सके तो बहुत अच्छा हो । इस समय रोशनआरा बेगम जो महल का वातावरण औरंगज़ेब के अनुकूल निर्माण कर रही थी, मेहरुन्निसा को भी अपने गुट में सम्मिलित करने **का** यत्न करने लगी। मेहरुन्निसा न तो राजनीति को समझती थी और न ही यौनक्रिया को। हाँ, वह यौनाकर्षण से प्रभावित हुई है ।

वह इस युवक को देखने के लिए पुनः कई बार दरबार-ए-आम के भवन में जाली के पीछे से दरबारियों को देखने गई । इस प्रकार लालसा करते हुए कई मास व्यतीत हो चुके थे । वह जान चुकी थी कि शहंशाह की आज्ञा उस युवक को आगरा में ही रहने की है ।

एक दिन रोशनआरा बेगम ने उससे कहा, "मेहरुन्निसा ! देखा है न, कितना गज़ब हो रहा है !"

"क्या गजब हो रहा है ?"

"दिल्ली का एक हकीम आया हुआ है और वह दारा की बैठक में आता है और उसकी बेगमें इस हकीम से बातें करने बैठक में जाती हैं ।"

"क्या बातें करनी हैं ?"

"कुछ भी करती हों ? एक गैर शख्स के सामने औरतों को बातें करना शरा में मना है ।"

"मगर बड़ी आपा तो दरबार में जाकर बैठती हैं ।"

"उनकी बात दूसरी है । वह शहज़ादी हैं और शहंशाह की बेटी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर आपा ! दारा शहज़ादा है और वे उसकी बेगमें हैं। खाविन्द जहाँ भी चाहे अपनी बीवी को ले जा सकता है।"

"नहीं; तुम नहीं समझतीं। वे उस हकीम के बच्चे से बातें भी करती हैं।"

"यही तो पूछा था कि क्या बातें करती हैं ?"

"ज़रूर कुछ वैसी ही बातें करती होंगी जो औरतें मर्दों से करती हैं और जो नहीं करनी चाहियें।"

"वे क्या होती हैं जो मर्दों से की जाती हैं ?"

"यह तुम अपनी दायी से पूछ लेना।" इतना कह रोशनआरा मुस्कराई और बोली, "यह दारा काफिर हो गया है।"

"वह क्या होता है ?"

"जो इस्लाम पर ईमान न रखे।"

इस्लाम का नाम तो मेहरुन्निसा ने सुना था और वह नमाज़ भी पढ़ा करती थी। इस पर भी उसे नमाज पढ़ने में किसी प्रकार का रस नहीं मिलता था।

"कैसे पता चले कि भाईजान इस्लाम पर एतकाद नहीं करते ?"

रोशनआरा ने कह दिया, "वे नमाज नहीं पढ़ते।"

मेहरुन्निसा को नमाज़ पढ़ने में अपनी अरुचि का स्मरण हो आया।

"मेरा भी नमाज़ पढ़ने को जी नहीं करता।" उसने कह दिया।

"क्या होता है नमाज़ पढ़ने के वक्त ?"

"खुदा को तो मैं जानती नहीं। हाँ, जब भी पढ़ने लगती हूँ तो एक नौजवान की सूरत-शक्ल सामने आने लगती है।"

"वह ज़रूर बनी-उल-इस्लाम होगा। हज़रत मुहम्मद कभी-कभी अपने बन्दों को दीदार देने आ जाते हैं।"

"तो बहन ! तुमको भी कोई नमाज़ पढ़ते दिखाई देता है ?"

"नहीं, मुझे तो कभी कोई दिखाई नहीं दिया।"

"मुझे तो वह बहुत भला मालूम होता है।"

"तुम खुशनसीब हो, जो तुमको इस तरह दीदार हासिल होते हैं।"

मेहरुन्निसा इस तरह की बातों से अपने मन में उस मराठा युवक के विषय में विचार करने लगी थी। वह चुप कर रही। बातें दारा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरंगज़ेब के विषय पर होने लगीं। मेहरुन्निसा अब चुपचाप सुनती रही और बहन की बातों को न समझती हुई हाँ-हूँ करती रही।

अगली बार दरबार में उसी युवक के दर्शन हुए तो वह उससे मिलने के लिए व्याकुल हो उठी और अपने महल में बंदी के रूप में रहने पर दुःख अनुभव करने लगी।

इस दिन उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि वह इस विषय में जहानआरा से पूछेगी। वह दरबार से लौट पड़ी, परन्तु ज्योंही वह अपने कमरे में गई तो खादिमा सामने दिखाई दी। खादिमा महल की औरतों से बाहर के लोगों के पास संदेश लेने और बाहर के लोगों के औरतों के लिए संदेश लाने के लिए आया करती थी और मेहरुन्निसा यह जानती थी।

मेहरुन्निसा दरबार देखकर आ रही थी और उसके मस्तिष्क में सम्भाजी की स्मृति अभी ताज़ी थी। जब उसने खादिमा को देखा तो वह मन में विचार करने लगी कि इससे बात करे अथवा नहीं ? आज से पहले उसने उससे कुछ काम नहीं लिया था। वह खादिमा के सामने जा खड़ी हुई। खादिमा ने उसे देखा तो समझ गई कि वह कुछ चाहती है। उसने झुककर सलाम अर्ज़ की और कहा, "शहज़ादी साहिबा ! हुक्म कीजिये, मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ ?"

मेहरुन्निसा ने पूछ लिया, "तुम क्या कर सकती हो ?"

"शहज़ादी साहिबा ! आसमान से सितारे भी उतार कर ला सकती हूँ।"

मेहरुन्निसा मुस्कराई और बोली, "सुना है वे आग की चिनगारियाँ हैं। यहाँ आ गयीं तो महल को आग भी लग सकती हैं।"

"हाँ। यह बात तो है। तो शहज़ादी साहिबा ! आसमान के सितारों की बात छोड़ कोई ज़मीन पर की बात बताइए और देखिये कि आपकी खादिमा कैसी खूबी से उस काम को सरंजाम दे सकती है।"

मेहरुन्निसा अपने कमरे में चली गई। खादिमा उसके पीछे-पीछे थी। वह मसनद पर तकिये का आश्रय ले बैठ गई। उसने अपने मन में खादिमा की परीक्षा लेने का निश्चय कर लिया था। उसने कमरे की छत पर देखते हुए पूछ लिया, "और मेरी बात किस-किस को बताओगी ?"

"जिस-जिस को हुज़ूर बताने को कहेंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी बात मुझसे ही करने का वादा करो तो एक काम बता सकती हूँ।"

"शहजादी साहिबा ! खुदा की कसम खाकर कहती हूँ कि मर जाऊँगी, मगर किसी को नहीं बताऊँगी।"

"सुनो, एक मराठा नौजवान है। आज वह दीवान-ए-आम में आया हुआ है। उसकी शहंशाह से मुलाकात होनी है। पता करो वह कौन है, क्या करता है और कहाँ रहता है ?"

खादिमा प्रायः इसी प्रकार के काम अन्य बेगमों के भी किया करती थी। वह समझ गई कि पहली मुहब्बत है। उसकी आमदन का एक अन्य द्वार खुलने वाला है। इस कारण उसने कह दिया, "मैं एक घड़ी-भर में उसकी खबर लाती हूँ।"

खादिमा बिना व्यर्थ समय गँवाये वहाँ से चल दी। वह दीवान-ए-आम के बाहर जा पता करना चाहती थी। वह जानती थी कि उसका वहाँ से निकलते ही पता करना ठीक रहेगा, वरना पीछे तो पता करना कठिन हो जायेगा।

वह दो घड़ी बाद आई और शहज़ादी को उसके कमरे में आ मिली। उस वक्त उसकी हमउम्र कुछ लड़कियाँ उससे शतरंज खेल रही थीं।

मेहरुन्निसा ने खादिमा को आते देखा तो बाजी हारनी आरम्भ कर दी। खेल को शीघ्र समाप्त कर उसने सबको विदा किया और फिर खादिमा को अपने सोने के कमरे में ले गई।

वहाँ पहुँच खादिमा ने बताया, "मैं पता कर आई हूँ। वह एक मराठा हिन्दू सरदार का लड़का है। अभी अविवाहित है और अपने बाप के साथ मगरबी सफीर के साथ की एक गली में भाड़े के मकान में रहता है। नाम सम्भाजी है।"

"यह वही है क्या जिसको मैंने पूछा है ?"

"आज दरबार में एक ही मराठा नौजवान आया है। इससे मेरी खबर ठीक है।"

"उससे कहाँ मिल सकूँगी ?"

"यह दूसरा काम है। पहले का इनाम मिल जाए तो दूसरे काम की बात भी कर सकती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेहरुन्निसा ने अपने तकिये के नीचे रखे रुपयों में से पाँच रुपये निकालकर देते हुए कहा, "और दूसरे काम की बाबत ?"

"यह भी हो सकेगा। मगर इसके लिए खर्च ज्यादा करना पड़ेगा ?"

"कितना ?"

"इसमें एक सौ रुपया तो पाँच सिपाहियों को देना पड़ेगा और फिर इतना कुछ ही मुझको मिलना चाहिए। कुछ और भी करना पड़ेगा जो मैं दूसरे फरीक से मिलकर ही जान सकती हूँ।"

"तो पता करो। कब तक हो सकेगा ?"

"दो दिन का मौका दीजिए। तब बताऊँगी। साथ ही रुपया पेशगी देना होगा।"

"तुमने कभी पहले भी ऐसा काम किया है ?"

"हाँ।"

"किसके लिए ?"

"बेगम साहिबा ! यह बात यहाँ पूछी नहीं जाती। जैसे आपकी बात किसी को न बताने की कसम खा चुकी हूँ वैसे ही दूसरों की बात की भी कसम खाई हुई है।"

"तो तुम यह काम करना जानती हो ?"

"इत्मीनान रखिये। खुदा के फज़ल से सब ठीक होगा।"

खादिमा चार दिन के उपरान्त मिलने आयी और मेहरुन्निसा से बोली, "हुज़ूर ! वह शख्स महल में आना नहीं चाहता।"

"क्यों ?"

"उसको मालूम है कि कभी-कभी कुछ नौजवान महल में दाखिल होते तो देखे जाते हैं मगर बाहर निकलते नहीं देखे गये।"

मेहरुन्निसा मतलब समझने के लिए खादिमा का मुख देखती रह गई। मेहरुन्निसा को खामोश देख उसने एक कहानी सुना दी—"एक हिन्दू राजपूत था। महल की एक शहज़ादी का दिल उस पर रीझ गया और उसको महल में बुलाया गया। शहज़ादी रोशनआरा हिन्दुओं के सख्त खिलाफ हैं। उनको पता चल गया। उन्होंने अपने भाई शहज़ादा औरंगज़ेब से कहा। शहज़ादा साहब ने शहँशाह से कहा और वे शहज़ादी के कमरे में जा धमके। उन्होंने उस नौजवान को अँगीठी में छिपते देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिया। बस फिर क्या था ! अंगीठी में आग जला दी गई और वह दम घुट कर मर गया।"

"और वह शहज़ादी ?"

"शहज़ादी तो शाही खानदान में से हैं। शाही खानदान कभी गुनाह नहीं करता।"

"पर मैं तो सिर्फ उसके दीदार हासिल कर उससे एक-दो बातें करना चाहती हूँ।"

खादिमा मुस्कराई, "यह तो ठीक है। मगर दूसरा तो कुछ और मतलब समझेगा।"

"क्या समझेगा ?"

"शहज़ादी साहिबा ! यह कोई मर्द ही बता सकता है।"

"तो फिर ?"

"मैं मजबूर हूँ।"

"और क्या मैं किले के बाहर उससे मिल नहीं सकती ?"

"यह भी हो सकता है। आजकल वह घर में अकेला है। उसका सिर्फ एक नौकर है। इसका इन्तज़ाम हो जाएगा।"

"मैं समझती हूँ कि मैं भी शाही खानदान में से हूँ। इसलिए मुझे तो सजा मिलेगी नहीं।"

"यह खयाल दुरुस्त है।"

"तो बन्दोबस्त करो।"

"हजूर, अपनी किसी नौकरानी के कपड़े ले लें। वे पहिन कर ही किले से निकल सकेंगी ?"

"मुझे किसी नौकरानी पर एतबार नहीं है।"

"फिर भी किसी को अपने राज में शामिल करना पड़ेगा। अगर कहें तो मैं बन्दोबस्त कर सकती हूँ।"

"तो करो।"

"मैं कल आपसे मिलकर दिन, वक्त और तरीका तय करने आऊँगी।"

सम्भाजी बेवकूफ बनना नहीं चाहता था। वह जानता भी तो नहीं था कि उससे भेंट करने की इच्छुक औरत किस उम्र की है और उसकी रूप-रेखा कैसी है। इस कारण वह कहता था कि अगर किसी को मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की जरूरत है तो उससे मिलने आ सकता है। इस तरह वह महल में छिपकर जाने के लिए राजी नहीं हुआ।

जब दूसरी बार खादिमा इस नई तजवीज़ को लेकर आयी तो सम्भाजी मान गया। उसने कह दिया कि वह अपने नौकर को रात की छुट्टी दे देगा। रात के नौ बजे का वक्त मुकर्रर हो गया। निश्चित दिन मेहरुन्निसा नौकरानी के लिबास में किले से निकल आई। वह बुर्का पहने थी। पहरे पर सिपाही ने पूछा, "नाम बताओ।"

उत्तर खादिमा ने दिया, "छोटी शहजादी की दायी नगीना है।"

"जाओ।" पहरेदार ने यह भी कहा, "बहुत रात के वक्त जा रही हो?"

"यह रात मेरे घर रहने जा रही है।" खादिमा ने कह दिया।

पहरेदार ने शुभ कामना की, "खुदा हाफिज।"

मेहरुन्निसा रात-भर सम्भाजी के घर पर रही और बहुत ही विस्मित और भौंचक्क हुई। सुबह वह खादिमा के साथ लौट आई।

: १० :

इसके बाद कई बार मेहरुन्निसा सम्भाजी से मिली। पहरेदार यह तो नहीं जानते थे कि खादिमा के घर रहने कौन जाया करता है, मगर उनकी रुचि अपने इनाम में थी। वे खादिमा से बेवक्त जाने और बेवक्त आने का दाम पाँच-पाँच रुपए वसूल कर लेते थे। मेहरुन्निसा की दायी को यह बताया गया था कि शहज़ादी भी अपनी बहिनों की राह पर चल पड़ी है। मगर उसका मुख और आँखें बन्द कर दी जाती थीं रुपयों से। खादिमा एक सौ रुपये प्रति बार का लेती थी। पाँच रुपये सम्भाजी के नौकर को दे दिए जाते थे, जिससे वह रात किसी वेश्या के कोठे पर गुज़ार सके।

कभी दो-तीन महीने में एक बार ही ऐसी भेंट हो सकती थी। इस प्रकार का व्यवहार चलते हुए दो वर्ष व्यतीत हो गए थे।

दरबार दिल्ली आया तो सम्भाजी भी अपनी प्रिया के पीछे-पीछे वहाँ आ पहुँचा। यहां भी खादिमा भेंट कराने में सफल हो रही थी। ऐसी एक भेंट में मेहरुन्निसा ने सम्भाजी को बताया कि उसके पेट में बच्चा मालूम होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ?"

"महल में इस हमल को गिरा दिया जाएगा।"

"यह तो भारी गुनाह होगा।"

'तो बताइए क्या किया जाए ?"

"मेरे साथ भाग चलो।"

'कहाँ ?"

"बीजापुर या उससे भी दूर विजयनगर।"

"यह हो सकेगा क्या ?"

"यहाँ तक तुम पहुँच जाओ और आगे मैं ले चलूँगा।"

"तो मैं दो दिन में आऊँगी।"

दिन निश्चय हो गया। वक्त रात को ठीक नहीं समझा गया। खादिमा की राय से वक्त प्रातःकाल पाँच बजे का तय हुआ। शहज़ादी की एक नौकरानी उस वक्त घर जाया करती थी। उसके स्थान पर निकलने का विचार हुआ। रात की खिदमतगारिन को सुबह काम पर बुला लिया गया और दिन वाली को रात के वक्त रखा गया। दिन वाली नगीना थी।

जब नगीना को पता चला कि शहज़ादी रात के स्थान बहुत प्रातः जाना चाहती है तो उसे सन्देह हो गया। वह समझ गई कि दाल में कुछ काला है। इसके साथ शहज़ादी ने अपने जेवर-जवाहरात इकट्ठे कर एक संदूकची में रख लिए थे। इससे वह समझ गई कि भागने का इन्तज़ाम हो रहा है। वह डर गई और यह समझी कि सदा की भाँति उसे अपने कमरे में सुलाकर शहज़ादी जायेगी और पीछे वह पकड़ी गई तो उसको शहज़ादी के अगवा में शरीक मान फाँसी चढ़ा दिया जायेगा। इस कारण जब शहज़ादी अपने जाने की तैयारी कर रही थी, वह जहानआरा बेगम के पास जाकर सब बक आई।

जहानआरा ने नगीना को कहा, "चुप रहो। किसी को बताना नहीं। तुम्हारे चुप रहने का मैं इनाम दूँगी।"

"तो शहज़ादी को जाने दूँ ?"

"नहीं। वह नहीं जायेगी।"

जहानआरा शाम के वक्त आई और मेहरुन्निसा को अपनी बैठक में गाने की मजलिस में ले गई। मेहरुन्निसा यह समझ कि वह रात के वक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मज़लिस के बाद लौट आएगी, वहाँ जाने के लिए तैयार हो गई।

खादिमा मेहरुन्निसा के कमरे में रही। मेहरुन्निसा उसको कह गई थी कि वह आधी रात से पहले लौट आएगी और फिर तीन-चार घण्टा आराम कर चलेगी।

जहानआरा ने उसे खाने के साथ भाँग के पकौड़े खूब खिला दिए और गाने की मजलिस खत्म होने से पहले ही वह अचेत हो वहीं लेट गई।

उसने उसे अपने सोने के कमरे में सुला रखा। खादिमा प्रातः चार बजे तक प्रतीक्षा करती रही और जब वह नहीं आई तो वह जहानआरा बेगम के कमरों की खिदमतगारिन से पता करने चली गई। वहाँ पता चला कि दोनों बहिनें कमरे में सो रही हैं।

खादिमा समझ गई कि भागने का भेद खुल गया है। इस कारण वह किले से बाहर आ वहाँ जा पहुँची, जहाँ सम्भाजी प्रतीक्षा कर रहा था।

सम्भाजी ने भी भाग जाना उचित समझा। खादिमा नहीं जानती थी कि कौन बक गया है। शहज़ादी खुद या नगीना नौकरानी। उसको भी भय लग रहा था कि अब किले में जाये अथवा न ?

दो दिन पीछे वह नगीना के घर जा पहुँची और यह जान स्तब्ध रह गयी कि उसे नौकरी से निकाल दिया गया है।

'किसलिए ?" खादिमा ने पूछ लिया।

"वहाँ से तो बताया नहीं गया, मगर मेरा खयाल यह है कि बड़ी शहज़ादी को मैंने छोटी के मुनअल्लिक अपना शक बताया तो बड़ी उसे अपने कमरे में ले गयी। तुम्हारे चले आने के बाद छोटी शहज़ादी दूसरे पहर अपने कमरे में आयीं तो उनकी आँखें फूल रही थीं। मालूम होता है कि वह रोती रही थी। जब मैंने उनसे पूछा, 'हुजूर ! क्या बात है ?' तो वे बोलीं, निकल जाओ हरामज़ादी। चली जाओ, तुमको नौकरी से बरखास्त किया जाता है।

"मैं मुख देखती रह गयी। इस पर उसने मुझे धक्का देकर अपने घर से निकाल दिया। मैं बड़ी शहज़ादी के पास गयी तो वह कहने लगीं, 'नगीना ! तुमने झूठ बोला था कि मेहरुन्निसा महल से भाग रही है। इसलिए तुम शाही नौकरी में रखने लायक नहीं हो।'

"मैंने मुआफी माँगी, मगर सुनवाई नहीं हुई। मैं अब बेकार हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खादिमा खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसने कहा, "नगीना! तुमने भूल की थी जो एक का भेद दूसरे से जाकर बता दिया। शाही खानदान के बाशिन्दों का भेद एक-दूसरे से नहीं बताना चाहिए था।"

"और अगर शहज़ादी भागने में कामयाब हो जातीं तो मैं पकड़ी जाती और फाँसी पर लटका दी जाती।"

"तो कुछ बहाना बना कह देतीं कि तुम बिल्कुल नहीं जानतीं। तुम रोतीं, गातीं और शहज़ादी के भाग जाने पर अफसोस ज़ाहिर करतीं। मैं समझती हूँ कि तुम्हारे साथ हमदर्दी ज़ाहिर की जाती और शहज़ादी के भाग जाने का भेद किसी से न बताने के लिए तुमको इनाम दिया जाता।"

"मुझे यह सूझा ही नहीं।"

"अच्छा यह बताओ, मेरी बाबत वहाँ क्या मशहूर है?"

"तुम्हारा तो कोई नाम लेता ही नहीं। मुझको ही हरामज़ादी, झूठी, मक्कार वगैरा कहकर पुकारा जाता है।"

"देखो नगीना! मैं महल के अन्दर की खबर लेने जा रही हूँ। अगर सही-सलामत वहाँ आने-जाने लगी तो तुमको दूसरी शहज़ादी के पास नौकर करवाने की कोशिश करूँगी।"

"मगर सुना है कि वह तो बहुत सख्त मिज़ाज रखती हैं।"

"तुम इन शहज़ादियों के भेद जान लोगी तो फिर वे तुम्हारी मुरीद बन जायेंगी। शर्त यह है कि तुम एक का भेद किसी दूसरे से मत बताओ। सिर्फ उनके दिमाग में यह बात बैठ जानी चाहिये कि तुम उनकी बात जानती हो और तुम उनको बदनाम कर सकती हो, मगर कर नहीं रहीं।"

नगीना एक सरलचित्त औरत थी। वह यह भी तो जानती नहीं थी कि शहजादी मेहरुन्निसा रात रहने के लिए किसके पास जाती है। उसे अब समझ आया कि उसने इस मुआमले में शुरू से ही नादानी की थी।

मेहरुन्निसा को जब भाँग का नशा उतरा तो वह जागी और अपने चारों ओर देखकर स्मरण करने लगी कि वह वहाँ कैसे आ गयी है। आँखें मल-मल कर वह ध्यान करने लगी। धीरे-धीरे उसे पूर्ण बात याद आ गयी और दिन चढ़ा देख वह अपने भागने की योजना विफल हो जाने पर बहुत ही दुःखी हुई। दुःख में वह रोने लगी।

वह जल्दी-जल्दी उठी और अपनी आंखें पोंछ अपने कमरे को जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिए तैयार हो गयी ।

इस समय उसकी बड़ी बहन गुसलखाने से बाहर निकल आयी । वह छोटी बहन को पलँग से उतर अपने जूते पहनते देख पूछने लगी, "क्यों किधर जा रही हो ?"

वह अभी तक भी नहीं समझी थी कि उसका वहां रहना घटनावश था अथवा किसी नशीली वस्तु के खाने से । वह अपने शरीर में सुस्ती-सी अनुभव कर रही थी, परन्तु यह उसे अपनी योजना के बिगड़ जाने के कारण ही प्रतीत रहा था । उसने अपनी बहन को कहा, "मालूम नहीं कि क्या हो गया है, हिलने-डुलने में दिक्कत हो रही है ।"

"हाँ; मैं तो नाश्ता करने जा रहा हूँ ।"

"भूख तो मुझे भी लगी है, मगर मैंने अभी गुसल भी नहीं किया ।"

"फिर क्या हुआ ? पहले खा लो । पीछे सब काम हो जायेगा ।"

जहानआरा जानती थी कि भांग की वजह से भूख लग रही है । साथ ही वह छोटी वहन को भागने की योजना रद्द करने के लिये कहना चाहती थी ।

मेहरुन्निसा जहानआरा की बात मान उसके साथ ही खाने के कमरे में चली गयी । वहाँ महताब बेगम बैठी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी । जहानआरा ने उसे देखा तो कह दिया, "आदाब अर्ज़ है छोटी अम्मी !"

शहज़ादा और शहज़ादियां उसको अम्मी ही कहकर पुकारती थीं, परन्तु महताब सदा उनको बहन-भाई कह कर सम्बोधित किया करती थी और यह परस्पर सम्बोधन का ढँग हँसी-मज़ाक का विषय बना रहता था ।

महताब ने कहा, "आज खयाल आया कि बड़ी बहन के दर्शन करने चाहिएँ, इस कारण इस वक्त चली आयी हूँ । दूसरे किसी वक्त तो बहन को अवकाश ही नहीं होता ।

"मगर देखो न मेरे सौभाग्य की बात है कि छोटी बहन भी मिल गयी है ।" इतना कह उसने मेहरुन्निसा की ओर मुस्कराते हुए देखा ।

"मगर अम्मी !' मेहरुन्निसा ने कह दिया, 'तुम कभी मुझसे मिलने मेरे कमरे में तो आयी नहीं । मैं ही कभी मिलने आऊँ तो मिल जाऊँ ।"

"हाँ, मगर बहन ! तुमने कभी मिलने की ख्वाहिश ज़ाहिर की नहीं। इसलिए मैं बहन के प्यार का स्वाद लेने आई नहीं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] बनी रहती है।"

"चलूंगी। आज नहीं। अब मैं अपने आप आऊँगी और तुम भी तो आ सकती हो।"

"आज हकीम सरमद भाई साहब की बैठक में आने वाले हैं और उन्होंने मुझसे कुछ पूछने की ख्वाहिश ज़ाहिर की है।"

"मगर महल में कुछ लोग हैं जो इस हकीम से आपके और बड़ी भावजों के मेल-जोल को पसन्द नहीं करते।"

"वे नादान लोग नहीं जानते कि हकीम साहब एक बेज़रर खुदादोस्त बन्दे हैं।"

"मैंने महल में चेमागोइयाँ सुनी हैं।"

इस वक्त नाश्ता आ गया और दोनों बहिनें खाने लगीं। महताब नहीं खा रही थी। शहज़ादियां जानती थीं कि उसका भोजन उसका अपना तैयार कराया होता है। वह सर्वथा निरामिष भोजन करती थी। दोनों शहज़ादियाँ मुर्ग का शोरबा ले रही थीं। उसके साथ नान के छोटे-छोटे टुकड़े थे।

"अम्मी! मुआफ करना। हम खा रही हैं और आप देख रही हैं।"

"मगर मैं तो खा आई हूँ। पेट भरकर ही अपने कमरे से निकली थी।"

"हाँ, तो अम्मी के यहाँ आने की क्या वजह हो सकती है?"

जहानआरा ने कह दिया, "मैं यह जानती हूँ कि अम्मी एक लहमा भी बे-मतलब और बेकार नहीं गँवातीं।"

"मैं आज एक खास मतलब से आयी हूँ।"

"यह तो हम जानती हैं। ज़रूर ही आज अम्मी के सुबह-सुबह आने में कुछ मतलब होगा।"

"हाँ। मैंने देश की राजनीति की बाबत कभी महल में बात नहीं की। मगर यह जगह अब राजनीति का अखाड़ा बनती जा रही है। इसलिए इससे बाहर रहना मुश्किल हो रहा है।"

"हाँ अम्मी! ज़रा वज़ाहत से कहो।"

"मुझे महल दो हिस्सों में बँटा हुआ दिखाई देने लगा है। इसमें शाही खानदान के लोग और उनके नौकर-चाकर, यहाँ तक कि खुसरे भी किसी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
न-किसी गुट में शामिल हो रहे हैं।

"मैं आज अपनी पूजा पर बैठी थी कि मुझे यह समझ आया कि महल के सब लोग हाथों में तलवारें लिए एक-दूसरे को कत्ल करने को लपके जा रहे है। सारा महल खून से लथ-पथ और लाशों से भरा दिखाई देने लगा है।"

"अम्मीजान !" जहानआरा ने कह दिया, "इस किस्म की बातें बहुत पूजा-पाठ करने का नतीजा हैं। मेरी राय मानिए। एक तो अपनी हसब मामूल ज़िन्दगी बसर करने लगिए और दूसरे सूखी दाल-रोटी खानी छोड़िए। साथ ही कुछ ताकत की शै खानी शुरू कर दीजिए।

"बस कुछ ही दिनों में मौत से डरना छोड़ देंगी और ज़िन्दगी खुश-नुमा मालूम होने लगेगी।

"देखिए अम्मीजान ! मैं आपकी शहंशाह से फिर सुलह करा सकती हूँ। अगर वे पसन्द नहीं तो भाईजान से ताल्लुक बना सकती हैं।"

महताब मुस्कराती हुई सुनती रही। जब जहानआरा महताब के लिए अपनी चिकित्सा बता चुकी तो उसकी बात का कुछ भी जवाब दिए बिना उसने कहना जारी रखा।

"जहानआरा बहिन ! मेरे मन में तुम्हारे और बड़े भाईजान के लिए बहुत आदर मुहब्बत है। इस तारीकी में मुझे तुम दोनों में ही कुछ-कुछ रोशनी दिखाई दे रही है। इसीलिए यहाँ आयी हूँ और चाहती हूँ कि आप अभी से मुसीबत को पार करने की कोशिश शुरू कर दें।

"भाग्य बहुत प्रबल होता है, मगर पुरुषार्थ भी कम नहीं है। अब सिर्फ पाँच वर्ष शेष हैं। अगर आप दोनों कोशिश करें तो कुछ-न-कुछ किया ही जा सकता है।"

जहानआरा को, भाग्य की बात सुन उसके पिता पंडित त्रिभुवन कीर्ति की एक पेशीनगोई याद आ गयी। उसने, जब वह महल के एक मकान में रहता था, जहानआरा का हाथ देखकर बताया था, "सम्वत् १७१४ में वह कैद कर दी जाएगी। उसको बेइज्ज़त किया जायेगा और कई किस्म की तकलीफें दी जाएंगी।"

तब उसने इस बात की हँसी उड़ायी थी और इससे पंडित ने बताते-बताते अपना कथन बन्द कर दिया था। आज पंडित की लड़की को भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वही बात करते देख वह गम्भीर हो गयी और पूछने लगी, "यह सन्देश अम्मी के वालिद शरीफ ने भेजा है क्या ?"

"उनसे मुझको सन्देश नहीं आते। बिना आपकी और शहंशाह की जानकारी कैसे कोई खबर उनकी आ सकती है ? मैं अपने मन में उठ रही बात ही कह रही हूँ। मुझे यह सब कुछ बरबाद हो रहा दिखाई देता है।"

"मगर अम्मी ! मान लो कि एक मुसीबत आ रही है और एक मशहूर नजूमी की लड़की कह रही है कि मुसीबत के आने में सिर्फ पाँच साल बकाया रह गए हैं, तो क्या किया जाए ? क्या कोई अपनी किस्मत को बदल सकता है ?"

"मैंने बताया है न कि पुरुषार्थ बहुत बड़ी चीज़ है। आने वाली मुसीबत को बिल्कुल रोका न जा सके, तब भी उसको कम तो किया जा सकता है।"

"क्या करने से यह हो सकेगा ? कोई तबीत, कोई जंतर-मंतर तजवीज़ करती हो ?"

"ये यन्त्र-मन्त्र और तबीत पुरुषार्थ नहीं कहाते। इनका मकसद कुछ और है। मैं तो यह कहने आयी थी कि आप अपने रसूख से शहंशाह-ए-अजीम को तीन बातें करने लिए कहें।"

"क्या ?"

"एक तो शहज़ादा औरंगज़ेब को दक्खन से वापस बुलाकर ग्वालियर के किले में कैद कर दें।

"दूसरे, महल में सब औरतों को निकाल बाहर कर दिया जाए। उनको अपनी मर्जी से शादी करने की इजाजत दे दी जाए और दूसरे महल की हिफाज़त के लिये केवल राजपूत सिपाही नौकर रख लिए जायें।"

"और मुगल, पठान या तुर्क क्यों नहीं ?"

"इसलिए कि मुसीबत इस्लामी मजहब की तरफ से आने वाली है। उसका मुकाबिला गैर-मुसलमानों से ही हो सकेगा।"

"अच्छा, तीसरी बात ?"

"हर रोज़ खुदा की अबादत की जाए। शहंशाह, शहज़ादा-ए-अजीम, शहज़ादी साहिबा और मेरी छोटी बहिन मेहर के लिए यह निहायत जरूरी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अम्मी !" जहानआरा ने खाने के दस्तरखान से उठते हुए कहा, "इनमें से एक बात भी नहीं हो सकेगी।"

"मैं समझती हूँ कि मैंने अपना फर्ज़ अदा कर दिया है। मैं शहज़ादा साहब को भी यही राय देने का विचार रखती हूँ। आप दोनों बहिन-भाई ही हैं, जो इस बात को कर सकते हैं।"

महताब भी उठ खड़ी हुई। दोनों ने हाथ दस्तरखाने से पोंछे और महताब बेगम को कमरे के बाहर तक छोड़ने आयीं।

: ११ :

जब महताब सुनने से दूर चली गयी तो जहानआरा हँसकर बोली, "मैं समझती हूँ कि यह मर्द की सोहबत न पाने की वजह से नीम पागल होती जा रही है। अगर इसने ऐसी बातें महल के नौकरों-चाकरों में कहनी शुरू कर दीं तो इसे भी अपने बाप के पास किले में बन्द कर दिया जाएगा।"

"पर बहिन ! इसने कोई बुरी बात तो कही नहीं।"

"और अच्छी बात ही क्या कही है ?"

"एक बात तो बहुत अच्छी है कि औरतों को किले से बाहर कर उन्हें शादी करने की आज़ादी दे दी जाए।"

"और मेहर बहिन को भी अपने यार के साथ भाग जाने की इजाज़त दे दी जाये ?" जहानआरा ने मुस्कराते हुए कह दिया।

मेहरुन्निसा स्तब्ध बैठी रह गयी। उसे समझ आने लगा कि उसकी बहिन ने जान-बूझ कर उसे अपने कमरे में सुला रखा था। इस पर उसे अपने गहरी नींद में सोने की बात स्मरण हो आयी। उसने बहिन के मुख पर देखते हुए पूछा, "तो बहिन, तुम जानती हो कि मैं भाग रही थी ?"

"हाँ; और मैंने तुम पर जादू कर अपने कमरे में रोक रखा था।"

"मैने सुना है कि बहिन औरतों को शराब पिला शहंशाह के हवाले करती रहती हैं, मगर यह मालूम नहीं था कि वह जादूगरनी भी है और अपनी बहिन को इस दोज़ख से बच निकलने से रोकने के लिए जादू का इस्तेमाल कर सकती है।"

"तो अब पता चल गया है न। मेहर ! सुन लो। मैंने पता करने के लिए सिपाही दौड़ाए हैं और अगर वह जवान मिल गया तो कल किले के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बाहर उसे फाँसी पर लटका दिया जाएगा।"

"खुदा करे कि बहिन के सिपाही अन्धे हो जायें और उनको दिखाई देना ही बन्द हो जाए।"

"खैर, वह तो देखेंगे कि सिपाही पकड़ कर लाते हैं या नहीं। नगीना ने यह नहीं बताया कि वह कौन है और कहाँ रहता है।"

"तो नगीना ने दगा किया है ?"

"निकाल दो उस बदकार औरत को।"

"तो तुम मुझ पर जासूसी कैसे कर सकोगी ?"

"मैं समझती हूँ कि वह आज दोपहर तक पकड़ लिया जाएगा। शाही खानदान के साथ इस क़िस्म की ज़्यादती करने वाला बच नहीं सकता।"

"और दुलारे को कब फाँसी चढ़ाओगी बहिन ?"

"क्यों ? उसने क्या किया है ?"

"उसने बड़ी बहिन से ज़नाकारी की है।"

"बक़वास बन्द करो। मेहर ! अपनी खैर मनाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें भी अपने दोस्त के साथ दफनाना पड़े।"

अपनी बहिन की खूँखार आँखें देख मेहरुन्निसा के आँसू निकल आये। उसे रोते देख जहानआरा ने कह दिया, "अभी क्यों रोती हो मेरी बहिन ! इस दुलारे पर तुम्हारी नज़र रंग लाएगी और देखोगी क्या होता है ?"

मेहरुन्निसा भय और क्रोध के आँसू बहाती हुई अपने कमरे में चली गयी।

दुर्भाग्य से नगीना पूछ बैठी, "शहज़ादी साहिबा ! क्या हुआ है ?"

इस पर तो मेहरुन्निसा का सारा क्रोध नगीना पर निकल गया। उसने उसे दो-चार जली-कटी सुनायीं और फिर धक्के दे-देकर महल से निकलवा दिया।

खुद अपने कमरों को भीतर से बन्द कर वह लेट रही। तीन दिन तक वह बाहर नहीं निकली। दायी आती रही और कमरे के बाहर बैठ चली जाती रही।

मेहरुन्निसा के विषय में सबको चिन्ता लगने लगी। यह समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शहंशाह तक भी पहुँचा कि वह कमरा को बन्द कर भीतर पड़ी है। कोई नहीं जानता था कि वह भूखे मर जाने का विचार रखती है अथवा फाँसी से लटक चुकी है।

शहंशाह को खबर दी गयी तो उन्होंने पूछा, 'वह आदमी पकड़ा गया है या नहीं ?"

दारा और जहानआरा उसको पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। एक जासूसों का सरदार इस काम के लिए मुकर्रर किया गया था। दो-सौ के लगभग युवक पकड़ लिए गए थे और उनसे वह जासूसों का सरदार सवाल-जवाब कर रहा था।

यह सब बात शहंशाह को बतायी गयी तो वे खुद आ मेहरुन्निसा के कमरे का द्वार खटखटाने लगे। बहुत दरवाज़ा खटखटाया गया मगर शहज़ादी ने दरवाज़ा नहीं खोला। आखिर दरवाज़े के पल्ले उखाड़ डाले गए। जब द्वार खुला तो आशा के विपरीत मेहरुन्निसा सामने खड़ी दिखाई दी। द्वार के न खुलने से सब यही उम्मीद कर रहे थे कि वह गले में फंदा डाल फाँसी लटक चुकी होगी।

वह शहंशाह को टूटे द्वार से भीतर आते देख हँस पड़ी। शहंशाह भी उसे हँसते देख हँसने लगे।

"जहाँपनाह! यह बेकायदगी है कि अपनी ही लड़की के कमरे में ज़बरदस्ती घुसे चले आ रहे हैं।"

"तो तुम मेरी लड़की हो ?"

"यह तो अम्मी ही बता सकती हैं। मैं कैसे बता सकती हूँ। हाँ, मैं यहाँ रहती थी लड़की बन कर ही।"

"तो सुन लो। तुम शहंशाह-ए-हिन्द की लड़की हो। इस मुल्क और सल्तनत के लिए तुम अपनी ज़िन्दगी की मालिक नहीं हो। तुम इसको जाया नहीं कर सकतीं।

"दो सौ से ऊपर लोग पकड़े गए हैं और जल्दी ही यह पता चल जाएगा कि वह कौन है, जिसने शाही खानदान पर डाका डालने की कोशिश की है। उसको किले के पीछे टिकटिकी से लटकते देखने का मौका तुमको भी मिलेगा।"

"देख लूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, अगर तुमने दरवाज़ा बन्द नहीं करना तो यह दरवाज़ा मुरम्मत हो जाएगा वरना बाकी के भी सब दरवाज़े तुड़वा दिए जायेंगे।"

इतना कह शहंशाह चले गए। अब मेहरुन्निसा की चिन्ता का विषय यह था कि वह कैसे पता करे कि उसका प्रिय प्रेमी पकड़ा गया है या नहीं।

शहंशाह के चले जाने पर उसकी दूसरी नौकरानी भीतर आयी और मालकिन को खुशो-खुर्रम देख पूछने लगी, "हुज़ूर! खाना-पीना कैसे होता रहा है?"

"मेरे पास अभी सात दिन का खाना और रखा है।"

"हुज़ूर, ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।"

"कैसी बात?" मेहरुन्निसा को सन्देह हो गया कि उसको भी उसके रात किले से बाहर जाने का पता चला गया है।

यह दायी फातिमा थी। मेहरुन्निसा को अभी बच्ची ही समझा जा रहा था और उसकी नौकरानियाँ दायी कहाती थीं। फातिमा ने कहा, "हुज़ूर! खुदकुशी करना भारी गुनाह है।"

"पर मैं खुदकुशी नहीं कर रही थी। मैं तो किसी मसला पर गौर रही थी।"

फातिमा नौकरानियों और खुसरों की काना-फूसी सुन चुकी थी कि शहज़ादी किसी की मुहब्बत में मुब्तला है और उसके पकड़े जाने के गम से गले में फंदा डाल खुदकुशी कर रही है। इस कारण उसने उस मसलह की बाबत पूछ लिया, "तो कुछ समझ आया है हुज़ूर?"

"हाँ।"

"क्या मैं उसमें कुछ मदद कर सकती हूँ?"

"मगर तुम भी तो नगीना की तरह बक जाओगी?"

"तो नगीना कुछ बकी है? हुज़ूर! मुझसे आप ऐसी तवक्को न करें। मैं एक बाल-बच्चेदार औरत घर की बातों को घर से बाहर नहीं कह सकती।"

"पर तुम लालच में भी तो बक सकती हो?"

"तो हुज़ूर! आप इतना पहले ही दे दीजिए कि मेरे मन में लालच आए ही नहीं।"

मेहरुन्निसा हँस पड़ी। वह पहले इसका इम्तिहान लेना चाहती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कहा, "देखो, सिपाहियों में कुछ [illegible] सकते हैं कि उनमें से कोई मेरे साथ नाजायज़ ताल्लुक रखता है। तुम जाओ और पहचान आओ कि जिस हुलिया का आदमी मैं बताती हूँ, वैसा पकड़ा गया है या नहीं।"

फातिमा ने कह दिया, "तो हज़ूर ! बताइए। मैं कोशिश करूँगी।"

"पहले यह पता करो कि लोग पकड़ कर कहाँ रखे गये हैं और फिर उनमें कोई नौजवान दाढ़ी-मूँछों के बिना, दाहिनी गाल पर तिल के निशान वाला, लम्बा, चुस्त और बहुत मीठा बोलने वाला है या नहीं ?"

"हुज़ूर !" फातिमा ने पूछ लिया, "वह हिन्दू है या मुसलमान ?"

"मुसलमान पठान है।"

'तो हुज़ूर ! पता करूँगी।"

"तो फौरन जाओ और शाम से पहले आकर खबर देना।"

"कुछ सिपाहियों को लेने-देने के लिए मिल जाये।"

शहज़ादी ने एक सौ रुपये दिये। वह फातिमा के मन में यह बात बैठाना चाहती थी कि वह अपने आदमी के विषय में जानने के लिए बहुत उत्सुक है।

फातिमा गयी और सायंकाल दीया जलने पर ही लौट सकी। मगर उससे पहिले खादिमा शहज़ादी से ऐसे मिलने आयी, मानो बेमतलब आयी हो।

उस वक्त महताब बैठी उससे बातें कर रही थी। खादिमा बैठक के बाहर बैठी रही। भीतर महताब शहज़ादी से कह रही थी—

"बहिन ! तुमने खुद ही तो मुझे आने की दावत दी और फिर दरवाज़ा बन्द कर मुझसे छिप कर बैठ गयीं।"

"छिप कर नहीं बैठी थी, अम्मी ! मैं तो भीतर किसी से रूठ कर बैठी थी।"

"ओह ! भला किससे रूठ रही थीं ?"

"अपनी किस्मत से।"

महताब मुस्कराई और बोली, "जानती हो बहिन ! किस्मत से रूठने का क्या मतलब है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"रूठना यही होता है जैसे छिपकर बैठ जाना। जैसे अपने वाल्दैन से रूठ जाते हैं।"

"परन्तु क़िस्मत तो माँ-बाप नहीं हैं। माँ-बाप तो अपने बच्चे से मुहब्बत करते हैं और रूठे बच्चे को मनाते हैं, मगर क़िस्मत तो एक अति निष्ठुर और क्रूर शै है। इसके मन में मुहब्बत नहीं होती। यह बहुत हठी होती है।"

"तो इससे कैसे रूठा जाता है?"

"इसका मुक़ाबिला करने के लिए पुरुषार्थ किया जाए।"

"और अगर पुरुषार्थ करने की न ताकत हो न तरीका आए तो?"

"तो ताक़त हासिल की जाए और तरीका सीखा जाए।"

"यही तो समझ नहीं आ रहा।"

"तुम अपनी बात बताओ। शायद मैं कुछ सुझाव दे सकूं?"

"अम्मी! मैं और तुम दोनों तकरीबन एक ही उम्र की हैं। भला तुम मुझे क्या मदद दे सकोगी?"

"मेरा एक मददगार है। मैं उससे तुम्हारे लिए भी मदद माँग सकती हूं।"

"कौन है? क्या बड़े भाईजान की बात कहती हो?"

"वह शाही खानदान का आदमी नहीं है।"

"तो वह कौन है?"

"वह शहंशाहों का भी शहंशाह है।"

"मुगल शहंशाह से भी बड़ा शहंशाह है क्या कोई?"

"हाँ। वह खुदा, परमात्मा, सब पर दया करने वाला है।"

मेहरुन्निसा को याद आ गया कि पिछली बार उसकी बड़ी बहिन जहानआरा ने कहा था कि मेहताब बेगम मर्द की सोहबत न मिलने से नीम पागल हो रही है। इस पर वह गम्भीर हो गयी और बोली, "अम्मी! तुम बड़े भाईजान से मेल-मुलाकात रखती हो। मैं समझती थी कि उनसे मदद लेना चाहती हो, मगर यह बात ही दूसरी निकल आयी। मैं समझती हूँ कि तुम्हारे मददगार को तो महल के कामों में कुछ भी दखल नहीं।"

"परीक्षा कर देख लो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अगर वह खुदा है तो अम्मी ! उसी से पूछ लो न कि मेरी मुश्किलाहट और मुसीबत क्या है ?"

'अच्छी बात है। पता कर लूंगी। बताओ, दरवाज़ा किसलिए बन्द कर रखा था ?"

"तुमको बताया तो है कि मैं रूठी हुई थी।"

"तो अब रूठना नहीं हो रहा ?"

"रूठी तो हुई हूँ मगर जानती नहीं कि किस तरह ज़ाहिर करूँ ?"

"अच्छा देखो। मैं एक खास मतलब से आयी हूँ।"

'हाँ बताओ अम्मी ! क्या मतलब है तुम्हारा मुझसे ?"

"इस शाही महल में एक तुम्हारी बहिन है रोशनआरा। वह तुम्हारी मदद करना चाहती है। वह तुम्हारे पास आना नहीं चाहती। इसलिए उसने मुझको भेजा है।"

"तो तुम भी रोशनआरा के गुट में शामिल हो गयी हो ?"

"मैं किसी के भी गुट में नहीं हूँ। मैं तो परमात्मा के पक्ष में हूँ और वह सब के साथ न्याय और दया करने वाला है।"

मेहरुन्निसा हँस पड़ी और बोली, "अम्मी ! रहम और इन्साफ दोनों एक साथ कैसे आ सकते हैं ? जहाँ रहम होगा वहाँ इन्साफ भी हो सकता है क्या ?"

"मेहर बहिन ! न्याय और दया मे अन्तर नहीं। दोनों एक ही चीज़ हैं। अन्तर देखने वाले की बुद्धि के दोष के कारण होता है।"

"भला यह बताओ कि मैं अपने महबूब के पास जाना चाहती हूँ। मैं महल से भाग जाना चाहती हूँ। यहाँ इन्साफ और रहम एक जैसे हो सकते हैं क्या ?"

महताब को यह सब विदित था और वह इसके उत्तर के लिए तैयार थी। वह मुस्कराते हुए बोली, "तुम नहीं जानतीं, मगर वह जो सब कुछ जानता है, यहाँ भी न्याय और दया के मार्ग को जानता है। पर तुम पहिले उस पर भरोसा करना सीखो।"

मेहरुन्निसा ने उतावली में कह दिया, "मैं अपने महबूब के पास जाना चाहती हूँ। यही मुझ पर दया होगी। भला क्या यह न्याय भी है ?"

"तो यह अन्याय कैसे हो सकता है ? दो प्रेमियों को मिलाने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कौन अन्याय कहेगा ? शर्त यह है कि दोनों प्रेमी हों। यह न हो कि एक प्रेमी हो और दूसरा धूर्त ही हो।"

"यह कैसे पता चले कि वह दगा कर गया है या हकीकत में मुहब्बत करता है ?"

"समय ही इसका निर्णय कर सकता है। इस संसार में बहुत हैं जो भँवरे की भाँति रस चूस कर चल देते हैं। परमात्मा उनको न मिलाने में ही न्याय समझता होगा।

"देखो बहिन मेहर ! हम सब अनजान बच्चे हैं। प्रायः हम नहीं जानते कि जो कुछ हम कर रहे हैं, वह अपने साथ भी न्याय कर रहे हैं अथवा अन्याय कर रहे हैं। वह परमपिता तो हमारे साथ न्याय ही करता है और हम अपनी मूर्खता के कारण इसको अन्याय समझ बैठते हैं।

"मैं अपना ही उदाहरण दे दूँ तो ठीक नहीं क्या ? मैंने समझा था कि मुझे एक बहुत बड़ा प्रेमी मिल गया है। इससे मैं अति प्रसन्न थी, परन्तु समय पर वह तो एक धोखा ही समझ आया। परमात्मा ने मेरी भूल के लिए मुझे दण्ड दिया है, परन्तु यह मुझपर दया भी है और मेरे किये पर न्याय भी है। मैं इस महल में कैद हूँ, यह तो दण्ड है और दया यह है कि तुम जैसी प्यारी बहिनें, दारा जैसे भाई दिए हैं और…।" वह कहते-कहते रुक गई।

"और क्या कहने लगी थीं अम्मी ?"

"वह फिर बताऊँगी। अब तो तुम्हारी बात कर रही हूँ न। देखो मेहर ! हम प्रेमी उनको मानते हैं जो हमारा हितचिन्तन करता रहे।"

"वह क्या हितचिन्तन करेगा ?"

"अगर तो वह तुमसे सच्चे हृदय से प्रेम करता है तो निःसन्देह तुमको इस कैद से छुड़ाने का यत्न करता रहेगा और यह तुम्हारे लिए एक सन्तोष की बात होनी चाहिए।"

"मगर यह भी तो मुमकिन हो सकता है कि वह पकड़ा गया हो और कल फाँसी पर लटका दिया जाए ?"

"जहाँ तक मुझे पता चला है वह पकड़ा नहीं गया। इस पर भी कल कोई-न-कोई फाँसी पर लटका दिया जायेगा, जिससे लोगों के मन में डर बैठ जाए कि महल की तरफ नजर उठाकर देखने वाले के साथ क्या सलूक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा सकता है।"

"किसके मन में डर बैठाया जा सके ?"

"जिसने तुमको भगा ले जाने का यत्न किया है, यदि तो उसका प्रेम सच्चा हुआ तो वह डरेगा नहीं। तुम दोनों परमात्मा से प्रार्थना करोगे तो वह तुम्हारे मिलने का मार्ग दिखा देगा और तुम मिल सकोगे।"

मेहरुन्निसा इस लम्बी दलील को सुन आश्चर्यवत् मुख देखती रह गयी। उसे एक बात से प्रसन्ता हुई थी कि महताब समझती है कि वह पकड़ा नहीं गया। इस पर वह और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहती थी। उसने पूछ लिया—

"अम्मी ! क्या तुम मुझको बता सकती हो कि तुम यह कैसे समझती हो कि वह पकड़ा नहीं गया ? क्या तुम उसे जानती हो ?"

"नहीं; मैं नहीं जानती। मैं तुम्हारे भाईजान दारा की बात कह रही हूँ उसने उन सबसे मुलाकात की है जो पकड़े गए हैं और उनका खयाल है कि असली आदमी पकड़ा नहीं गया।"

"इस पर भी वे किसी एक को फाँसी लगवाने वाले हैं ?"

"मैंने उनको मना किया था, मगर वे कहते हैं कि यह राज्य-कार्य है। राज्य में न्याय हो या न हो, परन्तु प्रजा को पता होना चाहिए कि न्याय हो रहा है और राज्य न्याय करने की तौफीक रखता है।

"मैं तो राज्य हूँ नहीं। इसलिए मैं इस राजनीति को पसन्द करती नहीं। इस पर भी यह हो रहा है और इस राजनीति को चलाने वाले जानें कि उस अन्याय और अत्याचार का उनको क्या मूल्य देना पड़ेगा।

"जहाँ तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम परमात्मा का धन्यवाद करो कि तुम्हारा प्रेमी पकड़ा नहीं गया और यदि वह प्रेमी सच्चा है तो फिर मिलेगा।"

यह बात बहुत ही उत्साहवर्धक थी। उसने खुशी के आँसू बहाते हुए महताब का धन्यवाद कर दिया, "अम्मी ! तुम्हारी इस सही बात के लिए मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।"

"तुम तो मेरी बहिन हो न ?"

"और रोशनआरा बहिन क्या कहती थीं ?"

"वह कहती है कि तुम अपने प्रेमी का नाम उसे बता दो तो वह तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दोनों में मेल-मुलाकात कराने का यत्न करेगी ।"

मेहरुन्निसा इससे गम्भीर हो गयी। वह आँखें मूंद विचार करती रही। फिर बोली, "मुझे उसकी सदाकत और ईमानदारी पर यकीन नहीं। मेरा प्रेमी एक हिन्दू नौजवान है। अम्मी ! तुम्हारी जाति का है और रोशन बहिन तो हिन्दुओं को गालियाँ देती हैं।"

"क्या गालियाँ देती हैं ?"

"यही कि यह नामुराद कौम आज आठ सौ साल की कोशिशों पर भी अभी तक इस्लाम की मुरीद नहीं बनी। इस्लाम ने आधी दुनिया को अपना पेराओ बना लिया है, मगर ये लोग मर जाते हैं पर अपना मज़हब नहीं बदलते।"

"तो यह बात है ?"

"हाँ अम्मी ! अब अपनी ही बात देख लो। तुमको महल में रहते हुए पाँच साल होने जा रहे हैं और तुम एक मुसलमान की बीवी भी रह चुकी हो। यहाँ अकेली रहती हुई भी तुम दीनदार नहीं बनीं।

"शहंशाह ने तुम्हारा नाम भी इस्लामी रख दिया है, मगर तुम्हारा पूजा-पाठ वही चलता है जो हिन्दू का है।"

महताब हँस पड़ी। उसने कहा, "तुम सबके हैरान होने का कारण मैं जानती हूँ और तुम सबकी नादानी पर मुझे हँसी आती है। तुम लोग नहीं जानते कि मजहब का सम्बन्ध मेरे नाम, मेरे जिस्म, मेरे कपड़े और मेरे खाने-पीने से नहीं है। इसका सम्बन्ध मेरे आत्मा से है। मेरा मन, बुद्धि और आत्मा हिन्दू हैं। मैं दुर्गा की उपासिका हूँ और वह मुझको कभी-कभी बताया करती है कि इस महल के लोग एक बारूद की सुरंग पर बैठे जशन उड़ा रहे हैं। एक दिन यह बारूद फटेगा और सब कुछ समाप्त हो जायेगा।"

"अम्मी ! यही बात तो तुम उस दिन भी कह रही थीं। मगर तुम्हारी बात सुनने वाले तुमको नीम पागल मानते हैं। उनका खयाल है कि तुमको किसी महबूब की ज़रूरत है।"

महताब ने मुस्कराते हुए कहा, 'दिल की तसल्ली के लिए यह खयाल अच्छा है, मगर इसमें कोई दलील नहीं है। मेरे पागल होने का कोई सबूत भी नहीं। यह बात कि शहंशाह के मरने पर महल और मुल्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में इन्कलाब होता ही है, यह ज़रूरी नहीं। यह खानदानी रवायात तो है, मैंने इसको देखकर नहीं कहा। उस दिन मैंने यह कहा था कि इस दुर्घटना में पाँच साल रह गए हैं और यह मेरी बात नहीं, दुर्गा भवानी ने कहा है।"

"दुर्गा भवानी ने ?"

"हाँ ?"

"वही जिसकी तुम परस्तिश करती हो ?"

"हाँ। मगर वह हृदय में रहती है और मैं ही उसे देख और उसकी बात सुन सकती हूँ।"

'बहुत हैरानी की बात है।"

"वह मेरे मन में बसती है। वहाँ पर बैठी-बैठी ही जब मुझ पर प्रसन्न होती है तो कभी-कभी मुझसे बातें करने लगती है।"

"यह तुमको इस महल से बाहर क्यों नहीं कर देती ?"

"देवी भगवती कहती थीं कि यहाँ मुझे भक्ति और आत्मोन्नति के लिए साधन उपलब्ध हैं। महल के बाहर वे नहीं हैं। इसलिए मुझे अपनी कैद पर सन्तोष करना चाहिए।"

मेहरुन्निसा इस सबको बकवास समझती थी। इस पर भी उसने पूछ लिया, "दुनिया में और भी कोई ऐसा है जो इस तरह मानता है।"

"हाँ, एक है। वह हकीम सरमद हैं। वह मेरी बात समझते हैं और मैं उनकी बात समझती हूँ।"

मैं आज भाईजान से मिलूँगी।"

"मुश्किल है। वे तो यारकंद और कन्धार की मुहिम पर गए हैं। आज सुबह विदा हो गए हैं। फौज वहाँ पहले ही है। कुछ दिन हुए खजाना और तोपखाना गया था। आज वे इस मुहिम को चलाने के लिए चले गए हैं।

"मुराद भाईजान और औरंगज़ेब भाईजान दोनों इस मुहिम पर जा चुके हैं और दोनों असफल लौटे हैं।

'अब बड़े भाईजान गए हैं। उनका शहज़ादा भी साथ गया है।"

"अच्छा, खुदा हाफिज़।"

मेहताब चुप रही।

मेहरुन्निसा ने रोना-धोना छोड़ दिया और सन्तोष से अपने प्रेमी के सन्देश की प्रतीक्षा करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: १ :

औरंगज़ेब के दक्षिण का सूबेदार बनते ही दक्षिण के दोनों मुख्य इस्लामी राज्यों में हलचल मच गई। यद्यपि औरंगज़ेब, जब मुल्तान का सूबेदार था, कन्धार विजय के लिए दिल्ली दरबार की ओर से भेजा गया था, परन्तु वहाँ से भारी हानि उठाकर लौटा था। इस पर भी औरंगज़ेब के जासूसों ने जो गोलकुण्डा और बीजापुर दरबारों में घुसे हुए थे, यह विख्यात कर रखा था कि वह एक अति सफल सेनानायक है। गोलकुण्डा में औरंगज़ेब के भेदियों का एक झुण्ड पहुँचा हुआ था।

औरंगज़ेब, बीजापुर और गोलकुण्डा दोनों राज्यों को मिटा देना चाहता था। इसमें एक कारण तो यह था कि जब तक दोनों राज्य बने हुए थे, तब तक दक्षिण के हिन्दू राज्यों तक पहुँच नहीं हो सकती थी। हिन्दू राज्यों में हिन्दू संस्कृति सुरक्षित थी और औरंगज़ेब की आँखों में यह खटकती थी। वहाँ बड़े-बड़े मन्दिर थे, कुतुबखाने थे और उनमें पूजा-पाठ होता था, घण्टे-घड़ियाल बजते थे और स्वाध्याय चलता था। यह सब समाचार औरंगज़ेब के जासूस ला-लाकर देते थे।

सम्वत् १७११ की बात है। औरंगज़ेब के सलाहकारों की एक मजलिस में दो वर्ष की भागदौड़ पर विचार हो रहा था। इस सलाहकारों में सैनिक सालार और मुल्ला-मौलाना थे। ये मुल्ला-मौलाना इन दक्षिणी राज्यों में असन्तोष और बग़ावत फैलाने के लिए काम कर रहे थे और सैनिक अधिकारी वहाँ की सैनिक स्थिति का अध्ययन करते थे। दो वर्ष के निरीक्षण और कार्य का अनुमान लगाने के लिए इस मजलिस की बैठक हो रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरंगज़ेब चुपचाप बैठा इन सबकी बातें सुनता था । वह अपना मत बताता नहीं था । हाँ, जहाँ कहीं इन जासूसों की बात अस्पष्ट होती थी, वह पूछता था ।

एक मौलाना रफीक थे । वह दक्षिण में घूमते रहते थे । मौलाना साहब दाढ़ी-मूंछ मुंडा और धोती-कुरता पहिन, दुपट्टा कन्धे पर रख तथा तिलक लगाकर अपने क्षेत्र में रहते थे । और अब वह अपने अनुभव बता रहे थे । वह कह रहे थे, "हुजूर ! बंगलूर एक नई ताकतवर सल्तनत है । वहाँ की फौज में तीन हजार से ऊपर सिपाही हैं । दो सौ जंगी हाथी हैं । बन्दूकें और तोपें भी हैं । एक हज़ार घुड़सवार हैं । राज्य में हीरा, मोती, जवाहरात की तिजारत होती है । वहाँ से धान, नारियल, काजू और कई चीजें जहाजों पर लाद-लादकर बाहर के मुल्कों में जाती हैं और वहाँ से चाँदी, सोना और जवाहरात आता है, । बीजापुर की सरहद पर बड़े मजबूत किले बने हैं जिनकी दीवारों पर तोपें चढ़ी रहती हैं और उनमें दारू-बारूद भरा तैयार रहता है । पुर्तगाली और फ्रांसीसी कारीगर तोपों की ढलाई और दारू-बारूद बनाने में लगे हुए हैं ।

"इस पर भी हुजूर ! वहाँ के लोग भोले-भाले दिलो दिमाग वाले हैं और किसी भी तरह का झूठ बोलकर उन्हें यकीन दिलाया जा सकता है । वहाँ के लोग और फौज भी, बिना जंग लड़े ही हराई जा सकती है, यदि उनके मन में यह बैठा दिया जाए कि उनके राज्य पर शनिश्चर की छाया पड़ गई है और राज्य तबाह ही होगा ।"

इस पर औरंगज़ेब ने पूछ लिया, "हम यह जानना चाहते हैं कि वहाँ के लोग इस्लाम को एक खुदाई नियामत और बरकत समझते हैं क्या ?"

"नहीं जहाँपनाह ! वे सब-के-सब खास तौर पर छोटी कौमों के लोग अपने परमात्मा, जिनकी मूर्तियाँ मन्दिरों में लगी हैं, के अलावा अन्य किसी देवी-देवता के कायल नहीं होते । सल्तनत के समुद्री किनारों पर अरब देश के मल्लाह और उनके साथ मौलाना आये हुए हैं । उन्होंने कुछ इस्लाम की इशाअत की है, मगर वह वहाँ की औरतों के द्वारा है । वे अरब के रहने वाले अपनी बीवियों को लेकर तो आते नहीं और समुद्री किनारों के इलाकों में औरतों की तादाद मर्दों से ज़्यादा है और ये इन मल्लाहों और सौदागरों से सम्बन्ध बना लेती हैं । एक बार यह सम्बन्ध बना तो वे औरतें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वापस हिन्दू मजहब में ली नहीं जा सकतीं। न ही वे जाना चाहती हैं। वे इस्लाम के असर में होकर दीनदार औलाद पैदा करने लगती हैं। इस तरह वहाँ इस्लाम की तरक्की हो रही है। मगर राज्य के दूसरे लोग तो इस्लाम को एक बहुत ही घटिया चीज़ समझते हैं और इन औरतों को नफ-रत की निगाह से देखते हैं।"

इस प्रकार तीनों बड़े राज्यों का वृत्तान्त सुना जा रहा था। औरंग-ज़ेब ने मजलिस की समाप्ति पर यह कह दिया, "बेंगलूर का धन-दौलत और वहाँ की खुशहाली को मैं भुला नहीं सकता। मगर वह देश अभी हमारी पहुँच से दूर है। हमारे मार्ग में तीन बहुत बड़ी रुकावटें हैं। एक तो गोलकुण्डा है, दूसरा बीजापुर और तीसरा मराठों की छोटी-सी सल्त-नत। हमने एक मियाँ वकील वहाँ भेजे थे। वे वहाँ से शिवा के मुरीद बन कर लौटे हैं और बजाय इसके कि वहाँ की कमजोरियाँ बताएँ, वे शिवा की तारीफ के पुल बाँधने लगे। बिना हमारे पूछे वे हमको राय देने लगे कि हम मराठों पर हमला न करें। वहाँ हमको कामयाबी नहीं मिल सकती। खुदा शिवा की तरफ है। मैंने उसको दिल्ली वापस भेज दिया है।

"आप सबकी खबरों से गोलकुण्डा की खबरों से हमको सबसे ज़्यादा तसल्ली हुई है और हम अपनी सारी तवज्जो अभी उसकी तरफ ही करना चाहते हैं।"

मजलिस खत्म हुई और औरंगज़ेब, बिना यह बताये कि वह तवज्जो कब और किस तरह होगी, उठकर मजलिस से चला गया। यह मजलिस शहज़ादा की आम बैठक में हो रही थी। यहाँ से उठकर वह अपनी खास बैठक में जा पहुँचा। वहाँ उसने विश्वनाथ को मुलाकात के लिए बुलाया हुआ था।

विश्वनाथ को औरंगज़ेब का खास संदेश गया था। उसमें लिखा था कि पुणे की जागीर के मुतअल्लिक कुछ सियासी मसले तय करने के लिए फौरन हाज़िर हो जाओ।

विश्वनाथ ने यही ठीक समझा कि जाकर सूबेदार की बात सुननी चाहिए। वह बुड़हानपुर में पहुँचा और एक सराय में ठहर दरबार में अपनी सूचना देने आ पहुँचा, परन्तु ज्यों ही उसने दरबान से कहा कि वह पुणे से आया है और शहज़ादा साहब से मुलाकात की अर्जी कर रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो दरबान ने, कह दिया, "आप आइये आपका इन्तजार हो रहा है।"

विश्वनाथ को विस्मय हुआ कि किस प्रकार यहाँ उसकी प्रतीक्षा हो रही है ? वह तो बिना सूचना के और द्रुतगतिसे पुणे से आ रहा है। साथ ही उसने सराय में अभी अपना नाम-धाम नहीं लिखाया था। वह विस्मय करता हुआ दरबान के साथ भीतर चला गया। उसे शहज़ादा साहब की खास बैठक में बैठाकर कह दिया, "आपके आने की इत्तला कर दी गई है।"

विश्वनाथ औरंगज़ेब के प्रबन्ध की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका। वह अचम्भा करता था कि यह एक अत्यन्त चतुर शासक है। वह मन में विचार कर रहा था कि इस शहज़ादा के शहंशाह बनने पर तो नवजात मरहठा राज्य को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। उसे हिन्दुस्तान के बदल रहे चित्र से यह समझ आ रहा था कि औरंगज़ेब शहंशाह बनेगा।

वह अभी अपने इन ताने-बानों के विचार में लीन था कि शहज़ादा वहाँ आ पहुँचा। विश्वनाथ उठ खड़ा हुआ और झुककर नमस्कार कर मुस्कराते हुए औरंगज़ेब के मुख पर देखने लगा। औरंगज़ेब ने बैठते हुए कहा, "मुस्करा किसलिए रहे हो विश्वनाथ ?"

"आपकी हुकूमत करने में काबलियत देखकर।"

"क्या काबलियत देखी है हमारे दोस्त ने ?"

"मैं पुणे से भागा चला आ रहा हूँ, मगर मेरे यहाँ आने की इत्तला यहाँ मुझसे पहले पहुँच गई है। वह आपकी काबलियत का एक छोटा-सा नमूना है।"

"यह तो कुछ नहीं। मगर मै एक बात तुमको बताता हूँ कि मुगल जासूस इस वक्त सारे दक्खन में फैले हुए हैं, मगर वे सरदार शिवाजी के इलाके में नहीं पहुँच सकते। अगर कोई अपनी होशियारी से वहाँ पहुँच भी जाता है तो वहाँ से कुछ भी जानने लायक बात नहीं जान सकता।

"मैंने इसकी वजह जानने की कोशिश की है। जहाँ तक मुझे मालूम हो सका है, वह यह है कि हमारे जासूस इस्लाम की तबलीग के लिए काम कर रहे हैं। दक्खन में शिया मुसलमान सल्तनतों में तो मज़हबी ज़ोश ठंडा पड़ रहा है और वहाँ वे अपने सुन्नी दुश्मनों को भी राज़ की बात बताने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में गुरेज़ नहीं करते। लेकिन आपके इलाके में, ऐसा मालूम होता है कि मज़हब की मज़हब से टक्कर हो रही है। वहाँ हमारे मज़हबी कट्टर जासूस नाकामयाब होकर लौट आते हैं।"

विश्वनाथ ने पूछ लिया, "तो क्या शहज़ादा साहब ने मुगल जासूस दक्षिण में भी भेजे हैं?"

"हाँ। मगर वहाँ के इलाकों में हमें बीजापुर और गोलकुण्डा से ज़्यादा कामयाबी मिल रही है। वहाँ हिन्दू, मुसलमान, ईसाई का सवाल नहीं है। वहाँ लोग थोड़े से रुपयों के लोभ में सब कुछ बता देते हैं।"

"मगर हुजूर! वहाँ तो हमारे इलाके से ज़्यादा कट्टर हिन्दू हैं। हम लोग छोटे-छोटे मन्दिरों में बैठ पूजा करते हैं और वहाँ तो पहाड़ समान ऊँचे और विशाल मन्दिरों में पूजा होती है।"

"हाँ; मगर वहाँ इस्लाम अथवा ईसाइयत की इतनी मुखालिफत नहीं, जितनी आपके इलाके में है।"

"हुजूर! यह बात इस तरह नहीं है। हमने आज तक किसी मुसलमान को अपने मजहबी रस्मो-रिवाज अदा करने से मना नहीं किया। पुणे में तो अब दो मस्जिदें हो गई हैं और वहाँ दीनदारों को पाँच बार नमाज पढ़ने की इजाजत है।"

"मगर इस पर भी कोई हिन्दू वहाँ का किसी किस्म का राज़ बताने के लिए किसी भी कीमत पर तैयार नहीं होता।"

"हजूर, यह इसलिए नहीं कि वे हिन्दू हैं और जासूस मुसलमान हैं। इसमें मजहब का सवाल नहीं। इसमें सियासियात ही वजह है। हमारे इलाके के लोग सियासी नजरिया रखते हैं और दक्षिण के लोग सिर्फ मज़हबी नज़रिया रखते हैं। सियासी भेद वे किसी विदेशी को बताना नहीं चाहेंगे।"

'तो हम, मेरा मतलब है, मुगल आपके देश के नहीं हैं क्या?"

"हम मुगलों के अधीन हैं, मगर हम मुगल नहीं हैं।"

"यह क्यों?"

"इसलिए कि मुगल हमको अपने समान समझते नहीं।"

"कोई मिसाल दो, जिसमें किसी पुणे रियासत के आदमी को गैर-मुगल समझा गया हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एक मिसाल तो दी जा सकती है। आपके खादिम के माता-पिता बिना वजह ग्वालियर में कैद हैं और…।"

"हाँ, हाँ ! और क्या ?"

"इस खादिम की बहिन ज़बरदस्ती हरम में बन्द कर रखी गई है।"

"मगर ये दोनों बातें इसलिए नहीं कि वे गैर-मुल्की हैं।"

"हजूर ! वे इसलिए बन्दी हैं कि वे आपके रीति-रिवाज को पसन्द नहीं करते। एक हैं जो झूठ बोलना पसन्द नहीं करते। वे जो कुछ, उनका इल्म बताता है, सब धर्मानुसार सच-सच बता रहे हैं और आपके मुल्क वाले सियासी मुआमलों में झूठ बोलना ईमान मानते हैं। यह एक गैर-मुल्की बात है।"

"तो आपके इलाके में कोई झूठ नहीं बोलता ?"

"जो बोलता पकड़ा जाए वह सज़ा पाता है। सच बोलना धर्म का एक अंग है और धर्म ही हमारे मुल्क का कानून है।"

"तो तुम मुल्क कानून के बिना पर समझते हो ?"

"बिल्कुल। हमारे मुल्क का कानून है कि हर-एक को अपने ख्यालात रखने और ज़ाहिर करने की आज़ादी है। जहाँ यह नहीं, वह गैर-मुल्क है।"

"मगर यह तो हमारे यहाँ भी है।"

"मुआफ करें। मैं ऐसा नहीं देखता। यहाँ किसी भी शख्स को इस्लाम के खिलाफ तो दूसरी बात है, सुन्नी मज़हब के खिलाफ कोई भी मजहब मानने पर दुश्मन समझा जाता है।"

औरंगज़ेब खामोश हो गया। अभी-अभी वह शिया और सुन्नियों में दुश्मनी ज़ाहिर कर रहा था। उसने कुछ विचार कर बात बदल दी। उसने कहा, "मगर हमारा दोस्त विश्वनाथ भागा-भागा किसलिए यहाँ चला आ रहा है ?"

"शहज़ादा साहब का फरमान मिला और राजा साहब की इजाज़त हुई और अपने खानदान के एक रुक्न को देखने की ख्वाहिश पैदा हो गई। वह इतनी ज़बरदस्त थी कि दो दिन की मंज़िल एक दिन में तय करता हुआ चला आया हूँ।"

"ओह ! हिदायत को मिलने की ख्वाहिश है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ हुजूर ! पिछली बार आया था तो बहुत खुशी हुई थी कि वह न जानता हुआ भी कुदरती कशिश से मुझसे गले मिलने लगा था ।"

"वह उस वक्त ना-समझ था । इसको दो साल गुज़र चुके हैं । अब वह अपने को इतना बेवकूफ ज़ाहिर नहीं करेगा ।"

"मतलब यह कि उसकी कुदरती सूझ-बूझ को कुंद कर उस पर तहज़ीब का मुलम्मा चढ़ा दिया गया है ।"

"हाँ ।"

"तो मुझे उसके इस मुलम्मे के भी दीदार हासिल कर खुशी हासिल होगी ।"

"हम उसको मुसलमान बना रहे हैं ।"

"हमें इसमें एतराज़ नहीं । हाँ, यह अच्छा होता अगर उसे अपनी माँ के पास रहकर कुछ उससे भी सीखने की इजाज़त होती ।"

"वह तो तब ही हो सकेगा, जब हम खुद शहंशाह होंगे ।"

"तो आप शहंशाह होंगे ?"

"हाँ । हमें यकीन है । हम ग्वालियर के किले में बन्द नजूमी से मिलने गए थे । यह तो हमको पता ही था कि वे महताब बेगम के वालिद हैं । इसलिए आपके भी वालिद हैं । इस बात का पता होने के कारण हमने आपकी बाबत उनको बताया । यह भी बताया कि आप हमसे मिलने आते रहते हैं ।

"यह उनका ही कहना है कि जैसे हर सुबह आफताब निकलता है, उसी तरह मैं तीन साल के बाद हिन्दुस्तान का शहंशाह बनूँगा ।"

"तब हमें आपको फिर मुबारकबाद देने का मौका मिलेगा ।"

: २ :

औरंगज़ेब ने बात बदल दी और कहा, "हमने आपको इसलिए बुलाया है कि राजा शिवाजी को यह बात वाज़ेह कर देनी चाहिए कि हमारे गोलकुण्डा राज्य को अपने में शामिल करने में वह हमारी मदद करे। अगर वह ऐसा करेगा तो हम उसे कोंकण का सारा इलाका अपनी जागीर में शामिल कर लेने की इजाज़त दे देंगे ।"

"हुजूर, एक बात आपको समझ लेनी चाहिए कि एक हिन्दू जब वादा करता है तो वह उसको जान देकर भी पूरा करता है । इसलिए मैं आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राजा साहब की तरफ से यह वचन देता हूँ कि आपके गोलकुण्डा के झगड़े में राजा साहब किसी किस्म की रुकावट डालने वाले नहीं। बल्कि गोल-कुण्डा पर मुगल सल्तनत का कब्ज़ा हो जाने से हमें खुशी हासिल होगी। मगर हम बीजापुर के मातहत जावाली की जागीर अपनी समझते हैं और उसको लेने के लिये हम कोशिश कर रहे हैं।"

"कैसे कोशिश कर रहे हैं?"

"यह तो आपको हमसे ज़्यादा पता होना चाहिए कि एक सल्तनत कैसे बढ़ाई जा सकती है।"

"नहीं विश्वनाथ! मैं तुम्हारा राज़ जानना नहीं चाहता। मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि बीजापुर उसकी मदद करेगा। उसे कुछ भी शक होने पर वहाँ दो लाख सिपाही भेज देगा और आप जिनके पास घोड़े-टट्टू ही हैं, कैसे उसका मुकाबिला कर सकेंगे?"

"पर मेरी तो यह अर्ज है कि सल्तनत बढ़ाने के एक से ज़्यादा तरीके हैं। जंग के इलावा भी कई तरीके हैं।"

औरंगज़ेब विश्वनाथ का मुख देखता रह गया। विश्वनाथ ने कह दिया, "हमारे बीजापुर में मुकीम जासूसों ने यह खबर भेजी है कि बीजापुर दरबार की तरफ से राजा शिवाजी को कत्ल करने की साज़िश की गई है। उसको कत्ल करने के लिए कातिल जावाली पहुँच गये हैं और कातिलों को खूब खिलाया-पिलाया जा रहा है।"

"और आप इसकी तदारक मुखाल्फत कैसे कर रहे हैं? हमारा खयाल है कि अपने राजा साहब को इस खतरे से बचाना चाहिए।

"यह हम करने की पूरी कोशिश करेंगे। हमारे पास चन्द्रराव मोरे का खत आया है। उसने लिखा है कि वह राजा शिवाजी से संधि कर बीजापुर के विरोध में एक संगठन बनाना चाहता है। उसका कहना है कि शिवाजी अगर जावाली में खुद आ जायें तो यह संधि सुगमता से हो सकेगी। हम जानते हैं कि राजा साहब को वहाँ बुलाकर यह कत्ल करने का मौका हासिल करना है।"

'तो इन्कार कर दो।"

"यह हमारी नीति नहीं। हम बातचीत करने के लिए हमेशा तैयार हैं और अपने दोस्त बनाने में हमेशा तैयार रहते हैं। राजा साहब ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वहाँ जाने के लिए अपनी रजामन्दी ज़ाहिर कर दी है।"

औरंगज़ेब मुख देखता रह गया। उसको भी उसके जासूसों ने राजा शिवाजी के कत्ल की साज़िश की खबर भेजी थी, मगर मुगल जासूस यह नहीं जान सके थे कि कत्ल कैसे और कहां किया जायेगा। वह देख रहा था कि शिवाजी के जासूसों को उसके जासूसों से ज़्यादा पता है और वह इसको कोरी बेवकूफी समझता था कि शिवाजी जावाली जाये। मन-ही-मन वह शिवाजी के इस फैसले पर प्रसन्न था। वह समझ रहा था कि अगर शिवाजी मारा गया तो एक ज़बरदस्त काफिर तो मरेगा ही, साथ ही, मुगल सल्तनत शिवाजी की जागीर पर कब्ज़ा करने का बहाना ढूंढ लेगी। तब मुगलों को बीजापुर पर दबाव डालने का बहुत अच्छा मौका मिलेगा।

प्रत्यक्ष रूप में औरंगज़ेब ने चिन्ता प्रकट की और कहा, "आपके राजा साहब के साथ कोई हादसा हो गया तो मुगल सल्तनत को बहुत नुकसान पहुँचेगा।"

"आप राजा साहब के लिये खुदा से दुआ करिये। देखिये हज़ूर! हमारे और आपके दरमियान एक बात साँझी है। वह है खुदावन्द करीम। हम भी राजा साहब की जिन्दगी के दराज होने की प्रार्थना किया करते हैं और आप भी अपने खुदा से ऐसा कहिएगा तो खुदा ज़रूर सुनेगा। राजा साहब आपका एहसान मानेंगे।

"हम यह चाहते हैं कि आप इस जावाली के मुआमले को हमें खुद निबटने की इजाज़त दें। अगर राजा साहब का इलाका बड़ा होना है तो यकीनन मुगल सल्तनत की हदूद बढ़ती है। हम तो मुगल सल्तनत का एक हिस्सा हैं।"

"ठीक है। मैं इस बात को समझता हूँ और खुदा के अलावा भी तो मैं तुम्हारे साथ एक और रिश्ता रखता हूँ।"

"हाँ। आप मेरी बहन के लड़के के सरपरस्त हैं।"

"न सिर्फ यह, बल्कि तुम्हारी बहन के भी सरपरस्त बनने वाले हैं। हमारे जासूस दिल्ली के महलों से यह खबर भेज रहे हैं कि महताब बेगम हमारे लिए बहुत ही मुआफिक जजबात रखती है। हमने पिछले साल हिदायत को दिल्ली भेज उससे मिलाया था और उसने हमारा निहायत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मुहब्बत-भरे इल्फ़ाज़ में शुक्रिया अदा किया था।"

विश्वनाथ नहीं जानता था कि उसकी बहन ने क्या और किन इल्फाज में शुक्रिया अदा किया है। यद्यपि वह इस रिश्ते को पसन्द नहीं करता था, मगर उसने इस बात को टाल दिया और कहा, 'मैं समझता हूँ कि हुजूर की मर्जी के मुतअल्लिक अमल करने का वादा मैंने अर्ज कर दिया है और आपकी तरफ से भी हमें कुछ पाँव फैलाने की इजाज़त हासिल हो गयी है।"

"हाँ। आपकी कामयाबी सुन हमें बहुत खुशी हासिल होगी।"

"तो अब हिदायत से मिला दीजिए। मैं ज़रा उसे एक-दो दिन अपने साथ रखना चाहता हूँ।"

"क्या होगा इससे ?"

"मुझे अपनी बहन के लड़के को अपने साथ रखकर वही तस्कीन हासिल होगी जो बहन के दीदार हासिल कर होती है।"

औरंगज़ेब गम्भीर विचार में लीन हो गया। कुछ सोचकर उसने मुस्कराते हुए कहा, "और उसे लेकर भाग गए तो ?"

"यह मेरी फितरत में नहीं है, हुजूर !"

"देखो विश्वनाथ ! हम जानते हैं कि तुम एक बार यहाँ आए थे तो हमारे सालार की बीवी को लेकर भाग गए थे। यह हमारे भाई मुराद के वक्त की बात है। इस पर भी जब हमने तहकीकात की तो पता चला कि वह तुम्हारी शादी-शुदा बीवी थी और वह मुसलमान भी नहीं हुई थी। इसलिए हमने उसके लिए तुम्हारे राजा से झगड़ा मोल लेना पसन्द नहीं किया, मगर तुम एक और निहायत ही खतरनाक बात करने जा रहे थे। तुम पिछली वार दिल्ली से आते समय मेरी छोटी बहन को उड़ा लाने की कोशिश में थे। यह तो बड़ी बहिन को पता चल गया और उसने उसके अगवा को टाल दिया। बताओ, तुम कैसे कहते हो कि यह तुम्हारी फितरत में नहीं है ?"

"हुजूर ! मैं यहाँ से किसी औरत को भगा कर नहीं ले गया। मेरी शादी-शुदा बीवी सड़कों पर भीख माँगती मिल गयी तो मैं उसको अपने साथ ले गया था। यह तो कोई जुर्म नहीं।

"और दूसरी बात कि मैं शाही खानदान की किसी लड़की को ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागने की साज़िश कर रहा था, बिल्कुल गलत बात है। मैं इसके लिए सजा भोगने को तैयार हूँ, मगर जुर्म साबित करना होगा।"

"तो तुम मेहरुन्निसा को भगाने की कोशिश में नहीं थे ?"

"हुज़ूर ! मैं इस नाम की किसी औरत को नहीं जानता। मैंने इसके ले जाने की किसी साज़िश का मन में खयाल भी नहीं किया।"

इस इनकार को सुन औरंगज़ेब भौंचक्क हो मुख देखता रह गया। फिर कुछ सोचकर बोला, "तो दिल्ली से रवाना होने पर दिल्ली दरवाज़ा के बाहर आमों की बगिया में किसलिए ठहरे थे ?"

विश्वनाथ समझ गया कि दिल्ली में शहज़ादा के जासूस उसका पीछा करते रहे थे। इस पर उसने अपने उर्वर मस्तिष्क से काम लिया और कह दिया, 'वह तो हुज़ूर, अपने नौकर के पीछे छूट जाने की इन्तज़ार में ठहरा था। जब दिल्ली दरवाज़ा के बाहर पहुँचा तो अपना रसोइया, उसके साथ खच्चर पर खाने-पीने का सामान पीछे छूट गया था। रसोइया पूजा-पाठ में लगा था और मैंने समझा कि वह मेरे पीछे-पीछे आ रहा है। दरवाज़े के बाहर हम पहुँचे तो कुछ रोशनी हो गई थी। और हम छः की जगह पाँच ही थे। मैंने एक नौकर को रसोइये को ढूंढ कर लाने के लिए भेज दिया। उसे लाने में दो घड़ी लग गई थीं।"

औरंगज़ेब को इस सफाई पर विश्वास नहीं आया। इस कारण उसने मुस्कराते हुए कह दिया, "विश्वनाथ ! अगर तुम उस लड़की को ले जाने में कामयाब हो जाते तो मैं बहुत खुश होता। हमारी एक बहन को महल के आज़ाब से छुट्टी मिल जाती। इस पर भी अभी मैं तो शहंशाह नहीं हूँ और मेहरुन्निसा को ढूंढने के लिए यकीनन एक बहुत बड़ी फौज तुम्हारा पीछा करती और शायद तुम्हें ग्वालियर में ही पकड़ तुम्हारे जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर देती।"

"मगर हुज़ूर ! मैं इस किस्म के काम का मुजरिम नहीं था।"

"खैर छोड़ो। देखो, इस लड़के को लेकर भाग न जाने का वादा करो तो मैं उसे तुम्हारे साथ भेज सकता हूँ और देखो, उसको मेरे खिलाफ भड़काया तो हमारे सब कौल-इकरार टूट जायेंगे।"

औरंगज़ेब विश्वनाथ की परीक्षा करना चाहता था। इस कारण उसने ताली बजाई तो वह नौकरानी, जो हिदायत को दो वर्ष पहले लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आयी थी, अब भी आई। उसके साथ हिदायत भी आया। उसने शहज़ादा को सलाम की और प्रश्न-भरी दृष्टि में कभी शहजादा को और कभी विश्वनाथ को देखने लगा। औरंगज़ेब ने पूछा, "हिदायत! इनको जानते हो ?"

"हाँ अब्बाजान! ये कहते थे कि मेरे मामा हैं।"

"हाँ। ये तुम्हारी उस मौसी के भाई हैं, जिससे मिलने के लिए तुम दिल्ली गए थे।"

"ठीक है। इनकी सूरत मौसी से मिलती है।"

"ये तुम्हारी दोस्ती हासिल करना चाहते हैं। तुम इनके साथ सराय में जाओ। तुम्हारी दायी साथ जाएगी। तुम चाहो तो वहाँ इनके साथ तब तक रह सकते हो, जब तक ये यहाँ बुड़हानपुर में रहेंगे।"

"और ये मुझको क्या देंगे ?"

"इन्होंने पहले भी तुम्हें कुछ दिया था। याद है ?"

"हाँ। एक सोने की जंजीर थी।"

"तो अब भी कुछ देंगे।"

"ठीक है। मामाजी! मैं चलूँगा।"

विश्वनाथ समझ गया कि मुगल परिवार की सभ्यता का मुलम्मा अर्थात् खुदगरजी चढ़ रहा है। इस पर भी वह मुस्कराते हुए चुप खड़ा रहा। एकाएक उसने शहजादा को हाथ जोड़ झुककर नमस्कार की और अपनी उँगली हिदायत को पकड़ाने के लिए आगे कर दी।

हिदायत ने उँगली पकड़ी और विश्वनाथ उसको लेकर चल पड़ा। लड़के की दाई साथ-साथ थी।

महल से निकल कर विश्वनाथ ने सवारी का प्रबन्ध किया और दाई तथा हिदायतुल्ला को लेकर सराय मे जा पहुँचा।

सराय में पहुँचकर विश्वनाथ ने हिदायतुल्ला से बहुत बातें कीं। विश्वनाथ को यह समझ आया कि हिदायतुल्ला माँ के समान केवल सुन्दर ही नहीं है, बल्कि तीव्र प्रतिभा भी रखता है। उसे दो वर्ष पूर्व उसके आने की स्मृति सर्वथा स्पष्ट थी। विश्वनाथ ने उससे पूछा, "हिदायत! महल से बाहर घूमने आते हो या नहीं ?"

"नहीं जी! बाबा कहते हैं कि जब बड़ा हो जाऊँगा तो फिर फौजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सालार बनकर सारा हिन्दुस्तान घूमूँगा और फतह करूँगा ।"

"मगर तुम दिल्ली तो गए थे ?"

"हाँ । मगर दाई के साथ पालकी में बैठकर । मज़ा नहीं आया ।"

"कैसे मजा आता ?"

"घोड़े पर या हाथी पर चढ़कर जाता तो ।"

"और अगर घोड़ा तुमको लेकर भाग जाता तो ?"

"कैसे ले जाता ? मैं जोर से उसकी लगाम खींच लेता । मैं घोड़े की सवारी करता हूँ, मगर महल के अन्दर ही ।"

"तुमने शहर को भी देखा है या नहीं ?"

"बस उसी दिन देखा था जिस दिन पालकी में बैठकर दिल्ली गया था ।"

"और तुम्हारी पालकी को कहार उठाकर दिल्ली तक गए थे ।"

"नहीं । दिल्ली जाने वाली पालकी गाड़ी थी जो घोड़े से खींची जाती थी ।"

"दिल्ली में किससे मिले थे ?"

"मौसी से ।"

"मौसी ने खाने को क्या दिया था ?"

"वे खुद तो साग-पात खाती हैं, मगर मेरे लिए बुआ के घर से खाना आया था । पर मामा ! मुझे वहाँ छिपाकर किसलिए रखा गया था ?"

"कैसे छिपाया गया था ?"

"यह कपड़े और हार-कुण्डल सब उतार लिए गए थे । यह पगड़ी भी नहीं रहने दी । एक मैली-सी टोपी पहना दी । टूटा हुआ जूता दिया, जिससे चला भी नहीं जाता था ।"

"और दाई भी साथ गई थी ?"

"वह महल में नहीं गयी । मैंने मौसी से पूछा था कि मेरे कपड़े क्यों उतार लिये गए हैं ? उन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया और रोने लगीं ।"

"मौसी ने कैसे कपड़े पहने थे ?"

"सफेद । जेवर तक नहीं थे । उन्होंने हाथों में महावर वगैरा भी नहीं लगाया हुआ था । हाँ, माथे पर सिन्दूर की बिन्दी थी ।"

"तो मौसी से क्या बातें की थीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे मेरे यहाँ रहने की बाबत पूछती थीं। बाबा प्यार करते हैं या नहीं, अम्मी कैसे रखती हैं? वगैरह-वगैरह।"

"कितनी देर रहे वहाँ?"

"बस जितनी देर मैं खाना खाता रहा, वहाँ रहा। वहाँ सिर्फ बूआ थीं और मौसी थीं। दूसरा कोई नहीं था। एक नौकरानी थी जो मुझको किले के बाहर से साथ लेकर किले में गई थी।"

"आते हुए मौसी ने क्या दिया था?"

"मुझे गले लगाकर प्यार किया। मेरा मुख चूमा और फिर अपनी एक तस्वीर दी थी।"

"वह तस्वीर कहाँ है?"

"मैंने अपने सन्दूक में रखी हुई है। बाबा कभी-कभी उसे देखा करते हैं।"

"वह मना नहीं करते?"

"नहीं। कहते थे, मैं मौसी के साथ रहा करूँगा।"

"तुम क्या चाहते हो?"

"मैं भी मौसी के साथ रहना चाहता हूँ। पर मामा! वे मुझको देखकर रोती क्यों थीं?"

"पता नहीं, मिलूँगा तो पूछूँगा।"

विश्वनाथ ने उसे हिन्दू और मुसलमान के विषय में भी समझाया। यह बात तो हिदायत ने ही आरम्भ कर दी थी। उसने पूछा था, "मामा! तुम कहाँ रहते हो?"

"यहाँ से दूर एक हिन्दू राजा हैं। मैं उनका वज़ीर हूँ।"

"हिन्दू क्या होते हैं?"

"जो मैं हूँ।"

"और मैं क्या हूँ?"

"एक हिन्दू माँ का पुत्र।"

"अम्मी तो कहती हैं कि मैं उसका लड़का हूँ और मुसलमान हूँ।"

"तुम दिल्ली वाली मौसी के लड़के हो।"

"सच?"

"हाँ। तुमको उसके पास रहने नहीं दिया जाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन मना करता है ?"

"जो वहाँ का शहंशाह है।"

"शहंशाह तो बाबा के बाप हैं ?"

"हाँ ! मगर वे तुमको माँ के पास रहने नहीं देते।"

"तो यहाँ की अम्मी मेरी माँ नहीं हैं ?"

"तुमको कौन प्यारी है ?"

"मौसी।"

"परमात्मा से प्रार्थना किया करो। वह सुनेगा तो उसके पास रह सकोगे।"

"किससे क्या करूँ ?"

"खुदा से अर्ज़ किया करो।"

"मैं नमाज़ सीख रहा हूँ। सीख जाऊँगा तो खुदा की बन्दगी किया करूँगा।"

"वह खुश होगा तो तुमको तुम्हारी असल माँ मिल जायेगी। तब तक अम्मी की इज्ज़त किया करो और बाबा का कहा माना करो।"

विश्वनाथ की बातों ने हिदायतुल्ला के मस्तिष्क में हलचल मचा दी थी। एक रात वह अपने मामा के पास रहा और अगले दिन उसे औरंगज़ेब के हवाले कर विश्वनाथ पुणे लौट गया।

: २ :

औरंगज़ेब यहाँ एक ज़बरदस्त सेना निर्माण कर रहा था। इसमें वह इस क्षेत्र से एकत्रित धन व्यय कर रहा था। पिछले दो वर्षों में उसने बीस सहस्र सिपाही भरती कर लिये थे। दस सहस्र घुड़सवार थे और दस सहस्र पैदल सेना। वह अभी इतने से संतुष्ट नहीं हुआ था। और अधिक सेना के लिए उसके पास धन नहीं था। उसने दिल्ली से धन माँगा था। वहाँ से धन आ नहीं रहा था। शाहजहाँ ने अभी तक मध्य एशिया में अपनी सल्तनत के विस्तार का विचार छोड़ा नहीं था।

जिन दिनों औरंगज़ेब को दक्षिण में भेजा गया था, उन दिनों ही दारा को कन्धार फतह करने के लिए उत्तर में भेजा गया था। मध्य एशिया में राज्य का विस्तार कन्धार पर अधिकार जमाने पर ही हो सकता था। राज्य का बहुत-सा धन उधर व्यय हो रहा था। इस कारण औरंग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ेब को धन नहीं भेजा जा सका। इस पर औरंगज़ेब दिल्ली आया और शहंशाह से रुपया माँगने लगा। उसको बता दिया गया कि खजाने में धन नहीं है। बहुत युक्तियाँ दीं, परन्तु शहंशाह टस-से-मस नहीं हुआ। वास्तव में वह नहीं चाहता था कि औरंगज़ेब अपनी स्वतन्त्र सेना बनाए। वह पंडित त्रिभुवन कीर्ति की भविष्यवाणी से भयभीत था। एक बातवह समझ रहा था कि उसकी मृत्यु पर उसके पुत्रों में घोर संघर्ष होगा। और वह दारा के सफल होने का विश्वास रखता था।

औरंगज़ेब जब दिल्ली से धन पाने में असफल हुआ तो वह दक्षिण क्षेत्र में ही धन प्राप्त करने का यत्न करने लगा। जब विश्वनाथ संवत् १७११ में जावाली जागीर पर अधिकार करने की स्वीकृति लेने औरंगज़ेब से मिलने आया था, तब तक औरंगज़ेब दिल्ली से निराश हो लौट चुका था। औरंगज़ेब के सलाहकारों में मुल्ला-मौलाना थे। वे राय दे रहे थे कि हिन्दुओं के मन्दिरों को लूटा जाए तो उससे बहुत धन मिलने की आशा की जा सकती है। एक मौलाना दाऊदी थे। वे इस दिशा में बहुत ज़ोर दे रहे थे। औरंगज़ेब दिल्ली से लौटा तो मौलाना ने कह दिया, 'हज़रत! सिवाय इसके कोई चारा ही नहीं। दरबार लगान बढ़ा सकता है। चौथाई फसल का लगान तो पहले ही है। इससे ज़्यादा लगान किया गया तो लोग ज़मीन पर मेहनत करना छोड़ देंगे। क्योंकि फिर खेती का काम घाटे का हो जाएगा। आप लगान वसूली का काम जागीरदार बना कर करेंगे तो ये जागीरदार शिवाजी से मिलकर आज़ाद हो जायेंगे। आप खलकत को लूटेंगे तो बगावत फैल जाएगी। इसलिए मन्दिरों को लूटिए।''

"मगर इससे भी तो बगावत फैल सकती है?''

"मगर हज़रत! इससे मुसलमान सिपाही और मुसलमान खलकत खुश होगी और वे हिन्दुओं की बगावत को ठण्डा करने में दरबार की मदद करेगी।''

औरंगज़ेब को यह योजना पसन्द आई और पुण्य तथा फलियाँ, दोनों एकदम मिलते देख उसने मन्दिरों को लूटना शुरू कर दिया। जब विश्वनाथ आया तो बुड़हानपुर के सब मन्दिर लूटे जा चुके थे और बुड़हानपुर में एक तनाव की हालत थी। मगर बीस हज़ार सिपाही बुड़हानपुर में जमा थे और लोग चूं नहीं कर सके। सेना और दरबार का सबसे बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हथियार आतंक जमाने का यह था कि सेना किंचित् मात्र भी असन्तोष प्रकट होने पर मार-धाड़ आरम्भ कर देती थी और धन-दौलत लूटने के साथ औरतों पर बलात्कार करने लगती थी। लोग अपनी औरतों को छिपाने और रक्षा करने में भीरु बन बैठे रहते थे।

सबसे विचित्र बात यह थी कि सैनिकों में राजपूत सिपाही भी थे और वे मुसलमान सैनिकों को इस अन्धेरगर्दी से मना नहीं कर सकते थे।

विश्वनाथ जब पुणे लौटा तो उसने औरंगज़ेब के साथ हुई बात बताई। इस पर शिवाजी ने पूछ लिया, "जो समाचार बुड़हानपुर से आ रहे हैं वे तो यह प्रकट करते हैं कि वहाँ की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही है।"

"हाँ, परन्तु महाराज ! प्रजा का कोई सहायक नहीं है। सेना का विरोध तो सेना ही कर सकती है। जन-साधारण सेना के विरोध में खड़ा नहीं हो सकता। महाराज ! सेना एक संगठित यन्त्र है। प्रजा इस प्रकार का संगठन बना नहीं सकती। संगठन में नेता चाहिए। नेता सहज ही मोल लिए जा सकते हैं। उनमें धर्म की मिथ्या परिभाषा प्रचलित हो चुकी है। वे धर्म का लक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति मानने लगे हैं। इस कारण दिनानुदिन के कार्यों में धर्म की आवश्यकता और प्रभाव नहीं माना जाता। पूजा-पाठ के सम्मुख सत्य, धृति, क्षमा इत्यादि गौण तथा अनावश्यक हो गए हैं। तपस्या केवल मात्र पूजा-पाठ का अंग रह गई है। संसार में न्याय व सत्य की प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्न का नाम तपस्या नहीं और वह एक गौण कार्य हो गया है।"

शिवाजी ने पूछ लिया, "परन्तु हमारे पण्डित महाराज अब क्या करने को कहते हैं ?"

"महाराज ! धार्मिक राज्य को सुदृढ़ करना ही धर्म है। जिस-किस भाँति भी यह सुदृढ़ हो सके, इसे सुदृढ़ करना चाहिए। प्रजा में साहस, निर्भयता और शौर्य तो राज्य की सहायता से ही आ सकता है। यदि राज्य सुदृढ़ और धर्मानुकूल होगा तो प्रजा भी धर्मानुकूल हो जाएगी और जब राज्य धर्मविहीन और हीन होगा तो प्रजा भी धर्म का मार्ग छोड़ देगी।"

"यह तो ठीक है। परन्तु मोरे के विषय में अब क्या करना चाहिए ?"

"वह शठ है और उसकी हत्या करना ही धर्म है। नीति का आदेश है 'शठे शाठ्यं समाचरेत्।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मोरे की हत्या धर्म है ?"

"निस्सन्देह यह राष्ट्र-धर्म है।"

"तो इसकी योजना बनाओ।"

"महाराज ! बनाई है। चन्द्रराव मोरे को यमलोक पहुँचाना ही होगा, परन्तु उसके लिए अभी समय नहीं आया। जब मुगल सेना दौलताबाद के लिए प्रस्थान करेगी, तब मोरे की जीवन-लीला समाप्त करनी होगी।

"परन्तु उसे इतने काल तक शान्त और निश्चिन्त रखना होगा। उसके लिए एक पत्र आपको लिखना चाहिए। आप चन्द्रराव को एक अति सुहृदयपूर्ण पत्र लिखिए कि संधि की शर्तें तो आपके मुख्य मन्त्री से निश्चय की जाएँ और जब सब कुछ निर्णय हो जाय तो आप उस पर हस्ताक्षर करने जावाली आयेंगे। उसके लिए, आप लिखिए कि तुरन्त ही अपने मुख्य मन्त्री को भेजने के लिए तैयार हैं और संधि की शर्तें शीघ्र ही निश्चय करना चाहते हैं।

"महाराज ! आप इस बातचीत के लिए पण्डित नरहरि राव हरीश को पाँच सलाहकारों के साथ भेज दीजिए।"

"यह वहाँ क्या करेगा ? इसको राज्य-कार्य का क्या ज्ञान है ?"

"महाराज ! वहाँ कोई राज्य-कार्य करने को है नहीं। वहाँ ये जायेंगे, मद्य-माँस के भोज करेंगे और मोरे से धन लेकर मौज उड़ायेंगे। डेढ़ वर्ष इस प्रकार निकाल देना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि तब तक औरंगज़ेब की तैयारी पूर्ण हो जाएगी और ज्यों ही औरंगज़ेब सेना ले गोलकुण्डा को चलेगा, हम सेना लेकर जावाली को चल पड़ेंगे; परन्तु आपके वहाँ पहुँचने से पहले चन्द्रराव मोरे यम को अपनी सफाई द रहा होगा और उसके सम्बन्धी तथा लड़के वहाँ से भाग चुके होंगे।"

शिवाजी इस योजना से बहुत प्रसन्न था। पत्र लिखा गया और चन्द्रराव का अनुकूल उत्तर आते ही, पाँच सवार नरहरि राव के अधीन जावाली को चल पड़े। वहाँ से साप्ताहिक समाचार आने लगे और पुणे तथा जावाली में लोगों का आना-जाना आरम्भ हो गया।

तीन महीने के उपरान्त यह सूचना आई कि दोनों ओर के प्रतिनिधियों में यह निश्चय हुआ है कि दोनों पक्ष सौगन्धपूर्वक यह कहते हैं कि बिना पूर्ण संधि किए हम बातचीत बन्द नहीं करेंगे। और तब तक दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पक्ष किसी [illegible] नहीं देंगे।”

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ ने यह समाचार सुनाया तो राजा साहब ने पूछ लिया, “संधि की सब शर्तें निश्चय होने में कितना समय लगेगा ?”

“महाराज ! मेरी सूचना है कि औरंगज़ेब की तैयारी में अभी एक वर्ष है।”

“ओह ! वहाँ क्या कमी है अभी ?”

“औरंगज़ेब मीर जुमला को भड़का रहा है कि वह गोलकुण्डा दरबार से विद्रोह कर दे और गोलकुण्डा का सुल्तान उसकी वहाँ पर सम्पत्ति को ज़ब्त कर ले। तब वह मीर जुमला की सहायता से आक्रमण करेगा।

‘अभी गोलकुण्डा का सुल्तान मीर जुमला को वापस गोलकुण्डा बुला रहा है। परन्तु औरंगज़ेब के जासूसों ने मीर जुमला के मन में यह भय बैठा दिया है कि उसके वहाँ आते ही वह मार डाला जाएगा।”

“हमारी रुचि किस बात में है ?”

“हमारी आकांक्षा तो अभी बहुत ही छोटी है। हम जावाली में अपना राज्य जमाना चाहते हैं। महाराज ! हम बीजापुर पर आक्रमण करेंगे तो बीजापुर मुगलों से संधि कर लेगा और दोनों मिल कर हमारा कचूमर निकाल देंगे। हम चाहते हैं कि मुगल और बीजापुर भिड़ जायें। विजयी कोई भी हो, हमको लाभ ही होगा।

“मुगल राज्य दुर्बल हो रहा है। तीसरी बार दिल्ली का अभियान कंधार में असफल हुआ है। बीस करोड़ रुपया दारा व्यय कर आया है और शाही कोष में दक्षिणांचल की सेना के लिए धन नहीं है। औरंगजेब ने इस आँचल की आय से अधिक व्यय करना आरम्भ कर दिया है और मन्दिरों से लूटा धन तो चिरकाल तक सहायक नहीं हो सकता। यहाँ भी धन का टोटा पड़ने वाला है। अतः मुगल और बीजापुर लड़ेंगे तो हम सुदृढ़ होंगे।”

इसी काल में विश्वनाथ को एक बार पुनः बुड़हानपुर और दिल्ली जाना पड़ा। इस बार वह एक विशेष उद्देश्य से दिल्ली गया था। विश्वनाथ को सूचना मिली थी कि दारा पर हकीम सरमद और एक पंडितराज जगन्नाथ का बहुत प्रभाव है। इस कारण वह इन दोनों के द्वारा मुगल राज्य पर दबाव डाल कर मराठा स्वतन्त्र राज्य स्वीकार करवाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता था।

पंडित जगन्नाथ संस्कृति का एक विद्वान और एक उच्चकोटि का कवि था। दारा इस पंडित का बहुत प्रशंसक था। विश्वनाथ के दिल्ली स्थित गुप्तचरों का यह भी कहना था कि ये दोनों विद्वान महल की बेगमों में भी प्रसिद्ध हैं और इनका बेगमों से विचार-विनिमय होता रहता है।

विश्वनाथ बुड़हानपुर में तो गोलकुन्डा से युद्ध की तैयारी का अनुमान लगाने गया था। वह सराय में पहुँचा तो औरंगज़ेब का दूत वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने कह दिया, "शहज़ादा साहब आपको याद करते हैं।"

विश्वनाथ इस चतुर राज्याधिकारी की जानकारी के बिना वहाँ रह सकना असम्भव मानता था। इस कारण वह इससे भेंट के लिए तैयार था।

विश्वनाथ ने बिना यात्रा की थकावट मिटाए ही, अपना सामान सराय में फेंका और अपने साथियों को भोजनादि का प्रबन्ध करने के लिए कह महल की ओर चल पड़ा।

औरंज़ेगब उससे तुरन्त मिला। उसने पूछ लिया, "पंडित विश्वनाथ! इस बार बहुत जल्दी ही आने की तकलीफ की है?"

"हाँ हुजूर! मैं आपसे यह कहने आया था कि गोलकुण्डा पर हमला करने का समय आ गया है।"

औरंगज़ेब ने विश्वनाथ की आँखों में देखते हुए कहा, "हमने हमला करने का खयाल तर्क कर दिया है।"

"तो यह चालीस हजार सेना का खर्च कहाँ से आएगा?"

"तो तुम हमको दिवालिया समझने लगे हो?"

"नहीं हुजूर! आपको तो गरीब मानता नहीं, मगर दक्षिण के क्षेत्र को निर्धन हो गया देख रहा हूँ। अगर आपने भूमि पर लगान बढ़ाया तो किसान आपकी सल्तनत छोड़कर बीजापुर और विजयनगर में चले जायेंगे। एक तो वहाँ बहुत-सी भूमि परती पड़ी है और दूसरे वहाँ लगान की मात्रा बहुत कम है।"

औरंगज़ेब को समझ आया कि उसके सामने एक निहायत ही काबिल शासक बैठा है। इस कारण उसने विश्वनाथ की बात का उत्तर दिए बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कह दिया, "हमें कल ही पता चला था कि राजा शिवाजी का मन्त्री बुड़हानपुर की सड़क पर बढ़ता चला आ रहा है। यह सुन हमारे मन में विचार आया कि आप जैसे लायक आदमी से हम अपने ताल्लुकात कुछ और गहरे कर लें।"

"वे तो हुजूर पहले ही हैं। मेरा भांजा आपके पास बन्धक के रूप में रखा हुआ है।"

'तो तुम भी उससे मुहब्बत करने लगे हो ?"

"हाँ, जहाँपनाह ! मेरे घर में दो पत्नियाँ हैं और दोनों के घर लड़कियाँ पैदा हुई हैं। अभी तक हिदायत ही एक लड़का है। मैं उसे अपने साथ ले जाना चाहता हूँ।"

"यह नहीं हो सकता। मेरी एक बेगम तो बच्चे पर लट्टू हो रही है। वह बहुत ही सही नमाज की तलावत करने लगा है। हमारे बड़े-बड़े मुल्ला भी उस जैसा साफ तलफ्फुज नहीं रखते।

"हाँ एक बात हो सकती है। आप हमारी नौकरी कर लें। हम आपको वहाँ से दुगनी तनखवाह देंगे। रहने को मकान, तीन नौकर, दो अरबी घोड़े और खिल्लत अनायत करेंगे। यह हिदायत आपके पास रह सकेगा।"

विश्वनाथ इस प्रस्ताव पर मौन हो गया। उसने मन में विचार किया कि यह सब हिन्दुओं को बिकाऊ मानता है। इस पर उसने इस निपट स्वार्थी और चतुर व्यक्ति को उत्तर देने के स्थान कह दिया, "राजा शिवाजी से पूछना होगा।"

"उनसे आपका क्या सम्बन्ध है ?"

"राजा प्रजा का।"

"परन्तु आप तो मुगल राज्य के बाशिन्दे हैं ?"

'हुजूर था। मगर आज से आठ वर्ष पूर्व मैं इस राज्य से निकाल दिया गया था।"

"निकाल दिये गए थे ? किसलिए ?"

"मेरे वालिद एक लायक ज्योतिषी हैं। शहंशाह को उनकी खिदमत की आवश्यकता थी तो उनको एक पत्र भेजकर बुलाने के स्थान पचास सिपाही भेज पकड़ बुलाया। साथ ही उनका मकान लूट लिया। उनके गाँव वालों को कत्ल किया, लूटा और खेतों को आग लगा दी। मेरी पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को भी कैद कर लिया गया। उससे ज़बर-जनाह किया गया और फिर उसे बुड़हानपुर में पेशा करने के लिए छोड़ दिया गया। मजबूर हो मुझे राज्य और घर छोड़ राजा शिवाजी की प्रजा बनना स्वीकार करना पड़ा।"

"मगर वह जुल्म करने वाले हम तो नहीं हैं न ?"

"ठीक है। इसलिए मैंने इनकार नहीं किया, मगर मैं पिछले आठ साल से जिनकी प्रजा बन सुख और चैन का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ, उनसे पूछे बिना उनको छोड़ नहीं सकता।"

"हाँ, तो पूछ लें और उनसे कहिये कि आपकी वजह से मुगल राज्य और पुणे राज्य में दोस्ती मजबूत होगी।"

"हुजूर! मैं भी कुछ ऐसा ही समझता हूँ। इस पर भी उनकी सूझ-बूझ की बात तो उनसे पूछने पर ही पता चलेगी।"

"हम समझते हैं कि हमें एक बहुत बड़ा जंग चलाना है और उसमें हिन्दुस्तान के लायक-से-लायक आदमी की मदद की जरूरत है। अगर हम दिल्ली की सल्तनत के मालिक बन गए तो आपको एक बहुत बड़ी जागीर का मालिक बना देंगे।"

"मैं शहज़ादा साहब की अपने और अपने परिवार पर इस इनायत के लिये जिन्दगी-भर मश्कूर व मम्नून रहूँगा। इस पर भी मुझे राजा साहब से इजाज़त लेनी पड़ेगी।"

"और अगर उन्होंने इजाज़त न दी तो फिर ?"

"उस हालत में मैं राजा साहब की खिदमत में रहता हुआ आपका एक गहरा दोस्त और बेदाम का गुलाम रहूँगा।"

औरंगज़ेब जब भी विश्वनाथ से बात करता था, उसके बात करने के ढंग पर निरुत्तर हो जाया करता था और उसकी बात मानने पर विवश हो जाया करता था। वह विश्वनाथ की इस काबलियत पर लट्टू था। साथ ही वह महताब बेगम को अपने हरम में लाने के लिए बेताब हो रहा था। उसकी अपनी बेगमें उसकी जूते की भी तुलना नहीं रखती थीं। महताब का लड़का हिदायत भी उसको बहुत प्यारा था। वह विश्वनाथ को अपनी खिदमत में लेना अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं और जाती लाभ में सहायक समझता था। उसने उसे आगे कह दिया, "देखो पंडित विश्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाथ ! तुम्हारे मालिक शाहंशाह का वज़ीरेआज़म बना दूंगा। तुमको अपना जाती मशीर बनाकर रखूँगा और फिर किसी शाही खानदान की लड़की से शादी कर दूंगा।

"हुज़ूर ! मैं अपने को इतना लायक नहीं समझता कि इतना कुछ का हक़दार समझ लूं। इस पर भी आप इत्मीनान रखें कि मैं कहीं भी रहूँ आपका वफादार खादिम ही रहूँगा।"

"अब तुम यहाँ कब तक रहने वाले हो ?"

"मैं समझता हूँ कि आप बरसात के बाद गोलकुण्डा की मुहिम शुरू करेंगे। तब तक मीर जुमला से आपकी सन्धि हो जाएगी और इसमें गोलकुण्डा के सुल्तान भी अपना हक़ अदा करेंगे।"

"वे क्या करेंगे ?"

"वे मीर जुलमा को, जो इस वक़्त गोलकुण्डा दरबार से भी जबर-दस्त एक फौज का मालिक हो गया है, पकड़ अंधा कर देने की तजवीज़ बना चुके हैं और मीर जुमला इसको जान गया है। मीर जुमला का लड़का मुहम्मद अमीन हकीकत में गोलकुण्डा दरबार का कैदी है।"

"तो इन सब का हमसे क्या ताल्लुक है ?"

"हुज़ूर ! मीर जुमला ने बीजापुर वालों से सुलह करने की तजवीज रखी थी। मगर बीजापुर डरता है कि गोलकुण्डा तबाह हो जाने से मीर जुमला इतना ताकतवर हो जाएगा कि बीजापुर पर अपना हक जमाने की कोशिश करेगा। इसलिए उनका सलूक मीर जुमला से ठंडा है और मैं समझता हूँ कि आपको मीर जुमला से सुलह करने में किसी किस्म का डर नहीं। बल्कि मीर जुमला आपके लिए एक जबरदस्त मददगार साबित होगा।"

औरंगज़ेब इस मराठा ब्राह्मण की सूझ-बूझ और जानकारी को देख मन-ही-मन चकित था। वह चुपचाप दक्षिणांचलपर बिछे राजनीतिक शत-रंज की खेल का वृत्तान्त सुनता रहा। विश्वनाथ ने अपना कहना जारी रखा। उसने कहा, "इसलिए हुज़ूर ! मैं दिल्ली जा रहा हूँ और वहाँ से, आपकी गोलकुण्डा की मुहिम से पहले ही लौट आना चाहता हूँ।'

"वहाँ दिल्ली में क्या काम है ?"

"बहिन का सुख-समाचार मिले देर हो गयी है। उसके दीदार हासिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होने तो मुश्किल हैं, मगर उसकी सेहत की खबर तो मिल सकती है।"

"वह हम तुमको यहाँ ही दे सकते हैं। अभी पन्द्रह दिन हुए महल के भीतर से एक खबर आयी है कि महताब बेगम अब दारा से नाराज रहती है। दारा की सरमद हकीम और एक हिन्दू पण्डित से किसी मजमून पर खटपट हो गयी थी और महताब की शहजादा-ए-अज़ीम से बनती नहीं।"

"हकीम साहब से क्या खटपट है ?"

"यह बात तो महल के बाहर की है। इसलिए हमारे जासूस ने जो महल के अन्दर रहता है, नहीं बतायी। हाँ, महताब बेगम की बाबत यह कहा है कि वह हमारी कामयाबी की दुआ करती है।"

"इस पर भी हुजूर, जब चला हूँ तो वहाँ तक पहुँचने का इरादा है। अब तो जाऊँगा ही।"

"तो शहंशाह के भी दीदार हासिल करोगे ?"

"वह तो है ही। मगर मुझे हमेशा दीवान-ए-आम में ही नज़र-नियाज़ पेश करने का मौका दिया जाता है। इसलिए वहाँ सियासियात पर बात-चीत नहीं होती।"

"देखो, हम तुमको राजा जयसिंह के नाम एक चिट्ठी दे सकते हैं और वह दरबार-ए-खास में मुलाकात का मौका दिला सकता है।"

"तो हुजूर ! दे दीजिए। मैं इस मौका पर अपने इल्म से दिल्ली दरबार की खिदमत करने की कोशिश करूँगा।"

विश्वनाथ हिदायतुल्ला से भी मिला और अगले दिन औरंगज़ेब से राजा जयसिंह के नाम की एक बन्द चिट्ठी लेकर दिल्ली के लिए रवाना हो गया।

: ४ :

दिल्ली में विश्वनाथ जहानआरा सराय में ठहरा तो उसकी भेंट खादिमा से हो गयी। खादिमा को सराय वाले से पता चला तो वह सलाम करने आ पहुँची। उसने अर्ज़ की—

"मेरे मराठा सरदार, कब आए हैं ?"

"खादिमा !" विश्वनाथ ने भी घनिष्ठता का व्यवहार करते हुए पूछ लिया, "कुछ बीमार रही हो ?"

"हाँ हुजूर ! बस मरती-मरती ही बची हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तभी रंग काला पड़ गया है और गालें पिचक गयी हैं।"

खादिमा ने मुस्कराते हुए कहा, "तो सरदार, मुझे बहुत गौर से देखने के आदी हैं? हुजूर! मेरी करनी का फल ही मुझको मिला है। मैं समझती थी कि किसी मर्द की सोहबत दो रुपये में मिल सकती है और सोहबत हासिल कर मैं उसे घर से निकाल दिया करती थी। अगर किसी ने घर छोड़ने से इनकार किया तो शाही महल के सिपाहियों से जूतों से पिटवा दिया करती थी।

"पिछले साल मुझे इस बात का नतीजा भोगना पड़ा था। एक पुर्तगाली अपने शहज़ादा-ए-अज़ीम दारा साहिब के दरबार में आया हुआ था। एक दिन मेरा दिल उस पर मचल गया और मैं उसे एक शाही शराब की सुराही का लालच दे घर ले आयी। वह दो दिन वहाँ रहा और फिर जब मैंने कुछ तकलीफ का जिक्र किया तो वह भाग गया और मुझको बीमारी में तड़पते छोड़ गया। पीछे शाही हकीम ने मेरा इलाज किया और बताया कि मुझे फरंग की बीमारी हो गयी है। पहले तो बीमारी ने दम खींच लिया और फिर हकीम साहब ने संखिया और दीगर जहरें दे-देकर जान निकाल दी। सारा जिस्म फफोलों से फट गया था और बदबूदार पीप से घर-भर बदबू करने लगा था। चालीस दिन के इलाज से बच गयी। जिस्म साफ हो गया, मगर न तो वह रंगत आयी है और न ही वह ताकत।"

"तो अब?"

"बीमारी के दिनों में एक नौकर रखा था और अब वह ही सरपरस्त के तौर पर रहता है।"

"और काम-धंधा?"

"वह फिर करने लगी हूँ।"

"मेरा एक काम तो तुम जानती हो। महताब बेगम का सुख-समाचार चाहिए।"

"ला दूँगी। मैं तो कल ही उनसे मिली थी।"

"कैसी हैं?"

"बहुत खुश हैं। वे अब हरम में साधनी बेगम के नाम से मशहूर हैं। मैं कल उन्हें सलाम करने गयी थी। उन्होंने बिना कोई काम बताए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक मुहर हाथ पर रख दी और कहा, 'मिठाई खाना और खुश रहना।'

'कुछ खिदमत!' मैंने सवाल किया।

'कभी-कभी मिलती रहा करो।' बस इतनी बात से मुलाकात खत्म हो गयी। केवल वे ही बेगम हैं जिन्होंने मुझे कभी नहीं कहा कि उनकी कोई भी बात चोरी रखनी है। और उनकी कोई बात चोरी की भी नहीं होती।"

"और क्या काम किया करती हो इस बेगम का?"

"महीने की पहली तारीख को और एकादशी को वे कुछ धन गरीबों में बाँटने के लिए दे दिया करती हैं। कभी एक मुहर होती है और कभी दो। उसकी रेजगारी लेकर मैं किले के बाहर लाकर बाँट देती हूँ।"

"बस?"

"जी। उनका यही काम किले के बाहर के लोगों से है।"

"तो आज मैं एक दूसरा काम बता रहा हूँ। अगर वे अपने हाथ से लिखकर भेज सकें तो अपने को धन्य मानूँगा।"

खादिमा ने मुस्कराते हुए कहा, "एक बात यहाँ मशहूर हो रही है कि आपने कभी किसी खानदान की शाही खातून को भगा ले जाने की नाकामयाब कोशिश की थी।"

"यह तो बहुत ही बुरी अफवाह है।"

"मगर हुजूर, यह बात शहंशाह की मँझली शहजादी फैला रही हैं और उसकी बात का शहंशाह एतबार नहीं करते।"

विश्वनाथ ने खादिमा को धीरे-से कान में कह दिया, "महताब बेगम का पैगाम मुझको यहाँ सराय में न देना। मैं तुमको चाँदनी चौक में कोतवाली के बाहर कल ठीक दोपहर के वक्त मिलूँगा।"

"यहाँ क्यों नहीं?"

"मैं यहाँ मिल नहीं सकूँगा।"

विश्वनाथ को यह समझ आया कि जब तक अपने विषय में शहंशाह और दारा के खयालात का ठीक-ठीक पता न चल जाए, तब तक दिल्ली में गुप्त रहना चाहिए। इस विचार के आते ही उसने खादिमा को अगले दिन सराय में न मिलने की बात कह दी थी।

खादिमा के जाते ही उसने अपने निजी सेवक को बुलाया और कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया, "देखो निरंजन राव ! मैं एक काम से दो-तीन दिन कहीं बाहर रहूँगा। तुम मुझको कल प्रातःकाल नूर महल की सराय में आकर मिल लेना। मगर देखो ! किसी को पता न चले कि मैं वहाँ मिल सकता हूँ। सराय वाला भी पूछने आये तो मत बताना। अगर कोई मिलने आये तो उसको कहना कि मैं पानीपत गया हूँ। दो-तीन दिन में लौट आऊँगा और तुम गुप्त रूप में मुझसे मिलने आना।"

निरञ्जन राव चकित हो मुख देखता रह गया। विश्वनाथ ने आगे कह दिया, "देखो निरञ्जन ! अपने अन्य साथ आने वालों को भी मेरे पानीपत जाने की बात बताना। ठीक है न ? समझ गए हो ?"

विश्वनाथ ने उसी समय जूता पहना और सराय से निकल गया। अगले दिन प्रात: निरंजन आया और बता गया कि सब ठीक है, कोई पूछने नहीं आया। मध्याह्न के समय खादिमा कोतवाली के बाहर पेड़ के नीचे खड़ी मिली। विश्वनाथ दूर खड़ा उसके आने और पेड़ के नीचे खड़े होने को देख रहा था। जब उसे विश्वास हो गया कि कोई खादिमा के साथ नहीं तो वह अपने छिपे स्थान से निकल खादिमा के पास आ गया। खादिमा ने एक लम्बा पत्र मराठी भाषा में लिखा हुआ विश्वनाथ को दे दिया। विश्वनाथ ने पत्र जेब में रख लिया और खादिमा को एक मुहर देकर कहा, "कल तुम मुझको अजमेरी दरवाजे के बाहर जामुन के पेड़ के नीचे मिलना।"

"सरदार ! यह लुकाव-छिपाव किसलिए है ?"

"मुझको यहाँ के लोगों का एतबार नहीं रहा।"

"मेरा भी ?"

"अगर खादिमा बी का भी एतबार न होता तो उसको इतना जरूरी काम बताता ही नहीं। देखो, खादिमा ! जो खबर तुमने कल सुनाई थी कि मेरे मुतअल्लिक महल की किसी खातून के अगवा करने का शक किया जाता है, बहुत ही बुरी समझ आई है।"

"मेहताब बेगम ने कुछ इसकी बाबत लिखा है। उन्होंने मुझको बता दिया है।"

"तो तुमने मेरी चिन्ता की बात बताई मालूम होती है ?'

"नहीं हुजूर ! बेगम साहिबा ने अपने आप लिखा है और मुझको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह इसलिए वता दिया है कि अगर कोई इस चिट्ठी को पकड़ ले तो मैं उसे वता सकूं कि इसमें क्या लिखा है जिससे यह चिट्ठी जब्त न हो सके।"

विश्वनाथ इसका कुछ भी अर्थ समझ नहीं सका। वह शीघ्र ही सराय में लौट जाना चाहता था, जिससे अपने कमरे में पहुँच बहिन का पत्र पढ़ सके।

वह सराय में पहुँचा तो निरंजन प्रतीक्षा करता मिला। "क्यों क्या बात है निरंजन?" विश्वनाथ ने पूछ लिया।

"हुजूर! वज़ीरे-आला का चोबदार आया था और कह गया है कि आप पानीपत से लौटते ही उनसे उनके दीवानखाने में मिल लें। वे वहाँ सुबह-शाम मिल सकते हैं।"

"और तुमने क्या कहा है?"

"यही कि आपके दो-तीन दिन तक लौटने की उम्मीद है।"

"ठीक है, सायंकाल पुनः मिल लेना।"

विश्वनाथ ने उसको विदा किया और कमरे का दरवाजा बन्द कर नीला का पत्र पढ़ने लगा।

पत्र में महल की कोई बात नहीं लिखी थी। उसने उपने मन के भाव ही लिखे थे। उसने अपने शहंशाह के हरम में आने के समय से उस दिन तक अपने मन की अवस्था का वर्णन किया था। इस लम्बे लेख के अन्त में उसने लिखा था "भैया! अब यह संसार, विशेष रूप में महल के भीतर का संसार रहने योग्य नहीं रहा। एक दिन इस शरीर को त्याग देने का विचार है। परन्तु तुम लोग इसका शोक नहीं करना। विपरीत इसके आपको प्रसन्न होना चाहिये। अपने कर्मफल के कारण मैं इस नरक-कुण्ड में आ गिरी थी और उससे बाहर आ रही हूँ। मुझे यहाँ अपने विषय में कुछ भी कष्ट नहीं है। इस पर भी यह गन्दी नाली है और इसमें रहने वाले लोग मैले के कीड़ों की भाँति गन्दगी में सरकते दिखाई देते हैं। उनकी दशा देखी नहीं जाती।

"कुछ मन में सन्देह इस बात का होता है कि कहीं पूर्व जन्म के बुरे कर्मों का फल शेष न रह गया हो, जिससे भावी जीवन में पुनः यही नरक देखने को मिले। इस बात के जानने का यत्न कर रही हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बात आपके विषय में यहाँ विख्यात हो रही है कि आप शहंशाह की एक लड़की को भगा ले जाने का षड्यन्त्र कर रहे थे। यह बात औरंगज़ेब के साथी और हमदर्द उड़ा रहे हैं। इसका प्रतिवाद दूसरे पक्ष ने किया है। दूसरा पक्ष है भैया दारा और जहानआरा बेगम का; परन्तु मुझको महल में इनका पक्ष दुर्बल हो रहा प्रतीत होता है। इसमें सबसे बड़ा कारण भैया दारा और शहंशाह का असीम अभिमानयुक्त व्यवहार और बहिन जहानआरा का, अधिक और अधिक मद्य के सेवन से अपनी बुद्धि खो देना है। कोई ही रात खाली जाती है, जिसमें वह मद्य से अचेत अपने सोने के कमरे में न ले जायी गई हो। दारा की बेगमें भी पीती हैं, विशेष रूप में उदयपुरी बेगम; परन्तु जहानआरा तो इनसे बाज़ी ले गई है। जहानआरा के खास कमरों में शराब कशीद करने की भट्टी लगी है और वहाँ से उनकी स्वीकृति से महल-भर में बँटती है। दूसरी तरफ भैया दारा कन्धार से बिना विजय प्राप्त किये लौट आया है। इससे उसकी प्रतिष्ठा कम हो गई है और वह अधिक अभिमानी हो रहा है। मुझे पता चला है कि राजा जयसिंह का उसने भरे दरबार में अपमान कर दिया था। उसे भाँडों और भरुओं का सरदार कह दिया। इससे न केवल जयसिंह के मित्र नाराज हैं वरन् समस्त राजपूत छुट्टी ले-ले घरों को जा रहे हैं।

"इसके अतिरिक्त भी महल में और दिल्ली में औरंगज़ेब के साथी बढ़ते जाते हैं।

"मेरी सहानुभूति दारा के पक्ष में है, मगर मेरे साथ हमदर्दी औरंगज़ेब के पक्ष वाले दिखा रहे हैं। दिल्ली के एक हकीम सरमद बड़े खुदा-दोस्त हैं। एक पंडितराज जगन्नाथ हैं। दोनों भारी विद्वान और सुलझे हुए हैं। कुछ दिन हुए दोनों को दारा ने गालियाँ दे-देकर महल से निकलवा दिया। पंडितराज एक मुसलमान लड़की से विवाह कर भी हिन्दू रीति-रिवाज से रहते थे। सरमद ने शादी नहीं की, मगर खुले आम मुसलमानों को काफिर कहता है। वे शराब पीने के खिलाफ हैं। सरमद ने कहीं शहज़ादा को कह दिया कि वह शराब पीना बन्द नहीं करेगा तो उससे मिलने नहीं आयेगा। इस पर दारा ने उत्तर दिया, कोई और कुत्ता टुकड़ा खाने के लिए आ जायेगा। नतीजा यह हुआ कि सरमद साहब चुपचाप उठकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल दिए और फिर कभी नही आए। पंडितराज पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने अपनी पत्नी को हिन्दू बना लिया है। यह मुगल राज में एक जुर्म है। और पण्डित का कहना था कि वह मुसलमान ही है। इस पर पण्डितराज की पत्नी को काज़ी के सामने उपस्थित किया गया। औरत ने हलफिया बयान दिए कि वह मुसलमान ही है, दो वक्त नमाज पढ़ती है। उससे पूछा गया कि वह अपने खाविन्द को मुसलमान क्यों नहीं बना लेती ? बहुत मुश्किल से यह कहकर बेचारी ने जान छुड़ाई कि वह कोशिश कर रही है। इस पर उसे कहा गया कि पण्डितजी को गोमांस खिलाए। पत्नी ने इस बात का वचन दिया तो काज़ी साहब ने जान बख्शी। पण्डित शहज़ादा-ए-अजीम के पास पहुँचे तो शहज़ादा ने पण्डित के साथ हमदर्दी तो जाहिर की, मगर उसकी रक्षा करने में अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। पण्डितजी भाग कर बनारस चले गए हैं। अनकी पत्नी उनके साथ है। मगर काज़ी ने जासूस भेजे हैं ताकि वहाँ के हिन्दू उसे अपनी समाज में सम्मिलित न करें।

"मैंने भैया दारा से कहा कि यह तो अन्याय हो गया है। उन्होंने वह दिया है कि सबसे बड़ा न्याय हुकूमत हासिल करना है। मैं समझती हूँ कि बहुत बुरे दिन आ रहे हैं।

"कदाचित् अगली बार आप आयेगे तो मेरा पता आपको नही मिलेगा। मैं जीवन से उचाट हो गयी हूँ।

"कभी बाबा और माँ से मिलें तो मेरी चरणवन्दना कहना। यह पिताजी की शास्त्र-शिक्षा ही है जिसका प्रभाव अभी तक मेरा सहायक रहा है और उस शिक्षा के अनूरूप ही मैं अगले लोक को जाने की तैयारी कर रही हूँ।"

यह पत्र पढ़ते-पढ़ते कई बार विश्वनाथ की आँखें भर आईं और वह पोंछ-पोंछ कर ही पत्र को पढ़ना जारी रख सका।

पत्र पढ़ने के उपरान्त उसके मन में दारा से मिलने की इच्छा होने लगी। वह किले के बाहर गया और अपना नाम लिखकर किले के सिपाही को देकर एक ओर हो पेड़ के पीछे छिपकर खड़ा हो गया। वह देखना चाहता था कि उसके किले के बाहर खड़े होने के समाचार पर उसे कोई पकड़ने आता है अथवा वह सिपाही ही कोई उत्तर लेकर आता है।

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिपाही तुरन्त आया और जहाँ विश्वनाथ पहले खड़ा था, वहाँ उसे देखने लगा। विश्वनाथ ने उसे अकेला देख छिपे स्थान से बाहर निकल आया और सिपाही के पास खड़ा हो गया। सिपाही ने इनाम के लिए हाथ बढ़ाया तो विश्वनाथ ने पाँच रुपये निकाल उसके हाथ पर रख दिये। सिपाही ने रुपये जेब में डालकर कहा, "साहब आइये। शहज़ादा साहब बुला रहे हैं।"

विश्वनाथ उसके साथ चल पड़ा। दो दिन दिल्ली में सही-सलामत निकल जाने पर भी वह पूर्णत: आश्वस्त नहीं था। उसके मन में अभी भी भय था कि कहीं महल के भीतर ही न रह जाए।

उसे दारा के सामने उपस्थित किया गया। उसने फर्शी सलाम की तो दारा ने छूटते ही पूछा, "किसलिए आए हैं?"

"अपनी एक जानकारी हुज़ूर को बताने के लिए।"

"क्या जानकारी है?"

"आपके तीसरे भाई ने पचास हज़ार फौज इकट्ठी कर ली है।"

"तो इससे क्या? वह दक्खन की रियायतों को मुगलसल्तनत में मिला लेना चाहता है।"

"मुझे इससे कुछ उलट खबर मालूम हुई है।"

"क्या मालूम हुई है?"

"वह यह कि यह फौज आगरा पर कब्ज़ा करने के लिए है।"

"इससे क्या होगा?"

"शहंशाहे हिन्द की उपाधि से अपने को मुनव्वर करने के लिए ही वे यह करेंगे।"

"और आपको इसमें क्या दिलचस्पी है?"

"एक तो बहिन की किस्मत आपके और शहंशाह के साथ वाबस्ता है। दूसरे आपको हिन्दू अपनी पनाह मानते हैं।"

"ये दोनों बातें गलत है। मेरा आपकी बहिन से कोई रिश्ता नहीं और दूसरे मैं उतना ही दीनदार मुसलमान हूँ जितना कि इस मुल्क में कोई भी हो सकता है।"

विश्वनाथ ने इतनी खरी-खरी बातें सुनकर भी साहस नहीं छोड़ा। वह समझता था कि दारा भयभीत हो रहा है। वह यह भी जानता था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डरा हुआ मित्र निर्भय शत्रु से अधिक खतरनाक होता है। इस पर भी उसने अन्तिम यत्न किया। उसने कह दिया, "मेरे जाती ताल्लुकात का ख्याल न भी किया जाये और हिन्दुओं की सरपरस्ती की बात भी छोड़ दी जाए तो भी अपने राजा शिवाजी की आज्ञा से आया हूँ कि दक्खन से उठ रही घटनाओं की जानकारी दरबार को करा दूँ।

"हुजूर ! यह बीजापुर और गोलकुण्डा पर हमले की धमकी उनको आपके खिलाफ और अपने हक में करने की साज़िश है।"

"देखो विश्वनाथ ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपकी या राजा साहब की दिल्ली दरबार में क्या दिलचस्पी है ?"

"हम दिल्ली से मदद की उम्मीद रखते हैं। हम ऐसी स्थिति में हैं कि बिना आपको बीच में लाये बीजापुर और आपके भाई में सुलह न होने दें। साथ ही बीजापुर और औरंगज़ेब साहब की फौजों को मिलकर दिल्ली की तरफ कूच न करने दें।"

"क्या मदद चाहते हैं ?"

"दस लाख रुपये सालाना बीजापुर की सेना को मुगल सल्तनत में आने से रोकने के लिए।"

"तो आप समझते हैं कि मुगल शहंशाह अब मराठा सरदार को खराज दिया करेगा ?"

"नहीं हुजूर ! इस बात का मतलब यह है कि मुगल दरबार अपने एक अधीन राजा को उसके तख्तोताज़ की हिफाज़त के लिए मदद दे रहा है। सब राज्य अपनी नौकरी करने का खर्चा देते हैं।"

दारा की हेकड़ कम होने लगी थी। उसे यह समझ आने लगा था कि यह हिन्दू युवक बात ठीक कह रहा है। परन्तु जिस अभिमान से उसने बात आरम्भ की थी, उससे अपने व्यवहार को बदलना कठिन समझ उसने कह दिया, "हम आपकी तजवीज़ पर शहंशाह से बात करेंगे। आप कल इसी वक्त पता करियेगा।"

विश्वनाथ ने भी अपने मन में एक निश्चय कर लिया था और वह शहंशाह के दर्शन करने और उनसे भेंट करने की बात व्यर्थ समझ उठा और सलाम कर जाने के लिए इजाज़त माँगने लगा तो दारा ने कह दिया, "अपनी बहिन से नहीं मिलेंगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हुजूर ! यह आपके अधिकार में है। आप चाहें तो उसके दर्शन करा सकते हैं।"

"तो बैठ जाओ। हम अभी इन्तज़ाम करते हैं।"

विश्वनाथ खड़ा रहा। दारा उठा और बगल के द्वार से बाहर निकल गया। थोड़ी देर में नीला कमरे में आ गई और भाई के चरण-स्पर्श करने लगी। विश्वनाथ ने उसे उठाकर, उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए प्यार देते हुए कहा, "बताओ नील ! कुशल-मंगल से तो हो न ?"

"भैया कैसी लगती हूँ?" दोनों ने मन-ही-मन निश्चय कर रखा था कि पिछले दिन लिखी चिट्ठी का उल्लेख नहीं होगा। इस प्रकार बात चलती रही। नीला ने कहा, "माताजी के रुग्ण होने का समाचार मिला है। यदि समय हो तो उनसे मिलते जाना।"

"यत्न करूँगा।"

"अब तो शहंशाह भी मुझ पर कृपा-दृष्टि रखने लगे हैं। अब उनको मुझसे गिला प्रतीत नहीं होता।"

"मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है।"

"भैया !" नीला ने आवाज़ कुछ ऊँचे कर कह दिया, "तुमको और तुम्हारे राजा साहब को शहंशाह की हिमायत करने पर कटिबद्ध हो जाना चाहिए। मुझको कठिन समय आ रहा प्रतीत होता है।"

विश्वनाथ इस ध्वनि के ऊँचे हो जाने से समझ गया कि कोई उन दोनों का वार्तालाप सुन रहा है। इससे उसने भी उसी प्रकार कहा, "मैं इसी प्रयोजन से आया हूँ और मैं दरबार में हाज़िर होकर अपनी योजना शहंशाह के सम्मुख रखने वाला हूँ।"

"भगवान तुम्हारी सहायता करे। देखो भैया ! परमात्मा ने हमारा सूत्र शाही खान दान से जोड़ दिया है और यह सूत्र हमारी करनी से नहीं टूटना चाहिए।"

"हम इसके लिए यत्नशील रहेंगे।"

: ५ :

विश्वनाथ ने अब आश्वस्त हो वज़ीरे-आला से मिलना उचित समझा। उसकी भेंट वज़ीरे-आला से हुई और फिर शहंशाह से। विश्वनाथ ने इन सब मुलाकातों में अपना दृष्टिकोण उपस्थित किया। शहंशाह ने सुना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक शब्द नहीं कहा। वज़ीर-ए-आला ने विश्वनाथ के वक्तव्य के बाद कह दिया, "शहंशाह आपकी बात को और तजवीज़ को खुफिया करार देते हैं। आप यह बात सिवाय अपने राजा साहब के और किसी से न कहें।"

"हाँ हुज़ूर ! यह तो होगा ही।"

"हम औरंगज़ेब के साथ झगड़ा करना नहीं चाहते। इसलिए उसके सेना रखने पर एतराज़ नहीं कर सकते। इस पर भी हम चाहते हैं कि आप अपनी सेना को बढ़ाएँ और औरंगज़ेब का बीजापुर के साथ मेल-जोल न होने दें। इस वक्त तो मुगल दरबार आपकी किसी किस्म की रुपये-पैसे से मदद नहीं कर सकता, लेकिन आपकी खिदमत का बदला किसी मौके पर दरबार देगा।"

विश्वनाथ किसी प्रकार की न तो सहायता की आशा ही करता था न ही इच्छा। सरमद और पडितराज की बात सुन वह तो अब मुगल दरबार के मन पर यह बात बैठा देना चाहता था कि राजा शिवाजी उनका दोस्त है और जब वह अपने राज्य का विस्तार करेगा तो मुगल दरबार को न तो चिन्ता होनी चाहिए, न ही आपत्ति।

विश्वनाथ लौटते समय ग्वालियर के दुर्ग में अपने माता-पिता से भी मिला। उनको उसने नीला का पत्र नहीं दिखाया। वह नहीं चाहता था कि उनका बंदी जीवन लड़की का विचार कर और अधिक दुःखी हो।

वह पुणे पहुँचा तो उसकी कारगुजारी सुन जावाली के चन्द्रराव मोरे से बातचीत के लिए शिवाजी आश्वस्त हो कार्य करने लगे। मुगल दरबार से किसी प्रकार की आशा न रखकर स्वतन्त्र नीति का अवलम्बन होने लगा।

शिवाजी की ओर से बात करने वाले नरहरि राव और उसके सलाहकार बहुत आराम से बातचीत चला रहे थे। उनको पीछे से यह आज्ञा मिल रही थी कि बातों का जाल इतना गहरा और घना होना चाहिए कि उसमें समय लगे।

एक दिन आज्ञा गई कि सन्धि की शर्तें निश्चय कर लो और शर्तों पर हस्ताक्षर करने का दिन निश्चय कर लिखो।

इस समय तक संवत् १७१३ आ गया था और मीर जुमला से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
औरंगज़ेब की साँठ-गाँठ हो चुकी थी। मीर जुमला अरबिस्तान का रहने वाला था। बहुत ही छोटी अवस्था में वह हिन्दुस्तान में आया था और गोलकुण्डा में एक जौहरी की नौकरी करने लगा था। वहाँ जौहरी मरा तो यह उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बन गया। गोलकुण्डा के सुल्तान का ध्यान इस महत्वाकांक्षी युवक की ओर गया तो उसने उसे अपना वज़ीर-ए-आला बना लिया और उसे मीर जुमला की उपाधि से विभूषित कर दिया।

मीर जुमला ने अपने धन से और हिन्दू मन्दिरों को लूटकर उसके धन से एक बहुत बड़ी सेना एकत्रित कर ली और उस सेना के बल से हीरे की खानों पर अधिकार कर लिया। इससे उसके मन में एक स्वतन्त्र सुल्तान बनने की लालसा जाग पड़ी। यह शक्ति उसने गोलकुंडा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह से स्वतन्त्र होने के लिए एकत्रित की थी। उसने सुल्तान को बताये बिना कर्नाटक पर अधिकार कर लिया और उसमें अपना राज्य स्थापित कर लिया।

इस पर अब्दुल्ला कुतुबशाह को मीर जुमला की निष्ठा पर सन्देह उत्पन्न हो गया। उसने अपने वज़ीर-ए-आला को गोलकुण्डा वापस बुलाया। मीर जुमला ने आनाकानी करनी आरम्भ कर दी। सुल्तान ने मीर जुमला की बेगमों और लड़के मुहम्मद अमीन को कैद कर लिया। इस समय औरंगज़ेब ने मीर जुमला से सुलह कर ली और उसको विश्वास में लेकर उसने गोलकुण्डा को सूचना भेज दी कि मुहम्मद अमीन और मीर जुमला के परिवार को छोड़ दिया जाए, अन्यथा गोलकुण्डा पर आक्रमण कर दिया जाएगा। यह संवत् १७१२ के मध्य मास की बात थी। गोलकुण्डा के सुल्तान के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने गोलकुण्डा के लिए अपनी सेना भेजी थी। सुल्तान इस मुगल सूचना का उत्तर ही विचार कर रहा था कि सूचना मिली कि मुगल सेना भावनगर में आ पहुँची है। इससे तो सुल्तान घबरा उठा और मुगल सेना से बातचीत करने के लिए भावनगर को चल पड़ा, परन्तु उसके पहुँचने से पहले ही भावनगर पर औरंगज़ेब के लड़के शाह मुहम्मद ने अधिकार कर लिया। सुल्तान लौट आया और गोलकुण्डा दुर्ग में घुसकर बैठ गया। शाह मुहम्मद की सेना ने दुर्ग को घेरे में ले लिया। यह घेरा कुछ दिन तक ही चला परन्तु औरंगज़ेब की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस चढ़ाई की सूचना जब दिल्ली पहुँची तो वहाँ से हुक्म आया कि सेना वापस बुला लो। मुगल सल्तनत गोलकुण्डा से जंग नहीं चलाना चाहती।

इसमें एक कारण तो यह था कि मुगल सल्तनत मध्य एशिया और कन्धार के असफल युद्धों से धनहीन हो चुकी थी। इस धनहीनता में शहंशाह और शाही परिवार वालों की फजूलखर्ची भी कारण थी। इसके साथ-साथ दिल्ली दरबार का यह विचार था कि यदि गोलकुण्डा के साथ युद्ध लम्बा हुआ तो बीजापुर गोलकुण्डा की सहायता के लिए मैदान में निकल आयेगा और फिर युद्ध इतना लम्बा हो जाएगा कि उसके लिए धन बटोरना कठिन हो जायेगा।

परन्तु इस छोटे से अवसर से शिवाजी ने लाभ उठाया। ज्योंही शिवाजी के भेदियों ने यह सूचना भेजी कि औरंगजेब की सेना गोलकुण्डा के लिए चलने वाली है, शिवाजी ने नरहरि राव को यह खबर भेज दी कि संधि की शर्तें निश्चय कर शेष कार्यवाही की जाए।

नरहरि राव शिवाजी की आज्ञा पाते ही चन्द्र राव मोरे के निवास स्थान पर जा पहुँचा। राजप्रासाद के द्वार से सूचना राजा साहब को गई तो वे अभी सोकर ही उठे थे। वे समझ नहीं सके कि किस मतलब से नरहरि राव आया है। पिछली रात राजा साहब और उसके मन्त्री नरहरि राव के मेहमान थे और वहाँ खाना-पीना, मद्य-सेवन इत्यादि खूब हुआ था। रात तीन पहर तक नाच-गाना होता रहा था। चन्द्रराव अपने आवास में पहुँचा तो दिन निकलने वाला हो चुका था। इस समय मध्याह्न का समय था।

उसने कहा, "राजदूत को बैठक में बैठाओ। हम आ रहे हैं।"

चन्द्रराव को आने में आधा घंटा लगा। जब वह आया तो उसने विस्मय में पूछा, "दूत महोदय! बात क्या है? अभी तो पिछली रात की खुमारी भी नहीं उतरी।"

"महाराज!" नरहरि राव ने आदर करने के लिए उठकर कहा, "पुणे से राजा साहब की आज्ञा आई है कि सब शर्तें आज ही निश्चय होनी चाहिएँ। वे इस वार्तालाप के इतना लम्बा हो जाने पर बहुत क्रुद्ध हैं।"

"तो फिर?"

"मेरी राय है कि आज तीसरे प्रहर बैठकर संधि की शेष शर्तें निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर लें। राजा साहब शीघ्र ही यहाँ आकर हस्ताक्षर कर आपसे मित्रता की संधि कर लेना चाहते हैं।"

"पर नरहरि राव, अभी तक देरी तो आपकी ओर से ही हो रही थी। यदि आप हमारी एक बात मान जाएँ तो हम आपकी सब बातें मान जायेंगे।"

"क्या ?"

"यही कि हमारा संघ शाह बीजापुर के अधीन रहेगा और हम बीजापुर राज्य के विरुद्ध किसी प्रकार का झगड़ा नहीं करेंगे। हमारा आपस में झगड़ा यदि परस्पर बातचीत से निश्चय नहीं होगा तो शाह बीजापुर फैसला करेंगे।"

"अच्छा, तीसरे प्रहर सभा हो जाये। मुझे आज्ञा है कि आज सब कुछ निश्चय कर और हस्ताक्षर की तिथि निश्चय कर उनको लिख दूँ और अगर कुछ निश्चय नहीं हो सकता तो मैं वापस लौट जाऊँ और मेरे स्थान पर कोई अधिक योग्य आदमी भेजा जायेगा।

"अतएव अब मेरी योग्यता को चुनौती मिल रही है। इस कारण मेरी यह राय है कि आज किसी-न-किसी प्रकार अंतिम निश्चय हो जाना चाहिये।"

"हो जायेगा। नरहरि राव ! हम आपके मित्र हो गए हैं। जिसके साथ बैठकर जाम ले लिया उसकी हम हेठी होते नहीं देख सकते।"

इस प्रकार सायंकाल दोनों ओर के मन्त्री बैठे। राजा चन्द्रराव भी इस गोष्ठी में बैठ गये। एक ही घंटे में सब शर्तें निश्चय हो गईं। इस पर नरहरि राव ने कह दिया, "महाराज ! मैं राजा साहब को लिख रहा हूँ कि माघ की बारह तारीख को वे यहाँ आ जायें। आप थोड़ा उनके स्वागत का प्रबन्ध कर दीजिए। पुणे के कुछ नौकर-चाकर तो दस तारीख से ही आने लगेंगे।"

"यह सब प्रबन्ध हो जायेगा।"

"और यह शर्तनामा भली-भाँति दस्तावेजी कागज पर लिखकर ग्यारह तारीख को तैयार कर दिया जाए। उस पर दोनों राज्यों के मन्त्रियों के हस्ताक्षर पहले ही हो जाने चाहिएँ और पीछे उस पर दोनों श्रीमानों के हस्ताक्षर हो जायेंगे।"

"ठीक है। संधिपत्र ग्यारह तारीख को तैयार होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"महाराज ! एक प्रार्थना और है।"

"क्या ?"

"दोनों श्रीमानों के हस्ताक्षरों के उपरान्त मुझे यहाँ से चले जाने की आज्ञा हो जायेगी। इस कारण मेरा निवेदन है कि राजा साहब के आने से पहली रात को मेरा दावतनामा स्वीकार हो। मैं वचन देता हूँ कि उस दिन कल रात से भी अधिक शोभनीय और रसमय उत्सव होगा।"

"तो नाचने वाली कौन-कौन आयेगी ?"

"मैं सूरत से दस नाचनेवालियाँ बुला रहा हूँ।"

"बहुत खूब।"

"हस्ताक्षर वहाँ उत्सव में ही होंगे।"

"तो सब मन्त्रीगण भी वहाँ आयेंगे।"

"मुख्य मन्त्री को तो आना ही चाहिये।"

इस प्रकार निश्चय कर नरहरि राव ने पुणे लिख भेजा। शिवाजी वहाँ से तो केवल पाँच सिपाहियों के साथ चले, परन्तु जावाली में आने से पहले दो-दो तीन-तीन कर पाँच सौ मवाली एकत्रित हो गए थे। ग्यारह माघ संवत् १७१३ की सायंकाल नरहरि राव के निवास-स्थान पर भारी चहल-पहल थी और मृदंग, वीणा, पायल की झंकार के साथ-साथ शराब भी एकत्रित की गई थी।

दो मवाली भद्र पुरुषों के पहरावे में उस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए पहले ही उपस्थित थे। चन्द्रराव ने पूछा था, "इनको पहले कभी नहीं देखा।"

"ये महाराज के संरक्षक हैं, जो पहले ही यहाँ आ पहुँचे हैं।"

"राजा शिवाजी कब आने वाले हैं ?"

"वह इस समय यहाँ से पाँच मील के अन्तर पर पड़ाव डाले पड़े हैं। कल बहुत प्रातःकाल वे यहाँ पहुँच जायेंगे।"

उत्सव आरम्भ हुआ। नाच, गाना-बजाना और शराब का दौर चलने लगा। आधी रात निकल चुकी थी और अभी शराब के दौर चल रहे थे। चन्द्रराव के साथी एक-एक कर अचेत हो रहे थे और उनको उठा-उठा कर बगल के कमरे में बंद किया जा रहा था। एक नाचने वाली से चन्द्र राव सभा में ही छेड़खानी करने लगा। नर्तकी ने इस पर आपत्ति की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चन्द्रराव ने बलपूर्वक उसे अपने पास बिठाने का यत्न किया। एक मवाली ने उसे रोका। चन्द्रराव की उससे झपट हो गई और मवाली ने मद्य में चूर खड्ग घुमाते हुए चन्द्रराव के पेट में घोंप दी। चन्द्रराव लहू में लथपथ वहाँ ही लोट गया। उसी समय छिपकर जावाली में आये मवाली निकल आए और जहाँ कहीं जावाली के सिपाहियों को देखा उन पर आक्रमण करने लगे।

शिवाजी तो सायंकाल के वहाँ आये हुए थे। उन्होंने दो सौ मवालियों को लेकर चन्द्रराव के प्रासाद पर जा अधिकार कर लिया। थोड़ा-सा संघर्ष हुआ और राजप्रासाद पर अधिकार हो गया।

प्रात: जावाली के लोग राजप्रासाद पर भगवा ध्वज फहरते देख और यत्र तत्र शिवाजी के सैनिकों को खड़े देख सब समझ गए। राज्य बदल गया था। चन्द्रराव के परिवार के लोग, रानियाँ, लड़के तथा लड़कियाँ दिन निकलने से पूर्व ही महल छोड़ गई थीं।

इस प्रकार बीजापुर से आये और डेढ़-दो वर्ष से प्रतीक्षा कर रहे हत्यारे शिवाजी के आने पर भाग खड़े हुए। चन्द्रराव की प्रजा में यह विख्यात हो चुका था कि शिवाजी महाराष्ट्र में स्वराज्य स्थापित करने में लगे हैं। अत: जब जावाली में शिवाजी की ध्वजा लहराने लगी तो वहाँ के जन-साधारण कूदने, नाचने और गाने लगे। राजप्रासाद के बाहर लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई और शिवाजी के उनको दर्शन देने पर हर-हर महादेव के नारों से आकाश गूँजने लगा।

मोरे की हत्या और जावाली में शिवाजी के अधिकार का समाचार औरंगज़ेब को भावनगर में ही मिला। उस समय दिल्ली से शहंशाह का आदेश आ चुका था कि गोलकुण्डा दुर्ग का घेरा उठा लिया जाये और सेना को वहाँ से वापस बुला लिया जाये।

इस आज्ञा से औरंगजेब प्रसन्न नहीं था। वह शाह को थोड़ा और कष्ट देना चाहता था। अब दिल्ली फरमान के बाद वह वहाँ से हट जाने का बहाना ढूंढ़ने लगा।

वह अभी किसी प्रकार की योजना ही बना रहा था कि शिवाजी का परामर्शदाता विश्वनाथ वहाँ आ पहुँचा। औरंगज़ेब विश्वनाथ से बहुत सतर्क रहता था। परन्तु कभी-कभी वह उसको भी ऐसी बातें सुझा देता था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ज़िससे उसे भारी लाभ होता था। अतः वह विचार करने लगा कि इस समय वह विश्वनाथ से क्या लाभ उठा सकता है।

औरंगज़ेब दिल्ली का उसकी समर में हस्तक्षेप देख क्रुद्ध और निराश तो था ही, इस कारण उसनें शिवाजी को चन्द्रराव की हत्या करने पर डाँट भेजने के विचार से विश्वनाथ को उपस्थित होने की स्वीकृति दे दी।

विश्वनाथ ने दरबारी सलाम की और बधाई दे दी।

"किस बात की बधाई देना चाहते हो ?"

"आपकी दुहरी फतह पर।"

"दुहरी कैसे ?"

"गोलकुण्डा की इस सफल समर पर और जावाली के मुगल सल्तनत में शामिल हो जाने पर।"

"दोनों स्थानों पर हुई वारदात से हम खुश नहीं हैं।"

"तो हुजूर ! मुआफ रखें। आप वाकिआत का ठीक-ठीक जायजा नहीं ले रहे।"

"तो तुम बता दो। क्या फायदा हुआ है इन दोनों वक़ूओं से ?"

"जहांपनाह ! गोलकुण्डा आपका लोहा मान गया है और वह अब मुगल-सम्राट की हुक्म अदूली करने की जुर्रत नहीं कर सकता। इस वक्त आपको धन की बहुत जरूरत है और यह गोलकुण्डा से मिल सकता है।"

"कैसे ?"

"अब इनसे सुलह कर लीजिए। सुलह की कीमत वे देंगे ?"

"अभी तो खबर है कि किले में लडने-मरने की तैयारियाँ हो रही हैं। बाहर इलाके में भी शाही सिपाहियों का रसद-पानी रोक रहे हैं।"

"तो आपने सुलह करने की ख्वाहिश ज़ाहिर नहीं की ?"

"अगर हम ख्वाहिश ज़ाहिर करेंगे तो फिर हमको कुछ मिलेगा थोड़े ही। बल्कि ये लोग हमसे कुछ माँगेंगे।"

"सुलह तो आपको करनी है और करनी ही चाहिए। दिल्ली से आए फरमान की रूह से और फिर अपने भी फायदे के लिए यह जरूरी है।"

दिल्ली की बात सुन औरंगज़ेब भौंचक्क हो मुख देखने लगा। विश्वनाथ ने मुस्कराते हुए कहा, "हुजूर ! हमारे जासूसों ने यह खबर दी है कि दिल्ली से एक फरमान आपको भेजा गया कि आप यह घेरा उठा लें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और वापिस लौट जायें।"

"यह खबर दुरुस्त नहीं है।"

"खैर ! शायद आपको अभी तक वह मिली नहीं। वह एक आध-दिन में मिल जायगी; मगर क्या यह आपके लाभ की बात नहीं कि दक्षिण की तीन ज़बरदस्त ताकतें आपके साथ दोस्ती का सलूक रखें।"

"कौन-कौन-सी तीन ताकतें ?"

"गोलकुण्डा, बीजापुर और शिवाजी।"

"तो शिवाजी भी एक ताकत हो गया है ?"

"हाँ हुज़ूर ! अब पुणे राज्य दक्षिण-पूर्व की ओर जावाली, कर्णाटक और कोंकण से सम्बन्ध रखता है। उत्तर में उसकी सरहद मुगल सल्तनत के साथ लगती है। पश्चिम् में हम सागर-तट का क्षेत्र आपसे माँगने की दरख्वास्त करते हैं।"

"मुझसे दरख्वास्त किसलिए ? यह तो आपको शहंशाह दिल्ली से करनी चाहिए।"

"तो हुज़ूर ने शहंशाह बनने की ख्वाहिश छोड़ दी है ?"

"तो शिवाजी चाहते हैं कि हम मुगल गद्दी पर बैठें ?"

"हमें इससे बहुत खुशी ह़ासिल होगी।"

"मगर ये कत्ल करने का रिवाज हमको पसन्द नहीं।"

"हुज़ूर ! यह तरीक़ा आप जैसे बहादुरों से इस्तेमाल नहीं होगा। कातिलों के साथ कत्ल, धोखेबाज और झूठों के साथ धोखा और बहादुर लड़ाकुओं के साथ लड़ना तरीके हैं जिनसे हम अपनी बात करते हैं।"

"और तुम लोग मुगल सल्तनत के साथ कैसा सलूक ठीक समझते हो ?"

"यह तो हुज़ूर, आपके मातहत है। हम आपको अपना दोस्त समझते हैं। हम आपके फायदे की बात सोचते रहते हैं।"

"अच्छा विश्वनाथ ! गोलकुण्डा से हमको सुलह कर लेनी चाहिए। भला किसलिए ? क्या दिल्ली का हुक्म इसके लिए काफी वजह है ?"

"नहीं हुज़ूर ! दिल्ली का हुक्म तो है ही, मगर यह आपके अपने फायदे के लिए ही है।"

"मेरा क्या फायदा है ?"

"दक्षिण के राज्यों से सुलह दिल्ली का तख्त दिलाने में मददगार होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर दिल्ली का तख्त मिलेगा ही ? शहंशाह अभी खुशो-खुर्रम हैं। मैंने सुना है कि अभी-अभी एक नई बीवी महल में ले आए हैं। मैं तो फकीर बन मक्का की जियारत करने का इराद बना रहा हूँ।"

"कुछ भी हो। आप एक साल के अन्दर-अन्दर दिल्ली के तख्त को रौनक बख्शेंगे। मैं ग्वालियर गया था और वहाँ पिताजी कहते थे कि आप हिन्दुस्तान के शहंशाह बनने वाले हैं।"

"तो पंडितजी से मेरी बाबत बात हुई थी क्या ?"

"हाँ, हुजूर ! वे कहते थे कि डेढ़-दो साल में वे कैद से छोड़ दिए जायेंगे और तब वे हरिद्वार चले जाएँगे।"

"मैं तो यह समझ रहा हूँ कि ये बूढ़े शहंशाह मरेंगे ही नहीं। देखो न, मैं इस वक्त बाबा बन चुका हूँ और ये हजरत परबाबा हैं, मगर अभी तक नई बीवियाँ कर रहे हैं।"

"मगर हुजूर ! नई बीवियाँ मौत का हाथ पकड़ सकती हैं क्या और उसके लिए मौत का द्वार बन्द कर सकती हैं क्या ?"

"इस वक्त हमारे सामने यह मुश्किल दरपेश है कि गोलकुण्डा से घेरा इज्ज़त के साथ कैसे उठाएँ ?"

"हुक्म हो तो इसके लिए मैं कोशिश कर दूं ?"

"तुम क्या कोशिश करोगे ?"

"मैं शाह अब्दुल्ला साहब को तैयार कर दूंगा कि वे आपसे सुलह की अर्ज करें।"

"बात तो ठीक है, मगर हमारा नाम बीच में आना नहीं चाहिए।"

"नहीं आयेगा।"

"तो कोशिश करो।"

: ६ :

गोलकुण्डा के शाह अब्दुल्ला कुतुब खाँ की माँ औरंगज़ेब से अपने पुत्र की गुस्ताखी के लिए मुआफी माँगने आई तो औरंगज़ेब ने सुलह के लिए अपनी शर्तें उपस्थित कर दीं और वे शर्तें मान ली गईं। गोलकुण्डा के शाह ने पिछला खराज जो उसने कई वर्ष से नहीं दिया था, दे दिया। साथ ही युद्ध का खर्चा पन्द्रह लाख रुपया दिया। मीर जुमला के परिवार और लड़कों को छोड़ दिया गया तथा शाह की लड़की का विवाह औरंगज़ेब के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के शहज़ादा मुहम्मद से कर दिया गया। सबसे बड़ी बात यह की गयी कि गोलकुण्डा में शिया मज़हब हटा कर शाही मज़हब सुन्नी कर दिया गया और खुतवे में शहंशाह का नाम पढ़ा जाने लगा।

ये सब बातें हो जाने पर घेरा उठा लिया गया। मुगल सेनाएँ वापस हो गयीं और मीर जुमला की सब सम्पत्ति लौटा दी गयी। औरंगजेब ने मीर जुमला को शहंशाह की अतायत कबुल करने के लिए एक सिफारशी चिट्ठी देकर दिल्ली भेज दिया।

इधर गोलकुण्डा पर एकत्रित हुई सेना का मुख बीजापुर की तरफ कर दिया गया। इसमें कारण यह बना कि बीजापुर सुल्तान की मृत्यु हो गयी थी और उसकी एक रखेल का लड़का अली आदिलशाह द्वितीय गद्दी पर बैठ गया था। मलिका बेगम के पुत्र ने झगड़े आरम्भ कर दिए और इस अव्यवस्था से लाभ उठाने के लिए औरंगज़ेब ने बीजापुर पर हमला बोल दिया।

शिवाजी के पिता शाहजी तो सम्भाजी के दिल्ली में मेहरुन्निसा को भगाने के असफल प्रयत्न के उपरांत आगरा से भाग आए थे। कुछ दिन पुणे में रहकर वे पुन: बीजापुर चले गए थे और उन्होंने बीजापुर की नौकरी स्वीकार कर ली थी। जब औरंगज़ेब ने बीजापुर पर आक्रमण किया तो शाहजी बीजापुर की सेना ले उसका विरोध के लिए आगे बढ़ने लगे। दूसरी ओर शिवाजी ने इसको सुअवसर जान मुगल सल्तनत में से जुनार और अहमदनगर के पश्चिमी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

औरंगज़ेब इस पर आग-बबूला हो उठा, परन्तु वह कुछ कर नहीं सका। कारण यह कि दिल्ली से दूसरा फरमान पहुँच गया था कि औरंग-ज़ेब को दक्खन में युद्ध बन्द कर देना चाहिए और जितना धन उसको मिला है, दिल्ली भेज देना चाहिए।

औरंगज़ब ने अभी दिल्ली के हुक्म की अदूली करना पसन्द नहीं की, मगर वह समझ गया कि अब दिल्ली से बगावत करनी चाहिए। इसके लिए वह बहाना ढूंढने लगा।

इस समय विश्वनाथ दिल्ली पहुँचा हुआ था। इस बार उसकी वज़ीर-ए-आला ने शहंशाह से भेंट तुरन्त करा दी। शिवाजी के मराठा सेना के जुनार इत्यादि पर अधिकार का समाचार दिल्ली पहुँच चुका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहंशाह की खास बैठक में वज़ीरे-आला के साथ विश्वनाथ पहुँचा। वहाँ शहंशाह और दारा उपस्थित थे। विश्वनाथ ने दरबारी सलाम की तो उसको सामने फर्श पर बैठने का हुक्म हो गया। उसके बैठते ही दारा ने बात आरम्भ कर दी, "आपके राजा शिवाजी ने जुनार और अहमद-नगर के पास के इलाके पर कब्ज़ा कर लिया है।"

"कब्ज़ा नहीं किया जहाँपनाह ! उस इलाके पर बीजापुर की नज़र थी। बीजापुर की फौज वहाँ कब्जा कर शहज़ादा औरंगज़ेब की फौज का पीछे से घेरा डालने की कोशिश करना चाहती थी। इस वास्ते वफादार मुगल रिआया होने के कारण हमने उस इलाके को अपने कब्जे में ले लिया है। ज्यों ही शहज़ादा साहब की फौज वापस आयेगी, हम उस इलाके को खाली कर शहंशाह के कारिन्दों के हवाले कर देंगे।"

"मगर आपने यह मुगल फौज की हिफाजत के लिए किया था क्या ?"

"यकीनन, हुज़ूर !"

"मगर आपने वहाँ का खजाना भी तो लूट लिया है ?"

"लूटा नहीं हज़ूर ! उसमें से फौज का खर्च लिया है, जो उस इलाके की हिफाजत के लिए भेजी गयी थी।"

"तो उसका खर्चा आपके राजा ने अपने पास से नहीं किया ?"

"हुज़ूर ! हमारे पास जंग जैसे खौफनाक काम के लिए धन है ही कहाँ ? साथ ही शुरू से ही हमारा विचार इस इलाके को मुगल सल्तनत को वापस कर देने का था। इस वास्ते यह सेवा हमने राज्य के धन से ही की है।"

"देखो पण्डित !" शाहजहाँ ने बातों में दखल देते हुए कहा, "हमने बीजापुर को फतह करने का खयाल तर्क नहीं किया। हम यहाँ से एक बहुत बड़ी फौज भेजने का इरादा रखते हैं। इस फौज के सालारे-जंग मीर जुमला और मुअज़्ज़म खाँ होंगे।"

विश्वनाथ को यह प्रबन्ध पसन्द नहीं आया। उसने कह दिया, "जहाँ-पनाह ! अगर गुस्ताखी मुआफ हो तो अर्ज करूँ ?"

"हाँ कहो। क्या कहते हो ?"

"मीर जुमला साहब को कोई काम कन्धार की तरफ का दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दक्खन की आबो-हवा उसके मुआफिक नहीं आएगी।"

"क्यों ? अभी तक तो वह वहाँ बहुत खुश और तन्दुरुस्त था।"

"मगर हज़ूर ! अब वहाँ की आबो-हवा में फरक आ गया है।"

शाहजहाँ इन बुझारतों को समझ नहीं सका। उसने मीर जुमला से एक बड़ा हीरा भेंट में पाकर, हीरे की खानों पर अधिकार पाने की योजना बनाई थी। दारा विश्वनाथ के कथन का अर्थ समझ रहा था। उसने कह दिया, "मेरी भी इल्तजाह है कि शहंशाह मीर जुमला को दक्खन की तरफ न भेजें।"

मगर शहंशाह नहीं समझा और मीर जुमला तथा मुअज़्ज़म खाँ को पचास हजार फौज के साथ दक्खन फतह करने के लिए भेज दिया गया।

विश्वनाथ की भेंट दारा से भी हुई। उस भेंट में भी विश्वनाथ ने औरंगज़ेब की बढ़ती हुई ताकत की ओर संकेत किया तो दारा ने फिर वही बात ज़ाहिर की कि शहंशाह के सब लड़के सल्तनत को मज़बूत करने के लिए इकट्ठे हैं।

विश्वनाथ समझ रहा था कि ये बाप-बेटा दोनों वास्तविक परिस्थिति को नहीं जानते। दारा ने कह दिया, "राजा जयसिंह एक वफादार रिआया हैं। उन्होंने ही शहंशाह को दक्खन फतह करने के लिए मीर जुमला की खिदमत हासिल करने की राय दी है।"

विश्वनाथ ने बात बदल दी। उसने कह दिया, "इस बार मैं एक दरख्वास्त लेकर आया हूँ।"

"हाँ। बताओ क्या चाहते हो ?"

"मेरे वालदैन ग्वालियर के किले में आठ साल से कैद हैं। मेरी दरख्वास्त है कि उन्हें हरिद्वार जाकर अपने आखिरी दिन शान्ति से गुजारने की इजाज़त दी जाए।"

"देखो विश्वनाथ ! महताब बेगम ने भी मुझे ऐसा करने के लिए कहा था। उसकी बात को न मानते हुए मैंने यह कहा कि राज्य पण्डितजी को हर किस्म का सुख पहुँचाने की कोशिश करेगा। वे वहाँ किले के अन्दर रहते हुए जो भी सहूलियत चाहें मिल सकती है; मगर हम इस वक्त कोई भी ऐसी बात नहीं कर सकते, जिससे यह ज़ाहिर हो कि हम हिन्दुओं की हिमायत कर रहे हैं। हमारा एक उसूल है कि हुकूमत को हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किसी भी दूसरे के हाथ में न जाने दें और इस उसूल के लिए हम हर एक कुर्बानी करने को तयार हैं।

"हमारे दुश्मन हम पर यह इल्ज़ाम लगाते हैं कि हम काफिरों की हिमायत कर खुद काफिर बन रहे हैं और मुसलमान हमारे खिलाफ होते जा रहे हैं।"

"मगर हुजूर! हिन्दुओं की मुखालिफत का भी तो ध्यान रखना होगा।"

"वे हिन्दू हैं कहाँ? उनकी कहीं तनज़ीम है? उनकी कहीं सल्तनत है जो हमारा मुकाबिला कर सके।"

विश्वनाथ यह सब कडुवा घूंट समझ पी रहा था। पिछले पाँच सौ वर्ष का यह हिन्दुओं का इतिहास था। वह जानता था कि मुसलमान कुछ हज़ार सिपाही की तादाद में हीं यहाँ आए थे। वे हिन्दुस्तान में अपना राज्य स्थापित कर रहने लगे। उन्होंने हिन्दू औरतों से बच्चे पैदा किए और उनकी औलाद अब लाखों और करोड़ों हो गयी है। यह ठीक है कि पिछले पाँच सौ वर्ष से मुसलमान एक अटूट प्रवाह में विदेशों से आ रहे हैं, परन्तु उनकी संख्या तो बहुत कम है। अधिकतर मुसलमानों ने छोटी जात के हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाया है और हिन्दू औरतों से बल-पूर्वक शादी कर मुसलमान औलाद पैदा की है।

पंजाब में कुछ सिक्ख धर्म के मानने वाले कुछ-कुछ इस्लाम का विरोध करते देखे जाते थे। उन्होंने ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए हुओं को वापस सिक्ख धर्म में लेना आरम्भ कर दिया था और बल तथा छलपूर्वक पतित की गयी औरतों को भी पुन: हिन्दुओं के घर में सम्मिलित करना आरम्भ कर दिया था। इसी कारण मुसलमान उनके विरुद्ध थे।

हिन्दुओं की अवस्था विश्वनाथ से छिपी नहीं थी। पंडितराज जगन्नाथ का दु:खद् अन्त वह सुन चुका था। उसने दरबार की छत्रछाया में रहते हुए एक मुसलमान लड़की से विवाह कर लिया था। इस विवाह के उप-रान्त भी वह अपना पूजा-पाठ और स्वाध्याय वैसा ही रखे हुए था, जैसे हिन्दू रखते हैं। इस प्रकार शहंशाह और उसके विरोधियों ने दारा को काफिर बताना आरम्भ कर दिया। अपराध यह लगाया गया था कि शह-ज़ादा-ए-अज़ीम एक ऐसे हिन्दू को संरक्षण दे रहा है जिसने एक मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लड़की को हिन्दू बना लिया है।

राजगद्दी जाने के भय से विवश पण्डितराज की पत्नी को काज़ी के सामने उपस्थित हो यह बयान देने पड़े कि वह हिन्दू नहीं हुई। वह बाकायदा नमाज़ पढ़ती है और रोज़े रखती है। उसे यह मानना पड़ा कि वह अपने पति को गोमांस खिलाकर मुसलमान बना देगी।

दारा पण्डितराज का मित्र होते हुए भी उसकी सहायता और रक्षा नहीं कर सका। इस पर पण्डित को दिल्ली छोड़ बनारस जाना पड़ा। बनारस में भी उसकी कठिनाइयों की समाप्ति नहीं हुई। हिन्दुओं को यह पता चल गया कि उसकी पत्नी मुसलमान की लड़की है। पत्नी ने सौगंध-पूर्वक कहा है कि वह नित्य भगवान महादेव की पूजा करती है। वह शुद्ध पवित्र रहती है और मांस नहीं खाती, परन्तु बनारस के पण्डितों को संतोष नहीं हुआ। उनको यह भी समझ नहीं थी कि नेक कर्म करने से कोई हिन्दू होता है।

हिन्दुओं ने पण्डितराज जगन्नाथ को विवश कर दिया कि वे गंगा में प्रवाह लेकर अपना जीवनान्त कर दें। यह था उस समय का हिन्दू। अतः उसे दारा का कथन ठीक ही प्रतीत हुआ कि हिन्दू हैं कहाँ? और उनसे सहायता की वह कैसे आशा करे?

विश्वनाथ मन में विचार कर रहा था कि घोर अन्याय हो रहा है, परन्तु हिन्दुओं से न्याय के लिए क्या दारा को तख्तो-ताज़ छोड़ देना चाहिए? वह अपने मुख से किसी दूसरे को इतना बड़ा त्याग करने के लिए कह नहीं सका।

वह सोचता था कि इन भीरुओं का साहस बाँधने के लिए ठीक उपाय यह है कि उनको निस्तेज कर दिया जाये, जिनसे डर कर ये घोर अन्याय करने पर उतारू हो रहे हैं।

वे कौन हैं? इस प्रश्न के उठते ही वह समझ गया कि मुसलमानों में मुल्ला-मौलाओं को और राज्य-तन्त्र में औरंगज़ेब को निस्तेज करने से ही राज्य सुखद्, सत्य और न्यायनिष्ठ हो सकता है।

इस विचार के आते ही वह उठा और सलाम कर जाने की स्वीकृति माँगने लगा।

"क्यों? बात समाप्त हो गई क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हाँ हुज़ूर ! मैं मन में एक ही हवस लेकर आया था कि शहंशाह अब वृद्ध हो रहे हैं और इस आखिरी समय में सत्य और न्याय का मेल करवा दूँ।"

"मैं," दारा ने कुछ रोकते हुए कहा, "शहंशाह तक तुम्हारी अर्जी पहुँचा दूँगा।"

"मैं शहज़ादा साहब का निहायत ही मश्कूर रहूँगा।"

"कुछ हमारा भी काम है।"

"फरमाइये।"

"हम शिवाजी से मदद की उम्मीद करते हैं।"

"किस बात में ?"

"औरंगज़ेब से जंग में।"

"हुजुर ! राजा साहब की सामर्थ्य बहुत थोड़ी है। हमको इतनी सेना रखनी पड़ रही है कि उसका खर्च राज्य की आय से नहीं चल सकता। पिछली बार मैं अपने शाहंशाह से उस सीमावर्ती निर्धन देश की सहायता के लिए आया था। मगर वह सहायता मिल नहीं सकी। उसके खिलाफ, जिसकी आप मुखालिफत करने के लिए हमको कह रहे हैं. उसकी मदद के लिए आप तीन करोड़ रुपया और पचास हजार सिपाही भेज रहे हैं। बताइये, हम उसकी मुखालिफत कैसे कर सकते हैं ?"

दारा अपनी अयुक्तिसंगत बात को समझ गया। वह चुप कर रहा। इस पर विश्वनाथ ने कह दिया "इस पर भी मैं राजा साहब की ओर से आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हम अपनी सामर्थ्यानुसार शहंशाह की हिमायत करेंगे।"

"और अगर किसी समय मुझमें और मेरे भाई में झगड़ा हो गया तो किसका पक्ष लेंगे ?"

'जो हमको जीने का मौका देगा।"

'यही तो मैं वादा दे रहा हूँ।'

"तो हुज़ूर ! मेरा वायदा भी आपकी मदद का है।"

: ७ :

औरंगज़ेब के गोलकुण्डा और बीजापुर पर आक्रमणके समय शिवाजी चुपचाप अपनी शक्ति संचय करते रहे। इस समय तक जावाली में उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राज्य [illegible] से उसकी सेना की दशा सुधरने लगी थी।

एकाएक १७१४ में शाहजहाँ बीमार हुआ तो दिल्ली से आने वाले समाचारों में शाहजहाँ के जीवित होने के विषय में संदेह किया जाने लगा।

विश्वनाथ उस समय अहमदनगर के समीप जुनार के क्षेत्र में प्रबन्ध के लिए गया हुआ था। वहाँ उसे शाहजहाँ के बीमार होने की सूचना मिली, परन्तु इसके अतिरिक्त दिल्ली से और कोई समाचार नहीं आया। वह समझ गया कि उसके पिता की भविष्यवाणी सिद्ध होने वाली है। पिछली बार भी वह अपने पिता से ग्वालियर के किले में मिलने गया था तो उन्होंने गणना कर बताया था, "दिल्ली और आगरा की सल्तनत में भूकम्प आने वाला है और उस भूकम्प में बड़े-बड़े मीनार गिरकर भूमिसात् होने वाले हैं।"

इस पर विश्वनाथ ने पूछा था, "पिताजी! क्या शहंशाह की मृत्यु इस वर्ष में लिखी है?"

"नहीं; वह जीवित रहेगा। परन्तु उस पर शनि की साढ़-सती आने वाली है। यह साढ़े-सात वर्ष तक रहेगी, उसके उपरान्त शनि की दशा टलते ही उस पर मारकेश का काल है। उसमें वह नहीं बचेगा।"

इस भविष्यवाणी का जब उसने अपने राजनीतिक ज्ञान के प्रकाश में अध्ययन किया, तो समझ गया कि इस हलचल में औरंगज़ेब गद्दी पर बैठ सकेगा।

वह अपने राज्य के विषय में चिन्तन करने लगा तो उसे समझ आया कि उसे इस समय पुणे में होना चाहिए और इस अव्यवस्था के काल में मराठा राज्य में वृद्धि करनी चाहिए।

वह वहाँ से पुणे जा पहुँचा। शिवाजी को दिल्ली शहंशाह के रुग्ण होने की सूचना मिल चुकी थी। उन्होंने पहले ही इस स्थिति पर विचार करने के लिए सब मन्त्रियों को पुणे में एकत्रित किया हुआ था।

विश्वनाथ आया तो उसने अपने पिताजी की भविष्यवाणी के आधार पर यह बताया, "शहंशाह बीमार हैं, परन्तु वे इस बीमारी में मरेंगे नहीं, साथ ही वे शहंशाह भी नहीं रहेंगे। औरंगज़ेब दिल्ली और आगरा की राजगद्दी समेटेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री-मण्डल की बैठक में बात चल रही थी। शिवाजी विश्वनाथ से पूछ रहे थे और वह उत्तर दे रहा था। शिवाजी का प्रश्न था, "क्या मीर जुमला के और मुअज्जम खाँ के अधीन सेना औरंगज़ेब के विरुद्ध नहीं हो जाएगी ?"

"महाराज ! मीर जुमला तो पहले ही औरंगज़ेब का साथी है। वह भी औरंगज़ेब के विचार का व्यक्ति है । उसने अपनी शक्ति कर्नाटक में हिन्दुओं के मंदिरों की लूट के धन से बनाई थी और औरंगज़ेब भी यही करता रहा है। दोनों असीम महत्त्वाकाँक्षा रखने वाले और निरंकुश आततायी हैं। इस कारण मीर जुमला और औरंगज़ेब एक ही चट्टे के बट्टे हैं। रहा मुअज्ज़म खाँ, वह शहंशाह का वफादार था, परन्तु मज़हब के नाम पर और धन के लोभ से उसको शहंशाह का विरोधी बनाया जा चुका है।

'मतलब यह कि पचास हज़ार शाही सेना और तीस हज़ार औरंगज़ेब की सेना अब शहंशाह का मूलोच्छेदन करने चल पड़ेगी और बाप के जीते-जी यह उसकी गद्दी छीनेगा।"

"और दूसरे शहज़ादे इसको सहन करेंगे ?"

"महाराज ! घोर युद्ध होंगे। इस घरेलू लड़ाई से परिवार-भर नष्ट होगा। सिर्फ औरंगज़ेब ही बचता प्रतीत होता है।"

"अच्छा मान लो कि यह होने वाला है। तो क्या हम औरंगज़ेब की सहायता करें ?"

"महाराज ! वह साँप है। उसकी किसी भी बात का विश्वास नहीं किया जा सकता। वह स्वार्थी है। उसमें दो ज़बरदस्त जज़बे (भावनाएँ) हैं। एक इस्लाम और दूसरे खुदपरस्ती। दोनों परस्पर-विरोधी हैं। यही कारण है कि एक समय आयेगा जब इन दोनों में टकरा कर यह सल्तनत-विहीन होगा और वह स्वयं न तो इस लोक का सुख भोग सकेगा न ही अगले लोक का।

"ऐसी अवस्था में मेरी सम्मति यह है कि हमें मुगल राज्य से महाराष्ट्र के जितने अधिक-से-अधिक क्षेत्र सम्भव हों, मुक्त करने चाहियें।"

"इससे औरंगज़ेब नाराज़ होगा, परन्तु महाराज, वह तो नाराज़ होगा ही और हमको उसके साथ लड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस युद्ध के लिए जन और धन की आवश्यकता है। अतः हमको तुरन्त कोंकण और समुद्र-तटवर्ती देश पर अधिकार कर लेना चाहिए और भीख माँगकर, ऋण लेकर अथवा चुरा कर, जिस जिसी प्रकार भी हो, राज्य को धन-धान्य से सम्पन्न करना चाहिए।"

मन्त्री-मण्डल हँसने लगा। शिवाजी ने गम्भीर भाव धारण कर लिया।

विश्वनाथ ने पुनः कहा, "महाराज! हमारा महान् कर्तव्य है हिन्दू-धर्म की रक्षा करना। देश पर चोर, ठगों और धूर्तों का राज्य है। वे अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए प्रत्येक कुकर्म करने को तैयार हो जाते हैं। अतः उनका नाश करने के लिए हमें भी उनके अस्त्र-शस्त्र ही प्रयोग करने चाहिएँ।"

बात निश्चय हो गयी। कोंकण की सीमा पर सेना एकत्रित की जाने लगी। यह प्रतीक्षा होने लगी कि कब मुगल परिवार में गृह-युद्ध छिड़ता है और कब उस सुअवसर का प्रयोग किया जाता है।

मुगलों ने सत्ताईस दिन के घेरे के उपरान्त बीदर विजय कर लिया। बीदर की विजय के उपरान्त फौज मीर जुमला के अधीन बीजापुर की ओर बढ़ने लगी। गुलबर्गा के समीप बीजापुर सेना से युद्ध हुआ और वह पराजित हो गयी। वहाँ से कल्याण पर धावा बोला गया। यहाँ भी बीजापुर की सेना को पराजित होना पड़ा। इस समय पुनः दिल्ली से आज्ञा आयी कि बीजापुर से संधि कर ली जाए।

इस समय शिवाजी ने मुगल राज्य के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार जमाना चाहा। इस पर मराठा सेना लूट-मार करती हुई अहमदनगर के द्वारों तक जा पहुँची। जुनार से मराठा सेना को तीन लाख 'हून' मिले।

ज्यों ही औरंगज़ेब को शहंशाह की बीमारी का समाचार मिला, वह अपनी पूर्ण सेना और तोपखाने के साथ आगरा की ओर लौट पड़ा। उसने मुरादबख्श को, जो गुजरात का सूबेदार था, पत्र लिखा कि उसे विश्वस्त स्रोतों से पता चला है कि शहंशाह का देहान्त हो चुका है और इसे छिपाया जा रहा है। दारा, जो एक बहुत बड़ा काफिर और बुतपरस्त है, सल्तनत को अपने मातहत करने की कोशिश कर रहा है।

औरंगज़ेब ने यह भी लिखा, "मैं राजपाट से उचाट हो चुका हूँ और किसी दीनदार को तख्त पर बैठा कर हज करने के लिए मक्का जाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खयाल रखता हूँ। शहंशाह के बाकी तीनों फरज़न्दों में से मैं तुमको ही मुगलिया सल्तनत का जांनशीन होना मुनासिब मानता हूँ। मैं इसी गरज़ आगरा की ओर जा रहा हूँ। तुम भी अपनी पूरी ताकत से आ जाओ। इन्शा-अल्ला मुराद भाई हिन्द के शहंशाह होंगे।"

मुराद के दिल में भी महत्वाकांक्षा जाग पड़ी और उसने एक ज़बर-दस्त सेना के साथ आगरा की ओर मुख कर दिया।

औरंगजेब के आगरा की ओर मुख करते ही शिवाजी ने कोंकण पर आक्रमण कर दिया और कल्याण पर अधिकार कर लिया। पूर्ण उत्तरी कोंकण पर उनका अधिकार हो गया। यह सब क्षेत्र बीजापुर का था।

शिवाजी की इस छीना-झपटी से बीजापुर दरबार में बहुत बेचैनी पैदा हो गयी। बीजापुर में शिवाजी के इस प्रकार भीड़ के वक्त आक्रमण करने की निन्दा होने लगी।

शिवाजी के क्रियाकलाप का समाचार औरंगजेब को भी मिला, परन्तु इस बार वह शिवाजी के विद्रोह की ओर ध्यान नहीं दे सका। उसके सामने बहुत बड़ा कार्य था। वह दारा को गद्दी से हटा स्वयं राजगद्दी समेटना चाहता था।

उसका साथी मीर जुमला, जानता था कि मुराद को चिट्ठी लिखी गई है। एक दिन वह पूछने लगा, "शहज़ादा साहब! शहंशाह तो अभी ज़िन्दा हैं?"

"इससे क्या होता है?"

"तो आप अपने वालिद शरीफ के खिलाफ जंग करने जा रहे हैं?"

"यह हमारे खानदान की रिवाज है। अकबर ने अपने मीर मुर्शिद के खिलाफ बगावत की थी। जहाँगीर ने अकबर के खिलाफ और हमारे वालिद शरीफ ने भी अपने वालिद और शहंशाह के खिलाफ बगावत का झण्डा बुलन्द किया था। मैं भी अपने बुजुर्गों के नक्शे-कदम पर ही चल रहा हूँ।"

"मगर हज़रत! आपने अपने छोटे भाई को लिखा है कि आप तो फकीर हो मक्का जा रहे हैं और दारा के खिलाफ आपका जंग है?"

"हाँ, मगर यह बूढ़ा शहंशाह मरता नहीं तो क्या किया जाए? रही मुराद की बात। लोग कहेंगे कि शहंशाह ज़िन्दा है और मैं कहता जाऊँगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि शहंशाह मर चुका है। दारा झूठी बात फैला रहा है।

"मीर साहब ! जो ज़्यादा शोर मचायेगा उसकी बात मानी जाएगी। हकीक़त को कौन देखता है। सब शोरगुल ही सुनते हैं।"

"मगर पीछे जब राज़ फाश हुआ तो दोनों फौजें आपस में ही लड़ पड़ेंगी।"

"उससे पहले ही मैं मुराद का इन्तज़ाम कर दूंगा।"

"मगर शहज़ादा साहब ! खुदा का खौफ करना चाहिए। बाप के बाद भाइयों पर हाथ साफ करना कहाँ तक ठीक होगा ?"

"खुदा की राह पर सब ठीक होगा। अगर हिन्दुओं के मन्दिर लूटने सवाब हैं तो काफिर भाई को लूट लेना क्या सवाब नहीं ? देखो मीर साहब ! मैं देखता हूँ कि कन्धार से कन्याकुमारी तक औरंगज़ेब की हुकूमत होगी और मीर साहब मेरा दाहिना हाथ होंगे। ये हाथ हिन्दुस्तान के उन इलाकों को फतह करेंगे, जहाँ अल्लाह की मिल्लत अभी नहीं पहुँची। मेरा मंशा बंगाल के मशरिकी इलाके और आसाम के पहाड़ी इलाके से है।

"उस दिन एक साहब बता रहे थे कि आसाम के पहाड़ी इलाके की औरतों की-सी खूबसूरती दुनिया में कहीं नहीं मिलती और मीर साहब वहाँ के हाकिम होंगे।

"उस इलाके में अभी तक बाहरी हमले नहीं हुए और सदियों से जमा हो रहा धन-दौलत मीर साहब के कदमों पर होगा।"

मीर जुमला को यह बात पसन्द आई। वास्तव में उसके लोभ को उभारा गया था और इस प्रकार उसका मुख बन्द हो गया था। छोटी अवस्था से ही मीर जुमला के मन में शहंशाह बनने की ख्वाहिश थी। वह आकांक्षा पूर्ण तो नहीं हो सकती थी। मुगल सल्तनत के सामने उसकी आज़ाद सल्तनत ठहर नहीं सकती थी और अब वह इसी मुगल सल्तनत की छाया के तले अपनी महत्त्वाकांक्षा पूरी होते देख रहा था।

समाचार मिला था कि मुराद एक शक्तिशाली सेना लेकर चला आ रहा है। औरंगज़ेब को यह भी समाचार मिला था कि शुजा भी तख्तोताज़ के लोभ में एक सेना लेकर आगरा को आ रहा है। शुजा ने तो आगरा की ओर चलने से पूर्व राजमहल में अपने को राजतिलक से विभूषित भी कर लिया था। उसने अपने को शहंशाह-ए-हिन्द घोषित कर दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरंगजेब शुजा को पसन्द नहीं करता था। एक तो वह शिया विचार रखता था और औरंगजेब सुन्नी था। दूसरे, शुजा ने बिना औरंगजेब से पूछे और राय किये अपने को शहशाह घोषित कर दिया था। इधर वह मुराद को बार-बार लिख रहा था कि उसे खुद तख्तो-ताज़ की हवस नहीं। वह तो फकीर तबीयत का आदमी है। इसलिए शहंशाह तो मुराद ही बनेगा।

औरंगजेब की सेना औरंगाबाद में एकत्रित हो रही थी। यहाँ से ही वह मुराद को खत पर खत लिख रहा था। इस समय शिवाजी की सेना कोंकण के सरहद पर एकत्रित हो गई थी। औरंगजेब को एक बात सूझी। उसने एक दूत पुणे भेज दिया। वह दूत शिवाजी के सामने उपस्थित हो औरंगजेब का पत्र देते हुए बोला, "राजा साहब को शहज़ादा सलाम कहते हैं। वे कहते हैं कि अभी तक राजा साहब और शहज़ादा साहब के ताल्लुक बहुत अच्छे रहे हैं। इस वक्त सल्तनत में खानगी झगड़े होने वाले हैं और शहज़ादा साहब उन खानगी झगड़ों में राजा साहब को अपना मददगार समझते हैं। शहज़ादा साहब यह चाहते हैं कि जब तक वे सल्तनत के शुमाली इलाके में अमन-अमान रखने में मसरूफ रहेंगे तब तक राजा साहब बीजापुर और गोलकुण्डा पर हावी रहेंगे और इसके लिए वह सारा इलाका जो पुणे राज्य से अहमद नगर तक फैला हुआ है, राजा साहब के अधीन कर देंगे। आइन्दा राजा साहब हमारे मातहत नहीं होंगे, बल्कि हमारे दोस्त होंगे।"

यह सब ज़बानी था और पत्र में सिर्फ यह लिखा था, 'अपने वज़ीर विश्वनाथ को भेज दीजिए। बकाया बातें हम उससे औरंगाबाद में तय करेंगे।'

विश्वनाथ का विचार था कि औरंगज़ेब किसी प्रकार का छल खेल रहा है। जो कुछ दूत ने कहा है, उसका एक शब्द भी तो लिखित में नहीं। इस पर भी जब शिवाजी ने पूछा कि वह औरंगज़ेब को मिलने जाने के विषय में क्या विचार करता है तो विश्वनाथ का विचारित मत था कि उसे जाना चाहिए और इस समय उसको मदद का अश्वासन देना चाहिए। साथ ही जो कुछ उसके दूत ने मौखिक रूप में कहा है, वह अमल में बल-पूर्वक ले आना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु पण्डित विश्वनाथ ! वह तुमको वहाँ कैद भी कर सकता है।"

"महाराज ! मुझ अकेले का जीवन उस परम पवित्र उद्देश्य के सामने कुछ भी गणना नहीं रखता। यदि मैं उसके मन में आपकी ओर से किसी प्रकार का आश्वासन दे सकूँ तो यह महाराष्ट्र में स्वराज्य के लिए हितकारी ही होगा।"

यह पूर्ण मन्त्री-मण्डल का विचार था कि औरंगज़ेब का इस समय विश्वनाथ को बुलाना गम्भीर अर्थयुक्त है। इस पर भी विश्वनाथ जाने के लिये तैयार हो गया।

: ८ :

औरंगाबाद औरंगज़ेब ने उस समय बसाया था, जब वह पहली बार दक्षिण का सूबेदार बनकर आया था और उसने दौलताबाद पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन किया था। परन्तु उस समय यह नगर कुछ उन्नति कर नहीं सका। कारण यह कि इस स्थान पर से उसे हटा कर कन्धार विजय करने के लिए वापस बुला लिया गया था।

जब दूसरी बार औरंगज़ेब दक्षिण का सूबेदार बन कर आया तो उसने फिर इस नगर की ओर ध्यान किया। अब वह अपने विद्रोह का केन्द्र इसी नगर को बना रहा था। औरंगाबाद में बैठा हुआ वह दिल्ली और आगरा के शाही अधिकारियों को ओहदों और जागीरों का लोभ दे-देकर अपनी ओर मिला रहा था। दूसरी ओर वह मुराद के साथ सम्पर्क बनाए हुए था। वह उसको निरन्तर लिख रहा था कि शहंशाह उसे ही बनाया जायेगा। तीसरी ओर वह शुजा की तैयारी और उसके विरोध में शाही कार्रवाई पर दृष्टि रखे हुए देख रहा था कि वहाँ क्या होता है।

औरंगज़ेब की नीयत थी कि आगरा की सेना शुजा को परास्त करने के लिए जाए तो वह आगरा की ओर प्रस्थान करे। यह सूचना आ गई। राजा जयसिंह और दारा का बड़ा लड़का सुलेमान शिकोह चालीस हजार सेना के साथ शुजा को आगरा की ओर बढ़ने से रोकने के लिए भेज दिये गये।

इस सूचना के मिलते ही औरंगज़ेब ने अपनी सेना को कूच करने की आज्ञा दे दी। इस कूच के ठीक एक दिन पहिले विश्वनाथ औरंगाबाद पहुंच गया और वहाँ सेना को कूच की तैयारी में लीन देख उसने समय गंवाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित नहीं समझा। वह अपने रहने का ठिकाना किए बिना राज दरबार में जा पहुँचा।

सूचना भेजते ही उसे भीतर बुला लिया गया। बैठक में सिर्फ दो आदमी उपस्थित थे। औरंगज़ेब और मीर जुमला। दोनों को विश्वनाथ की योग्यता और शहंशाह से सम्बन्ध का ज्ञान था। दोनों जानते थे कि विश्वनाथ शिवाजी के राजदूत के रूप में आया है।

विश्वनाथ ने सलाम की और मुस्कराते हुए औरंगज़ेब की तरफ देखा तो औरंगज़ेब को समझ आया कि वह उसके अन्तस्तल के भेद को जान रहा है। इससे अपनी झेंप मिटाने के लिए बोला, "विश्वनाथ, बैठो।"

विश्वनाथ बैठ गया तो औरंगज़ेब ने पूछा, "सुनाओ कैसे आए हो?"

"हुज़ूर ने याद फरमाया है।"

"हमें याद नहीं कि हमने शिवाजी के किसी दूत को बुलाया हो।"

"तो हुज़ूर! गलती हो गई मालूम होती है। राजा साहब को पत्र आपका नहीं शहज़ादा मुराद का आया होगा। मैं मुआफी चाहता हूँ और इजाज़त चाहता हूँ कि मैं पत्र डालने वाले को मिलने चला जाऊँ?"

इतना कह विश्वनाथ उठा तो औरंगज़ेब ने कह दिया, "अब आए हो तो तुमसे भी बात कर लें। भला तुमको मुराद साहब ने किस लिए बुलाया होगा?"

"हुज़ूर! यह तो मैं जानता नहीं। चिट्ठी पहुँची थी कि विश्वनाथ को जल्दी भेज दिया जाए। कुछ ज़रूरी सियासी मुआमलों पर बातचीत करनी है।"

"वह पत्र है?"

"हाँ है तो। अगर आप देखना चाहें तो दिखा सकता हूँ। हमारे राजा साहब आपसे ज़्यादा लगाव रखते हैं। इस कारण चिट्ठी पहुँचते ही बिना लम्बा-चौड़ा विचार किए मुझको यहाँ भेज दिया है।"

"चिट्ठी दिखाओ।"

विश्वनाथ ने चिट्ठी दिखाई। औरंगज़ेब ने देखी, पढ़ी और कहा, "इस पर दस्तखत तो मेरे ही मालूम होते हैं।"

"मालूम होता है किसी ने जालसाज़ी की है।"

"ख़ैर, कुछ हरज नहीं।" औरंगज़ेब ने चिट्ठी अपनी जेब में रखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा—

"मान लो यह चिट्ठी हमने ही भेजी है और हम तुमको एक काम सौंपना चाहते हैं।"

'फरमाइए।"

"तुमने देखा होगा कि किसी ज़बरदस्त लाम की तैयारी है।"

"हाँ हुजूर ! देखा है।"

"क्या समझते हो इस तैयारी का मक़सद ?"

"एक दीनदार फर्ज़न्द इस्लाम का नाम रोशन करने जा रहा है और अपने काफ़िर वालिद को कैद करने की कोशिश कर रहा है।"

"मगर इसमें उस फर्जन्द की अपनी कुछ भी हवस नहीं। वह यह सब दीन और खुदा के नाम पर कर रहा है।"

विश्वनाथ ने कह दिया, "तब तो मैं गलत जगह पर नहीं आया। अगरचे भूल से आया हूँ, मगर आया ठीक जगह पर हूँ। आप जैसे पाकबाज, दीनदार खुदादोस्त और फकीर की खिदमत में हाज़िर होने से मुझे खुशी हासिल हो रही है। फरमाइए, मुझसे क्या खिदमत चाहते हैं ?"

"यही कि इस मुहिम के दौरान तुम हमारे पास रहो और अपनी काबलियत से हमारी रहनुमाई करो।"

"जहे किस्मत।"

"और यहाँ एक नौ साल का लड़का है। वह हमारे पास किसी की अमानत है उसकी हिफाज़त करो।"

"यह खिदमत करने से मुझे खुशी ही हासिल होगी।"

"तुम कहाँ ठहरे हो ?"

"शहर में कोई भी सराय खाली नहीं। ख्याल था कि पहले हुज़ूर से मिल लूँ और अगर कुछ काम यहाँ रहने का न हुआ तो कसे-कसाए घोड़े पर सवार हो चल दूं। किसी दूसरी जगह पर आराम कर लूंगा।"

"नहीं; तुम यहाँ इसी महल में रह सकते हो। मीर साहब !" औरंगज़ेब ने मीर जुमला की ओर देखते हुए कहा, "ज़रा आप तकलीफ करें। ये हमारे दोस्त हैं। इनको अपने बगल के कमरे में ठहरा दीजिए। यहाँ से चलने से पहिले इनसे कुछ काम लिया जाना है।"

मीर जुमला उठा और विश्वनाथ को लेकर बैठक के बाहर चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आया और उसके नौकरों-चाकरों को आवश्यक आज्ञा दे अपने कमरे में ले गया ।

मीर जुमला ने अपने खिदमतगारों को साथ वाले कमरों को ठीक करने को कह विश्वनाथ को अपने कमरे में बैठाया और कहा, "मुझे आप जानते हैं ? मैं मीर जुमला हूँ ।"

"जी, नाम सुना है, मगर दीदार आज ही हासिल हुए हैं ।"

"मुझे अपना दोस्त समझिए ।"

"यह मेरी बहुत ही खुशनसीबी है जो आप जैसी बड़ी शख्सीयत को अपना दोस्त समझ रहा हूँ ।"

"मैं आपको जानता नहीं, मगर शाहज़ादा साहब से आपकी गुफ्तगूह सुनकर समझ आया है कि एक आला दिमाग आदमी से दोस्ती कर रहा हूँ ।"

"मैं आपके इन ख्यालात के लिए आपका शुक्रिया अदा करता हूँ । वैसे मैं राजा शिवाजी का एक अदना सेवक हूँ । इस पर भी आप लोगों की खिदमत के लिये हमेशा हाजिर रहता हूँ ।"

"छोड़िये इस बात को । मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ कि जो कुछ आपने शहजादा को कहा है वह तनजन था या तारीफ के लहज़े में ।"

"आप क्या समझे हैं ?"

"मुझे तो कुछ ऐसा समझ आया है कि आपने शहज़ादा साहब का मजाक उड़ाया है ।"

"मैं ऐसा नहीं समझता । मैं जानता हूँ कि शहजादा हिन्दुस्तान के शहंशाह बनने वाले हैं और अपने ख्याल से ये अपने दीन की खिदमत कर रहे हैं । इनके मजहबी भाई इनकी मज़हब के लिए हुई खिदमत की सदियों तक तारीफ करेंगे ।"

"ओह ! आप तो एक औलिया की तरह दुआ देने लगे हैं ।"

"नहीं जी । मैं थोड़ी सी अक्ल रखता हूँ और उसका इस्तेमाल ही कर रहा हूँ ।"

"यही तो मैं कह रहा था । देखो दोस्त ! मैंने आपकी बात के दौरान में ही यह फैसला किया है कि मैं इसका साथ छोड़ दूंगा ।"

"क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

“मैं एक खुदगर्ज आदमी हूँ। खुदा पर मुझे भरोसा नहीं है। इस पर भी मैं अपने बूढ़े बाप को कत्ल करने की कभी सोच भी नहीं सकता और यह आदमी यही सोच रहा मालूम होता है। यह कहता था कि शहंशाह के मर जाने की खबर खूब फैलानी चाहिए, जिससे कहीं उसको खत्म करने की जरूरत पड़ जाए तो उसके मारने के इल्ज़ाम से हम बरी माने जायेंगे।”

“ठीक है। ऐसा ख्याल करना एक इखलाकी जुर्म है, मगर यह जुर्म शहज़ादा साहब कर रहे हैं, मैं मान नहीं सकता। आखिर वे इन्सान हैं। इनके अपने भी लड़के हैं और जैसा ये अपने वालिद से करेंगे, वैसा ही इनके लड़के इनके साथ कर सकते हैं।”

“मगर साहब ! यह आप कैसे कहते हैं कि इनके हम मज़हब इनको सदियों तक याद करेंगे ?”

विश्वनाथ हँस पड़ा और हँसते हुए बोला, “इनके हम मजहब से मेरा मतलब उन लोगों से है जो पिदरकुश और ब्रादरकुश हैं। उनको इनके कारनामे बहुत ही सुहावने लगेंगे।”

“ओह ! मैंने समझा था कि आप दीन-ए-इस्लाम पर कीचड़ उछाल रहे हैं।”

“मगर हुजूर, इस्लाम क्या यही कुछ कहता है जो शहंशाह कर रहे हैं ?”

मीर जुमला ने बात बदल दी—“इस पर भी आप इनके काम और इनकी खिदमत के लिए फौरन राजी हो गये हैं।”

“जी ! इसमें मेरा भी काम और मतलब पूरा होता है। हमारे राजा साहब का भी फायदा इसी बात में है कि मैं इनकी खिदमत में रहूँ।”

“तो यह चिट्ठी एक बहाना था ?”

“जी नहीं। वह चिट्ठी असली है और इन शहज़ादा साहब की लिखी हुई है। मैं इनके दस्तखत पहचानता हूं, मगर उस चिट्ठी में कुछ भी नहीं लिखा हुआ और जब वे चिट्ठी को अपना होने से इनकार करने लगे तो मैंने उनको झूठा साबित करने की कोशिश नहीं की। इसमें कुछ फायदा नहीं था।”

“अच्छा एक बात बताइये। आपके सोचने के ढंग को मैं पसन्द करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ । मैं इसके साथ रहूँ या इसके बाप के साथ ?''

"मगर आप तो इनके साथ पिछले दो साल से हैं । भला मैं इनकी बाबत आपको क्या बता सकता हूँ ?''

"मैं अपने इस तज़रबा की बिना पर ठीक वक्त पर इसके मुखालिफों से जा मिलना चाहता हूँ ।''

"मगर इससे क्या फायदा होगा ? आपकी हालत उस मछली की मानिन्द हो जाएगी जो कड़ाही से कूद कर चूल्हे में गिरना चाहती हो ।''

"तो फिर ?''

"आप गैर-ज़ानिबदार बन जाइए । यह मैं गैबी ज़रिए से जानता हूँ कि आखिरी फतह इन शहज़ादा साहब की होगी और आपको इनसे फाइदा हासिल होने वाला है ।''

"और वह गैबी ज़रिया क्या है ?''

"उनकी बाबत आप शहज़ादा साहब से ही पूछ सकते हैं । व उस ज़रिये की सच्चाई का तज़रबा रखते हैं ।''

इस समय मीर साहब के खिदमदगार विश्वनाथ के लिए कमरे तैयार कर आ गए और बोले, "हुज़ूर ! इनके कमरे तैयार हैं ।''

विश्वनाथ उठकर अपने कमरे में चला गया । वहाँ उसके नौकर उसके स्नानादि का प्रबन्ध कर रहे थे ।

रात का खाना बनवा विश्वनाथ ने खाया और सोने की तैयारी करने लगा । इस समय विश्वनाथ का खास सेवक भागा-भागा आया और बोला, "शहज़ादा साहब आ रहे हैं ।''

विश्वनाथ तुरन्त बिस्तर से निकल शहज़ादा साहब के स्वागत के लिए तैयार हो गया । औरंगज़ेब भीतर आया और बोला, 'बाहर इतनी हल-चल है और तुम सोने की तैयारी कर रहे हो ?''

"वह मुझे मालूम है सरकार ! मगर जिसकी बरात चढ़ रही है उसकी नींद हराम हो तो हो, मेरी बरात तो चढ़ चुकी है ।''

"तो तुम शहंशाह बन चुके हो ?''

"मेरा यह मतलब नहीं हुज़ूर ! मैं तो यह कह रहा हूँ कि मेरी ज़िन्दगी का मक्सद पूरा हो चुका है । आपका मक्सद पूरा होने जा रहा है ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो यह पूरा होगा ?"

"यकीनन। पिताजी का नजूम आपको याद होगा। उस नजूम को लगाए आज साढ़े नौ साल हो चुके हैं और छः महीने में आप तख्तोताज के मालिक हो जायेंगे।"

"मगर आपने मीर साहब को क्या कहा है ?'

"कोई खास बात नहीं हुई। मैंने उनको वही कुछ बताया है जो अब आपको बता रहा हूँ।"

"मगर वे तो बिना बताए भाग गये हैं।"

"कहाँ भाग गए हैं ?"

"अभी-अभी खबर आयी है कि वे तनहा एक घोड़े पर सवार आगरा की सड़क पर सरपट भागे देखे गये हैं।"

"ओह ! वे पूछ रहे थे कि किनका पक्ष लेना ठीक होगा, आपका या शहंशाह-ए-हिन्द का। मैंने उनको बताया था कि आप कामयाब होने वाले हैं।"

"और कामयाब होने वालों से भाग जाना चाहिए।"

"यह तो मीर साहब की लियाकत और काबलियत का नमूना है।"

"वे लायक तो बहुत हैं ?"

"अपने मालिक से दगा करने में।"

"तो तुम उनके सुल्तान गोलकुण्डा से बगावत की बात कर रहे हो ?"

"नहीं हुजूर ! उस बगावत में जिसमें हुजूर ने उनकी मदद की थी, वह तो अपनी हिफाज़त ही कर रहे थे, मगर गद्दारी उससे पहले हो चुकी थी। सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब खाँ की खूबसूरत बेगम को मीर साहब ने खराब किया था। अपने मालिक के खिलाफ यह गद्दारी थी। बकाया तो उसके नतीज़े में ही हुआ था।"

औरंगज़ेब इस बात की वाकफियत पर हैरान था। उसने पूछ लिया, "तुम्हारे राजा साहब ने कितने जासूस हिन्दुस्तान में फैला रखे हैं ?"

"कुछ बहुत ज्यादा नहीं। राजा साहब के पास तो आप जितना धन ऐसे कामों के लिए है नहीं। हाँ, हमारे जासूस आपके जासूसों से कुछ ज्यादा अक्ल रखते हैं।"

"देखो विश्वनाथ ! मैं समझता हूँ कि यह मीर जुमला बिल्कुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बेवकूफ ही निकला है। मैं तो उसको अपने सगे भाई की तरह मानता था।"

विश्वनाथ मुस्कराता हुआ चुप रहा। इस पर औरंज़ेब ने बात बदल दी, "हमारी यह पेशकश है कि तुम हमारी नौकरी कर लो।"

"मगर हुज़ूर! वह तो मैं हमेशा ही से ऐसा समझता हूँ। आपको याद होगा कि एक बार पहिले भी आपने यही बात कही थी। मैंने कहा था कि यह राजा साहब से पूछ कर ही हो सकता है, मगर उन्होंने इजाज़त नहीं दी। मैं वहाँ रहता हुआ भी आपकी खिदमत करता रहता हूँ।"

"मगर तुम्हारा राजा साहब से क्या रिश्ता है जो तुम उनकी नौकरी छोड़ नहीं सकते ?"

"हुज़ूर! हम दोनों की माँ एक है।"

"ओह! तो तुम जीजाबाई के बेटे हो।"

"नहीं हुज़ूर! आप नहीं जानते। एक और माँ है और वह हमको अलहदा होने नहीं देती।"

"वह कौन माँ है ?"

"हुज़ूर! वह 'मादरे वतन' है। हम उसे अपनी जबान में 'मातृ-भूमि' कहते हैं। हम दोनों ने अपनी माँ के दर्शन किए हैं और उसने ही हमको यह कहा है कि तुम दोनों भाई हो और हमारा रिश्ता उसकी मार्फत है।"

"कहाँ मिली है तुमको ?"

"एक स्वामी समर्थ रामदास हैं। उन्होंने अपने योगबल से हमें उसके दर्शन कराये हैं।"

"तुम हमारी हँसी कर रहे हो ?"

"नहीं हुज़ूर!"

"अच्छा देखो। आज से तुम मेरे साथ रहोगे। मैं एक अपनी बहुत ही जरूरी चीज तुम्हारी हिफाजत में छोड़कर लाम पर जा रहा हूँ। हमारी दो बेगमें हैं। एक बच्ची है और महताब बेगम का लड़का है।"

"आपके साहबजादे मुहम्मद साहब कहाँ हैं ?"

"वे इस वक्त गोलकुण्डा में हैं, मगर वे जल्दी ही खुद मेरे साथ आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चलने वाले हैं ।"

विश्वनाथ मन में विचार कर रहा था कि इस काम से वह अपनी बहिन की कुछ तो खिदमत कर सकेगा। जब से औरंगज़ेब ने कहा था कि उसे उसके साथ रहना है, वह इसी दिशा में विचार कर रहा था। वह अपने माता-पिता को कैद से छुड़ाना चाहता था। बहिन को भी महल की चार-दीवारी से बाहर करना करना था। इसलिए वह चुप रहा।

इस पर औरंगज़ेब ने कहा, "मैं मीर जुमला को इस होने वाले जंग में घसीटना नहीं चाहता था और यह अपना हरम उसकी हिफाज़त में छोड़ना चाहता था, मगर अब तुम यहाँ आये हो तो मैं तुमको ही यह काम सौंपना चाहता हूँ।"

"मगर हुजूर ! मेरी वाकफियत बेगमात से हो जानी चाहिए और फिर हिदायत को भी मालूम हो जाना चाहिए कि उसे अपने मामा के पास रहना होगा।"

"यह सब जाने से पहले कर दूँगा और देखो, तुमको कसम उठानी पड़ेगी कि तुम मेरे वफादार एहलकार बन कर रहोगे और मेरी अमानत सही-सलामत मेरे हवाले करोगे।

"हुजूर ! मैं यह कसम खाने को तैयार हूँ कि अपनी जान की बाज़ी लगा कर भी आपकी बेगमों और हिदायत की हिफाज़त करूँगा। बेगमों को अपनी माँ के बराबर समझूँगा और बस। इससे ज्यादा हलफ मैं उठा नहीं सकता। बकाया के लिए मैंने राजा शिवाजी के लिए हलफ उठाया हुआ है।"

"यह तो कुछ न हुआ।"

"हुजूर ! यह बहुत कुछ है। यह एक सल्तनत की हिफाज़त के लिए जान लड़ाने से ज्यादा कुछ है।"

औरंगज़ेब विश्वनाथ की निडर आँखों को देख विचार करता रहा और फिर मुस्कराते हुए बोला, "हम तुमको कैद भी तो कर सकते हैं ?"

"जो तनहा आपकी सेना के अन्दर चला आता है, वह सब किस्म की मुसीबतों की उम्मीद लेकर ही आता है। मैं ऐसी बातों से डरता नहीं। मगर हुजूर ! मैं आपको उतना कुछ ही तो दे सकता हूँ जितना कुछ मेरे पास है। मैं आपकी खिदमत इसी हद तक कर सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ९ :

शाही महल में बेचैनी तो तब से ही दृष्टिगोचर हो रही थी, जब से दारा कन्धार की मुहिम से असफल होकर लौटा था। उसकी अनुपस्थिति में महल का वातावरण बहुत बदल गया था। महल के कर्मचारियों में घूस लेकर काम करने का स्वभाव पहले से ही था और यह स्वभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही चला जाता था। इस कारण महल की औरतों के सम्बन्ध बाहर के लोगों से अधिक सुगमता से होने लगे थे।

शाही खानदान की लड़कियों की शादी न करने का रिवाज अकबर ने तख्तोताज की रक्षा करने के लिए चलाया था, परन्तु यह शाहजहाँ के जमाने में राज्य की दुर्बलता का एक कारण बन गया। इसकी दुर्बलता में शाहजहाँ के राज्य के अन्तिम वर्षों में आर्थिक संकट सहायक हो गया। कन्धार के तीन असफल अभियान, औरंगज़ेब के दक्षिण कक्ष से आने वाली आय को शाही खज़ाने में न भेजना और मुल्क में सूखा, शाही खज़ाना के खाली हो जाने में कारण थे। इसके साथ शाही हरम का खर्चा बढ़ रहा था। ज्यों-ज्यों शाहजहाँ और दारा की मुखालिफत बढ़ती जाती थी, त्यों-त्यों ये लोग अपनी शान-शौकत को बढ़ाने और उससे प्रजा को चकाचौंध करने पर अधिक खर्च करने लगे थे।

धन की आवश्यकता पड़ी तो लगान कड़ाई से वसूल करने की आज्ञायें जारी होने लगीं। इसका सीधा परिणाम यह हुआ कि कर्मचारियों को अधिक और अधिक जुल्म करने की स्वीकृति देनी पड़ी और मुसलमानों में असन्तोष और फिर बग़ावत के लक्षण दिखाई देने लगे।

इस पर मीर जुमला ने जब दक्षिण में सोने और हीरों की खान की कहानियाँ बतायीं और एक बहुत बड़ा हीरा शहंशाह को भेंट में दिया तो उन सोने और हीरों की खान पर अधिकार प्राप्त करने के लिए एक बहुत बड़ी सेना दक्षिण को रवाना कर दी गयी। मीर जुमला और मुअज्जम खाँ को इस मुहिम का प्रबन्ध करने के लिये भेज दिया गया।

मीर जुमला के विषय में यह विख्यात था कि वह स्वभाव में औरंगज़ेब से बहुत कुछ मिलता-मिलता है। इस कारण उसको बहुत बड़ी फौज देकर उधर ही भेज देना, जिधर औरंगज़ेब गया हुआ था, बहुत भारी और महँगी भूल हुई। जानकार लोग निकट भविष्य में किसी भारी उथल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुथल की आशंका करने लगे थे।

दारा शहंशाह से अधिक भयभीत था। वह जानता था कि पूर्ण परिस्थिति उसके ही विपरीत बनती जाती है। इससे वह चिढ़ गया था और दरबारियों तथा सैनिक सरदारों से उसका व्यवहार बदलने लगा।

एक दिन दारा को राजा जयसिंह के विषय में सूचना मिली कि वह औरंगज़ेब से चिट्ठी-पत्री रखता है। अतः उसके विपरीत दारा के मन में वैर बढ़ने लगा और एक दिन अनायास ही दरबार में उसका अपमान हो गया। इससे राजा जयसिंह के माथे पर बल पड़ गया, परन्तु तुरन्त ही वह अपमान को भीतर-ही-भीतर पी गया और हँसने लगा।

महल में अब सरमद और पण्डितराज जगन्नाथ नहीं आ रहे थे। दारा की बैठक में अब ज्ञान-ध्यान और साहित्यिक बातें नहीं होती थीं बल्कि बाज़ारी नाचने-गाने वालियों का जमघट रहने लगा था।

महल में स्पष्ट रूप से दो गुट थे। एक की सरगना जहानआरा बेगम थी और दूसरे की रोशनआरा बेगम। दोनों गुट शहंशाह की बहुत इज्ज़त करते थे, मगर आपस में एक-दूसरे का विरोध करते थे।

बेगम महताब की स्थिति विलक्षण थी। वह साग-भाजी खाती थी, शराब-मांस इत्यादि छूती तक नहीं थी। उसको खर्च तो उतना ही मिलता था, जितना दारा की बेगमों को मिलता था, मगर वह अपने पर खर्च बहुत कम करती थी। पान-सुपारी पर उसका खर्चा एक पैसा भर का भी नहीं था। बचा हुआ धन वह महल के बाशिन्दों की मदद में देती रहती थी। प्रायः महल की औरतें बेहद फज़ूल खर्च कर देती थीं और महीना खत्म होने से पहले उनके हाथ खाली हो जाते थे।

रोशनआरा प्रायः उससे आर्थिक सहायता लेती रहती थी। वह स्वयं तो कुछ अधिक खर्चीला जीवन नहीं रखती थी, परन्तु उसको दारा के खिलाफ साज़िश करने के लिये धन चाहिए था। वह महताब बेगम से ऋण कहकर मांगा करती थी और महताब देती थी क्योंकि उसके पास देने के लिए होता था।

वह अभी भी दारा के कक्ष में रहती थी और सिवाय दारा और उसकी बेगमों के बाकी सब लोग उसे दारा की रखैल मानते थे।

महताब बेगम यत्नपूर्वक स्वयं को हरम की गुटबाजी से पृथक् रख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रही थी। इस दिशा में उसे शाहजहाँ की सबसे छोटी लड़की मेहरुन्निसा साथी मिली। वह भी दोनों बहिनों से अच्छे सम्बन्ध बनाए हुए थी।

महताब को कुछ यह समझ आया था कि वह अभी तक अपने प्रथम प्रेम की स्मृति में किसी अन्य व्यक्ति से सम्बन्ध बनाने में संकोच करती है। वह भी महताब की भाँति अपने खर्चे में से बहुत कुछ बचा लेती थी। यद्यपि यह इतना कुछ नहीं होता था, जितना महताब बचाती थी। औरतों का बहुत-सा धन शृंगार और महल की औरतों का अपने प्रियजनों को महल में मिलने के लिए लाने वाले नौकर-चाकरों को रिश्वत देने में व्यय होता था।

दारा के स्वभाव में तलखी आती देख महताब समझने लगी थी कि उसके मस्तिष्क पर किसी प्रकार का बहुत बड़ा बोझा है और वह उस बोझे को विवेक और वैराग्य से मिटाने का यत्न करती रहती थी, परन्तु सफल नहीं हो रही थी।

एक दिन दारा महताब के कमरे में आया और उससे उलाहने के रूप में बोला, "अम्मी, तुमने अपने लड़के को महल में बुलाया, उससे मिलीं और हमको बताया ही नहीं ?"

महताब इस प्रकार के उलाहने के लिए तैयार थी। वह जानती थी कि किसी बात को महल में छिपाकर रखना प्राय: असम्भव है। एक दिन यह रहस्य खुलेगा ही। इस कारण वह घबराई नहीं और बोली, "भैया ! मैंने उसकी जान बचाई नहीं। जिन्होंने उसे जल्लाद के हाथ से बचाया और उसकी परवरिश की, वे ही दो बार उसे यहाँ लाकर मुझे दिखा चुके हैं। पहली बार तो जल्लाद के पंजे मे छुड़ाने के तीसरे दिन और दूसरी बार अभी कुछ दिन पहले।

'वे ही अपनी इच्छा से और बिना मुझको बताये उसे यहाँ ले आए। उसको मेरे कमरे में बैठाया, खिलाया-पिलाया और फिर यहाँ से ले गए। मैं एक खामोश दर्शक थी।"

"और तुमने उसको कुछ नहीं दिया ?"

"कुछ नहीं दे सकी। केवल उसको गले लगा उसका मुख चूम सकी थी। यह भी शायद न कर पाती, परन्तु मैं अपने मन की प्रेरणा का विरोध नहीं कर सकी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और तुमने मुझे पीछे भी बताया नहीं ।"

"कुछ बनाने योग्य था नहीं, इस कारण बताया नहीं । भैया ! आप महल में वह शक्ति नहीं रखते जो दूसरे रखते हैं । कैसे वे जल्लाद से लड़के को छुड़ा सके, उसे किस प्रकार वे सात साल उपरान्त महल में लाए और मुझसे मिला सके, विचारणीय बात ही है । इस पर भी मैं इस लुकाव-छिपाव से प्रसन्न नहीं हूँ । इसलिए अपनी विवशता पर लज्जित हूँ ।"

"उनके पास रुपया बहुत है । वह हमारे हरामखोर बेईमान नौकर-चाकरों को रिश्वत देकर सब किस्म की बदकारी करते और कराते हैं ।"

"यही तो कह रही हूँ, आपने इनमें यह रिश्वत लेने की आदत डाली है और अब ये इसके आदी हो गये हैं ।"

"हमने कैसे डाली है ?"

"सबसे पहले मुल्क में गरीबी पैदा करने वाला राज्य है । आपने धनियों को ज्यादा धनवान बनाने के लिये गरीब प्रजा को लूटा है । उस लूटने में जुल्म भी कराए हैं । सब बड़े-बड़े एहलकारों की आमदन तो बढ़ी है, मगर छोटे दर्जा के लोग निर्धन हो रहे हैं । वे अपने गुजर के लिये अपने हाथ-पाँव मारते हैं और जब उससे भी कुछ नहीं बनता तो फिर बेईमानी, रिश्वतखोरी और जनाहकारी करने लगते हैं ।"

"भला इसमें हम क्या कर सकते थे ? दो साल से बरसात ठीक वक्त पर नहीं हो रही । अनाज के दाम बढ़ रहे हैं और लोग तकलीफ में हैं ।"

"बारिश नहीं हुई तो लगान की मुआफी दे दी जाती । तकावी बाँटी जाती और बिना दाम के गरीबों के लिए लंगर लगवा दिए जाते ।"

"और इसके लिए धन कहाँ से आता ?"

"हम सब के वज़ीफे कम कर दिये जाते । महल में शराब, गोश्त वगैरा बन्द कर दिए जाते और एहलकारों के भत्ते भी बन्द कर दिए जाते ।"

'तो बगावत हो जाती ।"

"बगावत तो अब भी होने जा रही है ।"

"दिखाई तो नहीं देता ।"

"परमात्मा करे यह न हो, परन्तु मैं जानती हूँ कि यह होगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महल में ही खून के दरिया बहेंगे।"

"अम्मी ! यह तुम्हारा दिमाग बेहद पूजा-पाठ से बिगड़ रहा है।"

"और मैं समझती हूँ कि जब से आपने सरमद साहब से झगड़ा किया है, तब से ही आप अपने गिर्द हालात को समझ नहीं रहे।"

"वह कुछ बद-दिमाग हो रहा था। वह कहने लगा कि मुझको राज-पाट छोड़कर साधु हो जाना चाहिए।"

"मगर उन्होंने जबरदस्ती आपको साधु बनाने का यत्न तो किया नहीं था। वे कर सकते भी नहीं थे। फिर उनसे नाराज होने की बात क्या थी ? जो आपको जबरदस्ती बेताज करने की कोशिश कर रहे हैं, उनका तो आप कुछ कर नहीं सकते और एक निरपराध निरापद व्यक्ति पर नाराज़ हो गए हैं।"

"कौन हमको बेताज़ कर रहा है ?"

"आपके मंझले भाई और मंझली बहन।"

"तो इनका मैं क्या करूँ ?"

"करने को तो बहुत कुछ है, मगर आप कर नहीं सकेंगे। आपने आज तक कुछ किया नहीं। चाहिए तो यह था कि रोशनआरा बहिन की शादी आज से दस साल पहिले कर दी जाती। वह महल में न रहती तो यहाँ उठने वाला तूफान उठता नहीं। मैंने एक बार पहले भी कहा था कि किसी बहाने से औरंगज़ेब साहब को ग्वालियर के किले में बन्द कर देते, मगर उनको तो आपने पकड़ा नहीं और निरपराध अपने भक्त एक ब्राह्मण को पकड़कर वहाँ कैद कर रखा है।"

"यह हो नहीं सकता था।" दारा ने हँसते हुए कहा, "अम्मी ! तुम डर रही हो और डर के मारे वह कुछ कह रही हो जो हो सकता नहीं।"

"करने लायक बात आप कर नहीं सकते।"

"वह तो मैं कर रहा हूँ और करूँगा।"

"क्या कर रहे हैं ?"

"मैं एक लाख सिपाहियों की फौज तैयार कर रहा हूँ जो मेरे सब दुश्मनों को एक ही हल्ले में कुचल कर रख देगी।"

"और उस फौज के सालारेजंग वे होंगे जो आपको वक्त पर धोखा देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दारा ने समझा कि यह औरत सियासियात को नहीं समझती । इस कारण बोला, "महल के बाहर की बात छोड़ो । तुम महल की बात करो । तुम मेरे साथ हो या मेरे खिलाफ ?"

"भैया ! मैं ये सब बातें आपके मुखालिफों से नहीं करती । आपसे करती हूँ तो इसलिए कि मैं आपसे स्नेह रखती हूँ । मेरे लिए दुनिया में आपके अलावा कोई सहारा भी तो नहीं ।"

"मैंने सुना है कि औरंगजेब अम्मी से शादी करने की कोशिश कर रहा है । इसीलिए वह अम्मी के लड़के को अपने पास रखे हुए है ।"

"वह यदि शादी करेगा तो मेरी लाश से करेगा । मैंने एक बार किसी को अपना पति माना है तो वह स्थान किसी दूसरे को नहीं मिल सकता ।"

"पर मरने से डर नहीं लगता अम्मी ?"

"तो भैया, तुमको डर लगता है ?"

"हाँ, मैं तो अभी मरना नहीं चाहता । अभी जवानी है । इसके सब लुत्फ मेरे बस में हैं और मैं इनको छोड़ना नहीं चाहता ।"

"मगर ये सब मज़े तो खत्म होने वाले हैं । जो आता है, वह जाता भी है । जो मिलता है वह छिनता भी है । जितनी खुशी किसी के आने पर होती है उससे अधिक दुःख उसके जाने पर होता है । इसलिए भैया, कुछ मुस्तकबिल सुख के लिए यत्न करो ।"

"वह कहाँ बिकता है ?"

"यही तो सरमद साहब बता रहे थे । वे ही बता सकते हैं कि वह कहाँ पर बिकता है ।"

"वह सब बकवास है । अम्मी ! मुझको उसकी बातों पर यकीन नहीं रहा ।"

"देखो भैया ! मैं आपको एक बात बताती हूँ ।"

"क्या ?"

महताब ने एक मोमबत्ती निकाली और उसको जला दिया । मोमबत्ती को सामने बत्तीदान में लगाकर उसने अपनी नंगी बाँह बत्ती की ज्वाला में रख दी और मुस्कराती हुई दारा की तरफ देखने लगी ।

दारा ने भयभीत हो कहा, "अम्मी-अम्मी ! यह क्या करती हो ?"

"डरो नहीं भैया ! मैं केवल यह दिखा रही हूँ कि जैसे इस शरीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के जलने से दु:ख नहीं होता, जैसे जवानी और जीवन के सुखों से लुत्फ नहीं आता।"

मांस चुड़-चुड़ कर जल रहा था और उसके जलने की बदबू आने लगी थी। दारा चिल्लाया, "अम्मी-अम्मी! ऐसा मत करो।"

दारा समझा था कि महताब बेगम उसके सामने ही जल मरना चाहती है। वह कमरे से बाहर को भागा। उसमे कमरे से निकलते देख महताब हँसने लगी।

वह चीख-पुकार करता हुआ जा रहा था कि बेगमें और नौकरानियाँ तथा खुसरे शहज़ादा की आवाज़ सुन उसकी तरफ भागते हुए आए। दारा उनको आता देख रुक गया। अनायास उसके मुख से निकल गया, "बचाओ बचाओ। अम्मी को बचाओ।"

बेगमें और नौकरानियाँ, खुसरे तथा उनके पीछे-पीछे दारा महताब के कमरे में आ पहुँचे।

महताब ने बाँह मोमबत्ती की ज्वाला से हटा ली थी और मुस्कराती हुई उस जले घाव की ओर देख रही थी जो जलने से बन गया था।

"अम्मी! यह क्या हुआ है?" एक बेगम ने पूछ लिया।

"कुछ नहीं बहिन! यह तो मैं भाईजान को दिखा रही थी कि जिस्म बेजान चीज़ है। इसको दु:ख-दर्द नहीं होता। दु:ख और सुख अनुभव करने वाली इससे दूसरी चीज़ है।"

महताब की खादिमा रफीकन नारियल का तेल ले आयी और घाव पर धार बाँध लगाने लगी। बेगमों को दारा बताने लगा कि अम्मी ने क्या किया है।

: १० :

इस घटना को घटे काफी समय व्यतीत हो चुका था और इसके विषय में महल-भर में चर्चा होती रहती थी। इससे महताब बेगम की इज्ज़त महल-भर में बहुत बढ़ गयी थी। जब वह कहीं किसी के कमरे में जाती तो वह उसकी इज्ज़त में खड़ा हो जाता था। महल के सब के सब बाशिन्दे उसके लिए रास्ता छोड़ देते थे। यदि किसी व्यक्ति पर महताब के इस कृत्य का प्रभाव नहीं हुआ था तो वह शहंशाह था। वह कहते थे कि इसमें अजीब बात क्या है? उसने अपने जिस्म को, खाना-पीना छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कर मुर्दा रखा है।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहंशाह की बात को रद्द तो कोई कर नहीं सकता था। सब चुपकर रहते थे, मगर दूसरे लोग इसको बड़ी बात समझते थे। इस प्रकार समय व्यतीत हो रहा था। एक दिन, यह सम्वत् १७१४ कार्तिक मास था, महताब बहुत प्रातः उठी तो उसकी नौकरानी रफीकन् उसके कमरे में चली आयी। अभी पौ फटने में दो प्रहर शेष थे और रफीकन इस समय नहीं आया करती थी। उसके आने का समय शौचादि से निवृत्त हो जाने और पूजा-पाठ से छुट्टी हो जाने के उपरान्त हुआ करता था।

इससे महताब को विस्मय हुआ। उसने प्रश्नभरी दृष्टि में उसकी तरफ देखा तो रफीकन ने धीरे से कान में कहा, "हुजूर! शहंशाह बीमार हो गए हैं और रात-भर कराहते रहे हैं।"

"क्या तकलीफ बतलाई है?"

"हकीम साहब उनके कमरे में बैठे हैं और महल तथा किले के चारों ओर सिपाही खड़े हैं। नज़दीक किसी को भी जाने नहीं दिया जाता।"

"रफीकन, जाओ खुदा को याद करो। वह ही सब के दुःख-दर्द दूर करने की तौफीक रखता है।"

"अम्मी! सब कानाफूसी कर रहे हैं कि मुल्क में इन्किलाब हो जायेगा।"

"वह क्या होता है?"

"राज्य बदलेगा।"

"यह तो शहंशाह के मरने पर होगा ही। इसमें हैरानी की बात क्या है?"

"इस वक्त रोशनआरा बेगम के घर में बहुत चहल-पहल है।"

"क्या हो रहा है वहां?"

"उसने तीन बार अपने किसी आदमी को बाहर भेजने की कोशिश की थी, मगर उसे किसी ने जाने नहीं दिया।"

"क्यों?"

"छोटी शहज़ादी साहिबा कह रही हैं कि शहंशाह या तो मर गए हैं या मरने ही वाले हैं। इसलिए उनके मरने की खबर को बाहर जाने से रोकने के लिए है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"इससे क्या होगा ?"

"सल्तनत बच जायेगी ।"

महताब हँस पड़ी और फिर हँसकर बोली, "तो सल्तनत किले के अन्दर ही है ?"

रफीकन इसका अर्थ नहीं समझी । महताब ने उसे समझाने के स्थान पर कह दिया, "रफीकन ! जाओ । खुदा की अबादत करो और उसकी हिफाजत माँगो । वह किले के भीतर और बाहर भी है ।"

दिल्ली के लालकिले के द्वार बन्द कर दिए गए थे और उसके बाहर बीस हजार राजपूत राजा जसवन्तसिंह के अधीन नियुक्त कर दिए गये थे । उनको आज्ञा दे दी गयी थी कि कोई बिना स्वीकृति से अन्दर न आने पाये न ही भीतर से कोई बाहर आने पाये ।

शहंशाह का पेशाब बन्द हो गया था और इससे यह समझा जा रहा था कि किसी भी समय उसका प्राणान्त हो जायेगा । दिल्ली शहर भर की दुकानें बन्द हो गयीं थीं और सब काम-काज ठप्प था । लोग भयभीत घरों में बैठे हुए थे । मुगल खानदान की परम्परा देखकर सब लोग यही समझते थे कि चारों भाई आपस में लड़ मरेंगे और उनकी लड़ाई में नगर की लूट मार भी हो सकती है । इस कारण सब धनी परिवारों ने अपनी सम्पत्ति तहखानों में बन्द कर तहखाने बन्द कर दिए थे ।

किले के भीतर हलचल बाहर से कम नहीं थी । शहंशाह की बीमारी का पहिला प्रभाव तो आतंक का छा जाना था । सब जानते थे कि दारा और औरंगज़ेब में किसी प्रकार का मेल-जोल नहीं है । दोनों में मजहब के नाम पर भारी द्वेष था और सब जानते थे कि कौन-कौन औरंगज़ेब के पक्ष में हैं और कौन-कौन दारा के पक्ष में । दोनों पक्ष एक-दूसरे से डर रहे थे । दोनों दल किले से बाहर की बात जानने के लिए व्याकुल थे । दोनों दल किले के भीतर की शान्ति बाहर मुल्क कीं शान्ति के साथ संबंधित मानते थे ।

रोशनआरा बेगम के कमरे में कानाफूसी चल रही थी । रोशनआरा चाहती थी कि और महताब बेगम उसके साथ मिल जाए और वह महल में अपने कक्ष को किले की भाँति सुरक्षित कर ले । वे सब खुसरे, जो रोशन-आरा से घूंस ले-लेकर उसकी वफादारी का दम भरते रहते थे, रोशनआरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के कक्ष की रक्षा के लिए तलवारें कमर से बाँधे खड़े थे।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेहरुन्निसा को रोशनआरा ने बुला भेजा। वह आयी तो उसे अपने सोने के कमरे में ले गयी और बोली, "देखो मेहर! इस वक्त इधर-उधर घूमना नहीं चाहिए।"

"क्यों?"

"तो तुम नहीं जानतीं? शहंशाह बीमार हो गये हैं?"

"यह तो जानती हूँ। मगर इस कारण मुझको घूमना नहीं चाहिए, यह क्यों?"

"दारा के साथी शहंशाह के साँस बन्द होते ही सिवाय अपनी बेगमों के और सब को कत्ल करवा देंगे।"

"क्यों? मैंने उनका क्या बिगाड़ा है?"

"तुम उसका साथ नहीं दे रहीं न?"

"मैं किसी के भी साथ नहीं हूँ। मुझे शहंशाह नहीं बनना। मैं कई बार दारा और उसकी बेगमों को कह चुकी हूँ कि मैं शहंशाह बनना नहीं चाहती। एक भाई तख्त पर बैठे या दूसरा भाई, इससे एक बहिन को क्या?"

"एक तुम्हारा खान-दाना बन्द कर सकता है।"

"तो भूखी मर जाऊँगी न?"

"तो यह कम बात है?"

"पर मैं मर कर तो खुश हूँगी।"

"अरे! तुमको महताब वाली बीमारी लग गयी है?"

"यह बीमारी नहीं बहिन! यह सेहत की निशानी है।"

"इस पर भी यह अच्छा रहेगा कि तुम यहाँ रहो। यहाँ बीस खुसरे दिन-रात पहरा देंगे।"

मेहरुन्निसा मुस्कराई और बोली, "रोशन बहिन! कुछ नहीं होगा। यह सब कुछ फजूल है। इन खुसरों को छुट्टी दे दो और चलो शहंशाह के दीदार हासिल करें।"

"मैं इसमें कोई फायदा सहीं समझती।"

"मैं एक बार वहाँ हो आयी हूँ। जहानआरा बहिन ही सिर्फ भीतर आती-जाती हैं। और उसने बताया है कि हकीम साहब की दवाई से कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
फायदा हो रहा है। इन्शा-अल्ला शाम तक शहंशाह से हम मिल सकेंगी।"

मेहरुन्निसा तो वहाँ से चली आयी। वह महताब के कमरे में पहुँची तो वह अपना खाना, उबली सब्जियाँ और रोटी लेकर खाने बैठी थी। महताब ने उसे देख कह दिया, "आओ मेहर बहिन! खाना खाओगी?"

"आज हमारा खाना तो बना नहीं।"

"क्यों?"

"सब नौकर-नौकरानियाँ काम छोड़ आपस में बातें करने में लगी हैं।"

"तो आओ। यहाँ बैठ जाओ। यहाँ तो तैयार है।"

"तो अम्मी की रफीकन काम कर रही है?"

"नहीं। मैंने उसको दो-तीन पहर की छुट्टी दे दी है और खाना स्वयं बना लिया है।"

"तो अम्मी खाना बना लेती हैं?"

"इसमें हैरानी की क्या बात है? परमात्मा ने रफीकन की ही तरह के हाथ मुझको भी दिए हैं। हाँ, बुद्धि उससे कुछ अधिक दी है। उसकी बुद्धि भयभीत थी और इस भय का निवारण करने के लिए वह अपनी साथियों से गप्पें हाँकना ठीक समझती थी। बस मैंने कह दिया कि वह दो-तीन पहर और चाहे तो और भी ज्यादा देर के लिए छुट्टी कर सकती है।"

"और अगर वह बिल्कुल काम से भाग गयी तो?"

"कहाँ भाग जायेगी? महल को तो वह छोड़ सकती नहीं। बाहर सख्त पहरा बैठा है।"

मेहरुन्निसा महताब के पास बैठ गयी तो एक तश्तरी में महताब ने उसके लिए खाना परोस दिया। खाने में उबली सब्जियाँ, रोटी और नमक-मिर्च ही थी। मेहरुन्निसा से खाना बनता नहीं था, मगर उसकी नौकरानी तो रोशनारा बेगम के निवास स्थान पर चली गयी थी और वहाँ सब नौकरों के लिए इकट्ठा खाना बन रहा था। वहाँ पुलाव और शोरबा बन रहा था। कुछ खुसरे ही सब बना रहे थे और रोशनआरा इस भय में कि दारा के सिपाही उसको पकड़ने आयेंगे, यह सब प्रबन्ध कर रही थी।

दोपहर का खाना खाया गया। दूसरी ओर शहंशाह की बीमारी में कुछ कमी नहीं हुई। न ही महल में किसी किस्म का खून-खराबा हुआ। तीसरे प्रहर नौकर-चाकर बातें करते-करते उकताने लगे थे। वैसे तो रोशन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आरा ने वहाँ एकत्रित हुए सब के लिए खाने का प्रबन्ध किया हुआ था, मगर कुछ समझदार खुसरे और नौकरानियाँ वहाँ से खिसकने लगे थे।

रफीकन भी सुबह की वहाँ पर ही आयी हुई थी। वहाँ से सब से पहले खिसकने वालों में वह एक थी। महताब बेगम की अर्दल में खुसरे नूरदीन ने रफीकन से पूछ लिया, "रफीकन चलोगी नहीं मालकिन के पास ? उनको खाना तो खिलाओ ही।"

"वे खा चुकी होंगी।"

"परन्तु तुम यहाँ क्या कर रही हो ?"

"अब तो कुछ भी नहीं कर रही।"

"तो पहले कुछ कर रही थीं ?"

इस प्रश्न पर रफीकन सोच में पड़ गई। वह दिन-भर के काम पर विचार करने लगी थी। वास्तव में वे सिवाय बातें करने और सुनने के कुछ भी तो नहीं कर रही थीं। इस विचार के आने पर वह मुस्कराई और बोली, "नहीं नूर ! कर तो कुछ भी नहीं रही थी।"

"तो चलो। मालकिन की खबर लेनी चाहिए।"

दोनों चल पड़े। रोशनआरा का महल महताब के महल के कुछ अन्तर पर था। मार्ग में नूर ने कहा, "असल में आसद खाँ समझा था क़ि शहंशाह फौत हो चुके हैं और दारा के आदमी उन सब को जो छोटी शहज़ादी की हिमायत कर रहे थे, कत्ल करवाने के लिए सिपाही बुला लेंगे।"

"मैंने अम्मी बेगम से यह बात कही तो वे कहने लगीं कि हम सब मूर्ख हैं। मैंने कहा था कि सब कह रहे हैं। वे बोलीं, तो जाओ। तुम उनकी बात सुन लो। तुमको तब तक की छुट्टी है जब तक तुम मूर्खों की बातें सुन पेट नहीं भर लेतीं।"

"तो अब पेट भर गया है ?"

"पेट तो हराम का पुलाव और शोरबा खाकर भर गया है। बातें तो बेवकूफों की-सी ही हो रही थीं।"

नूर ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि हमारी हिफाज़त अम्मी के साथ रह कर आसानी से हो सकेगी।"

"तो तुम वहाँ किस लिए गये थे ?"

"पर मैं भी तो तुम्हारी तरह का इन्सान हूँ। हर इन्सान में खौफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना रहता है। मैं भी डर गया था।"

रफीकन हँस पड़ी। इस समय वे महताब के महल में पहुंच गये। महताब वहाँ नहीं थी। वे वहीं बैठकघर में खड़े-खड़े मालकिन की प्रतीक्षा करने लगे। नूर ने कह दिया, "बेगम साहिबा को तो मरने का डर नहीं। वे तो आग में भी हँसती-हँसती कूद सकती हैं। मगर हम तो इन्सान हैं। हमको तो दुःख दर्द होता है।"

रफीकन मुस्कराती हुई पूछने लगी, "हम इन्सान हैं तो बेगम साहिबा क्या हैं?"

"वे फरिश्ता हैं। वे एक देवी हैं।"

इस वक्त महताब और मेहरुन्निसा शाही महल की तरफ से आती दिखाई दीं। उन्हें रफीकन ने पहले देखा और नूर को सचेत कर दिया। नूर भी उसी तरफ देखने लगा, जिधर से दोनों आ रही थीं।

महताब आयी तो रफीकन ने सलाम कर दी।

"तो आ गयी हो?"

"हुजूर! मुआफी चाहती हूँ।"

"क्यों? क्या कसूर किया है तुमने?"

"आपका खाना नहीं बना सकी।"

"मगर मैंने खुद तुमको छुट्टी दी थी। हाँ, नूर खुद ही भाग गया था, मगर यह तो मुआफी माँगता नहीं।"

"पर मैं तो अपनी गुस्ताखी के लिए कड़ी से कड़ी सजा चाहता हूँ।"

"ओह! तो तुमने गुस्ताखी की है? अच्छी बात है! तुमको सज़ा बताई जाएगी। अभी तुम जाओ और पता करो कि शहज़ादा-ए-अज़ीम अपनी बैठक में मिल सकते हैं या नहीं?"

इस पर रफीकन ने पूछ लिया, "हुजूर! कैसी तबीयत है शहंशाह की?"

"उनके कमरे में हकीम लोग बैठे हैं और हम भीतर नहीं जा सकीं। जहानआरा बहिन ने बताया है कि हालत सुबह से सुधर रही है।"

"वहाँ तो यह मशहूर हो रहा है कि शहंशाह फौत हो चुके हैं। शहज़ादा-ए-अज़ीम साहब और शहज़ादी साहिबा यह बात छिपा रही हैं और जब तक उनके इन्तज़ाम मुकम्मल नहीं हो जाते, यह खबर छिपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर रखी जाएगी।"

"क्या इन्तजाम मुकम्मल करने हैं ?"

"दुश्मनों का कत्लेआम करने का।"

"ओह! रफीकन, वहाँ तो मातम छा रहा होगा ?"

"नहीं सरकार! खाने को तो पुलाव और शोरबा मिला है और शहज़ादी अपने सोने के कमरे में घुसी हुई मिलने वालों से अलहदा-अलहदा मिल रही हैं।"

"देखो रफीकन! मैं बड़े भाईजान से मिलने जा रही हूँ और उनकी तरफ से कम-से-कम महल में ऐलान करवा देना चाहती हूँ कि किसी को डरने में वजह नहीं है।"

इस समय नूर अहमद आ गया और बोला, "शहज़ादा साहब इन्तज़ार कर रहे हैं।"

महताब और मेहरुन्निसा दोनों चल पड़ीं।

: ११ :

दारा ने किसी किस्म का ऐलान नहीं किया। न तो महल के रहने वालों में न ही मुल्क के बाशिन्दों के लिए। इसका लाभ औरंगज़ेब ने उठाया। उसने अपने दोनों भाइयों को लिख दिया, "मुझे मोहतबिर जरिए से पता चला है कि शहंशाह फौत हो चुके हैं और दारा ने उनकी मौत छिपा रखी है। इसलिए इस धोखा-धड़ी का बदला लेना चाहिए। हमको अपनी पूरी ताकत से दिल्ली पहुँचना चाहिए।"

इसका उत्तर शुजा ने दिया, "दारा इतनी बड़ी हुकूमत का इन्तज़ाम करने के काबिल नहीं और दारा के बाद तख्त और ताज पर मेरा हक है। इसलिए मैं आगरा जा रहा हूँ और वहाँ अपनी ताज़पोशी की रस्म पूरी करूँगा। वहाँ आपको भी आना चाहिए। मैं आपके लिए एक बहुत ही आलातर रुत्बा सोचे हुए हूँ।"

औरंगज़ेब का चिट्ठी लिखने का प्रयोजन यह था कि शुजा आगरा की तरफ पहिले चल पड़े और जब दारा की फौज उसको रोकने में लगी हो, वह दूसरी तरफ से आगरा में जा धमके। वह मुराद से डरता था। कारण यह कि मुराद उसकी माँ की तरफ से सगा भाई था और वह उससे युद्ध का अधिक अनुभव रखता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुराद की इच्छा राज्य सम्भालने की नहीं थी। वह तो मुल्क में अमनो-अमान चाहता था, परन्तु औरंगज़ेब ने उसे लिखा, "मैं तो फकीर तबीयत का आदमी हूँ। तख्तो-ताज में मेरी बिल्कुल रुचि नहीं; परन्तु मैं न तो काफिर दारा के हाथ में सल्तनत को महफूज समझता हूँ न ही शिया मत वाले शुजा के हाथ में। तुम मेरी माँ-जाये भाई भी हो। इसलिए मैं तुमको दिल्ली के तख्त पर बैठा देखना चाहता हूँ। इसके लिए तुम एक जबरदस्त फौज लेकर आगरा की तरफ चले आओ।" इस पर मुराद के मन में लोभ आ गया और औरंगज़ेब की सहायता से वह अपनी कामयाबी की पूरी उम्मीद लेकर गुजरात से चल पड़ा। नर्मदा पर औरंगज़ेब ने पहरा बैठा दिया था, जिससे दक्षिण की ओर से उसकी तैयारी का समाचार आगरा न पहुँच सके और अपने लिए वह दिल्ली और आगरा के समाचार मँगवा रहा था।

जब यह बात पक्की हो गयी कि राजा जयसिंह और दारा का लड़का सुलेमान शिकोह एक बहुत बड़ी सेना लेकर शुजा को रोकने चल पड़ा है तो औरंगज़ेब ने नर्मदा पार की और धरमत पर मुराद की सेना के साथ जा मिला।

दिल्ली में एक सप्ताह में ही शहंशाह का रोग तो निवारण हो गया, परन्तु वह इतना दुर्बल हो गया था कि वह दरबा नहीं कर सकता था। इस कारण उसने आगरा जाने का विचार बना लिया। उसका खयाल था कि वहाँ वह शीघ्र ही स्वास्थ्य-लाभ कर लेगा। दारा ने सिवाय जहानआरा बेगम के, किसी भी औरत को साथ न ले जाने का फैसला कर लिया। रोशनआरा, महताब, मेहरुन्निसा यहाँ तक कि दारा की अपनी बेगमें भी दिल्ली में रह गयीं। इस प्रबन्ध पर रोशनआरा बहुत खुश हुई। वह समझ रही थी कि शहंशाह के आगरा चले जाने पर वहाँ से पहरा उठ जाएगा और वह औरंगज़ेब से लिखा-पढ़ी स्वतन्त्रतापूर्वक कर सकेगी। ऐसा हुआ भी।

दारा का विचार था कि वह शीघ्र ही दिल्ली लौट आएगा, परन्तु आगरा में वह पहुँचा तो शुजा के साथ जंग की तैयारी करनी पड़ी। तीस हजार सेना जयसिंह और सुलेमान शिकोह के अधीन भेजनी पड़ी।

यह सेना अभी रवाना हुए तीन-चार दिन ही हुए थे कि औरंगज़ेब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सेना-सहित आगरा आने की सूचना मिली। उसको रोकने के लिए जसवन्तसिंह और कासिम खाँ को एक बड़ी सेना देकर भेजने का प्रबन्ध करना पड़ा। धरमत में युद्ध हुआ। यहाँ कासिमखाँ ने दगा दे किया। वह दिल खोल कर नहीं लड़ा। उसके अधीन बहुत से सालार अपना पक्ष छोड़कर औरंगजेब की ओर जा मिले। राजपूत तो बहुत बहादुरी से लड़े, परन्तु मुसलमान आधे दिल से लड़ते रहे तथा दारा के पक्ष को दगा भी देते रहे। परिणाम यह हुआ कि शाही सेना की पराजय हुई और जसवन्तसिंह घायल हो लौट गया।

इस पराजय की सूचना आगरा पहुँची तो दारा उससे भी बड़ी सेना ले औरंगजेब को रोकने के लिए चल पड़ा।

दारा के जासूस इतने दुर्बल थे कि नर्मदा पार करने तक दारा को औरंगजेब की तैयारी का पता न चला और धरमत के युद्ध में ही पता चला कि मुराद और औरंगजेब मिल गए हैं।

धरमत के युद्ध के उपरान्त रात को खेमे में बैठे हुए औरंगज़ेब ने मुराद को मुबारकबाद देते हुए कह दिया "मुराद! तुम समझ लो कि खुदा के फज़्ल से तुम हिन्दुस्तान के शहंशाह हो गए हो।"

"भाईजान! यह आपकी मेहनत का ही नतीजा है।"

औरंगज़ेब जानता था कि मुराद की सहायता के बिना वह राजपूतों से युद्ध जीत नहीं नहीं सकता था। इस कारण उसने मुराद की भूरि-भूरि प्रशंसा करनी आरम्भ कर दी। इसी स्थान पर फैसला हो गया कि अब आगरा की ओर चलना चाहिए। मुराद अभी तक भी यह समझता था कि शहंशाह फौत हो चुके हैं। औरंगज़ेब ने आगरा व दिल्ली से आने वाली चिट्ठियों पर रोक लगा रखी थी। वह स्वयं मुराद को कह रहा था कि वह यकीनन जानता है कि शहंशाह का इन्तकाल हो चुका है।

दोनों भाई बढ़ते-बढ़ते आगरा से सात मील पूर्व सामूगढ़ पर दारा की सेना के सामने पहुँच गये। यहाँ जबरदस्त लड़ाई हुई और यहाँ भी मुसलमानों ने दारा को दगा दिया। युद्ध होने से पूर्व ही बहुत से सिपाही और सालार फौज छोड़कर औरंगज़ेब की सेना में आ मिले। राजपूत खूब लड़े, परन्तु खलीलुल्ला खाँ के अधीन मुसलमानों ने फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दगा दिया ।

तोपखाने के अधिकारियों ने भी धोखा दिया। गलत दिशा में तोपें चलाते रहे और जब तोपों का दारु समाप्त हो गया तो औरंगजेब को संकेत कर दिया। संकेत मिलने पर औरंगजेब ने आक्रमण किया। इस पर भी फतह दारा की होती, अगर खलीलुल्लाह धोखा न देता।

युद्ध में हार कर दारा बहुत ही बुरी हालत में आधी रात को आगरा पहुँचा। लगभग सारी की सारी मुसलमानी सेना औरंगजेब के साथ जा मिली थी।

यह समझ कि आगरा में काफी सेना नहीं है, दारा दिल्ली चला गया। वहाँ भी पर्याप्त सैनिक तैयार न देख वह लाहौर की तरफ भागने की सोचने लगा।

लाहौर भागते समय उसकी बड़ी बेगम नूरमहल ने उसके साथ जाना पसन्द किया। दूसरी बेगम थी उदयपुरी। यह जिऔंजिया की रहने वाली थी और शराब पीने की शौकीन थी। महताब वास्तव में बेगम नहीं थी, मगर दूसरों की दृष्टि में बेगम मानी जाती थी। नूरमहल के साथ चलने की तैयारी पर दारा ने दूसरों से भी पूछा कि उनका क्या इरादा है।

दारा बहुत ही बुरी हालत में महताब की बैठक में ही अपनी बेगमों से बात कर रहा था। उसने महताब को सम्बोधन कर कहा, "अम्मी! नूर महल मेरे साथ मेरे भाग्य में साझीदारी के लिए चल रही है।"

महताब जो इसी प्रकार की अवस्था की आशा कर रही थी, हृदय से दुःखी थी। उसको दुःख तो यह था कि शहंशाह और उसके बड़े शहज़ादा दारा को पग-पग पर बताया जा रहा था कि कठिनाई का समय आ रहा है और पुरुषार्थ से उसको टाल सकते हैं, परन्तु इन दोनों ने इन सचेतकों की न केवल अवहेलना की वरन् सचेत करने वालों को दण्डित भी किया। साथ ही जिनको वे अपना शत्रु जानते थे उनको अन्तिम काल तक शत्रुता करने का अवसर दिया। महताब ने गम्भीर भाव धारण करते हुए कहा, "भाई जान! यह तो होना ही चाहिए। एक कवि ने कितना सुन्दर कहा है—

फल खाये जिस वृक्ष के गंदे कीने पात।
यही हमारा धर्म है जलें उसी के साथ।।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं नूरमहल के अज़मात को महसूस करता हूँ और अपनी आखिरी साँस तक उसकी हिफाज़त करूँगा, पर मैं तुमसे पूछ रहा हूँ। तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"मैं तो आपकी पत्नी हूँ नहीं। मेरा फर्ज मुझको किसी अन्य स्थान पर बुला रहा है।"

"तो तुम आगरा जाना चाहती हो ?"

"वहाँ क्या है ?"

"वहाँ शहंशाह हैं और शायद……।"

दारा कहने लगा था औरंगज़ेब, मगर कहता-कहता रुक गया। उसके मस्तिष्क को पिछले आठ वर्ष की उसके पवित्र जीवन की स्मृति ने आ दबाया। उसने बात बदल दी और कहा, "आपके लड़के का संरक्षक।"

महताब ने बहुत उदासी के साथ मुस्कराते हुए कहा, "भाईजान ! आप अभी तक मुझे समझे ही नहीं। जैसे आप सरमद साहब को नहीं समझे, मेरे पिताजी को नहीं समझे, वैसे मुझको भी नहीं समझे।

"मेरा शहंशाह से सम्बन्ध टूटे आठ वर्ष से ऊपर हो चुके हैं। उनकी स्मृति सर्वथा मन से मिट चुकी है। उनके व्यवहार में मेरा कोई दोष नहीं। मेरा अब उनसे किसी प्रकार का वास्ता नहीं। मेरी रुचि अब दूसरी ओर है।"

दारा के मन में फिर आया कि पूछ ले किस ओर है। उसके मन में अभी भी विचार था कि महताब अपने लड़के के लिए औरंगजेब की बात मान जाने को तैयार हो सकती है।

इस विचार से उसे दुःख तो हो रहा था, परन्तु अपनी खस्ता हालत और सदा उसकी राय की अवहेलना की बात स्मरण कर उसने कह दिया, "अम्मी ! मुझे बताओ मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ।"

"आप अपने लिए खुदावन्दताला से राहत माँगिये। मैं भी जब तक जिऊँगी, आपके लिए दुआ करती रहूँगी।"

अब तो दारा से नहीं रहा गया और उसके मुख से निकल ही गया, "अगर चाहो तो औरंगज़ेब के पास भेजने का इन्तज़ाम कर दूँ ?"

इस पर महताब की हँसी निकल गयी। उसने कहा, "भाईजान ! आपके खयालात मुसीबत के कारण बिगड़ गये हैं। मैं आपको दोष नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देती। मुसीबत के वक्त ऐसा होता ही है। रात का दिन दिखाई देने लगता है। मुझे आप पर दया आती है।

"सुनिए, अगर हिम्मत है तो एक काम कीजिये। महल में एक हजार के करीब औरतें हैं। उन सब को इजाज़त दीजिए कि वे किला छोड़ कर जहाँ चाहें जायें, जहाँ चाहें अपनी शादी कर लें।"

"अम्मी! यह हरम मेरा नहीं है। यह शहंशाह का हरम है। मेरा इस पर कोई इख्तियार नहीं।"

"आपका इख्तियार तो कभी भी किसी शै पर नहीं रहा। इस पर भी जहा आपको हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए था, वहाँ आपने किया और जहाँ चाहिए था वहाँ नहीं किया···।"

बात नूरमहल ने बन्द कर दी। उसने कहा, "अम्मी! छोड़ो इस बात को। यह नसीहत का वक्त नहीं है। बताओ, हमारे साथ चलोगी या नहीं?"

"नहीं। मेरी राह दूसरी है।"

"और तुम?" दारा ने उदयपुरी से पूछ लिया।

"मैं अम्मी के ख्याल की हूँ। आपने मेरे साथ जबरदस्ती शादी की थी और अब वह किसी दूसरे जबरदस्त से तोड़ी जा रही है। मैं तो किस्मत के झोंकों में उड़ते हुए तिनके की तरह हूँ।"

बात समाप्त हो गयी और उसी रात दारा जितना भी धन दिल्ली में मिल सका, लेकर पचास सिपाहियों के साथ लाहौर को चल पड़ा।

: १२ :

शाहजहाँ के बीमार होने के उपरान्त जब से वह दिल्ली से आगरा गया था, दिल्ली के किले और महल पर से विशेष पहरा उठ गया था। वही पुराने सिपाही और एहलकार पुनः अपना कार्य नियमपूर्वक करने लगे थे। हाँ, अब एक बात हो गयी थी कि पहले की भाँति महल में रहने वाली औरतों के पास अपने भोग-विलास के लिए धन नहीं था। इस कारण के वे महल के बाहर लोगों के साथ सम्पर्क बनाने के लिए सिपाहियों को उतनी रिश्वत नहीं दे सकती थीं, जितनी पहले दिया करती थीं।

इस पर भी खादिमा आती थी और औरतों के छोटे-छोटे काम करती रहती थी। खादिमा का सम्पर्क महताब से भी था। वह उसे जंग की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूचनाएँ लाकर दिया करती था।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महताब को दिन-दिन के हालात मिलते रहते थे। उसे धरमत और सामूगढ़ की लड़ाइयों का वृत्तान्त मिला था। उसे यह भी पता चला था कि किस-किस ने इन युद्धों में वफादारी दिखाई है और किस-किस ने युद्ध में दारा से दगा किया है।

खादिमा की सूचना यह थी कि राजा जयसिंह का दारा ने भरी सभा में अपमान किया था। उसे भाँड़ों और भरुओं का सरदार कहा था। परन्तु जब शहंशाह ने उसको शुजा की सेना से लड़ने के लिए भेजा तो वह अपने राजपूतों को लेकर गया और बहुत बहादुरी से लड़ा। शुजा की सेना भाग खड़ी हुई।

दारा के लड़के सुलेमान की भूल के कारण राजा साहब औरंगज़ेब की सेना से मोर्चा लेने के लिए समय पर वापस नहीं आ सके। इसमें भी कारण औरंगज़ेब के जासूस सालार थे। वे सुलेमान को शुजा का पीछा करने पर भड़का रहे थे।

खादिमा ने यह भी बताया, "धरमत के युद्ध में राजा जसवन्तसिंह तो खूब लड़े और जब घायल हो गए तो उनके सिपाही उनको बलपूर्वक उठा कर युद्ध भूमि से ले गए। इसके विपरीत कासिम खाँ ने दारा से दगा किया।"

फिर एक दिन खादिमा ने सामूगढ़ के जंग की घटना सुनाई। उसने बताया, "बावजूद तोपखाने के दगा देने के और बहुत से मुसलमान सिपाहियों के जंग के पहले औरंगज़ेब से जा मिलने के, राजपूतों ने वे हाथ दिखाए कि औरंगज़ेब को अपनी हार दिखाई देने लगी थी। उस वक्त दारा को खलीलुल्लाह खाँ ने राय दे दी कि वे हाथी से उतरकर घोड़े पर सवार हो आक्रमण करे तो उनकी शोहरत होगी। जंग तो फतह हो ही चुकी है।

"दारा खलीलुल्लाह खाँ को जंग के इल्म का ज्ञानकार मानते थे। वे हाथी से उतर घोड़े पर सवार हो लड़ाई करने लगे। दूसरी तरफ यही सालारे-जंग फौज को कहने लगा, 'दारा मारा गया मालूम होता है। उसका हाथी खाली है।'

"बस फिर क्या था! दारा के सिपाही हताश हो भाग खड़े हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीती हुई बाजी हारी गयी।"

"परन्तु खादिमा ! यह सब सूचना ठीक है क्या ?"

"हुजूर ! जंग से भागे हुए सिपाही ही ये बातें बताते हैं।"

"मगर तुम सदा मुसलमानों की निन्दा की खबरें ही सुनाती हो। यह क्यों ?"

"मैं निन्दा की बात नहीं कर रही। सरकार ! इन खबरों को सुनाने वाले तो मुसलमान सिपाही हैं और वे दारा से दगा करना एक फख्र की बात समझते हैं। वे दारा को काफिर और औरंगज़ेब को मोमिन मानते हैं और काफिर के साथ दगा करना ये मुसलमान सवाब मानते हैं।"

हर बार जब खादिमा कोई नई खबर लाती थी, महताब उसे पाँच से दस रुपये तक इनाम देती थी। वैसे खादिमा का काम बहुत पतला पड़ गया था। बेगमों के पास रुपया कम हो गया था और वे कुछ अधिक दे नहीं सकती थीं।

महताब को यह पहले ही पता चल गया था कि दारा आगरा से भाग आया है और दिल्ली पहुंचने वाला है। इस कारण वह अपने व्यवहार पर विचार कर चुकी थी। दारा से विचारित बात ही हुई थी। वह चाहती थी कि महल से छुट्टी मिल जाए और हरिद्वार जाकर अपना शेष जीवन व्यतीत करे। यह वह जानती थी कि दारा और शहंशाह अपने पूर्वग्रहों के अधीन हरम की किसी भी औरत को बाहर जाने की स्वीकृति नहीं देंगे न ही वे पंडित त्रिभुवन कीर्ति को छुट्टी दे सकेंगे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वे इस्लामी उन्माद का विरोध इस्लाम से ही करना चाहते थे।

वह अपनी भावी योजना में दारा का साथ बाधक समझती थी। इस कारण उसने दारा के साथ जाने से इनकार कर दिया था।

दारा के चले जाने के बाद बहुत ही सुबह खादिमा आयी। उसने कुछ इनाम हासिल करने के लिए महताब बेगम से भेंट की तो महताब ने कहा, "खादिमा ! दिल्ली के बाहर की भी कोई पक्की खबर ला सकती हो ?"

"हुजूर, बताइये। आप क्या चाहती हैं ?"

"मैं यह पता करना चाहती हूँ कि एक हिदायतुल्ला नाम का लड़का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जिसकी उम्र इस वक्त नौ साल के करीब है, वह शहजादा औरंगज़ेब के साथ था, कहाँ है ?''

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खादिमा इस सवाल पर गंभीर हो गयी और फिर पूछने लगी, "कितना कुछ खर्च कर सकेंगी, इस खबर को पाने के लिए ?''

"अगर खबर ठीक हुई और उसका सबूत साथ हुआ तो मुनासिब खर्च के अलावा एक सौ रुपये इनाम का दूँगी ।''

"और इस पर मुनासिब खर्चा क्या समझती हैं आप ?''

''जासूस के आने-जाने का सफर-खर्च, खाने-पीने का खर्च और सिपाहियों इत्यादि को देने के लिए रिश्वत। यह सब एक हजार रुपये तक खर्च कर सकती हूँ ।''

"हुजूर ! इससे बहुत कम खर्चे पर पता चल सकता है, अगर आप रोशनआरा बहन से एक चिट्ठी ले दें ।''

"किसके नाम ?''

''औरंगज़ेब की बड़ी बेगम के नाम ।''

''चिट्ठी में क्या लिखा हो ?''

"यही कि वे बहुत फिक्रमन्द हैं और बेगम सहिबा की सेहत और खैरियत का हाल जानना चाहती हैं ।''

''मगर मैं बिना उसको बताए बगैर यह बात जानना चाहती हूँ ।''

''तो हुजूर, ऐसा करें । मुझको पाँच सौ रुपये पेशगी दे दें और बकाया मेरे आने पर दें । साथ ही इनाम तो काम करने पर मागूँगी ।''

खादिमा को समझ आ रहा था कि हो न हो, यह हिदायत महताब बेगम का लड़का है । बेगम को हरम में आये दस साल से ऊपर होने वाले हैं । इस कयास को मन में लेकर लड़के का पता करने से वह भारी इनाम की आशा कर लड़के का हुलिया माँगने लगी ।

महताब ने जहाँ तक स्मरण था, बताया । एक बात उसने कही, "ज़रा मेरे मुख पर गौर से देखो और उससे उसकी सूरत-शक्ल को मिलाओगी तो पहचान जाओगी ।''

"तो यह बात है ? हुजूर, मैं यह काम जी-जान से करूँगी और इनाम तो जो चाहे दे दीजियेगा । मैं तो आपकी खिदमत के ख्याल से ही यह काम कर दूंगी ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खादिमा गया तो तब ही लौटा जब औरंगज़ेब मुराद को गिरफ्तार ग्वालियर के किले में भेज दिल्ली आया। औरंगज़ेब को आगरा का इन्तज़ाम पूरा करते हुए एक महीने से ऊपर लगा था। फिर आगरा से चलते हुए मुराद को मथुरा में कैद कर ग्वालियर में कैद करने के लिए उसने भेजा तो उसने वहाँ से त्रिभुवन कीर्ति और उसकी पत्नी को हाजिर होने के लिए बुला लिया।

औरंगज़ेब ने दिल्ली में पहुँच पहली बात यह की कि यहाँ की एक हज़ार के करीब हरम की औरतों को किले से निकल जाने का हुक्म दे दिया। इस पर उन औरतों को, जो शाही वज़ीफों पर अपना जीवन चला रही थीं, खुली दुनिया में जाकर खाने-पीने की कठिनाई आँखें फाड़-फाड़ कर सामना करती दिखाई दी। उनमें से बहुत-सी तो भयभीत हो निकल गईं और जो कुछ बड़ी उम्र की थीं, वे जाने से इनकार करने लगीं। इसपर उनको धक्के दे-देकर बाहर निकाला गया।

इस आज्ञा से महताब को बहुत खुशी हुई थी, मगर वह चाहती थी कि इन औरतों के वज़ीफे लगे रहें, जिससे नगर में बदकारी की ज़िन्दगी बसर करने की जगह ईमानदारी से जीवन-निर्वाह कर सकें। उसने इस बज़ीफे के विषय में औरंगज़ेब को अपनी अर्जी रोशनआरा बेगम की मार्फत भेजी।

इस अर्जी के मिलने पर औरंगज़ेब खुद भागा-भागा आया। उसको यह समझ आया कि उसके हुक्म को गलत समझ कहीं महताब को भी किले से बाहर जाने की स्वीकृति न मिल जाए।

वह महताब के बैठकघर में पहुँचा तो महताब बेगम बाहर निकल आयी और बोली, "भाईजान! मुबारिक हो और सलाम मंजूर हो।"

"तो बेगम! आप यह समझती हैं कि हमने मुबारिकबादी के लायक काम किया है ?"

"आदमी के कामों की कीमत तो खुदावन्द ताला ही लगा सकता है। मैं कौन हूँ इसमें रायज़नी करने वाली। मैं तो आपके शहंशाह बन जाने पर मुबारकबाद दे रही हूँ।"

औरंगज़ेब महताब के घर में सब कुछ करीने से सजा देख संतोष अनुभव करने लगा था। इससे उसकी समझ में आया था कि महताब जा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रही। इस कारण अपने आने का मकसद बताने के लिए कह दिया, "मैंने यहाँ की फालतू औरतों को निकल जाने का हुक्म दे दिया है। तुम्हारा पैगाम मिला है कि उन औरतों के वज़ीफे जारी रखे जायें। मैं इसी की बात कहने आया हूँ कि खज़ाने में इन खातून को देने के लिए पैसा नहीं है।"

"तो वज़ीफे कम कर दिये जाएँ। बाहर तो बहुत कम में गुज़र हो सकेगा।"

"नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। हम सब फज़ूलखर्चियाँ कम करने का फैसला कर चुके हैं।"

इस समय औरंगज़ेब ने महताब को खुश करने के लिए कह दिया, "ग्वालियर से पंडितजी को लाने का हुक्म भेज दिया है।"

"और उनको छोड़ने का नहीं ?"

"इसका मतलब यही है। हम उनसे कुछ और जानना चाहते हैं।"

महताब चुप रही। इस पर औरंगज़ेब ने कह दिया, "यहाँ हरम में सिर्फ़ वे औरतें रह सकेंगी, जिनको यहाँ रखना जरूरी होगा।"

"तो औरतों से कुछ काम भी लेंगे ?"

"सब लोग लेते हैं। हम भी लेंगे ही। मगर किन-किन से क्या-क्या काम लिया जाएगा, वह अभी फैसला नहीं किया।"

"मैं भी यहाँ से बाहर जाना चाहूँगी।"

"तुम दारा की बेगम रही हो। अभी तक दारा का फैसला नहीं हुआ। जब तक फैसला नहीं हो जाता, तब तक तुम लोगों का भी फैसला नहीं किया जा सकता।"

"ये लोग कौन-कौन हैं ?"

"दारा की तीन बेगमों में दो ही यहाँ हैं। हम उनकी बाबत ही कह रहे हैं।"

"उनकी लड़की भी तो यहाँ है ?"

"जानी बेगम न ?"

"हाँ।"

"उसकी बाबत भी सोच रहे हैं।"

"क्या मैं अपने माता-पिता से मिल सकूँगी ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"यह उनकी ख्वाहिश जानकर ही बता सकेगी।"

"अच्छी बात है। मुझको बताइयेगा कि वे मुझसे मिलना चाहते हैं या नहीं।"

: १३ :

खादिमा आयी और बताने लगी, किले और महल के सिपाही बदल दिए गये हैं। वे मुझे भीतर आने देना नहीं चाहते थे। जब मैंने आपका नाम बताया तो मेरी तलाशी ली गई और तब ही मुझको भीतर आने दिया गया।

"तो तुम्हारी तलाशी से कुछ बरामद हुआ है उनको ?"

"हाँ, आपके लड़के हिदायतुल्ला की तस्वीर थी। वह रख ली गई है और यह बताया गया है कि जब तक शहंशाह औरंगज़ेब उसको आपके पास आने की इजाज़त नहीं देंगे, मैं उसको नहीं ला सकती। इसलिए मुझे तस्वीर मजबूरन दरोगा के पास जमा करानी पड़ी है।"

महताब ने पूछा, "और वह तस्वीर तुम कहाँ से लाई थीं ?"

"औरंगाबाद से।"

"ओह ! बहुत दूर जाना पड़ा है।"

"हाँ हुजूर ! आगरा में तो मौजूदा शहंशाह के साथ न कोई औरत और न कोई नाबालिग लड़का था। वहाँ से पता चला कि ये अपना हरम औरंगाबाद में छोड़ आये हैं। मैं वहाँ जा पहुँची। वहाँ इनका हरम एक ब्राह्मण की हिफ़ाजत में था। खुदा का शुक्र है कि वह ब्राह्मण बहुत हम-दर्द और जाना-पहचाना आदमी निकला। उनका नाम पंडित विश्वनाथ है। वह आपको अपनी बहिन कहता है।"

इस समाचार से महताब की रुचि खादिमा के बयान में बढ़ गई और उसने आगे पूछा, "तो तुमने बताया था कि तुम किसकी तरफ से हिदायत को मिलने आई हो ?"

"हुजूर, नहीं ! मुझे यह समझ नहीं आया कि यह पंडित विश्वनाथ कैसे शहज़ादा साहब की नौकरी में आये और वह शहज़ादा के कितने वफादार हैं। इसलिए मैंने एक नकली कहानी बनाकर सुना दी।

"मैंने कहा था, 'मैं आगरा से आ रही हूँ और वहाँ एक बहुत बड़े आदमी ने इस लड़के की बाबत जानने की ख्वाहिश ज़ाहिर की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर पंडित विश्वनाथ यह समझे कि यह ख्वाहिश करने वाले शहंशाह शाहजहाँ हैं। मैंने हाँ-न नहीं की। इस पर उन्होंने मेरी ख्वाहिश पूरी की। लड़के को बुलाकर दिखाया। मेरी उससे बातचीत हुई और फिर मुझको उसकी वह तस्वीर दे दी गई।

"मैं तो उस तस्वीर को दिखाकर बहुत इनाम पाना चाहती थी, मगर वह छिन गई है।"

"तुमने काम तो सत्य ही बहुत इनाम का किया है। मैं तुमको अच्छा-खासा इनाम दूँगी। मैं कोशिश करूँगी कि उस तस्वीर को हासिल कर देख सकूँ। अगर मुझे मालूम हो गया कि वह उसकी ही तस्वीर है, जिसका पता करने मैंने तुमको भेजा था तो भारी इनाम मिलेगा।"

"मगर हुज़ूर! मुमकिन तो यह है कि बाहर जाते वक्त फिर मेरी तलाशी ली जाए और आपसे दिया इनाम छिन जाये।"

"मैं यत्न करूँगी कि वह तुमको मिल सके। तुम कल आना।"

महताब का यह विचार था कि वह औरंगज़ेब से मिलने की अर्ज़ी कर दे और अपने लड़के की तस्वीर माँग ले। उसने खादिमा की कहानी का संशोधन विचार कर लिया था।

मगर उसे चिट्ठी भेजने की ज़रूरत नहीं पड़ी। औरंगज़ेब स्वयं उससे मिलने आया। वह तस्वीर साथ लाया था।

विश्वनाथ ने एक चित्रकार से हिदायतुल्ला की कई तस्वीरें बनवाईं थीं और यह उनमें से एक थी। औरंगज़ेब ने कमरे में दाखिल होते ही कहा, "रफीकन! बेगम साहिबा को बुलाओ।"

रफीकन भागी-भागी गई और महताब को बुला लाई। महताब ने सलाम की और औरंगज़ेब के हाथ में तस्वीर देख कहा, "तो आप इसे खुद ही ले आये हैं? मैं इसे माँगने की अर्ज़ी करने वाली थी।"

"हम हैरान हैं कि तुम हमसे भी ज़्यादा होशियार हाकिम बन सकती हो।"

"क्या होशियारी की है भाईजान! मैंने?"

"तुम्हारे जासूस हिन्दुस्तान-भर में घूमते हैं। यह तस्वीर तुम्हारे लिए औरंगाबाद से आयी है।"

"मैंने इसके लिए महल से बाहर अपना काम करने वाली खादिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को भेजा था।"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम हैरान हैं कि तुमको कैसे पता चला कि हिदायत वहाँ है ?'

"इसमें कौन मुश्किल बात है ? आखिर आप अपनी बेगमों को अपने साथ ही तो रख रहे हैं न ? औरंगाबाद से आप बिना हरम के चले थे। मतलब यह निकला था कि बेगमों को वहाँ छोड़ आए हैं।"

"मगर जानती हो, किसकी रखवाली में छोड़ आये थे इसको ?"

"मुझे मालूम नहीं था। यह तो वह खादिमा ही खबर लाई है कि मेरे भैया ही इसकी देखरेख कर रहे थे।"

"हाँ। हमने अब उसे हुक्म भेजा है कि वह बेगमों को लेकर दिल्ली चला आए।"

"तब तो हिदायतुल्ला को देखने का मौका मिला करेगा।"

"हम उसे तुम्हारे के पास ही रखने वाले हैं।"

"ठीक है। मैं आपकी शुक्रगुजार रहूँगी।"

"आज हमने महल के खान से आपका वज़ीफा देने के लिए कह दिया है।"

"मैं तो यह चाहती हूँ कि यह बोझ आप पर न रहे।"

"तो गुज़र कहाँ से करेंगी ?"

"आपने इतनी औरतें पहले यहाँ से निकाल दी हैं। एक और सही। दिल्ली शहर में खाने-पीने की दिक्कत नहीं होगी।"

"तो बेगम ने कोई सहारा बाहर बनाया हुआ है ?"

"सहारा तो है। बाहर भी है और महल में भी। सब जगह पर है।"

"अच्छा देखो, यह तस्वीर तो हम देने ही आये हैं। साथ एक बात हम तुम से कह देना चाहते हैं। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। इसलिए एक ही मुल्क, राजधानी और महल में दो शहंशाहों के जासूस नहीं घूम सकते। जब किसी बात की ज़रूरत हो तो इस खादिम को हुक्म दे सकती हो। कोई दूसरा खादिम रखने की ज़रूरत नहीं।"

"अच्छा भाईजान ! उसको मेहनत का कुछ इनाम भी तो देना है ?"

"ज़रूर देना चाहिए।"

"तो कल जब वह यहाँ से इनाम लेकर जाए, उसकी तलाशी न लेने का हुक्म सादर किया जाये ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महल में आते-जाते समय तलाशी तो होगी । इसलिए उसको इनाम महल से बाहर ही दे दिया जाएगा ।"

"मगर मेरा कोई मोदी महल के बाहर तो है नहीं ?"

"है तो, एक तो हम ही हैं । तुम हुक्म दो, उसको दे दिया जायेगा ।"

"तो यह मैं कल बता सकूँगी । उसने आने-जाने और खाने-पीने पर भी तो कुछ खर्च किया है और उसके अलावा इनाम भी चाहिए ।"

"अगर बेगम कहें तो यह भी फैसला कर देंगे ।"

"इस पर भी काम मैंने कराया है और मैं ही अन्दाज़ लगाना चाहती हूँ कि क्या देना चाहिए । देखिए भाईजान ! मैं उसको एक लिखा हुक्मनामा दे दूँगी और महल के खान को कह दिया जाए कि वह रकम मेरे वज़ीफे में से दे दी जाए ।"

"हाँ, यह इन्तज़ाम ठीक है ।"

"और खादिमा को मुझे मिलने के लिए यहाँ आने का परवाना राहदारी मिल जाए ।"

"वह कल यहाँ आ सकेगी ।"

औरंगजेब अभी गया ही था कि रोशनआरा तथा मेहरुन्निसा आयीं । "आओ बहिन ! आज कैसे आना हुआ ?" महताब ने पूछ लिया ।

जब से सल्तनत में इन्कलाब हुआ था, ये दोनों महताब से मिलने नहीं आई थीं । महताब को उनके आने पर विस्मय हुआ । उत्तर मेहरुन्निसा ने दिया, "हमें मालूम हुआ था कि शहंशाह यहाँ आए हैं । इसलिए उनसे मिलने आई थीं । मगर रफीकन ने बताया है कि वे चले गए हैं । अब आईं तो अम्मी से मिलने का फ़ख्र हासिल करने के लिए यहाँ चली आई हैं ।"

"आओ बहिन ! खैर, शहंशाह के यहाँ आने का कुछ तो फायदा हुआ । कई दिनों के बाद बहिनों के दीदार मिले हैं ।"

मेहरुन्निसा हँस पड़ी और रोशनआरा मुस्कराती रही । उत्तर अभी भी मेहरुन्निसा ने ही दिया, "अम्मी ! यह गुस्ताखी हुई है कि हमने इतने अर्सा तक अम्मी की खबर ही नहीं ली । इसके लिए मुआफी चाहती हूँ । मगर इसमें हमारा कसूर नहीं था । हमें हुक्म था कि हम अपने-अपने कमरों में कैदी हैं । कमरों के बाहर पहरा था । उस कैद से छुट्टी पाई तो मैं रोशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बहिन से मिलने गई। ये आपसे मिलने आ रही थीं, मैं भी चली आई।"

इस कैद की बात सुन महताब को चिन्ता लग गई। वह समझ रही थी कि उस पर भी बंदिश तो लग रही है। इस पर भी उसने अपनी बात बताने से पहले आने वालों की ही बात सुननी चाही।

इस समय तक वे तीनों बैठक में बिछी चाँदनी पर जा बैठी थीं। महताब ने पूछ लिया, "भला यह कैद की सजा किसलिए थी ?"

"मैं समझी हूँ कि हम पहले शहंशाह की लड़कियाँ हैं, इस वास्ते और तो कोई वजह मालूम हुई नहीं।"

"मैं बताती हूँ।" रोशनआरा ने अब मुख खोला, "मेरा मौजूदा शहंशाह से यह वादा था कि उसके शहंशाह-ए-हिन्द बनने पर मुझे शादी करने की इजाजत दी जायेगी। मैंने उस शादी का इन्तजाम करना चाहा, तो मुझको कैद करने का हुक्म ज़ारी हो गया।"

"कहाँ इन्तजाम किया था ?"

"एक राठौर राजपूत सरदार था। जयपुर में जागीर है। शहंशाह को पता चलने से उसकी मौत यकीनी है।"

"और कैसे मिल गया था वह तुमको ?"

"जैसे मेहर को कोई मराठा मिल गया था।"

इस पर दोनों हँसने लगीं। मगर महताब गम्भीर भाव बनाये बैठी रही। जब दोनों हँस चुकीं तो उसने पूछ लिया, "रोशन ! तुम तो हिन्दुओं से नफरत करती थीं और उनको काफिर समझती थीं ?"

"मगर वैसा बहादुर कहीं और मिलता भी तो नहीं था।"

"मैं समझती हूँ कि शहंशाह कोई दीनदार ढूंढ देंगे।"

"नहीं अम्मी ! हमसे यह वादा ले लिया गया है कि हमें वैसे ही रहना होगा, जैसे हम पहले रहती थीं और इसके लिए हमारा वज़ीफा हमको मिलने का हुक्म हुआ है।"

"मगर क्या ये भाईजान भी पसन्द करेंगे कि राजपूत और मराठे महल में चोरी-चोरी आते रहें।"

"यह तो हमने अभी कोशिश नहीं की, मगर खादिमा दो महीने के बाद आई थी और कहती थी कि महल और किले में बिना तलाशी आने-जाने नहीं दिया जाता। यह भी देखा जाता है कि आने वाला मर्द है या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरत।"

"यह कैसे देखते हैं ?"

"खादिमा बता रही थी कि जब तक उसकी छाती को देख नहीं लिया गया कि वह असली है या नकली है, उसे महल में दाखिल होने नहीं दिया गया।"

"तो वह राठौर सरदार औरत की शक्ल बनाकर आता था ?"

"जब आता था तब बात दूसरी थी। मैं तो पहले शहंशाह के दिल्ली से जाते ही भाग जाती, मगर वह दारा की फौज में आगरा गया और वहाँ से सामूगढ़ के मैदान में लड़ा था। जब वह वहाँ से लौटा तो उसने मुझे महल से निकल आने के लिये कहला भेजा। मैं भागती हुई पकड़ ली गई। तब तक सिपाही बदल गये थे। उन्होंने मुझे रोक लिया और कैद कर लिया। जब से मौजूदा शहंशाह आये हैं, मुझसे बातचीत कर रहे थे। आखिर यह फैसला हुआ है कि मैं अपने खानदानी रुत्बे के मुताबिक रहन-सहन रखूंगी। तब मुझे महल के अन्दर चलने-फिरने की आज़ादी मिली है।"

"मेहर बहिन भागने वाली थी ?" महताब ने दूसरी शहज़ादी से पूछा।

"मैं तो अपना सामान ही बाँधती हुई पकड़ ली गई। खैर, रोशन बहिन ने शहंशाह की कुछ खिदमत की हुई है, इस वास्ते इनकी सिफारिश से मैं भी आज़ादी पा गई हूँ।"

: १४ :

शहज़ादा मुराद और औरंगज़ेब दारा का पीछा करने के लिए आगरा से एक बहुत बड़ी सेना लेकर चले थे। सेना जब मथुरा में पहुँची तो औरंग-ज़ेब ने मुराद की ताजपोशी की रस्म की तारीख का फैसला करने के लिए, उसको अपने खेमे में बुलाया। मुराद से यह फैसला हुआ कि अगले दिन मथुरा में ही उसकी ताजपोशी हो जाये। इस पर मुराद बहुत खुश था। उसने सरल भाषा में से पूछ लिया, "और भाईजान, आप ?"

"मैं दारा का कांटा निकाल कर हज के लिए चला जाऊँगा।"

"मेरी ख्वाहिश है कि आप हिन्दुस्तान में ही आराम से रहें और खुदा की इबादत करें। चाहें तो आधे मुल्क की सल्तनत आपके मातहत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो और आधे की मेरे। दोनों मिल-जुलकर खानदान का नाम रोशन करें।"

"नहीं मुराद ! मेरा तो यही फैसला है कि कल तुम्हारे शहंशाह-ए-हिन्द बनने का एलान कर दिया जाए और कल से हिन्दुस्तान में मुराद-बख्श शहंशाह-ए-हिन्द का सिक्का चले।"

मुराद अपनी खुशी को छिपा नहीं सका। उसने उठकर औरंगज़ेब को अपने गले लगाया और कहा, "मैं हमेशा भाईजान की खिदमत के लिए खून की आखिरी बूंद तक देने के लिए तैयार रहूँगा।"

अगले दिन होने वाली मुराद की ताजपोशी की खुशी में रात को शराब और नाच-गाने का इन्तज़ाम था। नाच-गाना हुआ और शराब के दौर आधी रात तक जारी रहे और तब तक मुराद शराब के नशे में अचेत हो गया था। उसे उठाकर बगल के खेमे में सुला दिया गया और सब एहलकारों को अपने-अपने खेमे में भेज दिया गया। इसके कुछ ही देर बाद हाथी, जिन पर दो पर्दादार हौदे लगे हुए थे, दो हजार सिपाहियों के संरक्षण में ग्वालियर की ओर भेज दिये गये। इन हौदों में मुराद और मुराद की बीवी थी। ये ग्वालियर के किले में भेजे गए और वहाँ के किलेदार आसफ खाँ की छुट्टी कर, वहाँ एक मौलाना हबीब किलेदार मुकर्रर किये गये। मौलाना हबीब भी शहज़ादा के हुक्म के साथ ही ग्वालियर पहुँचा था। आसफ खाँ किले की चाबियाँ मौलाना हबीब को न देता, मगर दो हज़ार सिपाहियों का विरोध करने की वह सामर्थ्य नहीं रखता था। उसने चाबियाँ दे दीं।

मौलाना हबीब ने वहाँ पहुँचते ही पंडित त्रिभुवन और उनकी पत्नी को पचास सिपाहियों की देख-रेख में दिल्ली रवाना कर दिया। पंडितजी को दिल्ली में जहानआरा सराय में ठहराया गया। यद्यपि उनको कह दिया गया था कि वे स्वतन्त्र हैं, परन्तु यह भी कह दिया गया या कि उनसे शहज़ादा औरंगज़ेब एक अत्यावश्यक विषय पर मशवरा करना चाहते हैं। इसलिए यह उनके लाभ की बात होगी, यदि वे उनसे मिलकर ही जायें।

त्रिभुवनकीर्ति भी शहज़ादा से मिलकर ही जाना चाहते थे। उनके मन में नीला को भी छुड़ाकर ले जाने का विचार था। इस पर भी पण्डित जी को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि उनके आगे-पीछे अनेक प्रकार के लोग चक्कर काटते-फिरते हैं। इससे पंडितजी को विश्वास हो गया कि वास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में वे अभी भी बन्दी हैं । इस पर [illegible] का अवसर नहीं था । वह समझ रहे थे कि अभी उनको स्वतन्त्रता मिली नहीं ।

तीन दिन के बाद औरंगज़ेब का आदमी आया और पंडितजी को बुलाकर उसकी खास बैठक में ले गया । वहाँ औरंगज़ेब अकेला बैठा था ।

उसने पंडितजी का सलाम स्वीकार कर कहा, "पंडितजी ! आपकी दुआ और तावीज की मदद से हम यहाँ तक पहुँच गये हैं ।"

"मैं जानता था कि ऐसा होने वाला है, मगर कुछ ज़रूरत से ज़्यादा कर डाला है जहाँपनाह ने ।"

'क्या ज़रूरत से ज़्यादा है ?"

"अपने सगे भाई मुराद को आपने धोखा दिया है ।"

"तो क्या करते ? वह मोटी अक्ल का आदमी हमारी मदद के लिए आता ही नहीं, अगर उसको शहंशाह बनने की उम्मीद न देते । जब उम्मीद दी तो उस उम्मीद को खत्म कैसे करते ?"

"उसे आधे मुल्क की सल्तनत दे देते ।"

"इससे हमारी हवस पूरी नहीं होती थी ।"

"मगर अकबर ने तो पानीपत के मैदान से अपने राज्य को बढ़ाया था । वह हुजूर भी कर सकते थे ।"

"हम जानते हैं कि हाथ आये को छोड़ना नहीं चाहिए । अच्छा तो और क्या ज़रूरत के बिना किया है ?"

"अपने वालिद शरीफ को अपने साथ दिल्ली ले आते और उनको नमूने के तौर पर तख्त पर बैठा रखते तो दुनिया में शोहरत पा जाते ।"

"आप बूढ़े की हरकतों को नहीं जानते, तभी कह रहे हैं । खैर, हम यह जानना चाहते है कि क्या कल हमारी ताजपोशी का दिन ठीक है ?"

"आप अपनी जन्मकुण्डली दिखाइये ।"

औरंगज़ेब ने अपनी जन्मकुण्डली निकालकर दिखा दी । पंडितजी ने मन-ही-मन और उँगलियों पर कुछ गणना की और बता दिया, "कल अच्छा दिन है । आप उनचास वर्ष तक राज्य करेंगे ।"

इस पर औरंगज़ेब ने मुहरों की एक थैली पंडितजी के सामने रखी और कहा, "एक बात और है ।"

"फरमाइये ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस वक्त दारा की दो बीबियाँ महल में हैं। दारा की मौत हो जाने के बाद हम उनसे शादी करना चाहते हैं। क्या वे हमारे लिए मुबारिक होंगी ?"

"देखिये हुजूर ! आपको राज्य तो मिल गया और यह अब उनचास साल तक आप भोग करेंगे। मगर आपकी बेगमों की बात तो उनके हाथ अथवा जन्म-पत्रे देखे बिना नहीं बता सकता।"

"हाथ दिखाये जा सकते हैं, लेकिन वे पर्दा के पीछे रहेंगी।"

"दिखाइए, मैं बताने की कोशिश करूँगा।"

औरंगज़ेब पंडितजी की इस माँग की आशा करता था। इस कारण उसने उदयपुरी और महताब को पर्दे के पीछे बैठाया हुआ था। इस पर उसने हुक्म दिया, "एक हाथ निकालो।"

पर्दे के पीछे से हाथ निकला। पंडितजी ने देखा और मुस्करा कर कह दिया, "देख लिया है। दूसरा भी दिखा दीजिए।"

दूसरा हाथ निकला और पंडितजी ने उसे भी गौर से देखा और फिर औरंगज़ेब की तरफ देखकर कह दिया, "हज़रत ! यह दूसरा हाथ आपके लिए शुभ है, मगर यह एक बात की माँग करेगा और जब तक आप इसको वह चीज देते रहेंगे, तब तक यह आपकी वफादार बीवी बनकर रहेगी।"

"क्या चीज यह माँगेगी ?"

"शराब। यह हाथ वाली बेगम शराब पीकर ही अपने पहले खाविंद को भूल सकेगी।"

"और यह दूसरी ?" औरंगज़ेब ने पण्डितजी की भविष्यवाणी पर चकित होते हुए कहा।

पण्डितजी ने औरंगज़ेब की आँखों में देखते हुए कहा, "यह हाथ मैं पहचानता हूँ। यह महताब बेगम का है। वे आपके वालिद की पत्नी रही हैं और अपने को आपकी माँ मानती हैं। यह आपकी बीवी नहीं बन सकेंगी।"

"इसकी उम्र कितनी है ?"

"यह तो मैंने पहले ही गिन रखी है। यह नब्बे वर्ष की आयु का भोग करेगी। हुजूर ! इसे आप हमारे साथ गाँव को चले जाने दीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए पण्डितजी ! सब महल वाले जानते हैं कि यह दारा की बीवी रही है। अगर दारा उस फौज से मार डाला गया, जो हमने उसको मारने के लिए भेजी है तो यह शरअ के मुताबिक हमारी बीवी होगी। हम इसकी बहुत इज्ज़त करेंगे और इसके सुख और आराम की भी पूरी कोशिश करें।"

"मगर कामयाबी बहुत मुश्किल है।"

"अगर आप अपनी लड़की को इस बात के लिए राजी कर दें तो हम आपको एक बहुत बड़ी जागीर का मालिक बना देंगे।"

"जिस दिन से लड़की की शादी हुई है, हम उसके कामों में दखल नहीं देते। मैं हाँ या ना कुछ नहीं करूँगा। वह अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार है। हम समझते हैं कि वह अपना भला-बुरा खुद सोच सकती है।"

"तो आपको जागीर नहीं चाहिए ?"

"हुजूर ! नहीं। मुझे अब छुट्टी दीजिए, जिससे मैं गाँव में जा सकूँ। वहाँ से किसी तीर्थ-स्थान पर शेष आयु व्यतीत करना चाहता हूँ।"

"हाँ, आप जा सकते हैं।"

"मगर इन खुफिया सिपाहियों को हटने का हुक्म दिया जाये।"

औरंगज़ेब मुस्कराया और बोला, "ये लोग जब तक आप दिल्ली में रहेंगे आपकी देख-रेख करेंगे। दिल्ली की चारदीवारी छोड़ते ही ये आपको छोड़ देंगे।"

"तो मैं यहाँ बहुत ही खतरनाक आदमी समझा जा रहा हूँ ?"

"नहीं पण्डितजी ! आपकी लड़की इतनी होशियार है कि यह हमको भी चकमा देकर भाग सकती है।"

"सच ? यह हमको पता नहीं था। हम तो इसको महामूर्ख मानते थे जो यह अपने को एक बलात्कार करने वाले की बीवी मानती रही है।"

औरंगज़ेब हँस पड़ा और बोला, "तो आप उसकी बाबत कुछ भी नहीं जानते। खैर, यह नज़र तो आपके इल्म की है। आपने इन औरतों के हाथ देखकर भी कमाल लियाकत और काबलियत का इज़हार किया है। इसके लिए आपको कुछ नज़र सराय में पहुँचा देंगे।"

पण्डित त्रिभुवन सराय में पहुँचा और उसने नीला की बाबत चन्द्रमुखी को बताया। वह उसकी अवस्था सुन आँसू बहाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डितजी ने उसे सान्त्वना देते हुए कह दिया, "भाग्यवान् ! सब अपने-अपने भाग्य का भोग करते हैं। इसमें कोई दूसरा हस्तक्षेप नहीं कर सकता। तब भी मैंने यह कहा था कि लड़की को हमारे साथ कर दिया जाए। शहज़ादा साहब नहीं माने। वह उसको बीवी बनाने की इच्छा रखते हैं।"

"इसी बात को विचार कर तो मेरे आँसू निकल पड़े हैं।"

"मैं समझता हूँ कि हमें तुरन्त दिल्ली से चल देना चाहिए।"

"कहाँ चलेंगे ?"

"अपने गाँव को। वहाँ जाकर कार्यक्रम बनायेंगे। सम्भव हुआ तो पुणे विश्वनाथ के पास चलेंगे।" विश्वनाथ के नाम पर चन्द्रमुखी चलने की तैयारी करने लगी।

औरंगाबाद में औरंगज़ेब की एक बेगम दिलरख बानो का देहान्त हो गया था। उसके बच्चा हुआ था और प्रसव की दुर्बलता में ही वह चल बसी। एक दूसरी बेगम औरंगाबाद से दिल्ली पहुँची तो एक और रहस्य का पता चला। विश्वनाथ नहीं आया। हिदायतुल्ला भी नहीं आया। बेगम के साथ मीर जुमला आ पहुँचा। औरंगज़ेब यह तो जानता था कि मीर जुमला औरंगाबाद से आगरा की ओर जाता देखा गया था, परन्तु वह आगरा नहीं पहुँचा था। वहाँ जाँच-पड़ताल से पता चला था कि वह कर्नाटक में अपने घर चला गया है। उसके बाद उसका कोई समाचार नहीं मिला था। अतः उसे बेगम के काफिले के साथ आते देख औरंगज़ेब हैरान रह गया।

मीर जुमला ने कह दिया, "हुजूर ! मैं मीर जुमला हूँ।"

"यह तो हम देख रहे हैं। मगर हज़रत कहाँ थे ?"

"मैं बाप-बेटे की लड़ाई में कोई भी तरफ लेना नहीं चाहता था।"

"और अब भाई-भाई के झगड़े में ?"

"मैं समझता हूँ कि वह आप मेरी मदद के बिना निबट लेंगे। मैं तो आपकी सल्तनत को मजबूत करने के लिए खिदमत देने आया हूँ।"

'खैर, सुबह का भूला रात को भी घर आ जाए तब भी ठीक है। मगर हम यह देख रहे हैं कि वह हिन्दू का बच्चा क्यों नहीं आया और···।"

"उसे पुणे से बुलावा आ गया था और वह आपकी बड़ी बेगम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इजाजत लेकर चला गया है। हिदायत उसके साथ ही चला गया है।"

"क्यों?"

"यह बेगम से ही पता करना चाहिए। मैं तो जब आया था, विश्वनाथ जा चुका था।"

औरंगज़ेब आग-बबूला हुआ हरमगाह में पहुँचा और बेगम से हिदायत के विषय में पूछने लगा। बेगम ने विश्वनाथ की लिखी चिट्ठी दे दी।

औरंगज़ेब ने चिट्ठी पढ़ी। उसने लिखा था, 'हुज़ूर! मेरे मालिक के कई खत आ चुके हैं। वे मेरी सेवाएँ पुणे में चाहते हैं। इसलिए मैं वहाँ लौटने पर मजबूर हो रहा हूँ। आपकी आगरा में व्यस्तता और फिर मथुरा में बहादुरी के कारनामे सुनकर हृदय गद्‌गद् हो गया है। मैं आपको आपकी कामयाबी पर बधाई देता हूँ।

'जब मैं पुणे के लिए जाने लगा तो बेगम साहिबा छुट्टी नहीं दे रहीं थीं। उनको आपके दिली दोस्त मीर जुमला साहब की चिट्ठी आ चुकी थी कि वे आ रहे हैं और औरंगाबाद से दिल्ली के लिए जायेंगे। इस कारण मुझे छुट्टी मिल गई है।

'हिदायत को मैं बेगम साहिबा की मंजूरी से साथ ले जा रहा हूँ। वह भी मुझसे चिपट गया था और छोड़ नहीं रहा था। इस पर उसको जाने की स्वीकृति मिली तो हम पुणे के लिए तैयार हो गए। मैं भी यह विचार कर कि मुगलों के खानदानी गुण उसके अनुकूल नहीं रहेंगे, उसको साथ ले जाने को तैयार हो गया हूँ।

आपका दिली दोस्त, विश्वनाथ'

औरंगज़ेब ने पत्र पढ़ा तो कह दिया, "तो तुमने विश्वनाथ को छुट्टी किस लिए दे दी?"

"उसको अपनी बीवी से अलहदा हुए छः महीने होने जा रहे थे।"

"पर हम भी तो अपनी बेगम से अलहदा रहे हैं।"

"मगर आपकी बेगमें तो आ गयी हैं और वह भी आजकल ही वहाँ पहुँचा होगा। और फिर आपके पास दारा की बीवियाँ तो थीं।

"उसके जीते-जी वे हमारी बीवियाँ बनना गुनाह मानती हैं।"

"मगर आपने तो उनको बरगलाने की कोशिश की होगी।"

"यह तो कुदरती बात थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ख़ैर, अब मैं आपकी मदद कर दूंगी।"

"मगर हिदायत को क्यों जाने दिया? हिदायत और उसके मामा को यहाँ क़ैद करके रखना चाहते थे और उसके मालिक शिवाजी से अपनी शर्तें मंजूर करना चाहते थे।"

"हुजूर, पहले अपने पाँव तो जमाइये। फिर शिवाजी की बाबत भी सोच लीजिएगा।"

औरंगज़ेब को क्रोध और निराशा तो बहुत हुई, मगर वह अपनी सबसे प्यारी बेगम से लड़ना नहीं चाहता था।

बेगमों के महल में आ जाने से महल का वातावरण बदलने लगा। रोशनआरा पर पुनः मज़हबी जनून सवार होने लगा और वह मज़हब के नाम पर महल पर हुकूमत करने लगी।

महताब बेगम का अब केवल मेहरुन्निसा से ही मेल-जोल रह गया था। ओरंगज़ेब महताब से मिलता रहता था और उसको दारा के पराजित होने और जान बचा कर भागने की बातें बताता रहता था।

जिस दिन ताजपोशी की रस्म दूसरी बार मनायी जानी थी, औरंग-ज़ेब महताब और उदयपुरी से मिलने आया। महताब ने सम्बोधन कर औरंगज़ेब से कहा—"भाईजान! आज का दिन आपको मुबारिक हो।"

"शुक्रिया महताब! मगर हमने आज से तुमको भाभी कहना छोड़कर महताब कहना मुनासिब समझा है। हम चाहते हैं कि तुम भी अब हमें भाई-जान् कहना छोड़ दो।"

"किस लिए?"

"इसलिए कि दारा अब काबुल को भाग गया है। इसलिए हम उसके तख्तोताज और दीगर सब सामान पर अपना हक बना बैठे हैं।"

"ठीक है। मगर दारा से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था, न है।"

"यह हम जानते हैं। मगर महताब! तुम दारा की बेगम मशहूर थीं। तुम उसकी बेगम के नाम से वजीफा लेती थीं। तुम उसके महल में रहती थीं। अगर दारा तुमसे अपने खाविन्द के हक़ हासिल नहीं करता था तो वह बेवकूफ था। वह तुम्हारे सिफात को नहीं जानता था। अब हम दारा की जगह पर हैं। हम अपना खाविन्द का हक़ हासिल करना चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो बेगम! हम तुम और उदयपुरी दोनों को अब ठीक ओहदे पर आज रात बैठाना चाहते हैं। हम इस मतलब के लिए आयेंगे।"

महताब पीतमुख चुपचाप खड़ी थी। वह मन में कुछ सोच रही थी। औरंगज़ेब इतना कह वहाँ से चल दिया। बाहर दीवान-ए-आम में तख्ते ताऊस लगा दिया गया था और दीवानखाने में उमरावों और फौजी ओहदे-दारों के लिए जगहें बनायी जा रही थीं।

ठीक समय पर ताजपोशी की रस्म अदा हो गई। उसके बाद नज़-राने और न्याज़ पेश की जाने लगीं। उसी सायंकाल दो फरमान जारी हुए। पहला फरमान था कि मुगल सल्तनत में शराब बनाना, शराब बेचना और शराब पीना मना है। दूसरा फरमान था कि दिल्ली के बाजारों और गलियों में नाचने और गाने की मनाई है। नाचने-गाने का पेशा गैर कानूनी है। इस काम को करने वाले मुजरिम करार दिये जायेंगे और सज़ा के मुतखिब होंगे। यह सजा मौत तक की हो सकती है।

यह हुक्म जारी कर औरंगज़ेब महताब के महल में पहुँचा। शाही हुक्म से उसको भी आज सजा दिया गया था। सैकड़ों मोमबत्तियाँ और झारफानूसों से वह रोशन किया गया था। महताब चुपचाप यह सब कुछ देख रही थी। नौकरानियाँ उसको नये सुन्दर भूषण-वस्त्र पहनाने आईं तो चुपचाप वह करने देती रही। उन्होंने उसे गुसल कराया, वस्त्र पहनाये, भूषण पहनाये और फिर शृंगार करा दिया। रात के खाने का वक्त हुआ तो शहंशाह आया। महताब चुपचाप खड़ी सब कुछ हो रहा देख रही थी। शहंशाह के आने पर नौकरानियाँ बेगमों को वहाँ छोड़ कमरे से निकल गयीं। भीतर सिर्फ तीन बेगमें रह गयीं। नाज़म बानू थी, जो अब मलिका थी। उसके साथ उदयपुरी और महताब थीं। महताब के दिन-भर चुप रहने और शृंगारादि करवा लेने पर ख्याल किया जाता था कि उसने औरंग-ज़ेब की बीवी बनने के लिए मन को तैयार कर लिया है।

खाना परोसा गया तो तीनों दस्तरखान पर बैठ गए। औरंगज़ेब उदय पुरी और महताब के बीच बैठा था, और नाज़म बानू बेगम सामने बैठी थी। बहुत हँसी-मजाक हो रहा था। उदयपुरी की नौकरानी शराब की एक सुराही भी खाने के साथ रख गयी थी।

औरंगज़ेब ने मुस्कराते हुए कहा, "बेगम! आज तो यह न पीतीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ?"

"आज ही हमने यह फरमान जारी किया है कि शराब बनाने, पीने, पिलाने और बेचने वाला मुजरिम है और सज़ा का हकदार है।"

"तो क्या आपका फरमान इस महल से बाहर नहीं रह सकता ?"

"हम सिर्फ आज के लिए कह रहे हैं। पीछे तो हमारी तुमसे शर्त है कि तुम पी सकोगी।"

"ज़ी नहीं। उस शर्त से किसी भी दिन को ममनूह करार नहीं दिया गया था।"

"और अगर पीनी है तो हमारी तीसरी बेगम को भी पिला दो। वह आज बर्फ की भाँति ठण्डी दिखाई दे रही है। ज़रा उसमें भी गरमाइश पहुँच जाए तो ठीक रहे।"

उदयपुरी ने प्याले में ढाल कर महताब के सामने की तो उसने प्याला पकड़ शहंशाह के सामने रख दिया।

"हमें ? किस वास्ते ?"

"जिससे कुछ अक्ल आपको आ सके।"

"ओह ! वह हम तुमसे पीछे सीख लेंगे।" इस पर भी महताब ने प्याला दस्तरखान पर शहंशाह के सामने रख दिया।

खाना अभी आधा ही खत्म हुआ था। महताब उठी और जब अन्य कोई उसके इस उठने का मतलब नहीं समझ सका तो वह बोली, "मुआफ रखें। मैं अभी आयी।"

उदयपुरी आधी बदमस्त हो चुकी थी। वह हँस पड़ी। उसने कह दिया, "जल्दी आ जाना, मजा किरकिरा हो रहा है।"

महताब ने शमादान में लगी मोमबत्ती उठायी और अपनी ओढ़नी को आग लगा दी और हँसते हुए कहा, "आदाब अर्ज़ है भाईजान !"

सब चीखें मारने लगे, मगर उदयपुरी उठी और यह कहती हुई, "ओ पगली ! यह क्या कर रही हो ? यह क्या कर रही हो ?" महताब की तरफ लपकी और उसके कपड़ों की आग बुझाने लगी।

चीखों की आवाज़ सुन नौकरानियाँ भी भीतर आ गयीं। रफीकन अपनी मालकिन को जलते देख लपक कर उससे लिपट-लिपट उसके कपड़ों की आग बुझाने लगी। आग बुझ गयी। उदयपुरी के हाथ बुरी तरह जल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गये । रफीकन के शरीर का अगला हिस्सा बुरी तरह झुलस गया और महताब सिर से पाँव तक जलकर कोयला हो गयी । वह अचेत हो गिर पड़ी । औरंगज़ेब यह सब मूर्खों की तरह देखता खड़ा रहा । नौकरानियों ने महताब को उठाया और उसके सोने के कमरे में उसे पलँग पर डाल दिया, जहाँ औरंगजेब उसका भोग करने वाला था ।

जब महताब को भीतर ले गये तो बेगम नाजम बानू ने घृणा की दृष्टि से शहंशाह की तरफ देखते हुए कहा, "हज़रत ! हकीम साहब को बुलाइए । शायद बच जाए ।"

"ओह, हाँ !" औरंगज़ेब को चेतना हुई । उसने शाही हकीम साहब को बुला भेजा । रफीकन और महताब को साथ-साथ पलँगों पर लिटा दिया गया । उदयपुरी के हाथ जल गए थे और वह तीव्र वेदना अनुभव करती हुई एक ओर खड़ी फूंकें मार-मार वेदना कम करने का यत्न कर रही थी । उसका नशा उतर चुका था । उसने अपनी नौकरानी मिरजा से पूछ लिया—"महताब ज़िन्दा है कि मर गयी ?"

"हजूर !" उसने कहा, "साँस तो चल रहा है ।"

"तो जाओ, हकीम साहब को कहो कि जले की दवाई लेते आयें ।"

हकीम बदरुद्दीन साहब आए और एक सुराही में तेल देकर बोले, "जले पर यह तेल उँड़ेल दो ।"

"मगर हज़रत ! तीन शख्स जले हैं । इतने तेल से क्या होगा ?"

इस पर तेल और मँगवाया गया । जब तेल चुपड़ा जा चुका तो दोनों पलँगों के चारों ओर नौकरानियाँ चादर पकड़ कर पर्दे कर, खड़ी हो गयीं । हकीम साहब को अचेत महताब की नब्ज दिखाई गयी । हकीम साहब ने नब्ज देखकर अपने थैले से याकूती निकाल कर शहद में मिला दोनों मरीजों को दे देने के लिए कह दिया । रफीकन को तो होश थी, और महताब के मुख में ठूंस दी गयी और फिर ऊपर से अर्क केवड़ा और वेद मुश्क चम्मच से मुख में डाला जाने लगा ।

शहंशाह वहाँ से चले गए थे । उदयपुरी ने भी हाथों को दवाई लगाई और अपने लिए वहाँ चौकी लगवा, बैठ गयी । हकीम साहब बाहर बैठकघर में बैठ गए और पन्द्रह-पन्द्रह मिनट पर दवाई देने लगे ।

आधी रात के बाद महताब को चेतना आयी । कपड़े जल जाने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह नग्न थी। जिस्म जला हुआ था। इस अवस्था में ऊपर कोई कपड़ा नहीं डाला जा सकता था। जब उसे चेतना हुई तो उदयपुरी उठी और महताब को देखने लगी।

उसकी आँखें बन्द थीं, मगर उसके होंठ फड़क रहे थे। उदयपुरी ने आवाज दी, "महताब बहिन!"

महताब के होंठ फड़के और बहुत धीमी-सी मुस्कराहट में वे घूम गए। फिर पर्दा किया गया और हकीम साहब ने नब्ज़ देखी। हकीम साहब का कहना था—

"थोड़ा-थोड़ा अर्क दिया जाए और तेल लगाना जारी रखा जाए। अब सुबह आऊँगा। खुदा का फजल हुआ तो ये बच जायेंगी।"

: १५ :

महताब को ठीक होते छः महीने लगे। उसके सिर के बाल जल गए थे। नये बाल जो आए, वे न तो उतने गुफ्फेदार और चमकीले थे, न ही पहले जितने लम्बे हो सके। आँखों के पटल जलकर ठीक तो हुए, परन्तु अब उनमें वह मस्ती दृष्टिगोचर नहीं होती थी जो पहले देखने वालों को मोहित कर देती थी। पूर्ण शरीर की जली हुई चमड़ी पर सफेद-सफेद दाग पड़ गये थे। मुख तो बिल्कुल चुरमुर हो गया था। इस पर भी जान बच गयी थी।

औरंगज़ेब नित्य महताब के महल की बैठक में आता और उसकी खबर ले जाता था। दो महीने के बाद उसको बताया गया कि महताब शहंशाह से मिलने के लिए तैयार है। यह खबर उसकी बड़ी बेगम नाज़म बानू ने दी थी। रात वह उसके कमरे में रही थी। नित्य की भाँति उस दिन भी उसने पूछा, "बेगम! मैं कब उससे मिल सकूंगा?"

"मैंने आज उससे पूछा था। अब वह कपड़े पहन लेती है। उससे जिस्म की कुरूपता कुछ-कुछ छुप जाती है। इस पर भी मुख…या खुदा! बख्शो!…वह एक निहायत ही खूबसूरत इमारत के खण्डहर की तरह दिखाई देता है।

"हुजूर, महताब ने पूछा था कि क्या है अब यहाँ, जो शहंशाह देखना चाहते हैं? मैंने कहा, वे मुआफी माँगना चाहते हैं। इस पर वह बोली, किसलिए? क्या कसूर किया है उन्होंने? मुझे उनसे किसी प्रकार का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिला नहीं । मुआफी उन्होंने माँगनी है तो खुदा से माँगें । उसकी बनी मखलूक पर उन्होंने जबरदस्ती करनी चाही थी ।

"देखो अम्मी !" मैंने उससे कहा, "उनके दिल को तसल्ली मिलेगी। एक बार वे तुमको देख लेंगे तो फिर तुमको अपने दिमाग से निकाल सकेंगे ।"

"अम्मी ने पूछा, 'तो क्या अभी भी मैं उनके दिमाग में हूँ ?'

" 'तुम्हारी पहली सूरत-शक्ल अभी भी उनके दिमाग में बसी है। वे उस सूरत-शक्ल को पुनः देखने की उम्मीद कर रहे हैं।'

"इस पर वह सोचती रही और फिर बोली. 'मैं इसमें कोई फायदा नहीं समझती। खैर ! आप लोगों ने मेरे इस शरीर को चेपियाँ लगाकर बनाए रखने का बहुत यत्न किया है उसके लिए ही समझो। वे आ सकते हैं।'

अगले दिन औरंगज़ेब नाजम बानू के साथ महताब के शयनागार में गया। महताब अभी भी पलँग पर लेटी हुई थी। हकीम साहब की दवाई दी जा रही थी और दो नौकरानियाँ सेवा कर रही थीं।

जब शहंशाह आया तो नौकरानियाँ महताब के संकेत पर बाहर चली गयीं। औरंगज़ेब महताब की भनायक सूरत देख मौन खड़ा रह गया। उस सुन्दर शरीर की अब वह भयंकर अवस्था देख उसकी जबान सूख गयी।

बात महताब ने ही की। आवाज़ में भी मिठास नहीं रही थी। उसने कहा, "भाईजान ! मुआफ करें। आपके ओहदे के बराबर इज़्ज़त करने के लिए खड़ी हो आपका स्वागत नहीं कर सकती।"

औरंगज़ेब को ऐसा समझ आया जैसे उसकी आवाज़ एक टूटे बाँस की टंकार की तरह है। वह बहुत धीमी आवाज़ में बोल रही थी।

औरंगज़ेब ने भी धीमी आवाज़ में कहा, "मुआफ कर दो अम्मी ! बहुत गुस्ताखी करने जा रहा था।"

"खैर, आपके मुख से 'अम्मी' का लफ्ज़ तो निकला। मैं आपसे नाराज़ नहीं। मैंने तो इस शरीर से छूटने का यत्न किया था, मगर यह रफीकन और बहिन उदयपुरी ने अपने प्रेम और शौर्य से बाँध लिया है।

"मैं समझती हूँ कि इस शरीर के अवशेष आपको सन्मार्ग दिखाते रहेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरंगज़ेब का पूर्ण शरीर ठंडा पड़ रहा था। उसको दिल की धड़कन रुकती मालूम होने लगी थी और उसका सिर चक्कर खा रहा प्रतीत होता था। उसने बुझते दीपक की भाँति धीमी होती आवाज़ में कहा, "अम्मी ! कोशिश करूँगा कि आपकी बात याद रखूं।"

औरंगज़ेब अपनी बेगम नाज़म बानू के कंधे का आश्रय ले कमरे से निकल गया। उसने कहा—"सच है। खण्डहर बोल रहा मालूम होता है।"

प्रथम भाग समाप्त

□

'खण्डहर बोल रहे हैं' सम्पूर्ण उपन्यास तीन भागों में प्रकाशित हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिन्तक श्री गुरुदत्त की अनुपम रचना

गंगा की धारा

अब एक जिल्द में अनुपम साज-सज्जा के साथ पुनः प्रकाशित
मूल्य : सजिल्द २८० रुपए

इस देश में बसी समाज की संस्कृति और आचार-संहिता गंगा की पावन धारा की भाँति अनन्तकाल से चली आ रही है। इस पर भी यह पवित्र है, स्वच्छ है, मधुर है और रोग-नाशक है, अपने स्रोत के समीप ही। हुगली की धारा है तो गंगा ही की, परन्तु इसमें बहुत कुछ मल-मूत्र, कीचड़ और कचरा मिल गया है। इस कारण यदि इस धारा से लाभ उठाना है तो इसका पान गंगोत्री में जाकर ही करना होगा।

भारत एक अति उन्नत देश था और यहाँ के रहने वालों की आचार-संहिता अति श्रेष्ठ थी। इस पर भी यह देश और इसमें रहने वाली जाति एक सहस्र वर्षों से मध्य एशिया की बर्बर जातियों के पाँवों की ठोकरें खा रही है।

एक सहस्र वर्ष की दासता के होने पर भी, वैचित्र्य यह है कि जहाँ अन्य देशों में मुसलमान शासकों ने बहुत ही अल्पकाल में पूर्ण जनता को इस्लाम के सामने नतमस्तक कर दिया था, वहाँ भारत में मुसलमान शासक एक सहस्र वर्ष तक शासन करने पर भी, बहुत ही अल्पसंख्या में जनता को इसलाम के झण्डे-तले ला सके हैं।

शेष तो यह एक उपन्यास है। पात्र काल्पनिक हैं। इतिहास को ठीक-ठीक रखने का यत्न किया गया है। इसमें सत्य है तब की हिन्दुओं की दयनीय दशा।

मुसलमान अभी भी यहाँ हैं। अभी भी पाकिस्तान है, जहाँ तबलीग का दौर वेग से चल रहा है और हिन्दू अभी भी अपने को वैसा ही असहाय पाता है, जैसा उस काल में था, जब की यह कथा है।

यह रचना
साहित्यकार गुरुदत्त—प्रतिनिधि रचनाएँ (खण्ड दस)
के रूप में भी प्रकाशित हुई है।

हिन्दी साहित्य सदन
२ बी.डी. चैम्बर्स, १०/५४, डी. बी. गुप्ता मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-११०००५ फोन : २३५५३६२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिन्तक श्री गुरुदत्त की एक अन्यतम रचना

परित्राणाय साधूनाम्

महाभारत की कथा को आधार बनाकर लिखे गए
श्री गुरुदत्त के तीन उपन्यास

अवतरण, सम्भवामि युगे-युगे तथा विनाशाय च दुष्कृताम्

अब एक जिल्द में अनुपम साज-सज्जा के साथ पुनः प्रकाशित।

महाभारत का युद्ध अब तक के हुए युद्धों से भी अधिक भीषण था, जिसमें कहा जाता है कि १८ दिन में लगभग पचास लाख योद्धा मारे गए थे। फिर भी यह एक धर्म-युद्ध था। क्यों और कैसे?

महाभारत की कथा को आधार बनाकर लिखा गया कदाचित् यह सर्वप्रथम उपन्यास है जो सन् १९६० में प्रथम बार छपा था।

महाभारत की कथा को प्रस्तुत किया गया है संजय के मुख से। संजय प्रत्यक्षदर्शी था न केवल महाभारत युद्ध का प्रत्युत कौरवों-पाण्डवों के जीवनपर्यन्त चलने वाले वैमनस्य तथा संघर्ष का।

एक अनुपम कथानक, हिन्दी के मूर्धन्य कथाकार गुरुदत्त द्वारा अन्यतम ढंग से प्रस्तुत।

तीनों उपन्यास एक ही जिल्द में, पृष्ठ संख्या ८६८ (डिमाई आकार में) सम्पूर्ण कपड़े की सुदृढ़ जिल्द—

मूल्य ३९५ रुपये

यह रचना साहित्यकार गुरुदत्त—प्रतिनिधि रचनाएँ
खण्ड पाँच के रूप में भी प्रकाशित हुई है।

हिन्दी साहित्य सदन

२ बी.डी. चैम्बर्स, १०/५४, डी. बी. गुप्ता मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-११०००५ फोन : २३५५३६२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृति के उपासकों को एक अनुपम उपहार

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

साहित्यकार श्री गुरुदत्त के भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले निबन्धों का एक ही खण्ड में संग्रह।

वेद, पुराण, उपनिषद्, दर्शन शास्त्र, श्रीमद्भगवद्गीता, इतिहास, पुराण, मनुष्य, समाज, धर्म, इत्यादि विषयों पर विश्लेषणात्मक तथा प्रमाणसहित एवं युक्तियुक्त विवेचना अत्यन्त ही सरल भाषा में।

पाश्चात्य विद्वानों (?) तथा उनका अनुसरण करने वाले भारतीय लेखकों ने जो अपनी मिथ्या धारणाओं से समाज को भ्रमित तथा भ्रष्ट कर रहे हैं, उनका खण्डन करने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति का वास्तविक तथा उज्ज्वल रूप प्रस्तुत करने का यह एक अनुपम प्रयास है।

यह रचना पाठकों के लिए, समाज के लिए तथा भारतीय संस्कृति के उपासकों के लिए प्रेरणाप्रद सिद्ध होगी।

डिमाई आकार में, बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई।

मूल्य १५० रुपए।

Central Library
163895

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, डी. बी. गुप्ता मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005 फोन : 23553624

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं विचारक श्री गुरुदत्त की
गीता की विवेचना में से अनुपम रचना

श्रीमद्भगवद्गीता

सरल सुबोध भाषा भाष्य
मूल्य १२० रुपये

एक अध्ययन
मूल्य : १२०.००

जिस जाति को धरोहर में गीता का ज्ञान मिला हो, उस जाति के घटक आज मरने से भयभीत हों तो यह आश्चर्य की बात है। इसका मुख्य कारण यह है कि हम गीता को ऐसा ज्ञान मानते हैं जिसकी आवश्यकता वृद्धावस्था में मृत्यु के किनारे बैठे हुए पड़ती है।

वास्तव में गीता-ज्ञान मनुष्य को कर्म-क्षेत्र में उतरने के समय मिलना चाहिए। गीता मुख्यतया कर्मयोग का ज्ञान है।

भगवद्गीता के ज्ञान की शुद्ध विवेचना में लिखी ये रचनाएँ अनुपम हैं।

Central Library
167895
Gurukul Kangri (Deemed University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
२ बी.डी. चैम्बर्स, १०/५४, डी. बी. गुप्ता मार्ग, करोल बाग,
: २३५५१६२४ •

081
167895
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143

वर्ग संख्या......... आगत संख्या 167895

GUR-K

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GURUKUL KANGRI LIBRARY

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

श्री गुरुदत्त के कुछ चुने हुए उपन्यास

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमारसम्भव, उमड़ती घटाएं, परित्राणाय साधूनाम् (महाभारत पर), प्रभातवेला, अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा (राम कथा पर आधारित)।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), अस्ताचल की ओर (समुद्रगुप्त के काल पर), महाकाल, शकराज जयदमन।

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, भगवान भरोसे, घर की बात, जमाना कब बदलेगा?, बदलते जमाने का आगाज़, बदल रहा है जमाना, और जमाना बदल गया, लोक परलोक, मृग तृष्णा, अंधकार।

हिन्दी साहित्य सदन

E-mail : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com
Website- www.hindisahityasadan.com

2 बी.डी. चैम्बर, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 07065618655, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar